وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ
مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ (الروم: ۲۱)

घर जन्नत
कैसे बने?

अज़ इफ़ादात

महबूबुल-उलमा व सुलहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबन्दी मुजद्दिदी

मुरत्तिब

मौलाना सलाहुद्दीन सैफ़ी, नुज़हत यासमीन नक़्शबन्दी मुजद्दिदी

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ (الروم:۲۱)

घर जन्नत
कैसे बने?

अज़ इफ़ादात

महबूबुल-उलमा व सुलहा

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़्शबन्दी मुजद्दिदी

मुरत्तिब

(मौलाना) सलाहुद्दीन सैफ़ी, नुज़हत यासमीन नक़्शबन्दी मुजद्दिदी

प्रकाशक

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

New Delhi-110002

नाम पुस्तक	:	घर जन्नत कैसे बने?
इफ़ादात	:	हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़्शबन्दी मुजद्दिदी
मुरत्तिब	:	(मौलाना) सलाहुद्दीन सैफ़ी, नुज़हत यासमीन नक़्शबन्दी मुजद्दिदी
संयोजक	:	मोहम्मद नासिर ख़ाँ
संस्करण	:	2015
कम्पोज़िंग	:	उरूफ़ इन्टरप्राइज़ेज़
मुद्रक	:	फ़रीद इन्टरप्राइज़ेज़, नई दिल्ली-2

Ghar Jannat Kaise Bane?

Author:

Hazrat Maulana Peer Zul Faqar Ahmad Naqshbandi Mujaddidi

Compiled by:

(Maulana) Salahuddin Saifi Naqshbandi Mujaddidi

Edition : 2015 **Pages 224**

प्रकाशक

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street,
Pataudi House, Darya Ganj, N. Delhi-2
Ph.: 23289786, 23289159
(R) 23262486 Fax: 23279998
E-mail:aridexport@gmail.com/Website:faridexport.com

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-2

खुतबात एक नज़र में

अपने दिल की बात

ﷲ ﷲ ﷲ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

ज़ेरे नज़र किताब हज़रत पीर हाफ़िज़ ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहिब मुद्दज़िल्लहुल आली के उन रूह परवर मुवाइज़ का मजमूआ है जिनको हज़रत वाला ने ज़ाम्बिया के शहर लुसाका की मस्जिदे उम्र में ब-हालते-एतिकाफ़ मस्तुरात के सामने पेश फ़रमाया, मस्तुरात मस्जिद से दूर एक हॉल में जमा होजाती थीं उधर हज़रत वाला मस्जिद में मुअतकिफ़ीन के दरिमयान बैठ कर माएक से औरतों को मुख़ातिब फ़रमाते थे न ये कि मस्तुरात इनको सुनती थीं बल्कि जदीद निज़ाम तरसील के ज़रिए पूरी दुनिया फ़ैज़ उठाती थी।

जिस वक्त हज़रत वाला मोहब्बते इलाही से सरशार होकर इख़्लास भरे जज़्बे के साथ, मसतूरात से ख़िताब फ़रमाते थे ऐसा लगता था कि कोई मुशफ़िक़ बाप पुरख़ुलूस जज़बे से अपनी औलाद को ज़िन्दगी के उतार-चढ़ॉव से वाक़िफ़ करा रहा है और हर नफ़ा नुक़सान से उनको आगाह कर रहा है। और हक़ीक़त ये है कि इन मुवाइज़ के अन्दर हज़रत ने दिल निकाल कर रख दिया है, अगर हम ख़ुलूसे नियत और जज़्बाए अमल के साथ उनको पढ़ें तो हमारे घर जन्नत का नमूना पेश करें और हम चलते फ़िरते दीनी तालीमात के अमली दाई बन जाएँ।

अल्लाह से दुआ है कि रब्बुल-इज़्ज़त हज़रत वाला को सलामत ब करामत रखे और आप के फ़ैज़ को ता-क़ियामत जारी व सारी रखे और इस किताब को क़बूल फ़रमाएँ।

ऐन दुआ अज़ मन व अज़ जुमला जहाँ आमीन आबाद

वस्सलाम

फ़क़ीर सलाहुद्दीन सैफ़ी नक्शबन्दी मुजद्दिदी अफ़ी अनहु

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٢١ (الروم:٢١)

वैवाहिक ज़िन्दगी
क़ुरआन मजीद की रौशनी में

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

फेहरिस्त अनावीन

इक़्तिबास

यादे-ख़ुदा के बग़ैर सुकून नहीं

एक उसूल याद रखें कि नो अल्लाह-नो पीस (No Allah No Peace) जिन की ज़िन्दगी में अल्लाह का तसव्वुर नहीं, वह मन मर्ज़ी करते हैं, नफ़स की इत्तिबा वाली ज़िन्दगी गुज़ारते हैं उन की ज़िन्दगी में अमन आही नहीं सकता।

नेकी पर अगर मियाँ-बीवी मुत्तफ़िक़ होजाएँ तो ज़िन्दगी पुरसुकून गुज़रती है, औरतों को चाहिए कि ख़ुद भी नेक बनें, घर के माहौल को भी नेकी वाला बनाएँ, अपने मियाँ को भी नेकी की तरफ़ खींच लें, जितना वह अल्लाह के क़रीब होता जाएगा उतना अपनी बीवी को भी दिल के क़रीब करता चला जाएगा।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝۲۱ (الروم:۲۱)

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

क़ुरआन मजीद की जो आयत तिलावत की गई इरशाद बारी तआला है:

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا

और ये अल्लाह तआला की निशानियों में से है, इस ने तुम से तुम्हारे ही लिए जोड़ा बनाया, ताकि तुम इससे सुकून हासिल करो।

निकाह की तारीफ़

निकाह क्या होता है? एक मर्द और एक औरत के दर्मियान शरई गवाहों की मौजूदगी में अपने अल्लाह के नाम पर मुआहिदा करना, ये जो निकाह होता है ये अग्रीमेन्ट (Agreement) मुआहिदा होता है अल्लह के नाम पर।

अल्लाह के नाम की तासीर

अल्लाह तआला का नाम इतना अच्छा है कि वह हराम को हलाल कर देता है। आप देखें कि क़ुरबानी के जानवर पर अल्लाह का नाम न लिया जाए तो वह हराम, इसी तरह मर्द और औरत के तअल्लुक़ के दर्मियान अल्लाह का नाम आएगा तो औरत हलाल होगी, वरना दोनों का मिलना एक दूसरे के साथ हराम होगा, क़ुरबान जाएँ उस पर्वरदिगार के नाम पर कि जिस का नाम इतनी बरकतों वाला है, फ़रमाया :

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ①

(النساء:١)

देखा! अल्लाह के नाम पर औरत मर्द पर हलाल होती है, मर्द औरत के लिए हलाल होता है, तो उस शादी ख़ाना आबादी में इस अल्लाह को न भूलें जिस पर्वरदिगार की वजह से दोनों मियाँ-बीवी बने, निकाह से पहले दोनों एक दूसरे के लिए ग़ैर-महरम थे, लड़के के लिए लड़की को देखना हराम, लड़की के लिए लड़के को देखना हराम, इतनी अजनबियत, दूरी थी, जब अल्लाह का नाम दर्मियान में आया, उतने क़रीब होगए कि अब वह बीवी सब अपनों से बड़ी अपनी बन गई, शरीका-ए-हयात बन गई।

इसलिए शादी के मक़ासिद ज़िहन में रखने ज़रूरी हैं कि ये एक बन्धन है जो एक मर्द और औरत के दर्मियान होता है, दो गवाहों की मौजूदगी में, अल्लाह के नाम पर, कहते हैं

(Wedding rings are the world smallest handcuffs)

(जो शादी की अंगुठी होती है ये दुनिया की सबसे छोटी हथकड़ी है)

दोनों एकबन्धन में बन्ध जाते हैं, क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّیْثَاقًا غَلِیْظًا ㉑ (النساء:٢١)

और वह तुमसे एक पक्का अहद ले चुकी हैं, कमिटमेंट (Commitment) ले चुकी हैं।

मक़ासिदे निकाह

1. चुनांचि शादी के मक़ासिद में सबसे पहला मक़सद है, गुनाहों से बचना, ख़ाविन्द बीवी के ज़रिए गुनाहों से बचे और बीवी ख़ाविन्द के ज़रिए से गुनाहों से बचे, ये शादी के मक़ासिद में से सबसे पहला मक़सद है।
2. और दूसरा मक़सद है इमान को मुकम्मल करना, चुंकि नबी अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमायाः **"अन-निकाहु निस्फ़ुल इमान"** निकाह आधा इमान है। शादी से पहले इनसान जितना भी नेक बन जाए, अभी आधे इमान पर अमल कर रहा है, निकाह होजाने के बाद अब इमान की तकमील होजाती है, इसलिए अल्लाह तआला बन्दे के आमाल का अज्र बढ़ा देते हैं। हदीस मुबारका में है कि "शादी से पहले एक नमाज़ पढ़ें तो एक नमाज़ का सवाब और शादी होने के बाद एक नमाज़ पढ़ीं तो इकीस (21) नमाज़ों का सवाब और बाज़ रवायात में ब्यालीस (42) नमाज़ों का सवाब, तो अमाल का अज्र बड़ जाता है, इसकी क्या वजह है कि रब करीम ये फ़रमाते हैं कि ए मेरे बन्दे पहले तेरे उपर सिर्फ़ हुक़ूक़ुल्लाह थे, एक नमाज़ का अज्र एक मिलता था कि सिर्फ़ हुक़ूक़ुल्लाह थे, अब तेरे उपर हुक़ुक़ुल-इबाद भी आगए, उन हुक़ुक़ुल-इबाद को पूरा करते हुए, जब तुम मेरे हुक़ुक़ को भी पूरा करोगे, मैं पर्वरदिगार आमाल की क़ीमत बड़ा दुँगा तो शादी के मक़ासिद में से पहला मियाँ-बीवी एक देसरे के ज़रिया गुनाहों से बचें और दुसरा इमान की तकमील हो, आमाल का अज्र बढ़ जाए।"
3. तीसंरा मक़सद कि दोनों को इज़्ज़त मिल जाए, जब शादी होजाती है तो ख़ाविंद बीवी के लिए इज़्ज़त का सबब बनता है, बीवी ख़ाविंद के लिए इज़्ज़त का सबब बनती है।
4. फिर चौथा मक़सद मोहब्बत का मिलना कि मियाँ-बीवी एक दूसरे को मोहब्बतें देते हैं, मोहब्बतें तक़सीम करते हैं और मोहब्बतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।
5. फिर पाँचवा मक़सद है शरीके हयात का मिलना कि इनसान ज़िन्दगी

का साथी पालेता है ज़िन्दगी के हालात के उतार चढ़ाव में कोई उसका अपना होता है, वह एक दूसरे के साथ शेयर (Share) कर सकते हैं, वह दोनों मिल कर ज़िन्दगी के ग़मों का बोझ उठा सकते हैं।

6. फिर छट्ठा मक़सद होता है ओलाद का होना। चुनांचि फ़ितरी ख़्वाहिश है हर इनसान की कि औलाद हो। अम्बिया किराम जैसी बुज़रूग हस्तियाँ भी अल्लाह से औलाद के लिए दुआएँ मांगती रही हैं। हज़रत ज़करिया (अलैहि॰) ने दुआ मांगी—سورہ مریم ٤

"ऐ मेरे पर्वरदिगार! इतना बूढ़ा होगया हुँ कि मेरी हडियाँ बोसीदा होगई और मेरे बाल सफ़ेद होगए, लेकिन अभी भी मैं आप के दरगाह से इस नेमत के हासिल करने में मायूस नहीं हुवा। मैं अभी भी दुआ मांगता हुँ, तो देखो बुढ़ापे में भी इनसान की ये तमन्ना होती है। इसी तरह औरत के दिल की फ़ितरी ख़्वाहिश होती है कि अल्लाह मुझे औलाद की नेमत अता फ़रमाए।

7. और सातवाँ मक़सद होता है पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारना इस लफ़्ज़ को समझने की कोशिश करें कि आज कल ज़हनों में ये बात समा गई है कि कोई ग़म होना ही नही चाहिए। परेशानी होनी ही नहीं चाहिए, एक काफ़िर की सोच और होती है, मोमिन की सोच और होती है, काफ़िर सोचे कि कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए तो वे सोच सकता है, मगर मोमिन तो जानता है कि दुनिया "दारूल-मेहन" इम्तिहानगाह है और इस इम्तिहानगाह में हालात अदलते-बदलते हैं, कभी अल्लाह ख़ुशी देकर आज़माते हैं, कभी ग़म देकर, कभी सेहत देकर, कभी बीमारी देकर, तो हालात के उतार चढ़ाव को क़बूल (Accept) करना चाहिए। दुनिया की ज़िन्दगी फूलों की सेज नहीं है इम्तिहानगाह है, आप समझतीं हैं कि जो दुनिया के बादशाह होते हैं उनको परेशानियाँ नहीं होती, तौबा-तौबा इतने परेशान कि इनकी परेशानियाँ किसी शहर के लोगों में तक़सीम करदें तो शहर के सारे लोग परेशान होजाएँ तो मक़सद समझें, तंगी, परेशानी, बीमारी इन चीज़ों का होना अलग बात है, और दिली

सुकून होना ये अलग बात है। जब इनसान को ये महसूस होता है कि मैं अकेला नहीं, मेरे साथ कोई और भी है, तो फिर परेशानी परेशानी नहीं लगती, फिर दिल पुरसूकून होता है, इसलिए शरिअत ने इतना खुबसूरत लफ़्ज़ इस्तेमाल किया कि एक लफ़्ज़ से शादी का मक़सद वाज़ह फ़रमा दिया, चुनांचि शादी होने के बाद मियाँ-बीवी मिल कर क़दम उठाते हैं, बीइंग टूगेदर (Being together) एक दूसरे के साथ रहना) शेअरिंग टूगेदर (Sharing together) (एक दूसरे के साथ इज़हारे ख़्याल करना) डूइंग टूगेदर (Doing things together) (एक साथ मिल कर काम करना) ये फिर उन की ज़िन्दगी का उसूल बन जाता है।

पूरसुकून ज़िन्दगी कैसे हासिल करें?

अब हम पूरसुकून वैवाहिक ज़िन्दगी कैसे हासिल करें? आइये क़ुरआन मजीद की तालीमात को सामने रख कर उस मज़मून की तफ़सीलात सूनें, सब से पहले

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ये अल्लाह की निशानियों में से हैं तो ख़ाविन्द बीवी के लिए अल्लाह की निशानी और बीवी ख़ाविन्द के लिए अल्लाह की निशानी, वाक़ई अगर अल्लाह ने मियाँ-बीवी को न बनाया होता तो हर एक की ज़िन्दगी अधूरी होती, हर एक की ज़िन्दगी में ख़ला होता, और अस बात को ज़िहन में रखें कि हमारे दर्मियान जो निकाह का मुआहिदा है वह अल्लाह के नाम पर है, इस लिए सूरह निसा पढ़िए तो आप को हर चन्द आयतों के बाद मिलेगा *"वत्तक़ू ल्लाह, वत्तक़ुल्लाह"* अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो!

चूंकि अल्लाह तआला जानते थे कि मिया-बीवी का रिलेशन (Relation) रिश्ता-नाता (Delicate) नाज़ूक होता है कि अगर बन्दे के दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ न हो तो वह ज़ाहिर में सच्चा भी बन्ता है, मगर दूसरे की दिल आज़ारी भी कर रहा होता है, इस लिए अल्लाह ने

फ़रमाया कि तुम मख़्लूक़ का ख़्याल मत रखो, तुम्हारा मामला अल्लाह के साथ है जो दिलों के भेद जानने वाला है।

(Allah is the witness to all thoughts intentions & action)

(तुम जो कर रहे हो तुम्हारे मन में किया नियत है उसको अल्लाह जानता है।)

आगे फ़रमाया: وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً (और अल्लाह ने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत पैदा करदी)

मवद्दत कहते हैं मोहब्बत को चुनांचि मियाँ-बीवी को एक दूसरे से फ़ीज़ीकल (Physical) जिस्मानी और इमोशनल (Emotional) ज़ज़बाती दोनों तरह की मोहब्बत होती है इसलिए मिया-बीवी ऑल सीज़न फ़रेंडज़ (All Season Friends) हर मौसम के दोस्त होते हैं, ये फ़रेंडशिप (Friendship) दोस्ती आपस में (Buildup) तामीर करनी पड़ती है, इस पर इन्वेस्ट (Invest) करना पड़ता है, यानी कुछ लगाना पड़ता है, जितना एक दूसरे की ख़ातिर इन्वेस्टमेंट करेंगे उतना ये मोहब्बत मज़बूत होती चली जाएगी, एक देसरे को टायम देना, सपूरट देना, एक-दूसरे के काम करना, एक-दूसरे की ज़रुरियाते ज़िन्दगी में दिलचस्पी लेना, इस से शादी का बन्धन मज़बूत होजाता है, यूँ समझलें कि मिया-बीवी का इमोशनल (Emotional) ज़ज़बाती बैंक एकॉन्ट होता है जितना वह इसके अन्दर इनपूट (Input) डालते रहते हैं उतना इन की शादी पुरसकून होती है,

Love is Directly Proportional to Investment

जिस चीज़ पर जान, माल, वक्त लगता है उसकी मोहब्बत दिल में आती है, ये उसूल है।

इस की मिसाल सून लीजिए! माँ बेटा के उपर कितनी इन्वेस्टमेन्ट (Investment) करती है? चौबीस (24) घंटे की ख़ादिमा पहले खिलाती है बाद में खाती है, पहले पिलाती है बाद में पीती है, पहले बच्चे को सुलाती है बाद में ख़ूद सोती है, कितनी थकी हुई क्यूँ न हो, बच्चे की आवाज़ आने पर फ़ौरन उठ खड़ी होती है और बच्चे की ज़रुरत को पूरा करती है तो जब माँ बैटे को दूध पिलाती है उसकी केयर (Care) करती है, लूक आफ़टर (Look after) देख भाल करती है इतना इस पर इन्वेस्टमेंट (Investment) करती है तो बच्चे की मोहब्बत भी इसके दिल

में आजाती है। इतनी टची (Touchy) जज़बाती होती है, अपनी तकलीफ़ गवारा करलेती है, बच्चे की तकलीफ़ उससे गवारा नहीं होती, इन्सान तो इनसान, जानवरों में भी हमने देखा कि मदर (Mother) माँ अपने बेबी (Baby) बच्चे के बारे में कितनी प्रोटेक्टिव (Protective) हिफ़ाज़ती होती है, इसकी बुन्यािद क्या? कि माँ की इन्वेस्टमेन्ट हुई होती है। अब एक माँ का बैटा हो और उसको लेके फ़ौरन किसी और के हवाले करदें, आप देखेंगे कि इन दोनों के दर्मियान आपस में मोहब्बत का रिश्ता गहरा नहीं होगा। इसी तरह जो लोग दीन के उपर जान, माल और वक्त लगाते हैं उनके दिल में दीन की इज़्ज़त आजाती है, मोहब्बत आजाती है, क़द्र आजाती है आज के मर्द लोग बिज़नेस (Buisness) पर अपना वक्त लगते हैं, माल लगाते हैं तो उनको बिज़नेस (Buisness) कितनी महबूब होती है? तो ये ज़िहन में रखें कि जितना एक दूसरे के लिए वक्त देंगे क़ुरबानी देंगे, एक दूसरे का ख़्याल रखेंगे उतना ये शादी का रिश्ता मज़बूत होगा और ये मोहब्बत गहरी से ज्यादा और गहरी होती चले जाएगी तो मिया-बीवी एक दूसरे को अपना बनाकर रखें, जहाँ एक दूसरे की ख़ातिर क़ुरबानियाँ नहीं होतीं वहाँ ताल्लुक़ कमज़ोर होता है।

हकीम की हिक्मतभरी दवा

चुनांचि एक वाक़आ है। एक लड़की ज़ैनब की शादी हुई और उसको सास ऐसी मिली कि अल्लाह की पनाह। छोटी-छोटी बात पर तनक़ीद करने वाली, समझाने वाली बजाने वाली, मियाँ-बीवी आपस में बहुत ख़ूश थे मगर सास हर वक्त कोई न कोई मश्विरा देती थीं, कोई पोवाइन्ट निकाल लेती थीं, जिस से इस बच्ची का दिल दुखता था। चुनांचि एक साल जब उसने गुज़ारा तो उस नतीजे पर ये पहुँची कि इस सास की मौजूदगी में मेरी ज़िन्दगी कभी ख़ूश नहीं गुज़र सकती, तो उसके दिल में एक नफ़रत आगई सास की। अनाद आगया, ये एक आँख अपनी सास को नहीं देखना चाहती थी, उसका दिल चाहता था ज़मीन फटे और ये बूढ़ी औरत अन्दर उतर जाए, मेरी जान छूट जाए इससे, एक दिन ये बीमार थी तो हकीम के पास गई दवाई लेने के लिए तो वहाँ

उसके दिल में शैतान ने ये बात डाली कि क्यूँ न हकीम साहब से मैं कोई ऐसी दवाई ले लूँ कि जिस की वजह से मेरी सास मर ही जाए मेरी जान छूट जाए। चुनांचि उसने रो धो कर हकीम को बताया कि मैं बहुत दूखी हूँ, बहुत परेशान हूँ, आप मेरी हेल्प (Help) करें, मूझे कोई दवाई ऐसी दें जो मैं सास को खिलाऊ और मेरी जान छूट जाए। हकीम समझदार था, उसने कहा बहुत अच्छा मैं तुम्हें दवाई तो दे देता हूँ लेकिन एक बात ज़िहन में रखना कि अगर ऐसी दवाई दी कि फ़ौरी असर करे तो तुम्हारे नाम लग जाएगा। तुमहारे उपर लोग शक करेंगे, तुम उसकी क़तल करने वाली बन जाओगी, इसने कहा हाँ बात तो ठीक है, तो हकीम ने कहा मैं एक ऐसी दवाई देता हूँ कि जो सिलो पवाइज़न बिज़नेस (Slow poison) है (हलका ज़हर) इस में एक साल लग जाएगा। और एक साल में ये औरत अन्दर से इतनी कमज़ोर होजाएगी कि मर ही जाएगी। वह बहुत ख़ुश होगई कि अच्छा ऐसी दवाई मुझे देदें, चुनांचि हकीम ने एक दवाई ऐसी दे दी और कहा कि इस को वक्तन-फ़वक्तन खिलाती रहना और एक साल का अर्सा है, तुमहारी जान छूट जाएगी, अब दुल्हन समझती थी कि मेरा मसअला हल होगया, हकीम साहब ने एक मश्विरा और दिया कि देखो! चुंकि ये काम आप ख़ूद कर रही हो तो कोई आप को मुज्रिम न समझे इस लिए अब आप कोशिश करो कि इस बूढ़ी की ख़िदमत ज़्यादा करी, इसके क़रीब हो जाओ, उसको अपना बनाने की कोशिश करो ताकि दुनिया वाले भी देखें कि तुम तो उसको बहुत अहमियत देती थीं, ख़िदमत करती थी, अच्छा वक्त गुज़ारती थीं, तो तुमहारे उपर कोई शक भी नही करेगा। उसको ये बात भी अच्छी लगी, चुनाँचि ये आई, अब उसने उस (अपनी सास) को वह दवाई देनी शुरुकरदी मगर एक तब्दीली ये आई कि उसने सास को अब ज़रा ज़्यादा वक्त देना शुरु कर दिया उनका ख़्याल रखती उनकी बात मानती, उनका दिल ख़ूश करने की कोशिश करती ताकि सास भी कहे कि उसने मुझे बहुत मोहब्बत दी और ख़ाविन्द भी यही समझे कि मेरी बीवी ने तो उसकी ख़िदमत करने में कोई कमी नहीं छोड़ी, वे अच्छा बनना चाहती

थी ताकि क़त्ल का इल्ज़ाम उसके सर पर न आए। एक साल उसने ख़ूब मेहनत की और अपनी सास की ख़िदमत करके अपने ख़ाविन्द को भी ख़ूश किया औ अपनी सास को भी ख़ूश किया, लेकिन जब एक साल गुज़रने के क़रीब आया तो जब वह तन्हाई में बैठ कर सोचती कि अब मेरी सास मर जाएगी अब उसके दिल को ख़ूशी के बजाए ग़म होता, चूंकि अब क़रीब होने की वजह से उसके अन्दर मोहब्बत (Develop) हो चुकी थी, यानी बढ़ गई थी, चुनांचि एक साल के बाद वह रोती हुई फिर हकीम के पास आई और कहने लगी कि पलीज़ (Please) आप मुझे उस ज़हर का कोई तरयाक़ दे दें, में नहीं चाहती कि मेरी सास मरे, वह इतनी मेरे साथ अच्छी होगई है, मैं उसके साथ इतनी पूरसुकून (Comfortable) हूँ कि मैं नहीं चाहती कि वह फ़ौत हो, जब उसने ये कहा तब हकीम साहब ने बताया कि बहुत अच्छा मैं ने उसको ज़हर नहीं दी थी एक आम दवाई दे दी थी ताकि तुम्हारे दिल को तसल्ली रहे, लेकिन मैं ने तुम्हें जो नसीहत की थी कि सास की ख़िदमत करो, वक़्त दो, उसकी बात मानो, असल तो ये बुनियाद थी, पहले तुमने इन्वेस्टमेंट (Investment) यानी कुछ लगाया नहीं था, तुम्हें उसकी हर बात बुरी लगती थी, वह तुम्हें समझाती थी, तुम्हारे फ़ायदे की नियत से, और तुम्हें ज़हर चड़ता था, अब जब तुमने अपने आप को समझाकर उसकी ख़िदमत करनी शुरु करदी तो अब तुम्हारे दर्मियान मोहब्बत पैदा होगई, अब तुम परेशान न होना, तुम्हारी सास अभी नहीं मरे गी, अपनी तिब्बी ज़िन्दगी गुज़ारेगी। अब उस लड़की के आँखों से फिर आंसू आगए। ये ग़म के आंसू नहीं थे, ये ख़ूशी के आंसू थे।

तो सोचिए! कि औरत अगर थोड़ा-सा अपने दिल को सब्र दे और फिर ख़िदमत करे, मोहब्बतें तक़सीम करे, तो हालात ख़ुद ब ख़ुद ठीक होजाते हैं, जो मुख़ालिफ़ होते हैं वह भी मवाफ़िक़ होजाते हैं, सास पहले भी अच्छा चाहती थी, समझाती थी, लेकिन ये (Sensitive) हिसास बहुत होगई थी, बात ही नहीं सुन्ना चाहती थी, अब इसने उसकी बात सुन्नी शुरु करदी, तो सास भी बेटियों की तरह इस से मोहब्बत करने लग गई,

चुनांचि उस लड़की और उस की सास के दर्मियान मोहब्बत मिसाल बन गई। अल्लाह अकबर कबीरन।

बुढ़ापे में मेहरबानी का जज़बा ग़ालिब रहे

दूसरी बात शरीअत ने कही (मोवद्दतंव-व रहमतः) अब तुम्हारे दर्मियान हमने रहमत को रख दिया, देखें! जवानी में मिया-बीवी की मोहब्बत में एक दूसरे की जिन्सी ज़रुरत का भी उन्सुर शामिल होता है, लिहाज़ा अगर मिया-बीवी झगड़ा भी करें, नाराज़ भी हों तो शाम को फिर दोनों इकट्ठे होते हैं। ख़ाविन्द को बीवी की ज़रुरत, बीवी को ख़ाविन्द की ज़रुरत लेकिन जब बुढ़ापा आजाता है तो उस वक्त ये जिन्सी ज़रुरत का पहलू न होने के बराबर हो जाता है तो उस वक्त तो एक दूसरे के साथ अगर झगड़ा हो तो नफ़रतें पक्की होजाती हैं तो शरीअत की खुबसूरती देखिए कि अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने एक दूसरा लफ़्ज़ इस्तेमाल किया कि तुम्हारे दर्मियान "मुवद्दत" भी रख दी और "रहमत" भी रखदी। रहमत कहते कि जो तुम एक दूसरे के साथ ज़िन्दगी का इतना अर्सा गुज़ार चुके, अब उसकी क़द्रदानी करो, और उसकी वजह से एक दूसरे के साथ दरगुज़र का मआमला करो तो "रहमह" ("Rahmah" is to give without asking to return) को रहमत कहते हैं, यानी जो आप अपनी जवानी में एक दूसरे के लिए इन्वेस्टमेंट (Investment) कर चुके हैं, इस को ऑनर (Honour) करें, उसका अहसास करें, ख़ाविन्द ये सोचे जब ये मेरे पास आई थी, छोटी उम्र थी, खुबसूरत थी। अब इतने बच्चों की माँ बन गई अब उसकी वह सिहत न रही, वह खुबसूरती न रही, उसने तो अपनी लाइफ़ (Life) ज़िन्दगी ही इन्वेस्ट (Invest) करदी तो उसकी क़द्र होनी चाहिए, बीवी भी सोचे कि मेरे ख़ाविन्द ने मुझे साया दिया, मुझे घर दिया, मुझे इज़्ज़त दी, ये मेरे इतने बच्चों का बाप है। अब अगर ये बुढ़ापे में ज़रा (Sensative) हस्सास तबीयत का मालिक बन भी गया है तो कोई बात नहीं, मुझे बरदाश्त करना चाहिए, तो "रहमत" का लफ़्ज़ सुब्हान अल्लाह! एक दूसरे की क़द्रदानी करना और गुज़रे हुए वक्त का लिहाज़ करना।

बिल आख़िर मुहब्बत व समझदारी रंग लाई

एक आदमी जो दफ़तर के अन्दर अच्छी पोस्ट पर था, इसके दफ़तर में एक लड़की सिक्रेटरी बनी जिस का नाम "लैला" था, थोड़े दिनों के बाद ये अफ़सर साहब उस लड़की के साथ बुरे ताल्लुक़ के अन्दर गिरफ़तार होगए, अब उसके दिमाग़ में हर वक़्त वह लड़की समाई रहती, और उसका जी चाहता कि बस मैं अभी शादी करूँ, लड़की की (Requirement) ख़्वाहिश ये थी कि तुम पहली बीवी को तलाक़ दो, फिर मैं शादी करुंगी, चुनांचि अब उसने घर में आकर अपनी ख़ूशियों भरी शादी-शुदा ज़िदगी को खुद ख़राब करना शुरु कर दिया। बीवी के साथ बुरे तरीक़े से बोल रहा है, उसको इगनॉर (Ignore) नज़र- अनदाज़ कर रहा है, उसके कामों में दिल्वस्पी नहीं ले रहा, बच्चों के सामने उस को डांट-डप्ट कर रहा है। अब बीवी परेशान कि उसको हो क्या गया, ये तो इतना अच्छा पति था, अचानक क्या मेरे अन्दर तब्दीली आगई कि आँखें ही बदल गईं, चुनांचि अपनी तरफ़ से तो उसने ख़ूश करने की हर मुम्किन कोशिश की, मगर ये बन्दा तो खुश होना ही नहीं चाहता था। उसकी नियत ही बुरी थी। ये चाहता था मैं उसको तलाक़ दूँ और उसके बदले नई चंचल, ख़ूबसूरत लड़की मेरी बीवी बन जाए, चुनांचि जब ख़ूब घर के अन्दर फ़साद मचा तो एक दिन बीवी ने उस से पूछा कि देखों हमारी ज़िन्दगी के पचीस (25) साल इतने अच्छे गुज़र गए अब क्या मसला बन गया? तो उसने कहा कि असल में मैं तुम्हें तलाक़ देना चाहता हूँ और में और शादी करना चाहता हूँ, बीवी ने पूछा क्यूँ? शौहर ने कहा इसलिए के वह ज़्यादा ख़ूबसूरत है, कम उम्र है, नौजवान है, मैं ख़ूशयाँ चाहता हूँ, अब बीवी ने समझाने की कोशिश तो बहुत की, मगर ख़ाविन्द के दिमाग़ में तो कुछ और ही शैतानियत भरी हुई थी। उसने कहा देखो! मुझे तो तलाक़ देनी है और तुमसे जान छुड़ानी है और मैं अपनी खुशी की ख़ातिर दूसरी शादी करके ही रहूँगा। जब बीवी ने महसूस कर लिया कि ये बन्दा अपने दिल में एक फ़ैसला कर चुका है, तो उसने कहा अच्छा आप क्या चाहते हैं। ख़ाविन्द ने कहा कि चूंकि मेरे

पास तन्ख़्वाह बहुत है, माल व दौलत है, मैं तुमहें घर भी दे देता हूँ और मैं तुमहें गाड़ी भी दे देता हूँ और इतना माहाना ख़र्च भी तुमहारा तै कर देता हूँ, तुम बच्चों के साथ उस घर में रहो, उन बच्चों को पालो, अलबत्ता मुझसे तलाक़ ले लो ताकि मैं दूसरी शादी करके उस नई बीवी के साथ ख़ुशयों भरे दिन गुज़ारुँ, बीवी थोड़ी देर ख़ामोश रही फिर कहने लगी कि अच्छा! मेरी शर्त ये है कि न मुझे मकान चाहिए, न मुझे तुम्हारा माहाना चाहिए और न मुझे तुमहारी गाड़ी चाहिए। उसने फिर कहा फिर क्या चाहिए? उसने कहा बस मेरी शर्त ये है कि तुम मुझे मोहब्बत भरा एक महीना दे दो और उसके एक महीने में इस तरह मुहब्बत से रहो जैसे हम उस वक्त मोहब्बत से रहते थे। जब हमारी शादी हुई थी इब्तिदाई दिनों में।

ख़ाविन्द ने कहा ये तो बहुत आसान काम है। एक महीना उसको मुहब्बतें दो, प्यार दो और फिर जान ही छूट जाए गी। चुनांचि ख़ाविन्द ने उस के साथ अहद कर लिया, अब चुंकि मिया-बीवी में अहद था तो बीवी ने उससे कहा कि देखो! जब शादी हुई थी मैं दुल्हन थी, आप ऐसे आते थे, ऐसे बैठते थे, ऐसे बात करते थे, मैं भी आप से ऐसे बात करती थी, ऐसे बैठते थे, ऐसे बात करते थे, में भी आप से ऐसे बात करती थी, लिहाज़ा हमने ये महीना इसी हालत में गुज़ारना है। ख़ाविन्द ने कहा बहुत अच्छा, चुनांचि दोनों ने आपस में ख़ूब गरम जोशी का इज़हार किया, मोहब्बतों का इज़हार किया, मेल-मिलाप किया, बातें कीं और जैसे हनीमून (Honeymoon) का वक्त होता है दोनों ने इस तरह वक्त फ़ारिग कर लिया, अब जब कुछ दिन गुज़रे तो ख़ाविन्द ने ये देखा, ये बीवी जब पचीस (25) साल पहले मेरे पास आई थी, इतनी खुबसूरत थी, इतनी इस्मार्ट (Smart) थी, कितनी अच्छी थी, अब पचीस साल के बाद ये पाँच बच्चों की मा बन गई, अब सिहत भी उसकी कमज़ोर होगई, कुछ बीनाई भी कमज़ोर होगई, बल्ड-प्रेशर की मरीज़ा भी बन गई, अब मिदे की अलसर का भी मसला है, अब ये बेचारी जब अकेली रहेगी तो ख़ाविन्द के बग़ैर इसकी ज़िन्दगी कैसी होगी? चुंकि दोनों क़रीब वक्त गुज़ार रहे थे तो ख़ाविन्द ने ऐसा सोचना शुरु कर दिया तो पहले तो अपने

ख़्यालात को झटक देता, और यही सोचता कि नहीं, मैंने दूसरी लड़की से शादी करनी है, लेकिन क़रीब रहने से मुहब्बतें बढ़ती गई, अपनाइयत होती रही, फिर इनसान को अहसास होता है, जितना भी कोई पत्थर दिल हो, उसको भी महसूस होता है, चूनांचि जब महीना पूरा हुवा तो आख़िरी दिन बीवी ये उमीद कर रही थी कि आज मुझे तलाक़ का काग़ज़ मिल जाएगा, इस घर में आज मेरा आख़िरी दिन है लेकिन अल्लाह की शान आख़िरी दिन शौहर की तरफ़ से फूलों का एक गुलदस्ता आया और इस गुलदस्ता पर ख़ाविन्द की तरफ़ से ये पैग़ाम लिखा हुवा था कि जिस तरह मोहब्बत भरा ये महीना मेंने तुमहारे साथ गुज़ारा, मैं ज़िन्दगी की बाक़ी दिन भी आप के साथ इसी तरह मुहब्बत से गुज़ारुँगा, मैं दूसरी शादी नही करुँगा।

बुढ़ापे में मेहरबानी का मामला कीजिए

तो ये आपस में एक दूसरे के साथ (Investment) होती है मोहब्बत एक दूसरे की ख़ातिर क़ुरबानी देने का दूसरा नाम है। इसलिए शरीअ़त ने मोवद्दत का लफ़्ज़ भी इस्तेमाल किया और रहमत का लफ़्ज़ भी इस्तेमाल किया कि जब बच्चे जवान हो जाएँ तो आप अब मियाँ-बीवी को एक दूसरे के साथ नफ़रतों की ज़िन्दगी नहीं गुज़ारनी बल्कि एक दूसरे के साथ एहसान करना है, मोहब्बतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारनी है, एक दूसरे को कुछ देना है इसलिए कहते हैं।

(you can give without loving but you cannot love without giving)

आप बग़ैर मोहब्बत के कुछ देसकते हो लेकिन आप बग़ैर कुछ दिए हुए मोहब्बत नहीं कर सकते।

जब मोहब्बत होती है तो इन्सान बुढ़ापे में रीटर्न (Return) बदला की उम्मीद के बग़ैर भी दूसरे को मुहब्बतें देता जाता है, ये जो कुछ देने की इन्जवाइमेंट (Enjoyment) ख़ुशी है ये कुछ और होती है, इसलिए बुढ़ापे में एक दूसरे की कोताहियों से कमज़ोरियों से दरगूज़र करना और बर्दाश्त कर लेना चाहिए, इस लिए शरीअत ने "रहमत" का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया, कहते :

(A good marriage is the union of two forgivers)

यानी बीवी ख़ाविन्द की कोताहियों से दरगुज़र करे, ख़ाविन्द बीवी की कोताहियों से दरगुज़र करे।

सुकून किसे कहते हैं?

फिर शरीअत ने कहा "लितस्कुनू इलैहा" ताकि सुकून पाओ, अब ये सुकून इनसान को तब मिलता है जब दोनों नेक बन कर एक दूसरे के साथ मोहब्बत भरी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

यहाँ बाज़ मुफ़स्सिरीन ने अजीब नुक्ता लिखा है, वह कहते हैं कि अरबी ज़बान में हर हुरुफ़ के उपर एक हरकत होती है, ज़म्मा, फ़त्हा, कसरा, हम उर्दु में कह देते हैं, ज़बर, ज़ेर और पेश और जिस पर कोई हरकत न हो उसकू सुकून कहते हैं तो इसका मतलब ये कि सुकून ज़िन्दगी में हो, गोया मिया-बीवी ये अहद करे कि हम एक दूसरे के साथ एक बन्धन में बन्ध गए, अब हम किसी ग़ैर के साथ कोई हेरकत नहीं करेंगे, जो हमारी ज़िन्दगी को ख़राब करे, हम एक दूसरे के लिए मख़्सूस होगए हैं हमारी एक दूसरे के लिए बुकिंग होगई है, अगर उस सुकून को उर्दु का लफ़्ज़ समझले तो उर्दु में कहते हैं, ख़ुश होना, दिल में परेशानी का न होना, ये सुकून की तारीफ़ है।

अच्छा बने कि बेग़म बन जाए।

और बीवी इतनी अच्छी बने कि मर्द उसका हमदर्द बन जाए।

और दोनों की ज़िन्दगी बन्दगी बन जाए, उसको सुकुन कहते हैं।

सुकून की ज़िन्दगी

शरीअत ने कहा कि घर में सुकुन मिलता है: وَسَكَنْتُمْ فِي مَسَاكِنِكُمْ

बीवी से सुकून मिलता है, फ़रमाया: لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا

रात में सुकून मिलता है फ़रमाया: وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا

तो इनसान अगर पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता है तो अपने घर में अपनी बीवी के साथ दिन रात का वक्त अच्छी तरह गुज़ारे तब इसकी ज़िन्दगी पुरसुकून गुज़र सकती है, जो शादी शुदा लोग सड़कों पर, चौराहों

में सुकून ढूढते फिरते हैं वह बेचारे क़ाबिले रहम होते हैं, उनको शैतान ने बहकाया होता है, वह धोखा खाए हुए लोग होते हैं, भला सड़कों पर सुकून कहाँ मिलता है, हवस मिलती है, हसरत मिलती है, परेशानी मिलती है, अल्लाह के यहाँ नाकामी मिलती है, सुकून तो मिलता है, इस तरीक़े से ज़िन्दगी गुज़ारने पर जो तरीक़ा हमें शरीअत ने बताया है।

मिया-बीवी को एक दूसरे का लिबास क्यूँ कहा?

चुनांचि क़ुरआन मजीद की तअलीमात पर ग़ौर करें, तो अल्लाह तआला का फ़रमान है:

هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ (سورہ بقرہ:۱۸۷)

"ख़ाविन्द बीवी का लिबास है और बीवी ख़ाविन्द के लिए लिबास है"

अब देखो! ये ख़ूबसूरती है शरीअत की कि एक लफ़्ज़ में मिया बीवी के तअलुक़ को वाज़ेह कर दिया दुनिया के बड़े-बड़े अदीबों से पूछा गया कि मिया-बीवी के तअलुक़ को तुम ज़रा क़लम के ज़रिया से वाज़ेह करो, तो किसी ने कहा:

"मिया बीवी ज़िन्दगी के दो साथी हैं"

किसी ने कहा "गाड़ी के दो पहिए हैं"

किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा। मगर इनके दर्मियान जो सही तअलुक़ था उसको वह फ़क़रों में भी वाज़ेह न करसके। क़ुरआन मजीद की ख़ुबसूरती देखिए एक फ़क़रह नहीं, एक लफ़्ज़ के अन्दर हक़ीक़त खोल दी, ख़ाविन्द को बीवी का लिबास कहा, बीवी को ख़ाविन्द का लिबास कहा, नुक्ता क्या है?

1. लिबास से इन्सान के अैब छुपते हैं, बीवी के ऐब ख़ाविन्द की वजह से छुपते हैं, ख़ाविन्द के ऐब बीवी की वजह से छुपते हैं।
2. फिर सर्दी, गरमी में इनसान कपड़ों से अपना बचाव करता है, इसी तरह ज़िन्दगी की सर्दी, गर्मी में बीवी ख़ाविन्द के ज़रिए से प्रोटेक्शन (Protection) तहफ़्फ़ुज़ लेती है, ख़ाविन्द को बीवी के ज़रिए से प्रोटेक्शन (Protection) होता है।

3. फिर इनसान कपड़े पहनता है तो खुबसूरत नज़र आता है, औरत की तो बात ही और है कि अल्लाह ने उसमें बहुत हया रखी हुई होती है, मर्द ही को जाँचलें, अगर कोई उसको कहदे कि हम तुमहें बे-लिबास करदेंगे, तो मर्द का जी चाहता है कि ज़मीन फ़ट जाती और मैं अन्दर उतर जाता उस से पहले कि मेरा लिबास कोई मेरे जिस्म से उतारता, तो लिबास के बग़ैर इनसान दूसरे के सामने आना गवारा नहीं करता है, लिबास से इसको ज़ीनत मिलती है तो मिया-बीवी भी एक दूसरे का लिबास हैं, एक दूसरे की ज़ीनत हैं।
4. और फिर एक और अच्छा और खुबसूरत मानी मुफ़स्सिरीन ने ये भी बयान किया कि इनसान के जिस्म के सब से .ज्यादा क़रीब उसका लिबास होता है, आप ग़ौर करें, तो लिबास से .ज्यादा तो इनसान के क़रीब कुछ नहीं होता, लिबास जिस्म के साथ चिपका हुवा होता है तो शरीअत ने कहा देखो! जिस तरह लिबास तुमहारे जिस्म के क़रीब है, उस तरह शादी होने के बाद मिया-बीवी के इतना क़रीब और बीवी ख़ाविन्द के इतना क़रीब कि दोनों लिबास की तरह एक दूसरे के साथ इकट्ठा रहें, इसलिए कहते हैं:

(Chains don't hold a marriage together it is threads which sew husband and wife together through years)

ज़ंजीरें शौहर और बीवी को नहीं मिलाती बल्कि एक धागा होता है जो एक दूसरे से ज़िन्दगीभर टांका लगाए हुए होता है (यानी जोड़े होता है)

मिया-बीवी को एक दूसरे के साथ मुहब्बतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारते गुज़ारते सालों गुज़रते हैं तो ये सूई धागे से जैसे किंसी चीज़ में टांके लग जाते हैं और चीज़ जुड़ जाती है, इसी तरह मिया-बीवी के दिल जुड़ जाते हैं।

शादी की नाकामी का बड़ा सबब

शादी में ये कोताही की जाती है कि ख़ाविन्द चाहता है कि बस बीवी आइडियल (Ideal) हो और अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करे, ख़ुद नहीं

सोचता कि मुझे भी तो आइडियल (Ideal) बनना चाहिए और मुझे भी तो बीवी की ज़रुरियात पूरी करनी चाहिए, तो ये जो होता है कि दूसरे से (Expectation) उमीद ज़्यादा रखना और ख़ुद न करना, ये शादी के (Failure) नाकामी का बड़ा सबब होता है, इसलिए कहते हैं:

(Success in marriage does not merely come through finding the right mate but through being the rigt mate)

कामियाब शादी (अज़दवाजी ज़िन्दगी) सही साथी तलाश करने से नहीं बनती बल्कि सही साथी बन जाने से होती है।

शादी के बाद अच्छे साथी ख़ुद बनेंगे तो फिर दूसरा इन्सान भी अच्छा बन जाएगा। अल्लाहु अक्बर कबीरन, तो शादी जब नाकाम होती है तो हक़ीक़त में शादी नाकाम नहीं होती बल्कि लोग नाकाम होते है, दो बन्दे अपनी ज़िन्दगी के मक़सद में नाकाम होजाते हैं, इसलिए मियाँ-बीवी एक दूसरे के साथ मोहब्ब और प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारें।

मुर्शिदि आलिम (रह०) का इर्शाद

हमारे हज़रत मुर्शिदि आलम (रह०) फ़रमाया करते थे, "जहाँ मुहब्बत मोटी होती है वहाँ ऐ़ब पत्ले होते हैं और जहाँ मुहब्बत पत्ली होती है, वहाँ ऐ़ब मोटे होते हैं, जब मोहब्बत कमज़ोर होती है तो ख़ाविन्द को बीवी में बहुत कोताहियाँ नज़र आती हैं, और बीवी को ख़ाविन्द में बहुत कोताहियाँ नज़र आती हैं, इसलिए कोशिश ये करें कि मोहब्बत मज़बूत हो ताकि कोताहियाँ नज़र ही न आएँ और इन्सान प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारे।"

लैला के लिए मज्नूँ की आँख चाहिए

कहते हैं कि एक शख़्स था जिसका नाम था मज्नू, वैसे तो "क़ैस" इसका नाम था, क़ैस अक़ल्मन्द को कहते हैं तो ये अक़ल्मन्द नौजवान था, मगर एक लड़की पर फ़रेफ़्ता होगया, जिस का नाम "लैला" था, ऐसा दिल दे बैठा कि बेचारा अपने आप से ही गया, हर वक़्त लैला का ख़्याल, लैला की सोच, लैला की बातें, चुनांचि उसके तज़्किरे लोगों में बहुत मशहूर होगए, तो एक हाकिमे वक़्त था, उसने जब ये सब स्टोरी

(Story) सूनी तो उसने कहा कि मैं लैला को बुलाकर देखूँ तो सही कि वह कितनी ख़ूबसूरत है, जो कि मर्द उसके उपर उतना आशिक़ होगया, जब उसने उसको बुलाया तो देखा कि वह तो आम (Story) लड़की की तरह थी तो उसने उससे कहा कि तू इतनी ख़ुबसूरत तो नहीं, तो फ़ारसी में शायर ने उसको यूँ कहा –

कि अज़ दीगर ख़ूबाँ तु अफ़ज़ों नेस्ती
कि तु बाक़ी नाज़नीनों से ज़्यादा ख़ूबसूरत नही
गुफ़त ख़ामोश चूँ तु मज्नूँ नेस्ती

"लैला" ने जवाब दिया ख़ामोश रहो, ये बात तुम इसलिए कर रहे हो कि तुम मजनूँ नहीं हो। मेरा हुस्न देखने के लिए मजनूँ की आँख चाहिए।

नज़र का ज़ाविया बदलें

तो बात तो उसने बहुत सच्ची की कि मजनूँ की आँख से अगर बीवी को देखो, तो बीवी "लैला" नज़र आएगी, फिर बीवी मिस युनिवर्स (Miss Universe) आलिमी हसीना नज़र आएगी, फिर बीवी कायनात की सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत और अज़ीम हस्ती नज़र आएगी, आँख में मुहब्बत होनी चाहिए, इसलिए शरीअत कहती है कि मुहब्बत एक देसरे के साथ हो तो फिर ऐब पत्ले होजाते हैं।

एक मर्तबा मज्नूँ को उसके बाप ने कहा! बेटा तेरी वजह से मेरी बहुत बदनामी हुई चल मैं तुझे "हरम" ले जाता हुँ, तु वहाँ चलके तौबा कर, ताकि ये सब बदनामियाँ ख़त्म होजाएँ, तो मज्नूँ अपने वालिद के साथ "हरम शरीफ़" चला गया, बाप साथ खड़ा है ग़िलाफ़े काबा पकड़ कर मज्नूँ ने दुआ मांगनी शुरु करदी, वालिद ने तो ये कहा था कि दुआ मांग! और लैला की मुहब्बत से हमेशा के लिए जान छुड़ा, तो मज्नूँ ने ग़िलाफ़े काबा पकड़ के दुआ मांगी, اِلٰهِی تُبْتُ مِنْ كُلِّ الْمَعَاصِیْ

ऐ अल्लाह! मैं हर गुनाह से तौबा करता हुँ

और साथ ये भी कहा कि– لَیْلٰی لَا اَتُوْبُ وَلٰكِنْ مِنْ حُبِّ

मगर "लैला" की मुहब्बत से तौबा नही करता

اِلٰهِیْ لَا تَسْلُبْنِیْ حُبَّهَا اَبَدًا

ऐ अल्लाह! इस की मुहब्बत कभी मेरे दिल से न निकालना

وَيَرْحَمُ اللهُ مَنْ قَالَ اٰمِيْنًا

और जो मेरी दुआ पर आमीन कह दे उस बन्दे के गुनाह भी माफ़ करदे

तो जब मोहब्बत होती है, तो इन्सान की आँख कुछ और देखती है, शरीअत ने हमें ये कहा कि मियाँ-बीवी एक दूसरे को मज्नूँ और लैला की आँख से देखें तो ग़लतियाँ, कोताहियाँ नज़र ही नहीं आएँगी, और एक दूसरे के साथ अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारेगी।

औरत को बाएँ पस्ली से पैदा करने की हिक्मत

हदीसे मुबारक में आता है कि अल्लाह रब्बुल्इज़्ज़त ने अम्मा हव्वा को आदम (अलैहि॰) की बाएँ पस्ली से पैदा किया, अल्लाहु अक्बर! यहाँ नुक्ता की बात ये है कि सर से नहीं बनाया कि इसको सर पे न बिठा लेना और पाँव से नही बनाया कि इसको पाँव की जूती न समझ लेना, अल्लाह ने बाएँ पस्ली से औरत को बनाया कि ये तुम्हारे दिल के क़रीब रहे और तुम इसके साथ मोहब्बत भरी ज़िन्दगी गुज़ारो, इसलिए कहते हैं।

True love does not consist of holding hands it Consists of holding the hearts together.

सच्ची मोहब्बत हाथ को मिलाने पर मुशतमिल नहीं होती बल्कि दिल से दिल को मिलाने पर होती है। दिल जुड़ते है तो घर आबाद होजाते हैं, जिस तरह ईंटे जुड़ती हैं तो मकान बन जाते हैं।

शरीअत का उसूल

फिर शरीअत ने एक और उसूल बनाया

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ (النساء:٣٤)

कि अल्लाह ने घर के अन्दर मर्द को क़व्वाम बनाया है, अमीर बनाया है जिस तरह एक ऑफ़िस हो, चन्द बन्दे काम करते हों तो एक को मनेजर बना देते हैं तो शरीअत ने भी मर्द को घर का मनेजर बना दिया, और बीवी को कहा कि तुम इसकी मातिहत हो, इसकी बात मान

कर चलोगी तो तुम्हारी ज़िन्दगी में बरकतें होंगी, आज घरों में एक बड़ी ग़ल्ती ये भी होती है कि औरत चाहती है कि हुकूमत मेरी हो, बात मेरी चले, ख़ाविन्द मेरी उंगलियों के इशारों पर नाचे, ये एक बहुत बेवक़ूफ़ी वाली सोच है जिस को रब ने ज़िम्मेदार बनाया तो बरकतें अब उसी के साथे हैं इसलिए एक दूसरे के साथ आर्गोमेन्टस (Arguments) दलील बाज़ी करना, अपनी बरतरी को साबित करने की कोशिश करना कि मेरे फ़ैसले ज़्यादा बेहतर होते हैं, मैं ज़्यादा पढ़ी लिखी हूँ, मैं ज़्यादा अच्छी हूँ, मेरा आई क्यू लेविल (I.Q. Level) ऐसा है, ये सब बेवक़ूफ़ी की बातें हैं, आप सब कुछ हो मगर मर्द आप का अमीर है और मामूर की कामियाबी अमीर की इताअत में होती है, अल्लाह तआला तो ये देखेंगे कि तुम ने ख़ाविन्द की नाफ़रमांबरदारी कितनी की? इसलिए

Life is short] don't make it shorter by arguments.

ज़िन्दगी मुख़्तसर है, बहस व मुबाहिसह (कठ-हुज्जती) करके ज़िनदगी को और मुख़्तसर न बनाएँ।

क्या ज़रुरत है झगड़ों में पड़ने की? पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारें।

हज़रत रमल्ला का हकीमाना तर्ज़े-अमल

एक वाक़िआ सुन लीजिए! ख़ालिद (रज़ि॰) एक सहाबी हैं, उनकी बीवी का नाम है "रमल्ला" और यह रमल्ला, हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) की बेटी थीं, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) की बहन थीं, हज्रत सिद्दीक़ अकबर (रज़ि॰) की बेटी अस्मा (रज़ि॰) की बेटी थी, चुनांचि रमल्ला और ख़ाविन्द अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, मगर उनके ख़ाविन्द ख़ालिद (रज़ि॰) को अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) से कोई रंजिश थी, वह कहते हैं कि इसकी तबीयत में सख़्ती ज़्यादा है, ये दूसरे बन्दे की बात को वज़न नहीं देते, चनांचि एक मौक़ा पर घर में दोनों एकट्ठा थे, यानी ख़ालिद (रज़ि॰) भी थे और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) भी आगए, तो दोनों में कुछ बात हुई तो ख़ालिद (रज़ि॰) ने कुछ ग़ुस्से से अपने जज़्बात का इज़्हार कर दिया, अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ने जवाब भी दिया तो गोया दो मर्दों के दर्मियान कुछ (Hot words) सख़्त अल्फ़ाज़ से गुफ़तगु हुई, रमल्ला ख़ामोशी के साथ एक तरफ़ बैठी रहीं, जब तब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर

(रज़ि०) चले गए तो ख़ाविन्द ने बीवी को कहा, तुम्हारा ख़ाविन्द और तुम्हारे भाई आपस में बहस कर रहे थे और तुम आराम से एक तरफ़ बैठी रहीं, क्या मंस्ला था? तो रमल्ला ने कहा हम औरतें हैं, अल्लाह ने हमें फूल बनाया है ताकि हमारे ख़ाविन्द हमारी ख़ुशबू से लज़्ज़त उठाएँ, हमें इन झगड़ों में पड़ने की क्या ज़रुरत है? इतना ख़ुबसूरत जवाब था कि ख़ालिद (रज़ि०) उठे और अपनी बीवी के माथे पर बोसा दिया और उनका ग़ुस्सा ही ख़त्म होगया।

तो औरतों को तो इन झगड़ों में और इन चीज़ों में पड़ने की ज़रुरत ही नहीं है ख़ाविन्द का दिल जीतें, मुहब्बतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारें और अल्लाह की मक़बूल बन्दी बन कर वक्त गुज़ारें।

औरत के लिए अल्लाह और रसूल की सिफ़ारिश

क़ुरआन मजीद पर नज़र दौड़ाएँ तो क़ुरआन मजीद ने एक और खुबसूरत उसूल बताया, फ़रमायाः (وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ) कि ख़ाविन्द! तुम अपनी बीवी के साथ अच्छे सुलूक की ज़िन्दगी गुज़ारो, मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने बीवियों की सिफ़ारिश की है ख़ाविन्दों को और नबी (अलैहि०) ने भी सिफ़ारिश फ़रमाई, इसलिए हदीस पाक में आता है कि नबी (अलैहि०) फ़रमाया (وَمَامَلَكَتْ اَيْمَانُكُم) अपने मातहतों का ख़्याल रखना और मातहतों में बीवी का सबसे पलले नम्बर होता है तो गोया बीवी का सबसे पहला नम्बर होता है तो गोया बीवी के लिए दो बड़ी बड़ी सिफ़ारिशे हैं, एक अल्लाह की सिफ़ारिश है और एक रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सिफ़ारिश है। अब जिसके दिल में अल्लाह की क़द्र है, नबी (अलैहि०) की क़द्र है, वह तो इस सिफ़ारिश का ख़्याल रखेगा, और उसकी वजह से अपनी बीवी को बहुत मुहब्बतें देगा। बहुत प्यार से रखेगा, हर वक्त की डांट-डपट, हर वक्त की सख़्ती, हर वक्त बे-रुख़ी की बातें, वह कभी भी ऐसा नही करेगा, बल्कि मुहब्बत प्यार से रखेगा कि मेरे मालिक ने भी सिफ़ारिश की और मेरे आक़ा भी सिफ़ारिश की और जो आज इस सिफ़ारिश का लिहाज़ नहीं करेगा, कल क़ियामत के दिन अल्लाह की रहमत का वह हिस्सा नहीं पासकेगा कि मेरे बन्दे! तुमने मेरी सिफ़ारिश का दुनिया में लिहाज़ न किया, अब मैं तुम्हारे साथ नर्मी का मामला क्यों करूँ?

बीवी को माफ़ करने पर अल्लाह की माफ़ी

हज़रत थानवी (रह.) ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक बन्दे की बीवी से बड़ी ग़लती होगई, चाहता तो तलाक़ दे देता, घर भेज देता मगर उसने देखा कि बीवी बहुत ज़्यादा (Repent) तौबा कर रही है तो उसने उसको अल्लाह के लिए माफ़ कर दिया, कुछ अर्से के बाद ख़ाविन्द की वफ़ात हुई, ख़्वाब में किसी ने देखा तो पूछा कया हुवा? तो उसने कहा कि अल्लाह के हुज़ूर पेशी हुई, अल्लाह रब्बुल-इ़ज़्ज़त ने फ़रमायाः तुने अपनी बीवी को मेरी बन्दी समझ कर माफ़ किया था, आज मैं तुम्हें अपना बन्दा समझके माफ़ कर देता हुँ, तो हम एक दूसरे की ग़लतियों से दर्गुज़र करेंगे, इसके बदले अल्लाह हमारी ग़लतियों से दर्गुज़र फ़रमाएँगे।

कामियाब वैवाहिक ज़िन्दगी का राज़

तो कामियाब वैवाहिक ज़िन्दगी के लिए दो नुक्ते की बातें ज़रा ज़िहन में रख लेनाः

एक तो ये कि शादी के बाद मियाँ-बीवी को अपनी एक लैंगुएज (Language) इस्लाह डिवलेप्मेंट (Develop) तैयार कर लेना चहिए, इसको कहते हैं लैंगुएज ऑफ़ मैरिज (Language of Marriage) शादी की ज़बान, एक दूसरे को मोहब्बत की नज़रों से देखना, मुस्कुराकर देखना, प्यार भरे लफ़्ज़ एक दूसरे को एक्सचेंज (Exchange) अदल-बदल करना, इशारे करना, ये सब के सब मिल मिलाकर एक लैंगुएज (Language) बनती है जिसको लैंगुएज ऑफ़ मैरिज कहते हैं, जिस मियाँ-बीवी के दर्मियान ये लैंगुएज (Language) डिव्लेप (Develope) नहीं हुई इनकी ज़िन्दगी कभी पुरसूकून नहीं गुज़र सकती, तो एक तो मियाँ-बीवी मैरिज (Marriage) की लैंगुएज (Language) को डिव्लेप (Develop) करें यानी बढ़ाएँ, इशारे किनाए हों, मियाँ-बीवी के इशारे किनाए तो होते हैं कि शायर ने लिख दिया—

मियाँने आशिक़ व माशुक़ रम्ज़ेस्त
किरामन कातिबीन रा हम ख़बर नेस्त

कि मियाँ-बीवी के दर्मियान ऐसे इशारे होते हैं कि फ़रिश्तों को भी पता नहीं चलता है, वह मैसिज पास ऑन (Message Pass on) कर जाते हैं तो एक तो इस लैंगुएज का डिवलेप होना ज़रुरी है।

दूसरा जैसे आप मुख़्तलिफ़ मज़मून स्कूल में पढ़ती हैं, साईंस का मज़मून, कैमिस्ट्री का मज़मून, फ़िज़िक्स का मज़मून, तो आज आप को एक मज़मून पढ़ाएँ जिसको कहते हैं अर्थमेटिक ऑफ़ मैरिज (Airthmetic of marriage) यानी शादी का हिन्सा है, इस हिन्सा का क़ानून क्या है? कि वन पलस वन इज़ एविरीथिंग (One plus one is everything) यानी मियाँ और बीवी दोनों एकट्ठे हैं तो सब कुछ है, और टू माइनेस वन इज़ नथिंग (Two minus one is nothing) यानी अगर दो हैं, मगर एक को अलग करदें तो पीछे कुछ भी नहीं बचता तो ये अर्थमेटिक का हिसाब जो है उसको याद करलें।

वन पलस वन इज़ एविरीथिंग
(One plus one is everything)
एक जमा एक यानी आप सब कुछ हैं
और टू माइनस वन इज़ नथिंग
(Two minus one is nothing)
दोनों में से एक नहीं, तो (आप) कुछ भी नहीं

नेकी का मिक़नातिस इख़्तियार करें

ये उसूल याद रखना कि जो ख़ुदा का फ़रमांबरदार नहीं, वह बन्दों का फ़रमांबरदार कभी नहीं बन सकता, इसी लिए जो ख़ाविन्द नेक नहीं होते वह बीवियों के सामने झूठ बोलते हैं, सब्ज़ बाग़ दिखाते हैं, उलटे-सीधे बहाने बनाते हैं, अन्धेरे में इसको रखते हैं और क़स्में खाकर कहीं न कही अपनी इन्वालमेंट की यानी दूसरी औरतों से तअलूक़ वाली ज़िन्दगी गुज़ार रहे होते हैं, और जो बीवियाँ नेक नहीं होतीं वह ख़ाविन्द की नाक के नीचे "दीया" जला रही होती हैं। ख़ाविन्द के पास रहते हुए उस से मुनाफ़िक़त कर रही होती हैं, तो अस्ल चीज़ ये है कि हम अल्लाह के बन्दे बनेंगे तो एक दूसरे के साथ भी हम पुरख़लूस ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे।

लिहाज़ा वैवाहिक ज़िन्दगी कामियाब गुज़ारने के लिए दोनों नेक बन जाएँ तो मुहब्बतें गहरी हो जाती हैं, शरीअत ने भी कहा –

وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰاتِ

"वत्तैय्येबातो लित्तैय्येबीना वत्तैय्येबूना लित्तैय्यबाते" औरत उस चीज़ को समझने की कोशिश करे कि नेकी के अन्दर मिक़नातीसियत होती है, जिस तरह मिक़नातीस मज़बूत हो तो लोहे के टुकड़े को खींच कर चिपका लेता है, औरत के अन्दर अगर नेकी होगी तो ख़ाविन्द को वह खींच कर चिपका लेगी, मिक़नातीस बन जाएगी।

यादे ख़ुदा के बग़ैर सकून नहीं

एक उसूल याद रखें कि नो अल्लाह नो पीस (No Allah No Peace) जिनकी ज़िन्दगी में अल्लाह का तसव्वुर नहीं उनकी ज़िन्दगी में सकून नही, वह मन मर्ज़ी करते हैं, नफ़स की इत्तिबाअ वाली ज़िन्दगी गुज़ारते हैं इनकी ज़िन्दगी में अमन आ ही नहीं सकता।

नेकी पर अगर मियाँ-बीवी मुत्तिफ़िक़ हो जाए तो ज़िंदगी पुरसकून गुज़रती है, औरतों को चाहिए कि ख़ूद भी नेक बनें, घर के माहौल को भी नेकी वाला बनाएँ, अपने मियाँ का भी दिल नेकी की तरफ़ खीचलें, जितना वह अल्लाह के क़रीब होता जाएगा उतना अपनी बीवी को भी दिल के क़रीब करता चला जाएगा।

असली हुस्न क्या है?

इसलिए कहने वाले ने कहाः

कि पेशानी बग़ैर झूमर के भी लग सकती है, अगर इस पर सजदों के निशान हों, आँखें बग़ैर सुरमा के ख़ूबसूरत लग सकती हैं अगर इन में हया हो, पलकें बग़ैर मिस्कारा के अच्छी लग सकती हैं अगर शर्म से झुकी हुई हों और क़द उँची एड़ी वाली जूती के बग़ैर भी उँचा हो सकता है अगर इनसान की शख़्सियत में बुलन्दी हो, अपनी शख़्सियत में बुलन्दी पैदा करें, अपने अख़लाक़ व किर्दार के अन्दर अज़मत पेदा करें, ये असल हुस्न है जो पूरी ज़िन्दगी इनसान के पास रहता है। एक शायर के चन्द अश्आर पर :

अगर तुम हुस्न चाहो तो मेरे चेहरे पे मत जाओ
कि चेहरे बुझ भी जाते हैं

मेरी क़ामत को मत देखो
कि क़ामत टूट जाती है

तल्ब है हुस्न की तो फिर
दिल की गहराई में झांको

मेरे अन्दर जो इनसान है
वह सब से ख़ूबसूरत है

कि अन्दर का जो इनसान है जब ये ख़ूबसूरत बन जाता है तो फिर इनसान आपस में भी एक दूसरे के साथ मोहब्बतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारता है और अल्लाह का भी मक़बूल और पसन्दीदा बन जाता है।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

□□□

दिल बदल दे

हवा व हिर्स वाला दिल बदल दे
मेरा ग़फ़लत में डुबा दिल बदल दे

बदल दे दिल की दुनिया दिल बदल दे
खुदाया फ़ज़ल फ़रमा दिल बदल दे

रहुँ बैठा मैं अपना सर झुका कर
नूर अता कर दिल बदल दे

गुनहगारी में कब तक उम्र काटूँ
बदल दे मेरा रस्ता दिल बदल दे

सुन्नतों में नाम तेरा धड़कनों में
मज़ा आजाए मौला दिल बदल दे

सहल फ़रमा मुसलसल याद अपनी
खुदाया रहम फ़रमा दिल बदल दे

ये कैसा दिल है सीने में इलाही
जो ज़िन्दा भी है मुर्दा दिल बदल दे

तेरा हो जाउँ इतनी आरज़ू है
बस इतनी है तमन्ना दिल बदल दे

□□□

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ

((व आशिरुहुन्ना बिल-मअरुफ़े))

वैवाहिक ज़िन्दगी

हदीसे मुबारका की रौशनी में

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुल्फ़िक़ार अहमद साहब
नक़्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

फ़ेहरिस्त अनावीन

अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह!

इक़्तिबास

प्यार भरा जवाब

चुनांचि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः आयशा मुझे पता चल जाता है तुम मुझसे जब ख़ुश होती हो या नाराज़ हाती हो, ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) कैसे पता चल जाता है? फ़रमाया जब ख़ुश होती हो तो कहती हो "لا ورب محمد" और जब नाराज़ होती हो तो कहती हो "لا ورب ابراهيم. قلت" मैंने कहा "ما هجرت إلا اسمك" ऐ अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) मैं सिर्फ़ आपका नाम लेना छोड़ती हुँ, आपको तो नहीं छोड़ देती, सुब्हान अल्लाह।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलिफ़क़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ۔ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ

الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ)

وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ، وَاَنَا خَيْرُكُمْ لِاَهْلِيْ۔ سُبْحَانَ رَبِّكَ

رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ۔ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

बिस्मिल्लाह

अल्हम्दुलिल्लाहि व कफ़ा व सलामुन अला इबादिहिल्लज़ी-नस्तफ़ा अम्माबअद अउज़ो बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रहमनिर्रहीम

(व आशिरोहुन्ना बिलमअरुफ़)

व क़ाला रसूलुल्लाह (सल्ल.) : ख़ैरु-कुम ख़ैरु-कुम लिअहलिहि, व अना ख़ैरिकुम लिअहलि, सुब्हान रब्बि-का रब्बिल-इज़्ज़ते अम्मा यसिफ़ुन। व सलामुन अललमुर्सिलीन वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलिमीन

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मोहम्मदिंव-व अला आलि सय्यदिना मोहम्मदिंव-व बारिक व सल्लिम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मोहम्मदिंव-व अला आलि सय्यदिना मोहम्मदिंव-व बारिक व सल्लिम

अल्लहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मोहम्मदिंव-व अला आलि सय्यदिना मोहम्मदिंव-व बारिक व सल्लिम

सख़्त मिज़ाजी का तअलुक़ शरीअत से नहीं

आज की मजलिस का उनवान है "वैवाहिक ज़िन्दगी अहादीसे-मुबारि-का की रौशनी में" अक्सर औरतों में ये ग़लत फ़हमी होती है कि जो लोग दीनदार बन जाते हैं वह बहुत सख़्त तबीअत के होजाते हैं, रफ़

ऐन्ड टफ़ (Rough and Tough) हो जाते हैं, इन की तबीअत के अन्दर इस्तिक़ामत नहीं रहती, बात बात पर ग़ुस्सा करते हैं, डांट डपट करते हैं, घर के माहौल को उन्होंनें बहुत ज़्यादा मुश्किल बना दिया होता है, तो ये सौ फ़ीसद ग़लतफ़हमी है इसका तअल्लुक़ तबीअत से है शरीअत से नही है।

अगर कोई बन्दा ऐसा कर रहा है तो अपनी तबीअत की वजह से कर रहा है, शरीअत की वजह से नहीं, पाँच अंगुलियाँ बराबर नहीं होतीं अगर ज़ाहिर में दीनी ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बअज़ लोग घर के अन्दर इस तरह की बद अख़्लाक़ी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं तो ऐसी मिसालें भी बहुत कसरत के साथ मिलती हैं कि जो लोग दीनदार हैं वह अपने घर में मोहब्बत व प्यार और हुस्न अख़्लाक़ की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

चुनांचि अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) की तअलीमात सुनिएः ये वह हस्ती हैं कि जिन्होंने जन्नत और जहन्नम को आँखों से देखा, इन के दिल पर रब्बुलइज़्ज़त के ख़ौफ़ की जो कैफ़ियत थी किसी और के दिल में नहीं हो सकती, नबी करीम (सल्ल॰) ने फ़रमायाः मैं तुम में सब से ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला हुँ। मगर आप (सल्ल॰) घर के अन्दर मोहब्बत व प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारते थे और इसी की तअलीम देते थे, ये वह माहौल था जब औरत की कोई इज़्ज़त नहीं थी इसे पॉव की जूती भी नहीं समझा जाता था, इस का घर में पैदा होना ही आर समझा जाता था और बेटियों को ज़िन्दा दफ़न कर दिया जाता था, इस वक्त में मोहिसने-इनसानियत अल्लाह के प्यारे महबूब (सल्ल॰) ने मर्दों को जो तअलीमात दी वह तअलीमात अनमोल हैं।

इरशादाते नब्वी में फ़रमाँबरदार औरत का मक़ाम

चुनांचि नबी (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमायाः

"اَلدُّنْيَا كُلُّهَا مَتَاعٌ وَخَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا اَلْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ"

अद्दुन्या कुल्लुहा म-ताउं व ख़ैरु म-ताइद्दुनिया अलमर-आतु-स्सालिहा

कि सारी दुन्या मताअ (फ़ायदा उठाने की चीज़) है और बेहतरीन मताअ नेक बीवी है।

एक दूसरी हदीस में नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः

"اَلْمَرْأَةُ إِذَا صَلَّتْ خَمْسَهَا وَصَامَتْ شَهْرَهَا وَاَحْصَنَتْ فَرْجَهَا وَاَطَاعَتْ بَعْلَهَا اَیَّ زَوْجَهَا فَلْتَدْخُلْ مِنْ اَیِّ بَابِ الْجَنَّةِ شَاءَتْ۔"

(अल-मर-आतु इज़ा सल्लत ख़म-सहा व सामत शह-रहा व अह-स-नत फ़रजहा व अता-अत बअ-लहा ऐय ज़ौ-जहा फ़ल-तदख़ुल।)

जो औरत पाँच नमाज़ें पढ़े, रोज़े रखे, अपने नामूस की हिफ़ाज़त करे, ख़ाविद की फ़रमाँबरदारी करे तो वह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहेगी जन्नत में दाख़िल हो जाएगी।

अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

"يَسْتَغْفِرُ لِلْمَرْأَةِ الْمُطِيْعَةِ لِزَوْجِهَا الطَّيْرُ فِي الْهَوَاءِ وَالْحِيْتَانُ فِي الْمَاءِ وَالْمَلٰئِكَةُ فِي السَّمَاءِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ مَا دَامَتْ فِيْ رِضٰى زَوْجِهَا۔"

यसतग़फ़िरु लिल-मर-आतिल-मुति-अति लिज़ौजि-हत्तैरु फ़िल-हवाए वलहीतानो फ़िल-माए वल-मलाए-कतो फ़िस-समाए वश्शमसो वल-क़-म-रु मा दाम-त फ़ी रिज़ा ज़ौजि-हा।

जो बीवी अपने ख़ाविन्द की फ़रमांबरदार होती है उसके लिए हवा में परिन्दे इस्तिग़फ़ार करते हैं और मछिलयाँ पानी में इस्तिग़फ़ार करती हैं, फ़रिश्ते आसमान में इनके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं हत्ताकि सूरज और चाँद भी इस्तिग़फ़ार करते हैं जब तक वह अपने ख़ाविन्द को ख़ुश रखती है।

फ़रमाया जिस बन्दे को चार चीज़े मिल गईं उसको दुनिया की सब नेअमतें मिल गईं।

(1) शुक्र करने वाला दिल
(2) ज़िक्र करने वाली ज़बान
(3) मशक़्क़त उठाने वाला बदन
(4) और नेक बीवी।

इसी तरह नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि ख़ाविन्द की इताअत करना ये औरत के लिए अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त के यहाँ क़बुलियत का सबब है, एक सहाबिया ने निकाह किया और नबी (सल्ल॰) की ख़िदमत में हाज़िर

हुए, महबूब (सल्ल॰) ने फ़रमायाः فَانْظُرِيْ أَيْنَ أَنْتِ مِنْهُ فَإِنَّهُ هُوَ جَنَّتُكِ وَنَارُكِ देखना कि तेरा मामला मियाँ के साथ कैसा है? इसलिए कि वह तेरी जन्नत है या तेरी दोज़ख़ है, गोया इसको राज़ी करलोगी तो जन्नत में जाओगी और नाराज़ करलोगी तो जहन्नम में जाओगी।

एक हदीस पाक में नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः पक्का मोमिन वह है जिस का किरदार अच्छा हो और जो बीवी पर महरबान है।

एक हदीस पाक में नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः अगर ग़ैरे अल्लाह को सजदा करने की इजाज़त होती तो मैं बीवी को हुक्म देता कि ख़ाविन्द को सजदा करे।

मुआज़ बिन जबल (रज़ि॰) की एक रिवायत में नबी (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया :

لَوْتَعْلَمِ الْمَرْأَةُ حَقَّ الزَّوْجِ مَاقَعَدَتْ مَاحَضَرَ غَدَاءٌ وَعَشَاءٌ حَتّٰى يَفْرُغَ مِنْهُ

(लौ तअ-ल-मिलमरआतु हक़्क़ज़-ज़ौ-ज मा क़अ-दा मा ह-ज़-र ग़दाअं व अशाअं हत्ता यफ़रु-ग मिनहु।)

अगर बीवी को मालूम हो जाता है कि ख़ाविन्द का हक़ क्या है तो जब तक ख़ाविन्द दोपहर का खाना और रात का खाना न खा लेता वह हरगिज़ न बैठती बल्कि खड़ी ही रहती, इससे अन्दाज़ा हुवा कि ख़ाविन्द खाने के लिए बैठे तो उसको पानी देना, दूसरी ज़रुरियात की चीज़ पहुँचाना, इनकी अहमियत अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) की नज़र में कितनी है, फ़रमाया कि औरत बैठती ही नहीं वह खड़े होकर इन्तिज़ार करती कि शायद मेरे ख़ाविन्द को किसी और चीज़ की ज़रुरत पड़ जाए।

मर्दों को हुस्न सलूक की ताकीद

अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) ने ज़िन्दगी गुज़ारने के क्या खुबसूरत तरीक़े बताए, चुनांचि फ़रमाया : *इस्तौसो बिन-निसाए ख़ैरन* नबी (सल्ल॰) ने वसीयत फ़रमाइ कि औरतों के साथ भलाई का मामला करो।

एक हदीस पाक में नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः *ख़ियारुकुम लिनिसाए कुम,* तुम में से बेहतर वह है जो घर में औरतों के लिए बेहतर है।

तो इनसान की अच्छाई का अन्दाज़ा इस की तिजारत से नहीं लगाएंगे, इसके दोस्तों की महफ़िल से नहीं लगाएंगे बल्कि देखा जाएगा कि घर में इसका मामला कैसा है।

नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः يَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا وَسَكِّنُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا आसानियाँ करो, तंगी न करो घर के अन्दर सकीना का माहौल पैदा करो और एक दूसरे के साथ नफ़रतें न करो।

अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) ने फ़रमायाः خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِأَهْلِهٖ وَأَنَا خَيْرُكُمْ لِأَهْلِيْ तुम में सब से बेहतर वह है जो तुम में से अपने अहले-ख़ाना के लिए बेहतर है और मैं तुम में से सबसे ज़्यादा अपने अहले-ख़ाना के लिए बेहतर हुँ।

क़ुरबान जाए उस अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) पर कि जिन्होंने अपनी मिसाल देकर बतलाया कि लोगो! सिर्फ़ बातों का मामला नहीं, मैं अगर तुमहें तालीम दे रहा हूँ तो मैं तुम में से सबसे बेहतर मिसाल बनकर ज़िन्दगी भी गुज़ार रहा हुँ।

हदीस पाक में नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः इन्सान जो ख़र्च करता है वह सदक़ा होता है जो बीवी बच्चों पर ख़र्च करता है वह बहतरीन सदक़ा होता है।

आप (सल्ल॰) की घरेलू ज़िन्दगी का बहतरीन नमूना

आइये हदीस पाक के आएने में देखें कि एक ख़ाविन्द को अपने घर के अन्दर किस तरह रहना चाहिए।

नबी (सल्ल॰) जब घर तशरीफ़ लाते थे तो सलाम करते थे, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

"فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبَارَكَةً طَيِّبَةً"

(फ़-इज़ा द-ख़लतुम बुयोतन फ़सल्लिमो अला अन्फ़ोसिकुम तहिय्यतम-मिन इन्दिल्लाहि मुबा-र-कतन तैय्यबतं।)

जब तुम घर में दाख़िल हो तो सलाम करो ये तुम्हारे लिए बरकत वाली बात होगी, चुनांचि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

"يَابُنَيَّ إِذَا دَخَلْتَ عَلَى أَهْلِكَ فَسَلِّمْ، يَكُنْ بَرَكَةٌ عَلَيْكَ وَعَلَى أَهْلِ بَيْتِكَ"

या बुनय्या इज़ा दख़ल्ता अला अहलि-क फ़सल्लिम, यकुन ब-रक-तन अलैका व अला अहलि बैति-क

जब तू अपने अहले-ख़ाना के पास दाख़िल हो तो उनको सलाम कर, ये सलाम करना तुमहारे लिए और तुम्हारे अहले-ख़ाना के लिए बरकत का सबब होगा। एक और जगह नबी (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमायाः

"مَنْ دَخَلَ بَيْتَهُ بِسَلَامٍ فَهُوَ ضَامِنٌ عَلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ"

मन द-ख़-ल बै-तहु बिसलामिं फ़-हो-व ज़ामिनुन अलल्लाहि अज़्ज़ा व जल्ला' कि जो घर में दाख़िल होकर सलाम करता है वह अल्लाह की ज़मानत में आजाता है।

अब ग़ौर कीजिए! कि ख़ाविन्द जब घर में आकर सलाम करता है तो अल्लाह के हबीब (सल्ल०) बरकतों की ख़ुशख़बरी अता फ़रमाता है।

मुसकुराते हुए घर में दाख़िल होना

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) फ़रमाती हैं, नबी (सल्ल०) जब घर आते तो मुसकुराते चेहरे के साथ दाख़िल होते, अहले-ख़ाना को सलाम फ़रमाते थे, बल्कि अबू शेख़ ने हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रवायत की है कि जो बन्दा अपने घर के अन्दर ख़ुशी को डालता है यानी अहले-ख़ाना का दिल ख़ुश करता है तो उस ख़ुशी से एक फ़रिश्ता पैदा किया जाता है जो उस बन्दे के लिए क़यामत तक की दुआ करता रहता है।

एक हदीस मुबारक में है कि नबी (सल्ल०) घर तशरीफ़ लाते थे तो सबसे पहले मिस्वाक फ़रमाते थे यानी फ़र्ज़ करो कि अगर बाहर इन्सान ने कोई ऐसी चीज़ खाली जिस की वजह से मुँह में बदबू पैदा होगई हो तो वह घर आए तो सब से पहले अपना साफ़ करे, इस में हिक्मत ये है कि घर आकर इन्सान अपनी अहलिया को मिलता है मुमकिन है कि प्यार करे, बोसा ले तो ऐसा न हो कि मुँह से बदबू आए, चुनांचि सरीह फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत आइशा (रज़ि०) से पूछा "बेअय्ये शैइन काना यब-द-ओ रसूलूल्लाह इज़ा द-ख़-ल बै-त-ह" कि नबी (सल्ल०) जब घर

तशरीफ़ लाते थे तो पहला काम किया करते थे? "क़ालतः बिस्सिवाक" कहा कि नबी (सल्ल॰) मिस्वाक करते थे, मुँह को साफ़ फ़रमाते थे, तो मुँह को साफ़ करने के बाद अहलिया से मोहब्बत का इज़हार फ़रमाते थे, हत्ता कि आइशा (रज़ि॰) तो फ़रमाती हैं कि

"كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُقَبِّلُ اِحْدٰى نِسَائِهٖ وَهُوَصَائِمٌ ثُمَّ تَضْحَكُ"

का-न रसूलुल्लाह (सल्ल॰) योक़ब्बिलो एहदा निसाएहि व हुवासाएमुन सुम्मा तज़-ह-क

नबी (सल्ल॰) ने तो रोज़े की हालत में भी अपनी बीवी को बोसा दिया फिर ये कह कर वह हंस पड़े, तो आम हालात में फ़ुक़हा ने लिखा है कि आम आदमी इस से परहेज़ करे इसकी वजह ये है कि आम आदमी को अपने आप पर इतना क़ाबू नहीं होता तो ऐसा न हो कि शैतान काम को आगे बढ़ादे और रोज़े में ख़लल वाक़ि हो जाए, तो फ़ुक़हा ने अहतियात बताई मगर अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) ने समझा दिया कि देखो! बीवी के साथ मोहब्बत व प्यार के साथ रहने में ये चीज़ भी रुकावट नहीं।

घर वालों के साथ दिल लगी करना

चुनांचि नबी (सल्ल॰) अपने घरवालों के साथ दिल लगी करते थे, अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) ने फ़रमायाः कि मुसलमान आदमी जो भी लहू-व-लअब का काम करता है वह मना है सिवाए चन्द कामों केः एक तीरअन्दाज़ी करना, दूसरा घोड़े को सिधाना और तीसरा बीवी के साथ मोहब्बत व प्यार करना, ये बातें ठीक हैं।

नबी ने एक सहाबी से पूछा कि तुमने निकाह किया तो सय्यबा से किया या कुँवारी से किया? ऐ अल्लाह के हबीब मैं ने सय्यबा से किया, फ़रमायाः فَهَلَّا تَزَوَّجْتَ بِكْرًا تُضَاحِكُكَ وَتُضَاحِكُهَا وَتُلَاعِبُكَ وَتُلَاعِبُهَا कि कुँवारी से करता, ताकि वह तेरे साथ हंसती और तू उसके साथ हंसता, वह तेरे साथ खेल करती तू उसके साथ खेल करता, गोया अल्लाह के हबीब समझा रहे हैं कि मक़सद ही यही है कि इनसान मोहब्बत व प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारे।

मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है कि رُبَّمَا مَدَّيَدَهُ إِلَى بَعْضِ نِسَاءِهٖ فِي حَضْرَةِ بَاقِيْهِنَّ कि अगरचि और बीवियाँ मौजूद होती थीं मगर आप प्यार से किसी एक बीवी को हाथ लगा लिया करते थे तो घर में टेन्शन (Tension) का माहौल, सख़्ती का माहोल और इस तरह कर देना कि एक दूसरे के साथ बात करते हुए कोई घबराए ये मुनासिब नहीं है, इस का तअल्लुक़ तबीअत के साथ है शरीअत के साथ नहीं है।

घर वालों को मुहब्बत भरे नाम से पुकारना

नबी (सल्ल॰) अपने अहले ख़ाना को जब बुलाते थे तो मोहब्बत के लफ़्ज़ बोलते थे, नाम भी प्यार से लेते थे। हज़रत आइशा (रज़ि॰) का नाम आइशा था मगर नबी (सल्ल॰) तरख़ीम के साथ फ़रमाते थेः मा-ल-कि या आइश। एक मरतबा नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः या आइशु! हाज़ा जिब्राइलो "युक़रिउकि अस्सलाम" ये जिब्राइल हैं और तुम्हें सलाम कह रहे हैं। नबी (सल्ल॰) हज़रत आइशा (रज़ि॰) को "हुमैरा" फ़रमाते थे, हुमैरा का मतलब होता है वह औरत जिस का चेहरा सफ़ेद भी और सुर्ख़ भी हो। हमारी ज़बान में इसको पिंकी (Pinky) कह देते हैं और अरबी ज़बान में अहमर से हुमैरो कहते हैं तो इन्सान पिंकी कहे या रोज़ी (Rosy) कहे इस क़िस्म का मुहब्बत भरा नाम अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) की मुबारक सुन्नत है।

घरेलू काम-काज में हाथ बटाना

फिर अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) घर में तशरीफ़ लाकर एक सरदार बन कर बैठ नहीं जाते थे बल्कि घर के कामों में दिलचस्पी लेते थे। हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं जब उनसे पूछा गया है कि "مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْنَعُ فِي أَهْلِهٖ" नबी (सल्ल॰) घर तशरीफ़ लाते थे तो क्या करते थे? قَالَتْ: كَانَ فِي مِهْنَةِ أَهْلِهٖ फ़रमाया कि वह अपने अहले-ख़ाना के कामों में लगे रहते थे। "فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ قَامَ إِلَى الصَّلَاةِ" नमाज़ का वक्त आता था तो अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) नमाज़ के लिए उठ खड़े होते थे।

हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि नबी (सल्ल॰) घर तशरीफ़

लाते थे "مَا كَانَ إِلَّا بَشَرًا يَفْلِي ثَوْبَهُ وَيَحْلِبُ شَاتَهُ وَيَخْدِمُ نَفْسَهُ" नबी (सल्ल०) कपड़े को साफ़ फ़रमाते थे, बकरी का दूध निकालते थे और अपने आप की ख़िदमत करते थे, नाख़ुन काटना, मोंछें काटना, नहाना और ऐसा कोई काम जिसको (Personal Maintenance) कहते हैं इसको फ़रमाया: "यख़्-दिमो नफ़सहु" हज़रत उरवा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि "यख़ीतु सौ-बहु व यख़्-सिफ़ु नअलहु" नबी (सल्ल०) अपने कपड़े को ख़ुद सी लेते थे और अपने जूते की ख़ुद मरम्मत फ़रमाते थे। ये कायनात के सरदार हैं, ये फ़रिशतों के सरदार हैं, ये अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त के महबूबे हक़ीक़ी हैं, अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त के महबूब (सल्ल०) का घर के अन्दर रहना कितना मोहब्बत व प्यार वाला है, चुनांचि आप अहले-ख़ाना के साथ क़रीब की मोहब्बत की प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारते थे।

मोहब्बत इज़हार चाहती है

आप ने ये हदीस मुबारक सुनी कि नबी (सल्ल०) एक मरतबा घर के अन्दर थे और दीवार से मस्जिद की तरफ़ देख रहे थे और आप के साथ हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) भी आकर खड़ी हो गईं और मस्जिद के सहन में कुछ लोग थे जो खेल रहे थे वह उन को देखती रहीं हत्ताकि वह थक गईं, अब ये रिवायत तो आम है लगता है कि हज़रत आइशा (रज़ि०) ने आम बात ही तो सुनी लेकिन अन्दर ख़ाना बात क्या थी वह एक हदीसे मुबारक में उन्होंने खोल दी, फ़रमाती हैं: فَقَامَ بِالْبَابِ नबी (सल्ल०) दरवाज़े के पास खड़े थे व-जितुहु मैं आई فَوَضَعْتُ ذَقَنِي عَلَى عَاتِقِهِ मैंने अपनी थूड़ी नबी (सल्ल०) के कन्धे के उपर रखदी فَأَسْنَدْتُ وَجْهِي إِلَى خَدِّهِ फिर मैंने अपना चेहरा नबी (सल्ल०) के रुख़सार के साथ लगा दिया, अब मालूम यह हुवा कि वह फ़क़त खेल नहीं देख रहीं थी बल्कि उस मोक़अ पर वह अपने रुख़सार को नबी (सल्ल०) के मुबारक रुख़सार के साथ लगाकर खड़ी थीं। नबी (सल्ल०) ने पूछा आइशा! अब चलें यहाँ से? तो अर्ज़ किया या रसूलुल्लाहि ला तअजल ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल०) जल्दी न कीजिए। फिर कुछ देर के बाद नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बस करें? फिर ला तअजल ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल०) जल्दी न करें।

मालूम हुवा कि औरत को भी चाहिए कि वह ऐसे मवाक़ेअ ढूंडे कि जिस में वह अपने मियाँ के क़रीब हो, मोहब्बत का इज़हार हो, दोनों का एक दूसरे के साथ प्यार मोहब्बत का वक्त गुज़रे, औरत भी ऐसा चाहे, मर्द भी ऐसा करे।

चुनांचि एक मर्तबा हज़रत आइशा (रज़ि०) प्याले से पानी पी रही थीं, नबी (सल्ल०) तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : आइशा! पानी मेरे लिए भी बचा देना, मोहब्बत इज़हार चाहती है। आप (सल्ल०) चाहते तो हुक्म फ़रमादेते आप के लिए ठन्डे पानी के मटके पहुँचा दिए जाते मगर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया आइशा! मेरे लिए पानी बचा देना, बीवी का बचा हुआ पानी? जबकि बरकतें तो अल्लाह के महबूब (सल्ल०) के पास थीं, हाँ, मोहब्बत का इज़हार है, तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमायाः पानी बचा देना, फ़रमाती हैंः मैंने बचा दिया तो नबी (सल्ल०) ने प्याला हाथ में पकड़ा और फिर "فَيَضَعُ فَاهُ عَلَى مَوضِعِ فِيَّ" नबी (सल्ल०) ने उसी जगह होंट रखे जिस जगह मैंने होंट रखे थे।

हज़रत आइशा (रज़ि०) एक मरतबा अपनी गुड़ियों के साथ खेल रहीं थीं, पूछा आइशा (रज़ि०) ये क्या है? कहा मेरी बेटियाँ हैं, इस में एक के पर बने हुए थे, पूछा ये क्या है? ये परों वाला घोड़ा है। नबी (सल्ल०) ने फ़रमायाः घोड़े के भी पर होते हैं, तो आइशा ने कहाः हाँ सुलेमान (अलैहि०) का घोड़ा था उसके पर थे "فَضَحِكَ حَتَّى رَأَيْتُ نَوَاجِذَهُ" फ़रमाती हैं नबी (सल्ल०) मुस्कुराए यहाँ तक कि मैंने आप के दन्दाने मुबारक को चमकते हुए देखा।

दौड़ का मुक़ाबला

हदीस पाक में है कि नबी (सल्ल०) सफ़र पर जा रहे थे नबी (सल्ल०) ने सहाबा को आगे भेज दिया और ख़ुद अपनी अहलिया के साथ ज़रा पीछे रह गए फिर फ़रमायाः आइशा! आओ दौड़ें, चुनांचि दौड़ लगाई। पहली मरतबा नबी (सल्ल०) ने अहलिया को जीतने दिया ताकि इनको वीन (Win) जीत का अहसास हो, ख़ुशी हो। वह फ़रमाती हैंः मैं जीत गई, नबी (सल्ल०) मुसकुराए। एक दूसरे मौक़ा पर फिर नबी

(सल्ल॰) ने ऐसा किया, अब इस मौक़ा पर मेरा कुछ वज़न भी बढ़ गया था और अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) मुझ से आगे निकल गए तो मुस्कुराए और कहा "هٰذِهٖ بِتِلْكَ" आइशा! ये बदला होगया। उस वक़्त तुम जीती थीं अब मैं जीत गया। इसमें अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) को सबक़ देना था कि देखो बीवी के साथ इस तरह मोहब्बत प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारने में अपनाइयत का अहसास होता है, हर वक़्त मर्द को ही वीन पोज़ीशन (Win Position) हासिल करना लाज़िम नहीं, बीवी को भी कभी वीन पोज़ीशन में रखो ताकि उसका भी दिल ख़ुश हो जाए।

हज़रत आइशा (रज़ि॰) का प्यार भरा जवाब

चुनांचि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः आयशा मुझे पता चल जाता है तुम मुझसे जब ख़ुश होती हो या नाराज़ हाती हो, ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) कैसे पता चल जाता है? फ़रमाया जब ख़ुश होती हो तो कहती हो لَا وَرَبِّ مُحَمَّدٍ और जब नाराज़ होती हो तो कहती हो "لَا وَرَبِّ اِبْرَاهِيْمَ قُلْتُ" मैंने कहा "مَاهَجَرْتُ اِلَّا اسْمَكَ" ऐ अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) मैं सिर्फ़ आपका नाम लेना छोड़ती हुँ, आपको तो नहीं छोड़ देती, सुब्हान अल्लाह।

अज़वाजे मतहरात का आपसी मज़ाक़

चुनांचि घर के अन्दर बीवियाँ रहती थीं तो आपस में भी एक दूसरे के साथ हंसी-मज़ाक़, मोहब्बत प्यार की ज़िंदगी गुज़ारती थीं। हज़रत सौदह (रज़ि॰) बहुत सीधी-सादी-सी उम्मुल-मोमिनीन थीं और आइशा (रज़ि॰) और हफ़सह (रज़ि॰) बहुत ज़्यादा ज़हीन थीं। चुनांचि दोनों ने पलान किया कि इनके साथ आज मज़ाक़ किया जाए तो जब वह आईं तो इन में से एक ने कहा "خَرَجَ الْاَعْوَرُ" वह काना निकल आया, अब ये ज़ो मानी लफ़्ज़ है, काने से मुराद दज्जाल भी हो सकता है और काने से मुराद कोई काना बन्दा भी हो सकता है, चुनांचि उन्होंने इस तरह से कहा कि सौदह (रज़ि॰) समझ बैठीं कि दज्जाल निकल आया वह घबरा गईं, कहने लगींः मैं क्या करुँ, कहाँ छिपूँ? तो एक ऐसा ख़ेमा था जिस में मकड़ी के जाले लगे हुए थे, तो उन दोनों ने इस तरफ़ इशारा किया,

चुनांचि वह इस ख़ेमा में चली गईं, उनके चेहरे पे मकड़ी के जाले लग गए, मिट्टी लग गई। दोनों हंसी, अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) तशरीफ़ लाए, पूछा क्या हुआ? वह इतना हंस रही थीं कि ताब न दे सकीं, इशारा से कहा कि इस ख़ेमें की तरफ़ देखिए। अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) तशरीफ़ ले गए, फ़रमायाः सौदह! बाहर निकलो, क्या हुआ? ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) अअ़वर आ गया, तो नबी (सल्ल॰) ने इनको बाहर निकाला और उन के चेहरे से मकड़ी के जाले उतारे और आप (सल्ल॰) भी मुस्कुराए तो मालूम हुओ कि नबी (सल्ल॰) ने उसको मना नहीं किया कि ये आप की मोहब्बत प्यार की बातें हैं, इन्सान जितना मोहब्बत प्यार से रहें उतना अच्छा होता है।

हदीस पाक से साबित होता है कि नबी (सल्ल॰) ने आइशा (रज़ि॰) के साथ एक ऐसे मुक़ाम पर भी क़याम फ़रमाया जो बहुत पुर-फ़िज़ा था, आबशार था, सब्ज़ था बल्कि वहाँ ले जाने का आप (सल्ल॰) ने सवारी का ख़ुसुसी इन्तिज़ाम फ़रमाया।

एक मरतबा हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) नबी (सल्ल॰) से बात कर रही थीं, इतने में अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) आ गए "فَسَمِعَ صَوْتَ عَائِشَةَ عَالِيًا" उन्होंने देखा कि आइशा (रज़ि॰) की बात करते हुए आवाज़ थोड़ी सी बुलन्द है "فَأَهْوَىٰ إِلَيْهَا أَبُوبَكْرٍ لِيَلْطِمَهَا" अबु बक्र (रज़ि॰) ज़रा आगे हुए कि एक थप्पड़ लगाएँ, आइशा (रज़ि॰) तो बेटी थीं फ़-अम-स-कहु रसूलुल्लाह (सल्ल॰) नबी (सल्ल॰) ने इनको पकड़ लिया, फ़रमायाः अबू बक्र! जाओ हम अपना मआ़मला तै करलेंगे। फ़-ख़-र-ज अबू बक्र मुग़ज़िबन अबू बक्र (रज़ि॰) बड़े गुस्से में बाहर चले गए। आइशा ने जुर्रत कैसे की महबूब (सल्ल॰) से इस अन्दाज़ में बात करे। जब वह चले गए तो नबी (सल्ल॰) ने मुसकुरा कर आइशा (रज़ि॰) को देख, फ़रमाया "يَا عَائِشَةُ كَيْفَ رَأَيْتِنِي أَنْقَذْتُكِ مِنَ الرَّجُلِ" देखा मैं ने तुम्हें बड़े मियाँ से कैसे बचाया वरना तो तुम्हारे थप्पड़ ही लग जाता। ये वह प्यार है जो ज़िंदगी के अन्दर रंग भर दिया करता है।

बातों का बतंगड़ न बनाएँ

चुनांचि आप (सल्ल॰) आइशा (रज़ि॰) के घर में होते अगर कोई और बीवी खाना भेज देती थीं तो फ़रमाती हैं कि मुझे बड़ी ग़ैरत आती थी, मेरे घर में मेरी बारी के दिन महबूब (सल्ल॰) मेरा पका हुआ खाना खाएँगे तो एक मर्तबा लाने वाले के हाथ को मैंने ज़ोर से पकड़ा तो प्याला टूट गया। नबी (सल्ल॰) मुसकुराए फ़रमायाः "ग़ारत उम्मुकुम" तुम्हारी माँ को ग़ैरत आगई। इस से पता चलता हैं कि अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) बात का बतंगड़ नहीं बनाते थे, ज़रा ग़ौर करें आज अगर कोई चीज़ लेके आए और बीवी उसके हाथ पे हाथ मार कर प्याला तोड़ दे तो ख़ाविन्द आसमान सर पे उठालेगा, बात का बतंगड़ बना लेगा, ऐसी बदतमीज है और ऐसी बुरी है और ऐसी गन्दी है, मगर अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) ने सिर्फ़ इतनी बात फ़रमाई कि देखो! तुम्हारी माँ को ग़ैरत आ गई।

आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि सफ़िया (रज़ि॰) बहुत प्यारा और लज़ीज़ खाना बनाती थीं "مَارَأَيْتُ صَانِعَةَ طَعَامٍ مِثْلَ صَفِيَّةَ" मैंने सफ़िया जैसा बहतरीन खाना पकाने वाली औरत नहीं देखी। एक मर्तबा मेरी बारी के दिन में उन्होंने कुछ भेजा तो मुझसे वह लेते हुए इनका बर्तन गिरके टुट गया, मैंने पूछा ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰)! अब इसका कफ्फ़ारा क्या है? फ़रमाया "إِنَاءٌ كَإِنَاءٍ وَطَعَامٌ كَطَعَامٍ" तो मालूम होता है कि अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) ने ये तालीम दी कि बातें जितने लेविल (Level) की होती हैं उतनी ही रखनी चाहिए और दूसरे बन्दे के जज़बात अहसासात का लिहाज़ करना चाहिए।

रात में नबी (सल्ल॰) बहुत धीरे से उठते थे और नर्म अन्दाज़ से पॉव उठाते हुए बग़ैर जूता पहने हुए मोसल्ले पे आजाते थे। आइशा (रज़ि॰) के साथ एक मर्तबा ऐसा ही हुआ, फ़रमाती हैं कि मैं उठी मेरी आँख खुली तो तो नबी (सल्ल॰) बिल्कुल क़रीब नहीं थे, में ने ज़रा हाथ बड़ाया "فَأَدْخَلْتُ يَدِيْ فِيْ شَعْرِهٖ" मेरे हाथ नबी (सल्ल॰) के साथ मुबारक बालों में जाकर पड़े, नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः عَائِشَةُ قَدْ جَاءَكِ شَيْطَانُكِ तुम्हारा

शैतान आगया यानी तुम्हें शक पड़ गया कि में उठकर कहीं चला गया हुँ, "فَقُلْتُ: اَمَالَكَ شَيْطَانٌ" मैंने कहाः ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल.)! आप के साथ भी तो शैतान है, फ़-क़ालाः बला, फ़रमायाः "وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَعَانَنِيْ عَلَيْهِ فَاَسْلَمَ" अल्लाह ने मेरे साथ मदद फ़रमाई, मेरा शैतान मुसलमान हो गया है, अब ज़रा ग़ौर कीजिए कि ये कितनी टची (Touchy) जज़बाती बात थी अगर इस बात पर अल्लाह के हबीब (सल्ल.) ग़ुस्सा फ़रमाते, सज़ा देते तो जायज़ था। समझ में आती थी कि आप से उन्होंने कैसे कह दिया कि "आप के साथ भी तो शैतान है" मगर अल्लाह के हबीब (सल्ल.) ने मामला को इतना आसान कर दिया और प्यार से समझाा दिया कि है तो सही मगर मेरा शैतान मुसलमान (फ़रमाँबरदार) हो गया है।

बीवी के मुँह में लुक्मा

नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया कि जब आपस में घर में मियाँ-बीवी खाना खाएँ तो इकट्ठे खाएँ। फ़रमायाः

"اِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً تَبْتَغِيْ بِهٖ وَجْهَ اللّٰهِ اِلَّا اُجِرْتَ عَلَيْهَا"

(इन-न-क लन तुनफ़ी-क़ न-फ़-क़-तं तब-तग़ बिहि वजहल्लाहि इल्ला उजिरता अलैहा) तो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता है तुझे अज्र मिलता है *हत्ता मा तजअलु फ़ी फ़ामिम-रर-आति-क* हत्ता कि बीवी के मुँह में जो लुक्मा तुम डालते हो अल्लाह तआला उस पर भी तुम्हें अज्र अता फ़रमाते हैं।

ख़लवत के मामले में तअलीमाते नबवी

मियाँ-बीवी के मेल-मिलाप के बारे में भी अल्लाह के हबीब (सल्ल.) ने बहुत तअलीमात दीं, सुब्हान अल्लाह! ज़िंदगी का कोई पहलू ऐसा नहीं छोड़ा जिस में रहबरे इंसानियत ने रहनुमाई न फ़रमाइ हो, नबी (सल्ल.) ने फ़रमायाः मफ़हुम है, बीवी से मिलना हो तो क़ासिद भेजा करो, ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल.)! क़ासिद से क्या मुराद है? फ़रमाया कि जब तुम बोसा लोगे तो बीवी को अन्दाज़ा हो जाएगा कि मेरा ख़ाविन्द क़रीब होना चाहता है तो वह ज़ेहनी तौर पर इसके लिए तैयार हो जाएगी। फिर

फ़रमाया कि जब मियाँ-बीवी आपस में मिलें तो ख़ाविन्द को चाहिए कि वह अपनी बीवी की फ़राग़त का भी इन्तिज़ार करे। आइशा फ़रमाती हैं कि मैं और अल्लाह के हबीब (सल्ल०) कई मर्तबा "مِنْ إِنَاءٍ وَاحِدٍ" एक बर्तन से दोनें एकट्ठे नहाया करते थें। आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि नबी (सल्ल०) मेरे साथ आराम फ़रमाते थे हत्ताकि मैं कई मर्तबा अय्याम की हालत में होती थीं।

मैमूना (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि नबी (सल्ल०) मेरे साथ मेरे बिस्तर पर तशरीफ़ लाए, मेरे अय्याम के दिन थे, मगर आप (सल्ल०) मेरे साथ इस तरह लिपट कर सोए *"बैनी व बैनहु सौबुन"* मेरे और नबी (सल्ल०) के दरमियान सिर्फ़ एक कपड़ा था। उलेमा ने लिखा है

نَوْمُ الزَّوْجِ مَعَ زَوْجَتِهِ فِي فِرَاشٍ وَاحِدٍ أَفْضَلُ مِنْ نَوْمٍ كُلٍّ فِي فِرَاشِهِ

"नौमुज़्ज़ौजि म-अ ज़ौ-जतिही फ़ी फ़िराशिं वाहिदिन अफ़ज़लो मिन नौम कुल्लि फ़ी फ़िराशिही"

कि मर्द का अपनी बीवी के साथ इकट्ठा एक ही बिस्तर पर सोना अफ़ज़ल है अकेला सोने से "إِذَا الْقَصْدُ الْأُنْسُ لَا الْجِمَاعُ" अगरचि क़ुरब मक़सद न हो बल्कि इसके दिल को ख़ुश करना मक़सद हो "إِدْخَالُ السُّرُوْرِ عَلَيْهَا" बीवी के दिल को ख़ुश करने के लिए अय्याम के दिनों में भी उसके क़रीब होजाना गोया ये भी नबी (सल्ल०) की सुन्नत है।

चुनांचि वह फ़रमाती हैं कि ठंडी का मौसम था, नबी (सल्ल०) तशरीफ़ लाए और फ़रमाने लगे कि मुझे लेटना है तो मैंने अपनी रान आगे करदी जब मैंने अपनी रान आग की "فَوَضَعَ خَدَّهُ عَلَى فَخِذِي" नबी (सल्ल०) ने अपना सर मुबारक मेरे रान पर रख दिया यानी उम्मुल-मोमिनीन की गोद में नबी (सल्ल०) सर रख कर सो गए, इसमें भी तालीम है कि अगर आप चाहते तो तकया पर सर रखलेते मगर मोहब्बत इज़हार चाहती है और अल्लाह के हबीब (सल्ल०) बताना चाहते थे कि देखो घर में तुम इस तरह मोहब्बत से रहो, जब आप (सल्ल०) ने इन की गोद में सर रखा तो वह फ़रमाती हैं "व-ह-नैतो अलैहि" मैं भी नबी (सल्ल०) के उपर झुक गई।

हम-बिस्तरी पर भी अज्र

चुनांचि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः जब मर्द अपनी बीवी के साथ सोहबत करता है तो अज्र मिलता है। सहाबा हैरान हो गए "أَيَأْتِي أَحَدُنَا شَهْوَتَهُ وَيُؤْجَرُ" ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) हम अपनी हाजत को पूरा करते हैं इस पर भी अज्र मिलता है? फरमायाः अगर तुम हराम तरीक़े से पूरा करते तो गुनाह होता, अब तुमने अगर हलाल मामला किया तो इस पर अज्र भी मिलना चाहिए।

इब्न उम्र (रज़ि॰) रवायत करते हैं कि मैंने एक मर्तबा आइशा (रज़ि॰) से पूछा "أَخْبِرِينِي بِأَعْجَبِ مَا رَأَيْتِهِ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ" उम्मुल-मोमिनीन! आप नबी (सल्ल॰) की कोई बहुत अजीब बात सुनाइये। *"फ़-ब-कत"* वह रोने लग गईं, *"व क़ालत"* और कहने लगी كُلُّ أَمْرِهِ كَانَ عَجِيبًا सुब्हान अल्लाह! मेरे महबूब का हर काम अजीब था, ऐसी मोहब्बत बीवी के दिल में आजाए कि ख़ाविन्द का तज्किरा हो तो उसकी आँखों से आँसू निकल आएँ और वह ये कहे कि मेरे मियाँ की तो हर राज हर बात अजीब थी, हर बात में मोहब्बत थी, हर बात में प्यार था, अपनाइयत थी, सुब्हान अल्लाह! फिर फ़रमाती हैं कि नबी (सल्ल॰) मेरे साथ मेरे बिस्तर पर लेटे हुए थे "قَالَ ذَرِينِي أَتَعَبَّدُ رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ" छोड़ आइशा! मैं अपने रब की इबादत करता हुँ यानी तहज्जुद के लिए उठता हुँ *क़ालतः "फ़-क़ुलतो वल्लाहि इन्नी लाउहिब्बो क़ुरबातक"* ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) अल्लाह की क़सम! मैं आप का क़ुरब चाहती हुँ "व इन्नी उहिब्बो अल तअबुदा रब-बका" और ये भी चाहती हुँ कि आप अल्लाह की इबादत भी करें, तो मालूम हुवा कि बीवी को भी अपनी ज़बान से उसका इक़रार करना चाहिए कि मैं आप का क़ुरब चाहती हुँ, मोहब्बत चाहती हुँ, औरतें ये समझती हैं कि शायद ज़बान खोलने से हमारा दर्जा घट जाएगा और ख़ाविन्द की नज़र में हमारी क़ीमत घट जाएगी, मक़ाम गिर जाएगा, ये परले दर्जा की बेवक़ूफ़ी होती है, मोहब्बत का इज़हार करने से ख़ाविन्द के दिल में मोहब्बत बढ़ती है, तो फ़क़त ख़ाविन्द ही इज़हार न करे बल्कि बीवी भी इज़हार करे ताकि दोनों में मोहब्बत और ज़्यादा बढ़े।

अज़वाजे मुतहहरात के उलझे मसाएल का हकीमाना हल

नबी (सल्ल०) घर के अन्दर उलझे मसलों को भी सुलझाया करते थे और अज़वाजे मुतहहरात को तालीम व तर्बियत भी दिया करते थे, चुनांचि बाज़ ऐसे वाक़िआत भी अज़वाजे मुतहहरात से हुए कि जो आम हालात में ज़रा समझने में मुशकिल हैं मगर अल्लाह ने वह वाक़िआत इस लिए करवाए ताकि आने वाले वक्त में औरतों को समझ में आ जाए, मर्दों को समझ आ जाए कि अगर घर में ऐसे मामलात हों तो इसको कैसे सार्ट ऑट (Sort out) हल करना है, बीवी को कैसे प्यार से समझाना और बताना होता है।

चुनांचि सफ़िया (रज़ि०) के सफ़र में सवारी बहुत सुस्त थी, वह पीछे रह जाती थी, रोने लग गईं। नबी (सल्ल०) को प्यार आया, आप ने उनको तसल्ली दी, दिलासा दिलाया, वह दिलासा दिलाना इन को अच्छा लगा। फ़रमाती हैं मैं और रोई, नबी (सल्ल०) ने और प्यार किया, मैं और रोई तो जब में ज़्यादा रोई तो नबी (सल्ल०) ने ख़ामोशी इख़्तियार की, मैं महसूस कर गई कि अल्लाह के हबीब (सल्ल०) ने इसको बुरा माना, मैं सोचने लग गई कि मैं अपने अल्लाह के हबीब (सल्ल०) को ख़ूश कैसे कर सकती हुँ। मेरे दिल में ख़्याल आया कि मैं आइशा (रज़ि०) के ज़िम्मा लगाती हुँ कि वह अल्लाह के हबीब (सल्ल०) को मुझ से ख़ूश कर देगी। चुनांचि वह आइशा (रज़ि०) के पास आईं, कहने लगीं कि आ मेरी बारी की रात है मुझे अल्लाह के हबीब (सल्ल०) के ख़ेमा में हाज़िरी देनी है तो आप अल्लाह के महबूब (सल्ल०) का दिल ख़ुश करदें। आइशा (रज़ि०) ख़ुश हो गईं, फ़रमाती हैं मेंने अपने दोपट्टे के उपर ख़ुशबू लगाई और इशा के बाद मैंने अपना दोपट्टा लिया और महबूब (सल्ल०) के ख़ेमा का कपड़ा हटा कर अन्दर झांका, नबी (सल्ल०) ने कहाः आइशा! तुम्हारी बारी तो नहीं किसी और की है। मैंने कहा "ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि यूतीहि मंय्यशाउ" ये अल्लाी का फ़ज़्ल है जिस पर चाहते हैं फ़रमादेते हैं, सुब्हान अल्लाह!

ज़ैनब (रज़ि०) की सवारी नबी (सल्ल०) ने सफ़िया (रज़ि०) को दी तो

उन्होंने कह दिया कि एक यहूदिया को क्यों मेरी सवारी दी? तो नबी (सल्ल॰) ने तीन महीना ख़ामोशी इख़्तियार की सिर्फ़ इनको ये बतलाने के लिए कि किसी को पिछला ताना देना ये एक नापसन्दीदा बात होती है।

हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि एक रात मेरी आँख खुली तो नबी (सल्ल॰) बिस्तर पर नहीं थे, तो मैं नबी (सल्ल॰) के पीछे-पीछे गई, नबी (सल्ल॰) बक़ीअ तशरीफ़ ले गए, आप (सल्ल॰) जब वहाँ दुआ करके फ़ारिग हो गए तो मैं जलदी से भाग कर आई और आकर अपने बिस्तर पर लेट गई। नबी (सल्ल॰) आए तो आपने पूछा आइशा! तुम मेरे पीछे आई थीं? मैंने कहा जी, "فَلَحَظَنِى لَحْظَةً صَدْرِى اَوْجَعَنِى" नबी (सल्ल॰) ने मेरे सीने पर हाथ मारा, मुझे महसूस हुआ तो आप (सल्ल॰) ने समझाया कि देखो आइशा! मेरे पास जिबरइल आए थे, तुम लेटी हुई थी, तुम्हारे सर पर कपड़ा नहीं था तो जिबरइल ज़ाहिर नही हो रहे थे और मैंने तुम्हें इस लिए न जगाया कि तुम्हारी नींद ख़राब न हो, लिहाज़ा मैं खुद उठकर बाहर चला गया। जिबरइल ने कहा कि अल्लाह की तरफ़ से हुक्म है कि अहले बक़ीअ के लिए जाकर दुआ करें। मैं "बक़ीअ" में गया और बक़ीअ में जाकर उनके लिए दुआ की और इस्तग़फ़ार किया। यहाँ से ये पता चलता हैं कि बीवी के किसी काम पर फ़ौरन डांट शुरु कर देना और उससे ग़ुस्सा हो जाना अच्छी बात नहीं है बल्कि (Situation explain) करनी चाहिए और समझाना चाहिए जैसे आप (सल्ल॰) ने बात समझाई कि देखो आइशा! इस हालत में कि तुम मेरे बिस्तर पर थीं और तमहारे सर पर दोपट्टा नहीं था जिबरइल (अलैहि॰) नहीं आसकते थे इसलिए मुझे उठकर खुद जाना पड़ा मगर मैंने तुम्हें जगाना मुनासिब नहीं समझा।

हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा नबी (सल्ल॰) मेरे साथ मेरे बिस्तर में थे, ज़ैनब आईं और मेरे साथ कुछ ग़ुस्सा में बातें करने लगीं, मैं नबी (सल्ल॰) की तरफ़ देखने लगी कि अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) मुझे बात करने की इजाज़त दें, फ़रमायाः दु-न-क फ़नतासिरी आइशा अपना दिफ़ाअ खुद करो, मैंने आगे से जवाब दिया तो ज़ैनब (रज़ि॰) का मुँह खुश्क हो गया, वह मेरी बात का जवाब न दे सकीं, मैंने नबी (सल्ल॰) की तरफ़ देखा तो (य-त-हल्लालु वजहु) महबूब का चेहरा

तम्तमा रहा था, गोया ख़ाविन्द को चाहिए कि वह घर के मामलात भी इसी तरह सुलझाए जिस तरह एक दूसरे की मामलात सुलझाते हैं।

हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि मेरे पास नबी (सल्ल॰) उस हालत में थे कि आप का एक पाँव मुबारक मेरी गोद में था और दूसरा पाँव मुबारक सौदा (रज़ि॰) के गोद में था कि इतने में खाने की एक चीज आगई जो सौदा (रज़ि॰) ने बनवाई थी, वह मुझे कहने लगीं कि तुम खाओ तो मुझे वह अच्छा न लगा मैंने थोड़ी-सी वह चीज़ लेकर सौदा (रज़ि॰) के चेहरे पर लगा दी। उन्होंने भी वह चीज़ लेकर मेरे चेहरे पर लगा दी "व रसूलल्लाहि यज़हाकु" अल्लाह के नबी (सल्ल॰) हंस पड़े कहने लगे उठो दोनों अपने चेहरों को धोलो! मालूम हुआ कि अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) की मौजूदगी में अज़वाजे मुतहहरात इस तरह एक दूसरे के साथ उलफ़त व मोहब्बत के मामलात कर लिया करती थीं।

एक मर्तबा हफ़सा (रज़ि॰) ने सफ़िया (रज़ि॰) को कह दिया "इब्नतु यहुदिय्य" ओ यहुदी की बेटी! तो वह रोने लग गई। नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः सफ़िया! क्यू रोती हो? उन्होंने अर्ज़ किया उन्होंने मुझे कहा कि तुम यहूदी की बेटी हो तो नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः اِنَّكِ لَابْنَةُ نَبِيٍّ وَاِنَّ عَمَّكِ نَبِيٌّ وَاِنَّكِ لَتَحْتَ نَبِيٍّ فَبِمَا تَفْخَرُ عَلَيْكِ तुम तो नबी की बेटी हो और आप के चचा भी नबी थे और आप तो एक नबी की बीवी हो। हफ़सा कैसे आप के उपर फ़ख़र करती है, तो उसको तो यूँ तसल्ली दी और फ़रमाते हैं, फिर हफ़सा (रज़ि॰) की तरफ़ मोतवज्जह हुए फ़रमाया : इत्ताक़िल्लाहा या हफ़सा, हफ़सा! अल्लाह से डरो, ताना देना अच्छा नहीं होता, अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) ने कितने मोहब्बत व प्यार से दोनों को मुतमइन कर दिया। इस लिए मर्दों को चाहिए कि मोहब्बत से रहें। औरतों को चाहिए कि वह भी इस मोहब्बत का माहौल बनाने में पूरी तरह अपना हिस्सा ले।

शौहर नाराज़ हो जाए तो क्या करें

नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया! अगर किसी वजह से ख़ाविन्द नाराज़ हो गया तो जन्नती औरत वह होती है जो ख़ाविन्द का हाथ पकड़ कर कहें

"وَاللّٰہِ لَا اَذُوْقُ غُمْضًا حَتّٰی تَرْضٰی" अल्लाह की क़सम मैं नहीं सोउँगी जब तक तुम मुझसे राज़ी नहीं होगे। काश इस सुन्नत पर आज की औरतें अमल कर लेतीं तो जन्नती कहलातीं। आज तो ख़ाविन्द ज़रा नाराज़ होता है आगे से बीवी भी मुँह फैला लेती है। फिर बात का बतंगड़ बन जाता है, घर के अन्दर एक झगड़ा शुरू हो जाता है तो ये खींचा तानी नहीं होती बल्कि अगर ख़ाविन्द नाराज़ हो जाए तो बीवी मोहब्बत व प्यार से मनाले और मानाने का कितना प्यारा तरीक़ा है जो नबी (सल्ल॰) ने सिखाया, फ़रमायाः जन्नती औरत वह होती है कि ख़ाविन्द का हाथ पकड़ कर कहे "وَاللّٰہِ لَا اَذُوْقُ غُمْضًا حَتّٰی تَرْضٰی" अल्लाह की क़सम मैं नहीं सोउंगी जब तक मैं आपेको राज़ी नहीं कर लूँगी।

अहले-ख़ाना से मशविरा

नबी (सल्ल॰) बाज़ मामलात में अहले-ख़ाना से मशविरा भी फ़रमाते थे, चुनांचि हुदैबिया के मोक़ा पर जब नबी (सल्ल॰) ने सहाबा (रज़ि॰) को फ़रमाया कि अपने अहराम खोल लो तो सहाबा (रज़ि॰) हैरत में थे कि हम आए थें उमरा की नीयत से और उमरा किए बग़ैर अहराम खोल के कैसे चले जाएँ। नबी (सल्ल॰) ख़ीमा में तशरीफ़ लाए तो उम्मे सलमा (रज़ि॰) ने पूछा ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰)! आप हैरान क्यों हैं? आप (सल्ल॰) ने सूरतेहाल बताई उन्होंने कहा कि ये सब आप के आशिक़े सादिक़ हैं, ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰)! आप जाएये और अपने जानवर को क़ुरबान कीजिए। चुंकि ये सब आप के आशिक़े सादिक़ हैं लिहाज़ा जो आप करेंगे वही सब करेंगे। नबी (सल्ल॰) ने मशविरा क़बूल फ़रमाया और बाहर निकल कर जानवर ज़बह किया। जब सहाबा (रज़ि॰) ने देखा तो उन्होंने भी अपने-अपने जानवर ज़बह किए, एहराम खोल लिए और वापसी के लिए तैयार होगए।

औरतों की मार-पीट से मुमानिअत

नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि अगर कोई ग़लती कोताही भी हो जाए तो ख़ाविन्द को चाहिए कि मार-पीट से बाज़ रहें। हदीस मुबारका में है

"ला तज़रिबु इमा अल्लाहि" अल्लाह की बन्दियों को मारा न करो, मारना कोई अच्छी बात नहीं होती, उलमाए किराम ने लिखा है "اِنَّ الْعُدْوَانَ لَا يُحِبُّهُ حَتّٰى الْحَيْوَانَ" इस दुश्मनी को तो हैवान भी पसन्द नहीं करते, इन्सान तो फिर इन्सान होता है। नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः

لَا يَجْلِدِ امْرَأَتَهُ جَلْدَ الْعَبْدِ ثُمَّ يُجَامِعُهَا فِيْ آخِرِ الْيَوْمِ

नहीं चाहिए कि तुम में से कोई अपने ग़ुलाम के मानिन्द अपनी बीवी को मारे फिर दिन के आख़िर में उसके साथ इकट्ठा भी हो, इसलिए हाकिम ने ये रवायत बयान की है कि नबी (सल्ल॰) ने पूरी ज़िंदगी अपनी किसी बीवी के उपर हाथ नहीं उठाया।

नाफ़रमान औरत पर वईद

अगर बीवी नाफ़रमानी करती है तो अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) ने समझाया कि इससे अल्लाह नाराज़ होते हैं। फ़रमाया

"اَيُّمَا امْرَأَةٍ عَصَتْ زَوْجَهَا فَعَلَيْهَا لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ"

(अय्युमम-राआतिन असत ज़ौजहा फ़-अलैहा लअनतुल्लाहि वल-मलाइ-कति वन्नासि अजमईन)

"जो औरत अपने ख़ाविन्द को नाराज़ कर लेती है तो उसपर अल्लाह की लअनत होती है और फ़रिश्तों की लअनत होती है और तमाम इन्सानो की लअनत होती है।" अब जिस समझदार औरत को ये पता चल जाए कि ख़ाविन्द की ना फ़रमानी करने पर मेरे उपर अल्लाह की, मलाइका की और सब इन्सानों की लअनत होगी वह कैसे नाफ़रमानी कर सकती है।

नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

"اَيُّمَا امْرَأَةٍ خَرَجَتْ مِنْ دَارِهَا بِغَيْرِ اِذْنِ زَوْجِهَا فَهِيَ فِيْ سَخَطِ اللّٰهِ"

(अय्युमम-राआतिन ख़रजत मिन दारिहा बिग़ैरे इज़नि ज़ौजिहा फ़-हिया फ़ी स-ख़तिल्लाह)

तो औरत अपने मर्द की इजाज़त के बग़ैर अपने घर से निकल जाती है तो अल्लाह के ग़ुस्से में होती है। "اِلَّا اَنْ تُضَاحِكَهُ وَتَسْتَرْضِيَهُ" जब तक कि ख़ाविन्द को ख़ुश न करदे और उसका ख़ाविन्द मुसकूरा न पड़े।

फ़रमायाः बीवी ख़ाविन्द को नाराज़ करती है तो जन्नत में हुरें कहती हैं महमान को नाराज़ न करो, यूशिको अंय्युफ़ारि-क़-कि ऐसा मुम्किन है कि ये जल्दी तुम से जुदा हो कि हमारे पास आजाए।

नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः तीन लोगों का अमल ग़ैर मक़बूल होता हैः

1. जो ग़ुलाम भाग जाए।
2. वह बीवी जिसका ख़ाविन्द उससे नाराज़ हो।
3. वह शराबी जो शराब के नशे में मस्त हो जाए।

औरतों के साथ अफ़ू व दरगुज़र

नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि ख़ाविन्द को चाहिए कि बीवी के साथ दरगुज़र का मामला करे, औरतें अगर नाक़िसातुल-अक़्ल हैं तो फ़रमाया तुम तो कामिलुल-अक़्ल हो, तुम तो इसके साथ दरगुज़र का मामला करो। फ़रमायाः

"لَاخَيْرَ فِيْ نِسَاءٍ وَلَاصَبْرَ عَنْهُنَّ يَغْلِبْنَ كَرِيْمًا وَ يَغْلِبُهُنَّ لَئِيْمٌ فَاُحِبُّ اَنْ اَكُوْنَ كَرِيْمًا مَغْلُوْبًا وَلَا اُحِبُّ اَنْ اَكُوْنَ لَئِيْمًا غَالِبًا"

(ला ख़ै-र फ़ी निसाइन वला सब-र अनहुन्ना यग़लिबना करीमन व यग़लिबुहुन्ना ल-ईमुन फ़-उहिब्बो अन अकुना करीमन मग़लुबा वला उहिब्बो अन अकूना ल-ईमन ग़ालिबन) औरतों में कोई ख़ैर नहीं, इनके बग़ैर सब्र भी नहीं होता, जो नरम होता है उस पर ग़ालिब आ जाती हैं और सख़्त तबीयत का होता है वह उनके उपर ग़ालिब हो आता है। नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः मैं चाहता हुँ कि मैं नरम मिज़ाज रहुँ अगरचि मग़लूब हो जाउँ और मैं नहीं चाहता कि सख़्त तबीअत का बनकर ग़ालिब आ जाउँ। सूब्हान अल्लाह! अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) ने क्या अनुखी बात सुनाइ कि घर के अन्दर बन्दे को कितना रहीम व करीम होना चाहिए—

हो हलक़-ए-याराँ तो बरेशम की तरह नरम

अगर यारों का हल्क़ा हो तो रेशम की तरह नरम होना चाहिए, अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) ने बतलाया कि घर वालों के साथ रेशम की तरह नरम बन कर मोहब्बत व प्यार से रहना चाहिए।

एक दूसरे की बद-अख़लाक़ी पर सब्र

चुनांचि अगर बीवी किसी ख़ाविन्द को तकलीफ़ पहुँचाए या ख़ाविन्द बीवी को तकलीफ़ पहुँचाए तो नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया कि तुम उस पर सब्र करोगे तो अल्लाह तआला की तरफ़ से अज्र मिलेगा। फ़रमाया :

"اَيُّمَا رَجُلٍ صَبَرَ عَلٰى سُوْءِ خُلُقِ امْرَأَتِهٖ اَعْطَاهُ اللهُ الْاَجْرَ عَلَيْهِ مِثْلَ مَا اَعْطٰى اَيُّوْبَ عليه السلام عَلٰى بَلَائِهٖ"

अय्योमा र-जुलिन सब्र अला सुए खुलुक़िम-राआतिहि अअता-हुल्लाहुल-अज्र अलैहि मिसला मा अअता अय्युब (अलैहि.) अला बलाएही। "अगर कोई मर्द अपनी बीवी के बुरे अख़लाक़ पर सब्र कर लेता है कि बीवी चिड़-चिड़े मिज़ाज की है या ज़बान दराज़ी करती है और मर्द उसको बर्दाशत करलेता है तो अल्लाह तआला उसके ख़ाविन्द को ऐसा अज्र अता फ़रमाते हैं जिस तरह अय्युब (अलैहि.) को अल्लाह ने बीमारी के उपर सब्र करने का अज्र अता किया था।" ख़ाविन्द को बीवी की नापसन्दीदा बात पर सब्र करने के लिए इतने बड़े अज्र का वादा फ़रमाया।

और एक हदीस पाक मैं फ़रमाया :

"اَيُّمَا امْرَأَةٍ صَبَرَتْ عَلٰى سُوْءِ خُلُقِ زَوْجِهَا اَعْطَاهُ اللهُ مِنَ الْاَجْرِ مِثْلَ مَا اَعْطٰى اٰسِيَةَ بِنْتَ مُزَاحِمٍ امْرَأَةَ فِرْعَوْنَ"

अय्योमम राआतिन स-बरत अला सुए खुलुक़ि ज़ौजिहा अअताहुल्लाहो मिनल-अज्रि मिसला मा अअता आसिया बिन्ते मुज़ाहिम-राआति फ़िरऔन, "जो बीवी अपने ख़ाविन्द के बुरे अख़्लाक़ के उपर सब्र कर लेती तो अल्लाह तआला उसको इतना सब्र का अज्र अता करता है जो आसिया बिन्त मिज़ाहम फ़िरऔन की बीवी को अज्र अता किया था।

वैवाहिक ज़िंदगी का एक हसीन उसूल

चुनांचि नबी (सल्ल.) ने फ़रमायाः अगर तुम्हें बीवी की कोई बात नापसन्द आए तो ग़ौर करो! तुम्हें उसमें कितनी पसन्दीदा बातें मिल

जाएँगी, ये अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) ने किया ख़ुबसूरत बात कही है, इन्सान है, फ़रिश्ता तो नहीं है, कोई ग़लती कोताही होती है, कमज़ोरी होती है, फ़रमाया एक बुराई को वजह बना कर दूसरे बन्दे को सज़ा न दो, अपने से दूर न करो बल्कि अगर एक बात तुम्हें बुरी लगी तो उसकी कितनी बातें अच्छी भी तो लगती हैं। जब नबी (सल्ल॰) ने ये तालीमात कि तो आप के यारों ने उसके उपर अमल करके दिखा दिया।

चुनांचि हज़रत उमर (रज़ि॰) अपनी तबीयत के एताबार से तो सख़्त मिज़ाज थे, मगर अहले-ख़ाना के साथ बहुत मोहब्बत से रहते थे, एक शख़्स अपनी बीवी के इस तरह के मामले सेबहुत दुखी था कि मुझे इजाज़त मिले और मैं बीवी का दोचार जूते लगा दूँ, चुनांचि वह उमर (रज़ि॰) के पास आया يَشْكُوْ خُلُقَ زَوْجَتِهٖ अपनी बीवी के बद-अख़्लाक़ी की शिकायत करने के लिए, उमर (रज़ि॰) ने फ़रमायाः मेरी बीवी को देखो إِنَّهَا طَبَّاخَةٌ لِطَعَامِيْ ये मेरे खाने पकाने वाली ख़ानसामा की मानिन्द है, خَبَّازَةٌ لِخُبْزِيْ मेरी रोटी बनाने वाली के मानिन्द है, غَسَّالَةٌ لِثِيَابِيْ मेरे कपड़े धोन वाली धोबन है, मुर्ज़िअतुन लिवालिदी मेरे बच्चों को दुध पिलाने वाली “आया” के मानिन्द है हालांकि ये सब चीज़ें औरत के उपर फ़र्ज़ तो नहीं होतीं, वह तो ख़ाविन्द की मोहब्बत में ये सब काम कर रही होती है, फ़रमाया व यसकुनू क़लबी बिहा अनिलहराम वह मेरे दिल को सकुन देती है, मैं हराम काम से बच जाता हुँ, अहतामिलुहा लिज़ालिका तो मैं भी उसकी इन बातों को बर्दाशत कर लेता हुँ। सैय्यदना फ़ारुक़ आज़म (रज़ि॰) नबी (सल्ल॰) की तालीमात पर अमल करके दिखा दिया कि देखो! एक बात नापसन्दीदा हो तो कुछ बातें अच्छी भी होती हैं, हम अपने घरों के अन्दर अफ़ु व दर गुज़ार के साथ, हुस्न ख़ल्क़ के साथ, मोहब्बत व प्यार के साथ ज़िंदगी गुज़ारें, दुनिया की ज़िंदगी भी जन्नत का नमुना बनेगी और आख़िरत में अल्लाह के यहाँ कामियाबी भी नसीब होगी।

मिया-बीवी की मुसकुराहट पर अल्लाह की मुसकुराहट

चुनांचि हदीस पाक में नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः ख़ाविन्द जब बीवी को देख कर मुसकुराता है और बीवी ख़ाविन्द को देख कर मुसकुराती है तो अल्लाह तआला उन दोनों को देख कर मुसकुराते हैं, अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) ने क्या खुबसूरत उसूल बता दिया, अगर मुसकुराहटों से अल्लाह ख़ुश होते हैं तो आज से ये अहद कर लीजिए कि हम घरों में मुसकुराहटें बिखेरेगें, अल्लाह की इबादत करेंगे और अल्लह के बन्दों के साथ हुस्ने ख़ल्क़ का मामला करेंगे। अल्लाह तआला नबी (सल्ल॰) की इन तालीमात के मुताबिक़ हमें घरों में मोहब्बत व प्यार की ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। नबी (सल्ल॰) की इन तमाम अहादीस को सामने रख कर अब ज़रा कोई बताए तो सही कि सख़्ती कहाँ नज़र आती है, दरश्ती कहाँ नज़र आती है, रफ़ एण्ड टफ़ (Rough and tough) ख़ुश्क तबीअत कहाँ नज़र आती है अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) तो रेशम की तरह नरम बनके ज़िंदगी गुज़ारने वाले थे, ऐसो ख़ाविन्द अल्लाह हर बीवी को अता करे और अल्लाह तआला हर मर्द को ऐसा ख़ाविन्द बन कर रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

व आख़िरु दअ़वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

□□□

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ

(व आशिरु हुन्ना बिल-मअरुफ़)

औरत और मर्द का मक़सदे तख़लीक़

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक़्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

फ़ेहरिस्ते अनावीन

इक़्तिबास

फ़ितरी तक़सीम

मर्द और औरत दो अलग-अलग शख़्सियतें हैं, मर्द को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने घर के बाहर की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए पैदा किया और औरत का दायराकार घर के अन्दर बनाया, इसलिए दोनों के जिस्म की साख़्त भी इसी के मुताबिक़ बनाई गई।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलिफ़क़ार अहमद साहब नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ۔

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ)

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ۔ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

दीने इस्लाम दीने फ़ितरत

दीने इस्लाम दीने फ़ितरत है, इसकी सारी तअलीमात फ़ितरत के ऐन मोताबिक़ हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्द को और औरत को हर वह नेमत दी जो उसके फ़र्ज़े मनसबी के लिए ज़रुरी थी। अगर आप ग़ौर करें तो शेर को अल्लाह ने ऐसे दांत दिए हुए हैं कि इनके लिए गोश्त खाना आसान होता है। गाए और भैंस को अल्लाह ने ऐसे दांत दिए हैं कि उनके लिए खाना आसान होता है और इन्सान को अल्लाह तआला ने ऐसे दांत दिए हैं कि इसमें गाय के दांतो से भी मुशाबिहत है और शेर के दांतों से भी मुशाबिहत है, तो इन्सान सब्ज़ी भी खाता है, गोश्त भी खाता है तो तीनों की बनावट पर ग़ौर करने से पता चलता है कि जिसकी जो ज़रुरत थी अल्लाह ने उसके मोताबिक़ ही उसके जिस्म की बनावट की।

इसी तरह मर्द और औरत दो अलग-अलग शख़्सियतें हैं, मर्द को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने घर के बाहर की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के

लिए पैदा किया और औरत का दायराकार घर के अन्दर बनाया, इसलिए दोनों के जिस्म की साख़्त भी इसी के मोताबिक़ बनाई गई।

एक दस्तूर हमने देखा है कि जो मशीन भी ऑउटडोर डिज़ाइन (Out door Design) (खुले में रखने वाली डिज़ाइन) होती है वह ज़्यादा मज़बूत होती है, बारिश के पानी से बचाने केलिए उसका डिज़ाइन ख़ास बनाया जाता है तो इस मशीन के उपर हवा, पानी, धूप असर नहीं करपाती और अगर वही मशीन किसी इमारत के अन्दर लगनी हो तो फिर इंजीनियर इसका डिज़ाइन (Different) अलग बनाते हैं। वह ज़रा इस तरह बनती है कि अब इसको अतनी हिफ़ाज़त की ज़रुरत नहीं होती, इसी तरह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्द को ऐसी जिस्मानियत अता की कि जो इसके बैरुनी तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए ज़रुरी थी, औरत को ऐसी जिस्मानियत अता की जो अन्दरुने ख़ाना तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए ज़रुरी थी।

मर्द व औरत की तबीअत का इख़्तिलाफ़

चुनांचि अहादीसे मोबारका से भी इसके असर मिलते हैं और माहिरीने नफ़िसयात ने उसके उपर सैंकड़ों साल मेहनत की कि मर्द और औरत की शख़्सियतों में यक्सानियत कहाँ है और इख़्तिलाफ़ कहाँ है। लाखों इन्सानों के इन्टरव्यू (Interview) लिए, इनकी ज़िन्दगियों का मोतालआ किया और फिर अपने तजूर्बात की रौशनी में उन्होंने कुछ उसूल निकाले। अगर हमें ये बातें अच्छी तरह मालूम हो जाएँ कि मर्द की शख़्सियत क्या होती है तो औरत के लिए इस के साथ रहना सहना आसान हो जाए और मर्द को पता चल जाए कि औरत की शख़्सियत क्या होती है तो मर्द के लिए औरत से डील (Deal) मामला करना आसान हो जाए, हम चुंकि एक दूसरे की तफ़सीलात को नहीं समझते इसलिए डीलिंग (Dealing) मामलात में ऐसी कोताहियाँ और गलितयाँ कर लेते हैं कि आपस में उलझाउ हो जाता है। घरों के अन्दर बाज़ औक़ात तो लड़ाइयाँ हो जाती हैं इसलिए कि दोनों में से कोई न कोई बड़ी ग़लती कर रहा होता है। ख़ाविन्दे बीवी के बजाए किसी ग़ैर औरत में इन्वाल्व (Involve) मोतवज्जह होता है, बीवी ख़ाविन्द के बजाए किसी और तरफ़

मोतवज्जह होती है, हमने तो यहाँ तक देखा कि दोनों नेक हैं, दोनों लिखे-पढ़े हैं और दोनों दीनदार, ज़िक्र करने वाले, तहज्जुद के भी पाबन्द, पाकीज़गी भी ज़िन्दगी में है, जमाअत में जाने वाले, इल्म पढ़ने वाले और फिर भी एक दूसरे से उलझते हैं। तो इससे मालूम होता हैं कि इसका तअल्लुक़ तबाए के साथ है कि एक दूसरे के साथ कैसे रहना सहना है, ये किसी ने नहीं समझाया होता, तो आज के इस बयान में इस नुकता को खोला जाएगा कि मर्द की शख़्सियत क्या होती है, औरत की क्या होती है ताकि आइन्दा बयानात में फिर ये बताया जाए कि मर्द और औरत की क्या ज़रुरत है।

मर्द व औरत का मक़सदे तख़्लीक़

चुनांचि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्द को ख़िलाफ़ते अर्ज़ी के लिए दुनिया में भेजा–

तर्ज़े जम्हूरी न शान कज कुलाही चाहिए
जिस के बन्दे हैं उसी की बादशाही चाहिए

अल्लाह की ज़मीन पर, अल्लाह के बन्दों पर अल्लाह के क़ानून को लागु करना (Objective of Life) मर्द का मक़सूदे ज़िन्दगी है और औरत की ज़िन्दगी का मक़सद इस मर्द की तस्कीन है कि जो उतने अज़ीम मक्सद के लिए दुनिया में भेजा गया इसकी ज़िन्दगी की कमी को पूरा करें, चुनांचि फ़रमाया "व ज-अ-ल मिनहा ज़ौजहा लियसकु-न इलैहा" हम ने हव्वा को इसलिए पैदा किया कि आदम (अलैहि॰) इससे सुकून पासकें, इस से तस्कीन हासिल करसकें, तो मर्द की ज़रुरियात और ख़्वाहिशात को पूरी करने के लिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने आदम (अलैहि॰) की पस्ली से अम्मा हव्वा को पैदा किया तो यूँ समझ लीजिए के मर्द का मक़सूद और था, औरत का मक़सूद और था, इसीलिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्द को क़ुव्वते बदनी ज़्यादा अता की। इसके मस्ल (Muscles) (एसाब) के अन्दर एस्टरेंथ (Strength) मज़बूती ज़्यादा होती है, मज़बूत कमर होती है हमने तो देखा कि काम करने वाले लोग अड़हाइ मन वज़न

की बोरी एक हाथ से उठाते हैं और इसको तीन मीटर दूर फेंक देते हैं, इसके बिलमोक़ाबिल अल्लाह ने औरतों को बदन की नज़ाकत ज़्यादा अता फ़रमाई, कहने वाले ने कहा –

नाज़ुकी उसके लब की किया कहिये
पंखड़ी एक गुलाब की सी है

तो औरत के जिस्म की साख़्त ही और तरह की है, चुनांचि एक किताब में पढ़ा कि जो मॉडल मिस यूनिवर्स (Miss Universe) आलमीं हसीना बनीं उसके सर का घेरा बड़ा था, उसकी कमर का घेरॉव उससे छोटा था, अब इतनी पत्ली कमर पर तो दस किलो वज़न भी बहुत होता है, तो मर्द के जिस्म की साख़्त क़ुव्वत के साथ और औरत के जिस्म की साख़्त नज़ाकत के साथ होती है, मर्द को अल्लाह तआला ने रफ़ एण्ड अफ़ डीज़ाइन बनाया है, ये सख़्त जान होता है, मोख़्तलिफ़ हालात और मौसम में ये अपने ज़िम्मादारियों और डयूटियों को निभाता है। औरत की शख़्सियत में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने (Sophistication) नज़ाकत रखी हुई है।

आप अगर शेर को देखें तो जो शेर का नर होता है वह कितना बावक़ार होता है, इसलिए के अन्दर एक हैबत होती है, इसी तरह मर्द को भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐसा ही बनाया। चुनांचि क़ुरआन मजीद में है कि औरतों ने जब यूसूफ़ (अलैहि॰) को देखा तो "इन हाज़ा इल्ला मलकुन करीम" ये तो कोई बहुत करीम फ़रिश्ता मालूम होता है, तो मर्द को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने (Grace) बर्तरी अता की, वक़ार अता किया, इसके बिल्मोक़ाबिल अल्लाह ने औरत को हुस्न अता किया, ब्यूटी (Beauty) अता की, नोक पलक को ब्यूटी कहते हैं, इसलिए क़ुरआन मजीद में फ़रमाया "वलौ अअ-ज-ब-क हुस्नुहुन्ना" तुम्हें इनका हुस्न ही क्यों न मोतअजुब करदे, तो औरत के लिए हुस्न का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुवा और मर्द के लिए गोया वक़ार का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुवा। इसी तरह औरत की शख़्सियत के अन्दर नोक पलक का मामला ज़्यादा होता है।

लैला की उंगलियाँ और मजनूँ की पस्लियाँ

चुनांचि एक खीरे बेचने वाला शख़्स था जो पत्ले-पत्ले खीरे बेच रहा था तो बेचने के लिए आवाज़ लगा रहा था कि "लैला की उंगिलयाँ ले लो लैला की उंगिलयाँ" अब लोग जब ये सुन्ने लगे तो उन्होंने ख़ुब खीरे ख़रीदने शुरु कर दिए। अब इनके क़रीब ही एक दूसरा बन्दा था जिसने रेड़ही लगाई हुई थी और ककड़ियाँ बेच रहा था, ये ककड़ी ज़रा पत्ली भी होती है और गोल सी भी होती है इस को समझ न आई कि मैं इसको कैसे बेचूँ? इसने सदा लगानी शुरु करदी "मजनू की पस्लियाँ ले लो मजनू की पस्लियाँ ले लो" चुनांचि थोड़ी देर में इन दोनों का सामान आसानी से बिक गया।

मर्द व औरत के दर्मियान फ़र्क़

मर्द का जिस्म अल्लाह ने ऐसा बनाया हुआ है कि इसके लिए हरकते बदन लाज़मी होती है, इसलिए मर्द को घोड़ सवारी करनी होती है, कुश्ती लड़नी होती है, जौगिंग (Jogging), तफ़रीह करनी होती है, अल्लाह के रास्ते में उसने अपने बदन को इस्तेमाल करना होता है इसी लिए इसका कोलिस्ट्रॉल (Cholesterol) चरबी कन्ट्रौल (Control) करने के लिए इसको वर्ज़िश करनी ज़रुरी है। जबकि औरत का जिस्म अल्लाह ने ऐसा बनाया है कि इसको बहुत ज़्यादा हरकत करने की ज़रुरत नहीं, थोड़ी भी एक्सरसाइज़ (Excercise) वर्ज़िश भी इसके कोलिस्ट्रॉल को कन्ट्रौल करने के लिए काफ़ी होती है, चुनांचि घर में कपड़े धोना, ऑटा गुँधना, चक्की पीसना, इतनी एक्सरसाइज़ भी इसकी ज़िन्दगी के लिए काफ़ी होती है।

फिर मर्द के अन्दर अल्लाह ने क़ुव्वते बर्दाशत ज़्यादा रखी है, अमूमन सख़्त मिज़ाज होता है, सदमे बर्दाशत कर जाता है, बड़े-बड़े मुशिकल हालात से निबाह कर जाता है, हत्ताकि क़रीब तरीन कोई अज़ीज़ फ़ौत होजाए तो अपने कंधों पर जनाज़ा उठाकर जाता है और क़ब्रिस्तान में उसको क़ब्र में हाथों से दफ़न कर देता है, औरत को अल्लाह ने क़ुव्वते बर्दाशत कम दी है, नाज़ुक मिज़ाज होती है, जल्दी

परेशान होती है, बिलफ़र्ज़ अगर शरीअत माओं को हुक्म देती कि तुम अपने बच्चों को ख़ुद दफ़न किया करो, तो हमारा तो ये ख़्याल है कि माँ बेटे को दफ़न करते हुए ख़ुद भी साथ ही दफ़न हो जाती। तो क़ुव्वते बर्दाशत मर्द में ज़्यादा, मगर औरत में इससे निस्बतन कम होती है।

पिछले दिनों एक ख़ातून ने फ़ून किया कहने लगी कि मैंने अभी एक रीसर्च पढ़ी है कि आज कल मर्दों की एवरेज (Average) उम्र थोड़ी है और औरतों की एवरेज उम्र ज़्यादा है। कहने लगें, हज़रत आप बता सकते हैं कि औरतों की एवरेज उम्र ज़्यादा क्यों होती है? मैंने कहा हाँ, कहने लगी किया वजह है? मैंने कहा "इसलिए कि इनकी बीवी नहीं होती" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्दों को रहमानियत का मज़हर बनाया है और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने औरत को रहीमियत का मज़हर बनाया है, मर्द को देखें तो रहमान की सिफ़त झलकती है, शफ़क़त भी होती है, मोहब्बत भी होती है मगर औलाद की तर्बीयत के लिए मर्द को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने एक जलाल भी दिया है इसलिए बच्चे माओं को तो अल्लाह मियाँ की गाय समझते हैं मगर बाप से ज़रा झिझकते हैं, माँ का अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मोहब्बत व प्यार का पुत्ला बनाया होता है।

इस दुनिया में अच्छों से तो हर कोई मोहब्बत करता है, बुरों से मोहब्बत करने वाली सिर्फ़ माँ की ज़ात है, हमने देखा बेटा बुरा हो जाए, बाप भी कह देता है "घर से निकल जा! मैं तेरी शकल देखना नहीं चाहता" मगर कोई माँ ऐसी नहीं देखी जो अपने बिगड़े बेटे को ये अल्फ़ाज़ कहे, वह यही कहे गी ये बिगड़ गया इसके नसीब थे, मैं तो माँ हुँ, मेरा दिल इसके लिए तड़पता है, तो मर्द को अल्लाह ने रहमानियत का मज़हर बनाया और औरत को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने रहीमियत का मज़हर बनाया। इसीलिए घर के अन्दर मर्द की हैसियत क़ुव्वाम की है "اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَى النِّسَاءِ" औरत की हैसियत इसके मआविन की सी है। चुनांचि क़ियामत के दिन मर्द से घर के हर फ़र्द के बारे में पूछा जाएगा, औरत से उसके बच्चों के बारे में पूछा जाएगा, तो देखें! दोनों का मुहासिबा अलग-अलग होगा।

मर्द में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुव्वते फ़ैसला ज़्यादा रखी होती है, इसी लिए (Decision making job) फ़ैसले लेन का का वह बड़ी आसानी के साथ कर जाता है, औरत के अन्दर (Determination power) क़ु व्वते फ़ैसला निस्बतन कम होती है, रिस्क (Risk) लेने से वह डरती है इसलिए इसमें क़ुव्वत फ़ैसला कम होती है, फ़ैसला करने के लिए इसको ख़ाविन्द की ज़रुरत पड़ती है।

मर्द को अल्लाह तआला ने ऐसी तबीअत द्री कि वह यक्सा कामों से बेज़ार हो जाता है, एक जैसा काम उसको देदो तो उसकी तबीअत उचाट हो जाती है, मगर औरत को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐसी तबीअत दी कि यक्सा काम मज़े से करती रहती है, इसीलिए दफ़्तरों में देखो तो सेकरेट्री (Secretary) का काम इसके ज़िम्मे होता है और जगहों पे देखें तो इसी तरह की यकसानियत वाले काम औरत के ज़िम्मे होते हैं, हमने खुद ऐसी औरतों को देखा जो घरों में बैठ के जरसी वग़ैरा की बिनाई करती हैं वह एक तरह की हरकत हाथों से करती रहती हैं और घंटों तक करती हैं देख कर हैरत होती है कि कैसी अल्लाह ने तबीअत दी है कि ये आराम से हाथों से सवेटर बुन लेती हैं, मर्द को कहो तो इसके लिए तो उससे बड़ी सज़ा कोई न हो।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्द को ऐसी अक़ल अता फ़रमाई कि वह जज़बात पे हावी हो जाता है, अपने जज़बात को कंट्रौल करते हुए भी अपनी अक़ल से अच्छे फ़ैसले कर लेता है, सुलह हुदैबिया की मिसाल देख लीजिए कि नबी (सल्ल०) के पास एक हज़ार ख़ुद्दाम हैं और सब नेज़े, तीर तलवार के साथ लैस हैं इस वक़्त मामूली सा इशारा भी काफ़ी था, मगर अल्लाह के महबूब (सल्ल०) ने आतिश फ़िशानी के दहाने पर बैठकर कितने नर्म फ़ैसले किए, ये मेराज है इन्सान की, यानी क़ुव्वते फ़ैसला की कि ऐसे हालात के बावजूद भी इतने ठंड दिमाग़ से फ़ैसले कर लेना।

इसके बर्ख़िलाफ़े औरत को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐसी तबीअत दी कि इसके ज़ज़बात इसकी अक़ल पे हावी हो जाते हैं, चुनांचि जब किसी से मोहब्बत करती है तो उसका दिल चाहता है कि दुनिया के सब

इन्सान मर जाएँ बस ये एक बन्दा ज़मीन पर चलता नज़र आए और अगर नफ़रत करती है तो कहती है कि बस ये तो अभी रोए ज़मीन से ज़ेरे ज़मीन चला जाए, इसकी तबीअत ऐसी होती है, इसीलिए बाज़ बच्चियाँ (Proposal) शौहर तजवीज़ करने के मामलों में धोखे खा जाती है, वह किसी लड़के की बातों से ऐसी मुतासिर हो जाती है कि मिस-मैच (Mismatch) बे-जोड़ की प्रपोज़ल (Proposal) होती है मगर माँ-बाप से ज़िद करती हैं कि यही बेहतर है। जज़बात ग़ालिब आजाते हैं। ठंडे दिल व दिमाग़ से नहीं सोंचतीं कि जिस लड़के की प्रपोज़ल (Proposal) आई न उसकी तालीम है, न उसकी जॉब (Job) नौकरी है, न उसका घराना इतना अच्छा है, न कोई (Capatibility) जोड़ है, लेकिन वह एक ही बात हांकती है बस मुझे तो यही करना है लेकिन जब हो जाता है फिर सारी उम्र रोती भी है, तो उसके जज़बात आम तौर पर इसकी अक़ल पे हावी होते हैं शायद इसलिए शरीअत ने उसको नाक़िसुल-अक़ल कहा वरना औरतें तो इतनी ज़हीन होती हैं कि आज कल तो स्कूलों में, कालेजों में और यूनीवर्सिटियों में इन का जी पी ए (GPA) ज़्यादा होता है बनिस्बत लड़कों के, तो अक़ल की इस लिहाज़ से तो कमी नहीं होती मगर नाक़िसुल-अक़ल वालिदैन जो कहा वह इसलिए कि जज़बात इन पर ग़ालिब आ जाते हैं फिर वह नाक़िस फ़ैसले कर जाती हैं।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्द को ऐसा बनाया कि इसमें ग़ैरत ज़्यादा रही, चुनांचि जान, माल और इज़्ज़त की हिफ़ाज़त के लिए ग़ैरत को होना ज़रुरी था, इसलिए क़ुरआन मजीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया "वस्सारिक़ू वस्सारिक़ातू" चोरी करने वाला मर्द और चोरी करने वाली औरत, यहाँ मर्द को पहले ज़िक्र किया कि उसको तो हमने ग़ैरत दी होती है, तो अब चोरी करना इसकी ग़ैरत के ख़िलाफ़ है इसलिए इसकी चोरी ज़्यादा बूरी है, औरत को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हया ज़्यादा दी होती है, चुनांचि क़ुरआने मजीद ने कहा "अज़्ज़ानियातू वज़्ज़ानी" ज़ना करने वाली औरत और ज़ना करने वाला मर्द, ज़ना का गुनाह तो दोनों के लिए एक जैसा, मगर चुंकि औरत को हमने हया दी थी इसके बावजूद अगर उसने गुनाह किया तो ये ज़्यादा बूरा है, इसलिए ज़ानिया का नाम पहले

लिया गया।

मर्द की तबीअत अल्लाह ने ऐसी बनाई है कि जब उसको ज़रुरत महसूस होती है तो ये किसी भी काम के लिए मोटिवेट (Motivate) यानी तैयार हो जाता है, आग में कूद जाता है, पहाड़ो से छलांग लगा देता है, समन्दर में कूद पड़ता है मोटिवेशन (Motivation) यानी किसी काम पर आमादगी के लिए चाहत ज़रुरी है और औरत की तबीअत ऐसी है कि जब उसको तहफ़्फ़ूज़ मिलता है, प्यार मोहब्बत मिलती है तब तैयार होती है, आम तौर पर ये बात मशहूर है कि औरत जब किसी पर मेहरबान होती है तो अपने आपको उसके हवाले कर देती है।

औरतों के लिए जन्नत का रास्ता

मर्द को अल्लाह ने ऐसी जिस्मानियत दी है कि यूँ महसूस होता है कि इसको इबादत से जन्नत मिलेगी इसी लिए मर्दों की ज़िन्दगियों को देखें तो इशा के वज़ू से फ़ज्र की नमाज़, मुराक़िबे, चिल्ला कशी, रात को अल्लाह की इबादत में उठना और हदीस पाक से भी पता चलता है कि अल्लाह इस बन्दे पर फ़ख़्र करते हैं, फ़रिश्तों के सामने जो तहज्जुद की नमाज़ पढ़ रहा होता है, जबकि ख़ूबसूरत दिल में घर करने वाली बीवी इसके पास मौजूद होती है तो देखें! ख़ूबसूरत बीवी बन्दे के पास है, मगर अल्लाह की मोहब्बत ने इसको मोसल्ले पर खड़ा कर दिया। अल्लाह को इसका अमल इतना पसन्द आया कि फ़रिश्तों पर फ़ख़्र फ़रमाया। इसीलिए हदीस में आता है कि नबी (सल्ल॰) आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) के साथ बिस्तर में लेटे हुए थे, फ़रमाया : "ذَرِيْنِيْ اَتَعَبَّدُ رَبِّيْ" आइशा! छोड़ मैं अपने रब की इबादत करता हुँ, तो महबूब (सल्ल॰) ने वज़ू फ़रमाया, मुसल्ले पर तिलावत और सुबह तक आप (सल्ल॰) की मुबारक आँखों से रिम-झिम बरस्ती रही, औरत को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐसा बनाया कि लगता है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इसको ख़िदमत के ज़रिए जन्नत अता फ़रमाएँगे। चुनांचि इसमें फ़रमाँबरदारी हो, नेकीकारी हो, परहेज़गारी हो, हदीस पाक में आता है कि जो औरत फ़राइज़ को पूरा करने वाली हो और उस हाल में मरे कि उसको ख़ाविन्द उससे ख़ुश हो, तो जन्नत के

जिस दरवाज़े से चाहे वह जन्नत में दाख़िल हो सकेगी, तो देखिए पैरामीटर (Parameter) मेअयार और है, मर्द को इबादत के पैरामीटर (Parameter) से नापा तौला जाएगा, औरत को ख़िदमत के पैरा मीटर से नापा तोला जाएगा, इसलिए मर्द के अन्दर मुजाहिदों की मेअराज होती है, औरत के अन्दर वफ़ाओं की मेअराज होती है, औरत ज़िन्दगी में दो आक़ाओं की फ़रमाँबरदारी करना है। एक ख़ाविन्दे की, कि वह भी आक़ा बनता है इसका और एक प्रवर्दिगार हक़ीक़ी मालिक व ख़ालिक़ है, तो अल्लाह की भी फ़रमाँबरदारी करना और ख़ाविन्द की भी फ़रमाँबरदारी करना, इस वजह से ख़िदमत की वजह से इसके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।

मर्द के ज़िन्दगी के आमाल को देखें तो शुक्र की झलक नज़र आती है, नेअमते होती हैं, नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "अ-फ़ला अकू-न अब्दन शकुर" दाऊद (अलैहि॰) ने फ़रमायाः

"رَبِّ اَوْزِعْنِیٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ"

सुलेमान (अलैहि॰) ने फ़रमाया , तो मर्द के अन्दर शुक्र की झलक होती है, औरत के अन्दर सब्र की झलक होती है, औरत को देखो तो बेचारी मातहत है, बेटी है तो बाप के मातहत है, बहन है तो भाई की मान की चलो, बीवी है तो ख़ाविन्द की मान के चलो। सारी उम्र इसकी मातहती में गुज़रती है, फिर बच्चों की परवरिश तो मुशक़िल एक सब्र आज़मा काम है, तो सब्र ही करना पड़ता है, इसकी शख़्सियत को देखें तो महिने में दस दिन जो अय्याम के होते हैं इसमें बेज़ारी, बदबू, परेशानी, सब्र करना पड़ता है, वैसे देखो तो परदा में रहे, अगर बाहर निकले तो गरमी है, पसीना है, मगर अल्लाह की बन्दी बुरक़ा के अन्दर है और ये सब तंगी बरदाश्त कर रही है, घर में है तो चहार दीवारी के अन्दर क़ैद की ज़िन्दगी गुज़ार रही है तो औरत की ज़िन्दगी को देखें तो आपको हर तरफ़ सब्र ही सब्र नज़र आएगा, मर्द की ज़िन्दगी को देखें तो आपको हर तरफ़ शुक्र की झलक नज़र आएगी।

एक बात ज़िहन में रखें! ये जो बातें की जा रही हैं ये मंज़िल हैं, अमूमी तौर पर ऐसा होता है, वरना ऐसे भी मर्द होते हैं कि इनकी क़ुव्वते इरादी कमज़ोर, ऐसे भी मर्द हैं कि इनके बदन कमज़ोर, मगर एक जन्रल कमपैरिज़न (Comparison) अमूमी तक़ाबुल है, जो क़ुरआन व हदीस और मोख़्तलिफ़ माहिरे नफ़्सियात के तहक़ीक़ात से सामने आता है इसको सामने रख कर अमूमी बात की जा रही है।

बुलन्द हिम्मती और सच्ची तलब का अजिब वाक़िआ

चुनांचि मर्द अगर किसी मक़सद को तै करले तो ज़िन्दगी की बाज़ी लगा देता है :

बक़ीउद्दीन इब्न मोख़ल्लद बीस साल की उम्र है अपने घर से निकले कि इमाम अहमद बिन हंबल (रह॰) के पास जाकर हदीस का इलम हासिल करूँगा। रास्ते में जहाज़ का रास्ता भटक गया, पैसे भी ख़तम होगए, कपड़े भी मैले कुचैले, बीमार भी होगए, इस हाल में बग़दाद पहुँचे कि बहुत ज़्यादा बीमारी का ग़लबा था, कमज़ोरी थी, एक कमरा किराया पर लिया, पता चला तो इमाम अहमद बिन हंबल (रह॰) को घर में क़ैद किया गया था और उनके दरस पर पाबन्दी लगा दी गई थी। अब य परेशान कि मैं तो हज़ारों किलो मीटर का सफ़र करके आया और मैं तो अपने शेख़ से हदीसे मुबारका पढ़ही नहीं सकता तो उन्होंने एक तरीक़ा निकाला कि फ़क़ीर का भेस अपना लिया, हाथ में कश्कौक पकड़ लिया। फटे कपड़े पहन लिए और जब अपने कमरे से निकले तो बाहर निकल कर आवाज़ लगानी शुरु करदी "اَذْكُرُكُمْ عَلَى اللهِ" उस ज़माने में फ़क़ीर पैसे का सवाल नहीं करते थे, बस इतना कह देते थे "اَذْكُرُكُمْ عَلَى اللهِ" तो फ़ौरन देखने वाले समझ जाते थे कि ये ज़रुरतमन्द है तो वह दक देते थे। ये सदा लगाते लगाते इमाम अहमद बिन हंबल (रह॰) के दरवाज़े पर गए ऊँची सदा लगाई, इमाम साहब (रह॰) निकले, चाहते थे कि कोई दरहम, दीनार इसके कासए गदाई में डाल दें, इस वक्त उन्होंने कहा कि हज़रत! मैं माल का साएल नहीं, मैं हदीस का तालिब हूँ इसलिए आप मुझे हदीस पढ़ाइये। हज़रत ने फ़रमाया मेरे उपर पाबन्दी है अगर पूलिस मुझे और

तुमहें बातें करते हुए देखेंगे तो हम दोनों को सज़ा मिलेगी। कहने लगे हज़रत! मैंने ये भेस अपनाया इसलिए कि मैं सदा लगाता लगाता सारा दिन शहर मं फ़िरुँगा। ऐसे वक़्त में आप के दरवाज़े पर पहुँचूंगा जब लोग गलियों में कम होते हैं। आप इसी पैसे को लेकर दरवाज़ें पर आजाइएगा अगर कोई बन्दा नज़र आ जाए तो वह पैसा डाल दीजिएगा, अगर न आएतो मुझे दो चार हदीसें सुना दीजिएगा। मैं सूनते ही इनको याद कर लूँगा, मेरे लिए इतना सबक़ काफ़ी है। एक साल तक ये भीख मांगते रहे और इस सूरत में अपने उस्ताद से रोजना चन्द हदीसें पढ़ते रहे, तो जब मर्द एक (Commitment) अज़म मोसम्मिम कर लेता है तो उसको करके दिखा देता है।

औरत की तबीअत अल्लाह ने ऐसी बनाई है कि इसमें शीएरिंग यानी अपनी बात दूसरों को बताने की आदत होती है, चुनांचि इसके दिल में बात नहीं रह सकती, कयूंकि इसको अल्लाह ने घर में वज़ीर बनाया है तो आप घर की हर बड़ी छोटी बात वह अपने ख़ाविन्द से शेअर (Share) करना अपनी ज़रुरत समझती है। अगर अल्लाह उसको ऐसा न बनाते तो घर में किसी को बसाती, मन में किसी को बसाती, तो अल्लाह ने तबीअत ऐसी बना दी कि ये बात बेचारी रख नहीं सकती इसलिए दो औरतें मिलती हैं तो थोड़ी देर में यह भी बता देती हैं कि मेरी गोद में किया है और ये भी बता देती हैं कि मेरे पेट में किया है, मेरा ख़ाविन्द ऐसा, मेरी सास ऐसी, मेरी नन्द ऐसी, पाँच मिन्ट में ऐसा हुदूद अरबिया खैंच देती हैं कि अगले बन्दे को (Summary) समरी ख़ुलासा मिल जाता है, तो शैयरिंग ख़ुलासा मिल जाता है, तो शेअरिंग की आदत होती है इसी लिए जो अक़लमन्द ख़ाविन्द होते हैं वह बीवी की रिपोर्ट ख़ुद सुन लेते हैं ताकि ये किसी और सें बात करने की ज़रुरत ही महसूस न करे।

मर्द को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐसा बनाया कि जब किसी चीज़ की ज़रुरत महसूस करता है तो उसको बक़द्र ज़रुरत ही इस्तेमाल करता है, मसलन कपड़े हैं तो ज़रुरत के मोताबिक़ पहनेगा। इसीलिए मर्दों में यूनीफ़ार्म (Uniform) होती है, फ़ौज की यूनीफ़ार्म, पूलिस की यूनीफ़ार्म, कस्टमवालों की यूनीफ़ार्म, दफ़तरों में देखो! तो सबकी यूनीफ़ार्मस होती

हैं। ये इनकी तबीअत का असर है, औरत को देखो तो इसके अन्दर अल्लाह ने नॉवल्टी (Novelty) बनाई होती है चुनांचि इसमें जिद्दत होती है, अब इसको देखो तो माशा अल्लाह! क्या फ़ैशन, क्या डिज़ाइन, क्या कलर मैचिंग (Colour matching) सुब्हान अल्लाह! कहने वाले ने कहा –

वजूद ज़न से है तस्वीरे कायनात में रंग

ये जो पक्के मकान, ख़ुबसूरत फ़र्नीचर, अच्छी गाड़ियाँ, अच्छे कपड़े ये सब औरतों की बरकतें हैं, अगर औरत दुनिया में न होती तो मुझे लगता है कि मर्द कच्चे मकान भी न बनाते, झोंपड़ी में ही अपना गुज़ारा करते, अल्लाह ने इनको तबीअत ही ऐसी दी हुई है। मर्द को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐसी तबीअत दी कि वह बिरेक डाउन मेन्टेंनिन्स (Break down maintenance) करता है, जब कोई चीज़ टूट जाए तब इसको रीपियर (Repair) करना इसको बिरेक डाउन मेन्टेंनिन्स (Break down maintenance) करते हैं और किसी चीज़ का टूटने से पहले ठीक कर लेना इसको (Preventive maintenance) कहते हैं घर के कामों में आप देखें तो मर्द हाँ-हाँ करता रहेगा, जब चीज़ ख़राब होजाएगी फिर महसूस करेगा हाँ क़दम उठाना चाहिए और औरत को देखो तो माशा अल्लाह! घर की चीज़ों को ख़राब होने से पहले ठीक करना, बदलना, बेहतर करना ये इसकी तबीअत है। इसलिए कहते हैं घर तो घर वाली ही से आबाद होता है।

मर्द को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐसी तबीअत दी है कि वह इन्टरव्यू मदाख़्लित को बरदाश्त नहीं करता, जैसे शेर अपनी हुकमरानी के लिए जंगल का एक हिस्सा मोतय्यन कर लेता है, इस हिस्सा में वह किसी और शेर की मदाख़िलत बरदाशत नहीं करता और अगर कोई दूसरा शेर आ जाए तो उसके साथ जंग करता है हत्ताकि दोनों में से किसी एक की मौत हो जाए, मगर औरत को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐसा बनाया कि वह (Codependence) दूसरे पर भरोसा को पसन्द करती है, यानी तआवुन को पसन्द करती है, (Co-operation) तो मिल-जुल कर रहना औरत की शख़्सियत में ज़्यादा ग़ालिब होता है।

मर्द को अल्लाह ने ऐसा बनाया कि किसी से मदद मांगना उसको बुरा महसूस होता है, ये अपनी ख़ुद्दारी के ख़िलाफ़ समझता है, उसकी मैं बरदाशत नहीं करती कि कोई मुझपर तरस खाए, जबकि औरत को अल्लाह ने ऐसा बनाया है कि वह हेल्प (Help) मदद लेने को ज़िन्दगी का नॉरमल (Normal) अमल समझती है, चुनांचि बेटी होतो उसको बाप की मदद चाहिए, बहन हो तो भाई की मदद चाहिए, बीवी हो तो ख़ाविन्द की मदद चाहिए और माँ हो तो औलाद की मदद चाहिए, तबीअत ही अल्लाह ने ऐसी बनाई कि सबके लिए ये चीज़ नॉरमल (Normal) होती है।

मर्द अपने दिल को किसी के सामने खोल दे ये बहुत मूश्किल काम होता है, इसलिए वह अपने ऐब किसी को नहीं बताता हत्ताकि हमारा तो ये तजुरबा है कि अपने शेख़ को भी ख़त लिखता है तो आधी बात लिखता है और आधी गुम कर जाता है, (Read in between the line) फिर बैनुस्सुतूर को पढ़ने वाला काम शेख़ को करना पड़ता है कि भाई असल मामाला क्या है, तो अपना ऐब बताना इसके लिए एक मोसीबत, औरत की तबीअत अल्लाह ने ऐसी बनाई कि दिल खोल देना इसके लिए एक नॉरमल सी चीज़ है इसलिए अपने ख़ाविन्द को पहली ग़लतियाँ भी बता देती है, मौजूदा ग़लतियाँ भी बता देती है।

मर्द को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ऐसा बनाया कि वह (Criticising) तनक़ीद को बहुत बूरा समझता है–

मैं इसे समझू हूँ दूशमन जो मुझे समझाए है

चुनांचि अगर कोई इसको नसीहत करदे तो ये बूरा मान जाता है, इसलिए कई औरतें ये ग़लती करती हैं कि मर्द को नसीहतें करती हैं, अपने तौर पर हमदर्दी कर रही होती हैं और ये नहीं समझ रही होती कि इसके अन्दर आग कितनी जल रही होती है और उसके बरख़िलाफ़ औरत की एक तबीअत है कि वह नसीहत का बूरा नहीं मानती बल्कि उसको अच्छा समझती हैं, लिहाज़ा जिस को ख़ाविन्द समझाएगा, गायड (Guide) रहनुमाइ करे तो वह बीवी ख़ुश होती है और उस ख़ाविन्द के साथ ख़ूशी से ज़िन्दगी गुज़ारती है।

मर्द अपनी कामियाबी उस वक़्त समझता है जब वह किसी काम का रिज़ल्ट (Result) नतीजा हासिल कर लेता है और औरत अपनी कामियाबी उसको समझती है कि उसने तअलुक़ात को अच्छी तरह निभा दिया इसलिए ख़ानदानों के काम होते हैं, एक एक चीज़ का ख़्याल रखना, लोगों का ख़्याल रखना, शादी बियाह में कहाँ किया करना है ये तो मर्द का समझ ही नहीं होती, औरतें ही जानती है कि अब ज़रुरतें किया हैं।

मर्द की शख़्सियत ऐसी कि (Men use love to get sex) वह जिन्स के लिए मोहब्बत को इस्तेमाल करता है और औरत की तबीअत ऐसी है कि (Women use sex to get love) वह मोहब्बत पाने के लिए जिन्स को इस्तेमाल करती है।

मर्द को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी मोहब्बत के इज़हार का डायरेक्ट मामला दिया इसलिए वह ज़बान से कह देता है और औरत की तबीअत में चुकि हया ग़ालिब होती है इसलिए वह कभी साफ़ लफ़्ज़ों में नहीं कहती हमेशा इशारों में बात करती है, मर्द को समझना पड़ता है कि इसकी बात का मक़सद किया है।

मर्द को जो अक्सर ख़्याल आते हैं वह भी टोटल कन्ट्रौल (Total Control) यानी मोकम्मल इक़्तिदार के आते हैं, ख़्वाब भी आते हैं तो इसी तरह के कि मैं बादशाह बन गया, मैं हवा में उड़ रहा हूँ, मेरा बिज़नेस का पराफ़ीट (Profit) यानी मनाफ़ा इतना बड़ गया तो मर्द के ख़्वाब इसी तरह के होते हैं और औरत के ख़्वाब रिश्तेदारों और बच्चों से मोतालिक़ होते हैं और घर के लोगों के मोतालिक़ ख़्वाब होते हैं, हमने अपनी ज़िन्दगी में देखा कि हमारी वालिदा साहिबा को अकसर व बेशतर ख़्वाब आता था कि मेरा फ़लाँ बेटा परेशान है और वह मेरे भाइ से कहती थीं पता करो, तुम्हारा भाई दूसरे शहर में है और वाक़ई जब पता किया जाता था तो कोई न कोई इसकी वजह होती थी, कभी कहती थीं मैंने ख़्वाब में देखा है मेरी फ़लाँ बेटी बीमार है, पता करते थे तो वाक़ई बीमार होती थी, मैंने अपनी ज़िन्दगी में अपनी वालिदा को कई सौ ख़्वाब सुनाते हुए देखा जो सच्चे थे और वह बच्चों से मोतालिक़ होते थे, तो यूँ लगता है कि चुंकि ये इख़्लास की देवी होती है, मुख़्लिस होती है और

बच्चों की ख़िदमत में गुम होती है तो बच्चों से मोतालिक़ सबसे बेहतर और जल्दी अल्हाम माँ ही को होता है, तो मर्द के ख़्वाब और, औरत के ख़्वाब और तरह के। यूँ समझ लीजिए कि क़िस्सा कोताह कि मर्द की ज़िन्दगी (Goal oriented) यानी मक़सद के क़रीब है और औरत की ज़िन्दगी (Relationship oriented) यानी रिश्तों के क़रीब होती है।

दुलहन की नज़र में दुनिया के अजाएबात

चुनांचि एक मर्तबा नया शादी-शुदा जोडा था, इनकी शादी तो हुई मगर दोनों ने सोंचा कि हम यूनिवर्सिटी में एक कोर्स कर लेते हैं। अब इसके लिए इम्तिहान देना था तो दोनों मियाँ-बीवी वहाँ गए तो उन्होंने कहा जी! आप से कुछ सवाल जवाब (Question-Answer) करने पड़ेंगे। सवाल ये था कि वन्डर्स ऑफ द वर्ल्ड (Wonder of the World) यानी दुनिया के अजाएबात क्या हैं? तो मर्द ने इसका जवाब लिखा : इजिप्ट (Egypt) मिस्र के पेरामिड (Pyramid), ताज महल, चीन की दीवार (Wall of China), पानामा कैनाल (Panama Canal), इम्पाएर स्ट्रीट बिल्डिंग (Empire State Building), सैंट पीटर बीसेलका (Saint Peter Besselica), ये (Wonder s of the World) दुनिया के अजाइबात हैं।

अब दुलहन साहिबा का जब पेपर देखा गया तो उसने दुनिया के अजाएबात में लिखा था –

टू सी (To see) देखना

टू इसमाइल (To smile) मुसकुराना

टू इसपीक (To speak) बात करना

टू टच (To touch) हाथ लगाना

टू किस (To kiss) चूमना

टू हग (To hug) गले लगना और

टू मेक लव (To make love) और अपने मियाँ से मोहब्बत करना।

अब औरत के लिए ये सात चीज़ें दुनिया की अजाएबात थीं, इसलिए कि उसकी शादी अभी-अभी हुइ थी।

शरीअत का हुस्न

मर्द की सोंच अलग, औरत की सोंच अलग इसी लिए शरीअत ने दोनों के अहकाम जुदा-जुदा रखें हैं, सुब्हान अल्लाह! क़ुरबान जाएँ ये कितनी खूबसूरत शरीअत है, मसलन मर्द और औरत को देखें तो नमाज़ों के अन्दर मोख़्तलिफ़, जिस तरीक़े से मर्द रुकूअ करता है, औरत हामिला हो तो इस तरह से रुकूअ करना इनके लिए मुम्किन ही नहीं होता, मर्द के लिए उँचा सज्दा करना आसान और हामिला औरत के लिए उँचा सजदा करना मुश्किल काम, मर्द महीने के तीस दिन नमाज़े पढ़ता है, औरत को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इसके ज़रुरियात की वजह से माफ़ करदी हैं, मर्द तीस दिन के रोज़े रखता है, औरत अयाम के दिन रोज़े नहीं रखती, लिहाज़ा इसको रमज़ान के बाद क़ज़ा करती है। मर्द जब चाहे क़ुरआन पाक की तिलावत कर सकता है, औरत हैज़ के दिनों में नफ़ास के दिनो में क़ुरआन मजीद की तिलावत नहीं कर सकती, मर्द के लिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने चेहरे का पर्दा नहीं रखा, औरत के लिए अल्लाह ने चेहरे का पर्दा भी रखा, मर्द अगर नमाज़ में है और इमाम ग़ल्ती की तो शरीअत कहती है कि पीछे से उँची आवाज़ से "सुब्हान अल्लाह" कह दे तो इमाम को पता चल जाएगा, लेकिन औरत अगर नमाज़ में है तो आवाज़ बुलन्द नहीं कर सकती। फ़रमाया कि एक हाथ दूसरा हाथ मारे ताकि आवाज़ पैदा हो, इस से पता चल जाए, देखिए मर्द के लिए जहरी क़िरअात का रखा, औरत को जहर करने की ज़रुरत ही नहीं होती, तो अहकाम इबादत मर्द के लिए अल्लाह ने और रखे औरत के लिए अल्लाह ने और रखे गोया शरीअत ने बतला दिया कि देखो! दोनों की जिस्मानी साख़्त, दोनों की शख़्सियतें अलग-अलग हैं इसके हिसाब से इनकी ज़िम्मेदारियाँ हैं।

मर्द व औरत के दर्मियान फ़र्क़ की बेहतरीन मिसालें

अब इसको ज़रा आसान लफ़्ज़ों में समझना है तो यूँ सोंच लीजिए कि एक ट्रेलर (Trailer) होता है चालीस फ़िट लम्बा और एक मर्सिडीज़ कार (Mercedes Car) होती है। अब दोनों मशीनों की नोइयत बिलकुल जुदा, ट्रेलर का साइज़ बहुत बड़ा होता है और मर्सिडीज़ कार का निस्बतन बहुत छोटी होती है, मगर ट्रेलर की बॉडी (Body) बहुत मज़बूत होती है, कार की बॉडी (Body) बहुत नफ़ीस होती है, ट्रेलर को देखो तो एक दर्जन टायर्स इसमें लगे होते हैं, मर्सिडीज़ कार को देखो तो चार टायर्स काफ़ी होते हैं। ट्रेलर को कई टन वज़न उठाना होता है और मर्सिडीज़ कार को चार आदमियों को ले जाना होता है, इसलिए ट्रेलर के व्हील में जो हवा का प्रेशर बहुत ज़्यादा होता है और कार के व्हील में हवा का प्रेशर बहुत मुनासिब होता है। बड़े-बड़े ट्रेलर फ़ुल्ली एयर कन्डीशन (Fully Air Condition) नहीं होते हैं, ज़रुरत ही नहीं होती और कार को देखो तो फ़ूल्ली एयर कन्डीशन (Fully Air Condition) होते हैं, ट्रेलर (Trailer) को पार्किंग (Parking) ऑट डोर (Out door) दरवाज़े से बाहर करनी पड़ती है, मर्सिडीज़ कार की पार्किंग (Parking) इ न्ड ा र (दरवाज़े से अन्दर) होती है, ट्रेलर चलता है तो दर्मियानी स्पीड से चलता है, मर्सिडीज़ कार को देखो तो सुब्हान अल्लाह, ट्रेलर के लिए मोड़ काटने के लिए लम्बी जगह चाहिए, मर्सिडीज़ कार के लिए बहुत छोटी सी जगह चाहिए, इसी लिए ट्रेलर चलाने के लिए हैवी व्हीकल (Heavy Vehicle) का लाइसेंस (License) ज़रुरी है, और कार चलाने के लिए लाइट व्हीकिल (Light Vehicle) का लाइसेंस (License) ज़रुरी है, ट्रेलर के इंजन के अन्दर डिज़ल डाला जाता है, मर्सिडीज़ कार की अन्दर पिट्रौल डाला जाता है। अब गाड़ियाँ तो दोनों हैं मगर दोनों की मक़सूद मुख़्तलिफ़ हैं तो दोनों की कितनी चीज़ों में फ़र्क़ आ गया। बिल्कुल यही मिसाल समझ लीजिए कि मर्द और औरत में तो दोनों इन्सान, मगर चुंकि दोनों के मक़सदे ज़िन्दगी जुदा-जुदा थे, ज़रुरियात ज़िन्दगी जुदा-जुदा थीं इसलिए अल्लाह रब्बुल

इज़्ज़त ने दोनों के जिस्मों में भी फ़र्क़ बनाया और दोनों की तबीअतों में भी फ़र्क़ बना दिया अगर कोई बन्दा ट्रेलर को मर्सिडीज़ कार की तरह चलाना चाहे तो एक्सीडेन्ट (Accident) करेगा और अगर मर्सिडीज़ कार को ट्रेलर की तरह चलाना चाहे तो भी एक्सीडेन्ट (Accident) करेगा, दोनों की ज़रुरियात का अलग-अलग ख़्याल रखना पड़ेगा।

एक और मिसाल समझ लीजिए! हम छोटे-छोटे थे तब हमारी गली में एक आदमी था, वह कबूतर पालता था तो कभी-कभी हम गली से गुज़रते थे तो इसके हाथ में कबूतर होता था तो छोटे-छोटे बच्चे थे हम बड़े हैरान हो कर देखते थे कि इसने कबूतर को हाथ में पकड़ा हुवा है, एक दिन वह कहने लगा कि आप भी इसको पकड़ो, तो हमने डरते घबराते कबूतर को हाथ में लिया मगर हमें ये महसूस हूवा कि कबूतर को पकड़ना तो आसान, नर्म सी अंगुलियाँ इसके उपर रखदो ये ऐसा परिंदा है कि ख़ूद ही क़ाबू रहता है, निकलने की कोशिश ही नहीं करता, चुनांचि इसने कहा कि इस को सख़्ती से मत पकड़ना इसका दम घुट जाएगा, इस पर नर्मी से हाथ रखना, चुनांचि हम ने बहुत नर्मी से उसके परों को अपनी उंगलियों में लिया और वह कबूतर आराम से हाथ में रहा। अब ये हमारा तजुर्बा था कि किसी चीज़ को पकड़ते हैं तो नर्म पकड़ते हैं, अल्लाह की शान कि एक मर्तबा हम एक जगह पर थे दरया के किनारे लोग मछिलयाँ पकड़ रहे थे, अब एक साहब ने मछली पकड़ी और वह मेरे पास लाए कि ये पकड़ो, तो मेरे लिए ज़िन्दगी का पहला तजुर्बा था अब जिस तरह मैंने कबूतर पकड़ा था उस तरह मैंने नर्म हाथ से जो मछली को पकड़ा तो वह ऐसी पिस्ली कि फिर पानी में चली गई और इतना अच्छा शिकार हाथों से छूट गया, तो उस दिन तजुर्बा हुवा कि कबूतर को पकड़ने का तरीक़ा और था, मछली को पकड़ने का तरीक़ा और था, इसको सख़्ती से पकड़ना ज़रुरी था।

चुनांचि हम एक मर्तबा अपनी पोती "हन्नाना"[1] को एक जगह पर ले गए, छोटी सी मछली थी, हमने कहाः पकड़ो! इसने किया हाथ लगाया

1.हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार नक़शबन्दी मोजद्दिदी बरकातहुम की पोती, छोटे साहिबज़ादे मौलाना सैफ़ुल्लाह साहब की दुख़्तर हैं।

कि मछली उछल कर पानी में चली गई, कहती है दादा अब्बू! ये तो भाग जाती है, इसको समझाया इसको पकड़ने का तरीक़ा और है।

मियाँ-बीवी की बड़ी ग़लती

एक ज़रा इस मिसाल को ज़िहन में रख कर ये बात समझें कि मर्द से बरतने का तरीक़ा अलग हैं और औरत से बरतने का तरीक़ा और है, तो आज के इस ब्यान में ये बात ज़िहन नशीं करवानी थी कि दोनों एक दूसरे की अलग-अलग शख़्सियतों को समझने की कोशिश करें, फिर इनको समझ लग जाएगी कि अगला बन्दा जो बात कर रहा है तो वह चाहता क्या है? तो फिर ये जो आपस की ऑरगोमेन्टस (Arguments) हुज्जत बाज़ी हैं उनका ख़त्म करना आसान होगा, ग़ल्ती सबसे बड़ी ये होती है कि मर्द चाहता है कि औरत मेरी तरह बरताव करे और औरत चाहती है कि मर्द मेरी तरह बरताव करे, समझने की कोशिश कीजिए अब बस घरों के अन्दर उलझनें होती हैं इनकी बुनियादी वजह ये कि मियाँ-बीवी एक दूसरे के मिज़ाज को नहीं समझते, लिहाज़ा मर्द की ख़ामोशी का मतलब औरत कुछ और निकालती है और औरत की बात का मर्द और नतीजा निकालता है, हालांकि दोनों का–

(They think differently) सोंचने का अन्दाज़ अलग,

(Feel differently) महसूस करने का अन्दाज़ अलग,

(Perceive differently) राय क़ायम करने का अन्दाज़ अलग,

(React differently) तास्सुर लेने का अन्दाज़ अलग,

(Respond differently) रद्दे अमल का अन्दाज़ अलग,

(Appreciate differently) अहमियत को जांचने का अन्दाज़ अलग,

(And they love differently) पसन्द करने का अन्दाज़ अलग,

तो अगर ये चीज़ें ज़िहन में आ जाए कि मुख़्तलिफ़ चीज़ों के दर्मियान फ़र्क़ होगा, तो फिर एक दूसरे से निबाह करना, मिल-जुल कर रहना, मोहब्बत व प्यार से रहना एक दूसरे के मैसिज को समझना आसान हो जाएगा। अगर नहीं समझते तो मियाँ-बीवी (Demandive)

झगड़ने पर तैयार हो जाते हैं, (Resentfull) बेज़ार हो जाते हैं, (Judgemental) क़ानून निगाह से देखने वाले (Intolerant) एक दूसरें की बात को क़बूल न करने वाले हो जाते हैं और नेक दीनदार लोगों में भी एक दूसरे के साथ उलझाऊ पैदा हो जाता है।

इसलिए हज़रत अली (रज़ि.) से किसी ने पूछा था कि "माज़ा अल-निकाह" निकाह किया है? उन्होंने फ़रमाया था कि "लज़ूमो महर" महर लाज़िम होजाता है, फिर पूछा "सुम्माज़ा" उन्होंने कहा, "सरवर शहर" एक महीने के मज़े हैं, उन्होंने कहा, फिर? कहने लगे "ग़मूमा दहर" सारी उम्र के ग़म हैं, तो बातें अगर आम आदमी एक दूसरे की न समझे तो फिर तो शादी इसको ऐसे ही नज़र आती है।

एक दिलचस्प लतीफ़ा

चुनांचि लतीफ़ा है कि दुल्हन को तैयार किया, इस मोक़े पर सारे घरवाले इसकी जुदाई पर रो रहे थे और दुल्हा हंसता हुवा आया कि इसको अपनी बीवी को ले जाना था, तो छोटा बच्चा बड़ा हैरान कि मेरी अम्मी भी रो रही है, अब्बू भी रो रहे हैं, भाई भी रो रहे हैं, बहनें भी रो रही हैं, ख़ूद मेरी बहन भी रो रही है, सारा मज्मा रो रहा है और दुल्हा मियाँ हंस रहे हैं, इसने पूछाः अब्बू सब लोग रो रहे हैं मगर ये दुल्हा भाई तो हंस रहे हैं। इसने कहा बेटा! आज हम सब रोएँगे फिर बाक़ी सारी ज़िन्दगी यही रोएगा।

तो शादी को इस अन्दाज़ में जो (Present) पेश किया गया जाता है, इसकी बुनयादी वजह ये है कि मियाँ-बीवी एक दूसरे को समझने से क़ासिर होते हैं और अगर तबीअतें एक दूसरे की समझली जाएँ और एक दूसरे की तबीअतों के जो डिफ़रेन्सिस (Differences) अलग-अलग अन्दाज़ हैं उनको (Accept) क़बूल किया जाए तो फिर मोहब्बते बड़ती हैं, इन्सान एक दूसरे के साथ उल्फ़त व मोहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारता है, तो आप ये बात ज़िहन नशीं कर लीजिए कि मर्द की तबीअत और है, औरत की तबीअत और है, दोनों एक दूसरे की तबाए को समझ कर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे तो माहब्बतों भरी ज़िन्दगी होगी और अहादीस मुबारका से इसकी

मिसालें मिलती हैं, जब आप को उसकी मिसालें पेश करेंगे तो आप हैरान होंगी और आप को यूँ नज़र आएगा कि अल्लाह के महबूब (सल्ल.) तो कायनात के सबसे ज़्यादा माहिरे नफ़िसयात थे कि आप ने हर एक के साथ इसके हिसाब से पेश आने के तरीक़े बताए और समझाए, अल्लाह तआला हमें नेकोकारी और प्रहेज़गारी की पुरसकून ज़िन्दगी नसीब फ़रमाए।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

व आख़िरु दअ़वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

□□□

وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ

(व आशिरु हुन्ना बिल-मअरुफ़)

मर्द और औरत की जज़बाती ज़रुरियात

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

फ़ेहरिस्त अनावीन

अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह!

इक़्तिबास

छः चीज़ें औरत की ज़रुरत होती है :

1. ख़बरगीरी
2. ज़ेहनी हम-आहंगी
3. इज़्ज़त का मिलना
4. अपनाइय़त का मिलना
5. उसके हुक़ूक़ का तस्लीम करना
6. और इसके दिल में यक़ीन दहानी का होना।

लेकिन अगर आप ग़ौर करें तो आज घरों में औरत को ये चीज़ें नहीं मिलती जिसकी वजह से मियाँ-बीवी के दर्मियान झगड़े होते हैं, लड़ाईयाँ होती हैं और यहीं से घर बरबाद होते हैं।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुल्फ़िक़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○
اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ وَکَفٰی وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیۡنَ اصۡطَفٰی اَمَّا بَعۡدُ۔
اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
(وَعَاشِرُوۡهُنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ)
سُبۡحَانَ رَبِّکَ رَبِّ الۡعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوۡنَ۔ وَسَلَامٌ عَلَی الۡمُرۡسَلِیۡنَ
وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمۡ
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمۡ
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمۡ

बेटे और बेटी की तबीअत का फ़र्क़

जो औरतें अपनी ज़िन्दगी में माँ बनती हैं और उन्हें बच्चों की तर्बियत करनी पड़ती है वह इस बात को अच्छी तरह समझती हैं कि बेटी की तर्बियत का मामला और होता है और बेटे की तर्बियत का मामला कुछ और होता है, बेटी की तर्बियत बहुत आसान होती है इसलिए कि वह मोहब्बत करने वाली, चीज़ों को शेयर करने वाली, माँ-बाप के इशारों को समझने वाली, सब्र करने वाली, ज़रा सा धमकाओ तो सहम जाने वाली ये सारी चीज़ें इसकी शख़्सियत में वाज़ेह नज़र आती हैं और जब बेटे की तर्बियत होती है उस वक़्त तजुर्बा बिल्कुल मुख़्तलिफ़ होता है, बच्चे के अन्दर एक डिटरमीनेशन पॉवर (Determination Power) क़ुव्वते फ़ैसला होती है वह अपनी (Identity) पहचान दिखाता है। चुनांचि कई बातों में वह ज़िद भी कर लेता है फिर दूसरों से छीना-झपटी भी करता है, अपनी मौजूदगी का अहसास दिलाता है तो माएँ हैरान होती हैं कि

बच्ची की तर्बियत कितनी आसान थी और बच्चे की तर्बियत कितनी मुश्किल होती है।

हमने अपने घर में इस का तजुर्बा किया कि “हन्नाना” को समझाना इतना आसान कि एक मर्तबा उसका गला ख़राब था, किसी ने लॉली पॉप (Lolly Pop) दिया उसने मुहँ मैं डाल लिया तो मैंने कहा हन्नाना! इसको फेंकदो, इस बच्ची ने उसी वक़्त मुँह से निकाल कर उसको फेंक दिया और मैं इतना हैरान हुवा कि छोटी बच्ची है, मीठा पसन्द होता है, एक चीज़ मूँह में डालली मगर फिर भी इतना कहने पर उसको मुँह से निकाल कर फेंक दिया, इसके खिलौने होते थे तो ये बच्चों के साथ मिल-जुल कर खेलती थी, एक मर्तबा धर में कुछ (Function) प्रोग्राम था बच्चों ने इसके कमरे में खिलौने बिखेर दिए, उधम मचा दिया तो जब किसी ने कहा “हन्नाना” बच्चों ने तुम्हारे सब खिलौने ख़राब कर दिए तो आगे से कहने लगी कि बच्चे हैं ना, तो इसकी बात सुन कर हम हैरान हो गए तो ये इस क़द्र दूसरों के साथ मिल-जुल कर रहने वाली, बात मानने वाली, प्यार मोहब्बत करने वाली शख़्सियत थी फिर अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से “सरमद”[1] साहब तशरीफ़ लाए तो अब हमें अहसास हुवा कि इसकी शख़्सियत बहुत मुख़्तलिफ़ है।

चुनांचि छीना-झपटी करना, दूसरों की हर चीज़ को अपना बना लेना, ज़रा सा कुछ कहदे तो बदला लेके रहना, जो बात करदी उसको करवा के छोड़ना, ये चीज़ हमें नई मालूम हूईं चुनांचि हमने इसका नाम रखा “सरमद प्रापर्टी ला” (Sarmad Property Law) “सरमद” का क़ानूने मिल्कियत, चुनांचि इसके ज़रा क़ानून भी सून लीजिए!

सरमद का क़ानून

(If something is mine, its mine)

अगर वह मेरे पास है तो वह मेरी है

(If I like something, its mine)

अगर मुझे कोई चीज़ पसन्द है तो वह मेरी है

---

1. हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक्क़ार अहमद साहब नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहु के पोते, हन्नाना सलमहा के छोटे भाई।

(If it is my hand, its mine)

अगर मेरे हाथ में है तो वह मेरी है

(If I can take it from you, its mine)

अगर मैं तुमसे कुछ छीनलूँ तो वह मेरी है

(If I had it a little while ago, its mine)

अगर कोई चीज़ थोड़ी देर पहले मेरे पास थी तो वह मेरी है

(If it look like mine, its mine)

अगर मेरी नज़र किसी चीज़ पर पड़ जाए तो वह मेरी है

(If I saw it first, its mine)

अगर किसी चीज़ पर मेरे नज़र पहले पड़ जाए तो वह मेरी है

(If you put something down, its mine)

अगर तुमसे कोई चीज़ गिर जाए तो वह मेरी है

(But if its broken, its your's)

लेकिन अगर कोई चीज़ टूट जाए तो वह तम्हारी है

तो मालूम हुवा कि बेटे की तर्बियत और होती है बेटी की तर्बियत और होती है यही फ़र्क़ जो बच्पन में थोड़ा होता है, ये जवानी की उम्र में आकर और भी ज़्यादा हो जाता है, चुनांचि ये बात ज़िहननशीं करलें कि औरत की शख़्सियत बिल्कुल मुख़्तलिफ़ होती है और मर्द की शख़्सियत बिल्कुल मुख़्तलिफ़ होती है हत्ताकि दोनों की ज़रुरियात में भी फ़र्क़ होता है।

मर्द व औरत की जज़्बाती ज़रुरतें

चुनांचि आज का उन्वान है "मर्द और औरत की जज़्बाती ज़रुरियात" इमोशनल नीडज़ (Emotional needs) तो इसमें भी फ़र्क़ होता है। आप देखें बच्चों के खेल मुख़्तलिफ़ और बच्चियों के खेल मख़्तलिफ़, लड़कों को देखें तो दौड़ेंगे, भागेंगे, कुश्ती करेंगे, हाथा-पाई करेंगे, शोर मचाएंगे ये बच्चों का मामूल है और बच्चियों को देखें तो रस्सी फ़लांग लेना, हाइड एण्ड सिक (Hide and Seek) आँख मचौली खेलना, बैठ कर कोई काग़ज़ पे गेम (Game) खेलना ये इनकी आदात हैं तो तबीअतों और

मिज़ाज का फ़र्क़ ये बच्पन से ही महसूस होना शुरु हो जाता है फिर जब बड़े होते हैं तो ये फ़र्क़ और ज़्यादा वाज़ेह होजाता है अब मर्द के ज़ज़्बाती ज़रुरियात और हैं औरत के ज़ज़्बाती ज़रुरियात और हैं।

माहिर नफ़िसयात हज़रात ने छः (6) पवाइन्ट (Point) लिखें हैं कि ये मर्द की ज़रुरत हैं और छः (6) पवाइन्ट (Point) लिखें हैं कि ये औरत की ज़रुरत है, चुंकि औरतों का मजमअ है तो इनकी ज़रुरियात को पहले ब्यान कर देते हैं :

औरत की छः (6) ज़रुरियात

1. सबसे पहली चीज़ जो एक शादी-शुदा औरत को ज़िन्दगी में चाहिए उसको ख़बरगिरी या केयर (Care) कहते हैं, चुनांचि हर बीवी चाहती है कि ख़ाविन्द ऐसा हो जो मेरी ख़बरगिरी करे मेरी ज़रुरियात का ख़्याल करे, मेरा ध्यान रखे, मेरे काम को अपना काम समझे, तो ख़बरगिरी करना ये औरत की सबसे पहली ज़रुरत होती है।
2. फिर दूसरी बात ये है कि इसके अन्दर अन्डर स्टैन्डिंग (Unerstanding) मफ़ाहिमत हो, बीवी अगर बात करे तो इसकी फ़िरीक्इंसी (Frequency) इशारात को वह समझ सके। सेम गिरिड (Same grid) एक दर्जा पर बात कर सकें वह दोनों एक दूसरे की तबीअतों को समझते हों और एक दूसरे की साथ इनकी ज़ेहनी हम-आहंगी हो।
3. **तीसरी ज़रुरियातः** औरत को इज़्ज़त मिलना, रेसपेक्ट (Respect) एहतिराम मिलना, गर आप किसी जानवर की भी अहानत (Humiliate) करें तो वह भी नफ़रत करता है, बच्चे को हेमीलेट (Humiliate) करें तो वह भी नफ़रत करता है, औरत तो एक बालिग़ा होती है इन्सान होती है (Humiliate) तज़लील को कोई पसन्द नहीं करता, इज़्ज़त को हर कोई पसन्द करता है, चुनांचि औरत चाहती है कि मैं जहाँ हूँ वहाँ इन्सान होने के नाते मेरी इज़्ज़त हो।

4. **चौथी ज़रुरियातः** डीवोशन (Devotion) अपनाइयत कि ख़ाविन्द ऐसा हो के मुझे अपनाए उसकी मेरे साथ एक (Commitment) वाबस्तगी हो, मुझे अहिमयत मिले।
5. **पाँचवी ज़रुरियातः** री-इसोरेन्स (Re-assurance) यक़ीनदहानी, औरत के दिल में यक़ीन बिठाना कि इसको घर के अन्दर मोहब्बत मिलेंगे और इसका घर आबाद रहेगा। चुंकि जब औरत के दिल में एक खटका पैदा कर दिया जाए कि मेरा घर टूट जाएगा तो वह औरत कभी भी ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकती। तो ये छः चीज़ें औरत की ज़रुरियात होती हैं :

   1. ख़बरगीरी
   2. ज़ेहनी हम-आहंगी
   3. इज़्ज़त का मिलना
   4. अपनाइयत का मिलना
   5. इसके हुक़ूक़ का तस्लीम करना
   6. और इसके दिल में यक़ीन दहानी का होना।

लेकिन अगर आप ग़ौर करें तो घरों में औरत को ये चीज़ें नहीं मिलती जिसकी वजह से मियाँ-बीवी की दर्मियान झगड़े होते हैं, लड़ाईयाँ होती हैं और यहीं से घर बरबाद होते हैं।

पहली ज़रुरत : ख़बरगीरी करना

मिसाल के तौर पर ख़ाविन्द ख़बरगीरी करने के बजाए इसको इगनॉर (Ignore) नज़र अन्दाज़ करता है, बीवी ने कोई चीज़ बताई कि ज़रुरत है तो आराम से कह देता है कि मैं तो भूल गया, तो ग़फ़लत बरत्ता है और ये ग़फ़लत दूरी का बाइस होती है, इसलिए तो रब करीम ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया : "वला तकुम्मि-नल-ग़ाफ़िलीन" कि ग़ाफ़िलों में से न होना, अगर ग़फ़लत बन्दे और परवरदिगार के दर्मियान फ़ासला कर देती है तो मियाँ-बीवी के दर्मियान फ़ासला करना तो मामूली बात है तो बीवी के कामों को इगनॉर (Ignore) नज़र अन्दाज़ करमा, इसकी कोई क़द्र न करना, इसकी ज़रुरतों के बारे में ये कह देना कि

मुझे धयान न रहा, ख़्याल न रहा, मैं भूल गया, तो ये केयरलेस्नेस (Care Lessness) बे-तवज्जिही सबसे पहली बुनियाद होती है जो दिलों में फ़ासले डालती है।

दूसरी ज़रुरत : ज़ेहनी हम-आहंगी

दूसरी चीज़ होती है अन्डर स्टैन्डिंग (Unerstanding) कि मर्द बीवी की बात को समझे कि वह क्यों ऐसा कह रही है मगर हमने देखा है कि मर्दों के लिए बात सुन्ना सबसे मुशिकल काम, अभी आधी बात इसने कही होती है तो फ़ौरन इसका एक हल बताकर ख़ामोश हो जाते हैं और अगर वह ज़्यादा तफ़सील से कहना चाहे तो ऐसी चुप लगाते हैं कि जैसे एक कान सेबात सुनी और दूसरे से वह निकाल दी, औरत को परेशानी होती है। मैं बीवी, ज़िन्दगी की साथी हूँ, इसके बच्चों की माँ हूँ फिर भी ये मेरी बात ही नहीं सुनता और कई मर्तबा ख़ाविन्द ऐसी हरकत करता है कि जैसे उसे फ़ुरसत ही नहीं है तो औरत के दिल पर बहुत परेशानी गुज़रती है इसका वह ख़ाविन्द कि जिसको वह अपनी ज़िन्दगी का साथी कह रही है अपना महरमे राज़ कह रही है वह नही सुनता।

तीसरी ज़रुरत : इज़्ज़त व एहतिराम

तीसरी चीज़ (Respect) एहतिराम है तो उसको भी आप देखें कई मर्तबा बहुत बड़ी ग़लती करतें हैं कि अपने ही बच्चों के सामने बीवी को डांटना शुरु कर देते हैं, जिस बाप ने बच्चों के सामने बीवी को डांटा वह किया उम्मीद करता है कि बच्चे कल माँ की बात मानेंगे, तो ये तो बहुत बड़ा नुक़सान है मगर ये ग़ुस्सा भी अजीब मुसीबत है कि ज़रा सी बात पर ग़ुस्सा कर लेते हैं और ये भी नहीं देखते कि हम किसके सामने बात कर रहे हैं चुनांचि माँ-बाप के सामने बीवी को डांटना, बच्चों के सामने बीवी को डांटना, रिश्तेदारों के सामने, हत्ताकि घर की काम करने वाली औरतों के सामने बीवी को डांट देते हैं तो बीवी की इज़्ज़ते-नफ़स मजरुह होती है, इन्सान अपना इख़्तियार तो दिखा देता है कि देखो मेरी पावर कितनी है मगर ये तो नहीं समझा कि दूसरे के दिल पर क्या गुज़र रही होती है।

चौथी ज़रुरत : अपनाइयत का अहसास

चौथी चीज़ (Devotion) अपनाइयत है तो बजाए इसके कि औरत को अपनाइयत का अहसास दिलाए इन्सान दूसरे काम को प्राईरीटी (Priority) अहमियत देता है। चुनांचि नौकरी की अहमियत मिल जाती है दोस्तों को भी मिल जाती है बच्चों को भी मिल जाती है लेकिन बीवी का नाम लिस्ट में लास्ट (Last) आख़िर में भी नहीं आता, तो साफ़ ज़ाहिर है कि इसका दिल इस पर बहुत ग़मगीन होता है।

पाँचवी ज़रुरत : हुक़ूक़ तस्लीम करना

पाँचवी चीज़ है हुक़ूक़ को तस्लीम करना वैलीडिशन (Validation) इसको कहते हैं, इस मामले में भी बहुत कोताही करते हैं, हमने देखा कि नेक लोग भी अपनी बीवी को अपनी माँ के रहम व करम पर छोड़ देते हैं, भाई आप ख़ाविन्द हैं ख़ुद मामले को रखें, माँ के साथ इक्यूवेशन (Equation) मसावात अलग बात है और बीवी के साथ प्यार मोहब्बत अलग चीज़ है अब ख़ुद एक तरफ़ होकर एक बच्ची को एक बूढ़ी औरत के सुपूर्द करदेना ये तो अजीब बात है, तो हम ने देखा है कि सास साहिबा को भी फिर हुकुमत करने का मज़ा आता है वह भी छोटी-छोटी बातों को बतंगड़ बना लेती हैं, अपनी बेटी अगर वही ग़लती करती है तो इगनॉर (Ignore) नज़र अन्दाज़ कर जाती हैं औरे बहू से उससे कम दर्जे की ग़लती होती है तो (Talk of the Town) शहर भर का मौज़ूए गुफ़तगू बना देती हैं तो ये कोताहियाँ घर टूटने का सबब बनती हैं इसलिए ख़ाविन्द को चाहिए कि औरत को किसी तीसरे के रहम व करम पर न छोड़े।

हमने बाज़ जगहों पर देखा कि ज्वाइन्ट फ़ैमिली (Joint Family) मुशतरक ख़ानदान है और हमारे सारे फ़ैसले हमारे बड़े भाई करते हैं, भाई! बाक़ी कारोबारी फ़ैसले चाहे बड़े भाई करते फिरें लेकिन मियाँ-बीवी का मामला तो मियाँ-बीवी का है, इसमें बड़े भाई कहाँ से टपक पड़े तो ये कोताहियाँ होती हैं जिसकी वजह से फिर औरत को दिल दुखता है और मियाँ-बीवी के दर्मियान फिर फ़ासिले हो जाते हैं।

छट्ठी ज़रुरत : वफ़ादारी की यक़ीन दहानी

छट्ठी चीज़ थी री-इसोरेन्स (Re-assurance) यक़ीनदहानी, तो इसमें भी कोताही होती है, मामूली बात ये दूसरी शादी की धमकी, मैं दूसरी शादी करलूँगा, मैं दूसरी बीवी ले आऊँगा, मैं तुम्हें घर से निकाल दूँगा, मैं तुम्हे तलाक़ दे दूँगा, माँ-बाप के घर भेज दूँगा, ये अलफ़ाज़ ज़बान से कहदेने तो आसान हैं लेकिन मर्द ये नहीं समझता कि औरत जब ये लफ़ज़ सुनती है कि ये तुम्हें डाईवॉर्स (Divorce) तलाक़ दे दूँगो तो इसके दिल पर किया गुज़रती है, बिला वजह तलाक़ की धमकी देना इससे बड़ी ग़लती कोई ख़ाविन्द नहीं कर सकता।

तो मामूल की ज़िन्दगी का आप अगर इनालाइस (Analyse) तज्ज़िया करें तो चीज़ों में बहुत ज़्यादा कोताहियाँ होती हैं और ये चीज़ लाइल्मी की वजह से भी होती है और तबीअत की हटधर्मी की वजह से भी होती है, अपनी ग़लतियों को छूपाने के लिए उलटा इन्सान धौंस से काम लेता है।

ख़ाविन्द की छः (6) जज़बाती ज़रुरतें

जिस तरह ख़ाविन्द बीवी के हुक़ूक़ में कोताही करता है उसी तरह बीवियाँ भी ख़ाविन्दों के हुक़ूक़ में कोताही करती हैं, ख़ाविन्द की ज़ज़बाती ज़रुरियात अलग हैं।

पहली ज़रुरतः बीवी का एतिमाद

इसको सबसे पहले बीवी से ट्रस्ट (Trust) एतिमाद चाहिए कि मर्द अगर कोई फ़ैसला करे तो बीवी आँख बन्द करके कह दे कि जी हाँ मुझे आपका फ़ैसला क़बूल है मगर यहाँ तो छोटी-छोटी सी चीज़ ख़रीदनी होती है इसमें भी बीवी साहिबा के मशविरे शुरु हो जाते हैं, वह अपना आई क्यू लेवल (I.Q.Level) अपनी अक़्लमन्दी दिखाना शुरु करती है आप ने यूँ चाहा, नहीं मैं ये पसन्द करती हूँ, कोई काम तो आपका ठीक होता नहीं, मैं किया करुँ, जो इतनी सी बात तो औरत ने कह डाली लेकिन ख़ाविन्द के दिल में ये बिठा दिया कि मेरे किसी फ़ैसले से ये ख़ूश

नहीं होती, अब इस फ़िक़रे के अन्दर कितनी ज़हर भरी बात थी और उसको इस का एहसास ही नहीं होता, बीवी को ये अहसास होना चाहिए कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मर्द को बड़ा बनाया है तो बड़े ने जिस को बड़ा बनाया ये भी उसको बड़ा बनाके रखे, छोटा बनने में इसकी इज़्ज़त है अगर ये ख़ाविन्द की बराबरी पर उतर आएगी तो अपना नुक़सान करेगी। अमीर को अमीर न समझना ये बे-बरकती ही का ज़रिया होता है, चुनांचि मर्द फ़ैसले करले अगर इसमें कोई शरई क़बाहत नहीं हो तो अगर थोड़ा तबीअत के ख़िलाफ़ भी हे तो चुप कर जाने में किया मुसीबत है, ये कहाँ लिखा है कि जो फ़ैसला मर्द करे लाज़मी टोक टिकाई करनी है लाज़मी इसकी किरीटीसाइज़ (Criticize) मज़म्मत करना है। इससे मर्द का ट्रस्ट (Trust) इतिमाद मजरुह हो जाता है और फिर वह मर्द कोतायियों की ज़िन्दगी गुज़ारता है।

दूसरी ज़रुरत : क़बूलियत

दूसरी चीज़ जो मर्द को चाहिए उसको (Acceptance) क़बूलियत कहते हैं। चुनांचि मर्द ज़िन्दगी गुज़ार रहा है, औरत को प्यार भी देता है, घर के ख़र्च का भी ख़्याल रखता है तो अब औरत इस मर्द के छोटे-मोटे मामले को क़बूल करे, इसकी तबीयत का भी लिहाज़ रखे अगर इसकी तबीयत रफ़ एण्ड अफ़ (Rough & Tough) ख़ुश्क और सख़्त है, ये कभी कोई नागवार बात कर सकता है ये सख़्त अल्फ़ाज़ भी बोल सकता है तो इसपर सब्र कर लेना सबसे आसान इलाज होता है।

तीसरी ज़रुरत : शुक्रगुज़ारी

तीसरी चीज़ जो मर्दों को चाहिए उसको (Apreciation) शुक्रगुज़ारी कहते हैं कि औरत अपने ख़ाविन्द के गुन गाए, मर्द चाहते हैं कि अगर मैं इसको मोहब्बत व प्यार दे रहा हूँ तो ये उसके बदले मेरी (Apreciation) शुक्रगुज़ारी करे, चुनांचि जो बीवियाँ अपने सास ससूर के सामने अपने ख़ाविन्द की तारीफ़ करती हैं, माँ बाप के सामने ख़ाविन्द की तारीफ़ करती हैं, रिश्तेदारों में, अहबाब में अपने ख़ाविन्द की तारीफ़

करती हैं तो वह मर्द और ज़्यादा अपनी बीवी के साथ अच्छा होने की कोशिश करता है।

कोताही ये होती है कि औरत की तरफ़ से शिकायतें शुरु होजाती हैं, अब इस नए नव्वे (90) अच्छी बातें कीं वह तो याद नहीं होती लेकिन अगर दस (10) ग़लतियाँ थीं तो हर जगह वह ग़लतियाँ ही गिनवाइ जा रही हैं बल्कि हमने तो यहाँ तक देखा कि बैठते ही ख़ाविन्द की शिकायतें शुरु होजाती हैं तो जो औरत ख़ाविन्द की शिकायतें करने लगीं वह तो अल्लाह को भी पसन्द नहीं होती, इसलिए तो नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि मैंने मेराज में देखा कि औरतों की अकसरियत जहन्नम में थी तो पूछा कि अल्लाह के हबीब (अलैहि॰)! क्या वजह? फ़रमाया इसलिए कि ख़ाविन्द की नाशुक्री करती हैं, चीज़ों पर लानत भेजतीं हैं तो ये जो शिकायतों वाला (Attitude) रवैया है ये बहुत ज़्यादा (Killing) मोहलिक होता है, इसको बदलने की कोशिश करनी चाहिए। ये सिर्फ़ ख़ाविन्द की शिकायत नहीं हो रही होती, ये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की भी शिकायत हो रही होती है कि इसने मुझे ज़िन्दगी का साथी कैसा दिया? तो इसलिए औरत को चाहिए कि अगर शुक्रगुज़ारी करेगी तो ख़ाविन्द अपने आपको और ज़्यादा बेहतर बनाने की कोशिश करेगा।

चौथी ज़रुरत : तारीफ़ करना

चौथी चीज़ जो मर्दों को चाहिए उसको (Admiration) तारीफ़ करना कहते हैं। मगर देखने में यह बात आई है कि घर की मुर्गी दाल बराबर और कई मर्तबा ख़ाविन्द को भी बच्चों में से एक बच्चा समझ लेती हैं और उसको इस्लाह की कोशिश में लग जाती हैं, इसको समझाने लग जाती हैं जैसे एक छोटे बच्चे को समझाया जाता है और (Attitude) रवैया को वह नहीं महसूस (Feel) करती कि मैं किया कर रहा हुँ, ठीक है किसी मोक़े पर कोई मश्विरा हो, इस्लाह की बात करदे तो वह बहुत अच्छा लेकिन हर वक्त छोटे बच्चे की तरह बैठकर इसको सबक़ पढ़ाने की कोशिश करना, पट्टी चड़ाने की कोशिश करना, ये चीज़ मर्द के लिए

क़ाबिले क़बूल नहीं रहती और रही चीज़ में ग़ैब निकालने की कोशिश करना ये तो बहुत ही बुरी बात है।

घर की मुर्ग़ी दाल बराबर

एक बुज़रुग थे मगर इनकी बीवी "अल्लाह तौबा थी" किसी बात को नहीं मानती थी। उन्होंने दुआ मांगी: या अल्लाह ऐसी बात हो कि ये ख़ुदा की बन्दी कुछ सब्र कर जाए और मेरे साथ अच्छा गुज़ारा करे, तो उनको उड़ने की करामत मिली, चुनांचि वह उड़ते हुए अपने घर के उपर से गुज़रे अब बीवी ने किसी आदमी को उड़ते हुए देखा तो वह बड़ी हैरान!!! कि ये कैसा वली है और कैसा आमिल है, चुनांचि जब वह घर आए तो औरत ने आते ही कहा: आप बड़े ज़ाकिर शाग़िल बने फिरते हैं और बड़े मोसल्लि की बातें करते हैं, मैने आज अल्लाह के वली को उड़ते हुए देखा। उन्होंने कहा: अल्लाह की बन्दी! वह मैंही था। जब उन्होंने ये कहा तो वह थोड़ी देर सोच कर कहने लगी: अच्छा मैं भी सोच रही थी ये टेड़हा कयूँ उड़ रहा है, तो मक़सद ये कि जब मानना ही नहीं तो कहीं न कहीं से मीम मेख़ तो निकल ही आती है, अपना ख़ाविन्द आलिम है मगर नज़र नहीं आता। मुफ़ती है मगर मुफ़ती नज़र नहीं आता, ख़ाविन्द की बात में वज़न ही नज़र नहीं आता। इसको कहते हैं घर की मुर्ग़ी दाल बराबर। तो औरत को चाहिए कि मर्द को उसका मुक़ाम दे जो शरीअत ने उसको दिया है।

पाँचवीं ज़रुरत : मन्ज़ूरी

पाँचवीं चीज़ जो मर्द को चाहिए उसको (Approval) मन्ज़ूरी कहते हैं। यानी मर्द के घर के अन्दर जो काम होते हैं मसलन किसी बात पर उसने अपने बच्चे को टोक दिया या सख़्ती करली तो ये ज़रुरी नहीं होता कि बच्चों के सामने ही माँ बोलना शरु करदे। आप तो हर बात पर गुस्सा हो जाते हैं, ये बच्चा है ग़ल्ती हो गई तो किया हुवा, नहीं अगर ख़ाविन्द ने कोई ऐसा (Step) क़दम उठालिया तो थोड़ी देर ख़ामोश रहें, बच्चे के ज़िहन में ये ना डालें कि मैं इसकी साइड (Side) ले रही हूँ। हाँ

जब अलग होंगे तो उस वक़्त अपने मियाँ से (Discuss) बात करलें कि बच्चों पर इतनी सख़्ती न करें मगर देखा ये गया है कि सब्र नाम की चीज़ तो कई दफ़ा तबीअत में होती ही नहीं है, इसलिए बातों के बतंगड़ बन जाते हैं, औरतें छोटी-छोटी बात पर इल्ज़ाम तराशी शुरु कर देती हैं और मिया बीवी जब आपस में कोई बात करने बैठते हैं तो एक लम्बी फ़ेहरिस्त होती है औरत के पास और पता है बात कहाँ से स्टार्ट (Start) शुरु करती हैं? जिस दिन रुख़्सती हुई थी उसी दिन से कि जिस दिन रुख़्सती हुई उस दिन ऐसा हुवा था, वह बात उस वक़्त बैठी याद दिला रही है जब ये पाँच बच्चों की माँ बन गई है, तो नाकामियों की लम्बी फ़ेहरिस्त को याद रखना, ग़लतियों की लम्बी फ़ेहरिस्त को याद रखना और जब कभी बात हो तो फिर रुख़्सती के दिन से लेकर उसको गिनवाना शुरु करदेना ये बहुत बड़ी कोताही है।

छट्ठी ज़रुरतः हौसला-अफ़ज़ाइ

छट्ठी चीज़ जो मर्द को चाहिए उसको इन्करेजमेंट (Encouragement) होसला अफ़ज़ाई कहते हैं, मर्द ग़लती भी करले लेकिन औरत अगर उसके साथ अच्छे अन्दाज़ से बरताउ करे तो मर्द की हौसला अफ़ज़ाई होती है। वह अगर पहले ग़लती कर चुका तो आईन्दा अपनी इस्लाह के लिए कोशिश करता है कि बीवी ने उसकी हौसला अफ़ज़ाइ की, मर्द के हौसले घटाने वाली बातें करना ये घर को तोड़ देता है।

चुनांचि मर्दों की कोताहियाँ होती हैं जिसकी वजह से घर में औरत दिल्चस्पी लेना छोड़ देती है। औरतों की कोताहियाँ होती हैं जिसकी वजह से मर्द घर के बाहर दिल्चस्पी लेना शुरु कर देते हैं। ये वह बातें हैं जो माहिरीन नफ़सियात ने लिखी हैं।

ये छः चीज़ें हैं जो मर्द की ज़रुरत होती है :

1. इतिमाद
2. क़बूलियत
3. शुक्रगुज़ारी
4. तारीफ़

5. मन्ज़ूरी
6. हौस्ला अफ़ज़ाइ

इनमें दो बातें बड़ी अहम हैं :

पहली: जो कुछ औरत को खुद चाहिए होता है वह मर्द को देना शुरु कर देती है, मसलन: बात-बात पर ये कि मैं तो इतनी ख़बरगीरी करती हुँ, पता नहीं ये मेरे साथ अच्छा कयूँ नहीं करते? भाई! ख़बरगीरी तो आप को चाहिए, इसको तो कुछ और चाहिए, तो उसको चाहिए वह तो आप दे नहीं रही हैं लिहाज़ा उसको किया फ़ाइदा? कहती हैं कि मैं तो इतना रेस्पेक्ट (Respect) इज़्ज़त करती हुँ मगर फिर भी वह मेरे साथ मोहब्बत नहीं करता, तो भाई रेस्पेक्ट (Respect) तो आप को चाहिए मर्द को अगर ट्रस्ट (Trust) भरोसा देती, (Acceptance) पसन्दीदगी देती, (Appreciation) हौसला देती, एप्रोवेल ऐडमीरेशन (Approval Admiration) तारीफ़ देती, इन्क्रेजमेन्ट (Encouragement) होसला देती, तो अलग बात थी।

दूसरी: इसी तरह मर्दों का भी यही हाल, कहता है कि मैं बीवी की इतनी तारीफ़ करता हुँ फिर भी मेरे साथ मोहब्बत नहीं करती, भाई ये तो आप को चाहिए थी, बीवी को रेस्पेक्ट (Respect) इज़्ज़त व एहतिराम चाहिए था, (Care) ख़बरगीरी चाहिए थी, (Devotion) अपनाइयत चाहिए थी, वह तो आप ने दी नहीं तो मर्द को जो ख़ूद चाहिए होता है वह औरत को देके समझाता है कि ये फिर कयूँ नहीं मोहब्बत करती और औरत को जो खुद चाहिए होता है वह मर्द को दे कर समझती है कि वह कयूँ मोहब्बत नहीं करता, तो इस चीज़ को समझना चाहिए कि किस की ज़रुरत किया है।

इस आजिज़ ने पिछले ब्यान में ये बात समझाई थी कि पेट्रौल की गाड़ी हो तो उसको डीज़ल देते रहें वह नहीं चलेगी और डीज़ल गाड़ी हो और पिट्रौल भरते रहें तो फिर भी गाड़ी नहीं चलेगी तो दोनों की (Emotional) जज़्बाती ज़रुरियात अलग-अलग हैं लिहाज़ा इसका ध्यान करना चाहिए इसका ख़्याल करना चाहिए।

मर्दों की दो बड़ी ग़लतियाँ

अब इसको अगर टू कट स्टोरी शार्ट रेस्पेक्ट (To cut the story short) क़िस्सा मुख़्तसर करें तो मर्द दो ग़लतियाँ बहुत करते हैं:

1. एक तो ये कि बीवी की बात ही नहीं सुनते और आधी बात सुनके ही बोलना शुरु कर देते हैं और उसका प्वाईट ऑफ़ व्यू (Point of view) नुक्त-ए-नज़र समझने की कोशिश नहीं करते ये मर्दों का बहुत बड़ा बलन्डर (Blunder) ग़लती होती है।

2. दूसरे ये कि बन्दे के प्वाईंट ऑफ़ व्यू (Point of view) नुक़्त-ए-नज़र को समझने की कोशिश करना ये बहुत अच्छा ख़ुल्क़ है, इसलिए कि तस्वीर के दो रुख़ होते हैं, हो सकता है आप की सोच भी ठीक हो और इसकी भी ठीक हो, औरत जो बात कर रही है वह भी आख़िर किसी वजह से कर रही है।

ज़ाविया-ए-निगाह का फ़र्क़

एक कम्पनी थी जूतों के बनाने वाली, तो उसने अपनी मार्कटिंग (Marketing) के लिए दो नौजवानों को किसी शहर में भेजा, वहाँ जाकर देखें, वहाँ हमारे जूते मार्किट करना आसान हैं या नहीं। उन्होंने जाकर देखा तो ये देखा कि वहाँ के लोगों में तो जूते पहनने का इतना रिवाज ही नहीं था, आदत ही नहीं थी तो उनमें से एक ने फ़ौरन वापस मैसेज (Message) भेज दिया कि जूतों की मार्किट यहाँ नहीं हो सकती, इसलिए कि यहाँ के लोगों को जूता पहनने की आदत नहीं है और एक दिन के बाद दूसरे नौजवाने ने मैसेज (Message) भेजा तो इसने अपने मैनेजर (Manager) को कहा यहाँ मार्किट बहुत बड़ी है इसलिए कि लोग जूता ही नहीं पहनते, अगर हम इनको पहन्ने की बातें समझा देंगे तो हमारे जूते यहाँ बहुत ज़्यादा मेक़दार में लोग ख़रीदेंगे। अब देखें दोनों ने अपना अपना प्वाईट ऑफ़ व्यू (Point of view) ब्यान किया, एक ने ये नतीजा निकाला और दूसरे ने वह नतीजा निकाला। इसी तरह जो बात औरत कर रही है अब उस औरत को किया प्वाईट ऑफ़ व्यू (Point of view)

है? कयूँ कह रही है? थोड़े ठंडे दिमाग़ के साथ इसकी बात को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

एक बच्चे की होशियारी

चुनांचि किताबों में एक कहानी लिखी है। एक हज्जाम था उसके पास एक लड़का आता था तो हज्जाम समझता था कि ये बहुत बेवक़ूफ़ लड़का है, चुनांचि वह उसको हमेशा एक रुप्ये का भी सिक्का देता और दो रुप्ये का भी सिक्का देता और पाँच रुप्ये का भी सिक्का देता तो लड़का हमेशा दो रुप्ये का सिक्का लेकर चला जाता तो हज्जाम हंसता कि देखो कितना बेवक़ूफ़ है, बार-बार ऐसा होता है, एक दिन एक आदमी बैठा हुवा था, वह लड़का गुज़रा तो हज्जाम कहने लगा मैं आप को बताउँ कि ये लड़का कितना बेवक़ूफ़ है? उसने कहा: हाँ उसने दो सिक्के निकाले एक दो रुप्ये का और एक पाँच रुप्ये का और लड़का से कहा कि बच्चे आकर उसको मेरे से ले लो तो बच्चे ने दो रुप्ये का सिक्का ले लिया तो उस पर वह जो बन्दा बैठा हुवा था उससे उसने पूछा कि तुमने पाँच रुप्ये का सिक्का क्यूँ नहीं लिया? तो बच्चे ने कहा अंकल (Uncle)! जिस दिन मैंने पाँच रुप्ये का सिक्का ले लिया इट विलबी एण्ड ऑफ़ द गेम (It will be end of game) उसी दिन खेल ख़त्म हो जाएगा। फिर उसके बाद ये मुझे ये नहीं कहे गा कि तुम आकर ले लो। तो अब ज़रा सोचिए कि हज्जाम उसको बेवक़ूफ़ समझ रहा था और बच्चा कितना (Clever) समझदार था कि वह हर दफ़अ दो रुप्ये लेकर हंसने का मोक़ा देता था मगर फिर उसको दोबारा दो रुप्ये का मोक़ा मिलता था तो पता नहीं इसने इस तरह कितने पाँच रुप्ये ले लिए होंगे।

तो दूसरे का प्वाईट ऑफ़ व्यू (Point of view) नुक्त-ए-नज़र समझने की कोशिश करना ये भी ज़रुरी होता है, तो मर्द ये ग़ल्ती करते है कि ज़रा औरत ने कोई बात करनी शुरु की तो या तो गुस्सा कर लिया या बात ही न सुनी या दूसरे कमरे में चले गए ये फ़ूल स्टॉप (Full Stop) जो लगादेते हैं ये इन्तहाई बड़ी कोताही होती है।

तन्हाई का वक्त देना

बीवी के साथ तन्हाई का वक्त गुज़ारने के लिए टाइम निकालना, ये औरत की ज़रुरत होती है।'कई मर्तबा जुवाईट फ़ैमिली (Joint Families) मुश्तर्का ख़ानदान में या बच्चे होते हैं तो उनकी मौजूदगी में मियाँ बीवी को इतनी फ़ुरसत ही नहीं मिलती कि मिल बैठें, दिल खोल कर बात करें तो ऐसे मोक़े निकालना ये मर्द की ज़िम्मेदारी है, भले कहीं इसको घूमने फिरने के लिए ले जाएँ। नबी (सल्ल॰) आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) को एक ऐसी जगह भी लेकर गए जहाँ आबशार थी, सब्ज़ा था और हदीस पाक से इसका सबूत मिलता है। जब नबी (सल्ल॰) घर में होते थे तो अज़्वाजे मोतहरात के अलग-अलग हुज्रात (कमरे) होते थे। सफ़र में तशरीफ़ ले जाते थे तो उनमें से किसी एक को अपने साथ रखा करते थे, तो मियाँ बीवी को अलग वक्त मिलना जिस में वह मिल कर बैठें, खाना खाएँ, बात-चीत करें, मियाँ-बीवी के अलग वक्त का मतलब एक काम ही तो नहीं होता मिल बैठकर बात करना ये भी मुस्तक़िल एक काम है। अन्डर-स्टैन्डिंग (Understanding) आपसी मफ़ाहिमत बड़ती है, उलफ़त बड़ती है, मोहब्बत बड़ती है, एक दूसरे के साथ इन्सान को उन्स पैदा होता है।

तो मर्दों में इन दो बातों की इस्लाह बहुत ज़रुरी है, एक तो बीवी की बात को सुना करें और उसका प्वाईट ऑफ़ व्यू (Point of view) नुक्त-ए-नज़र समझने की कोशिश किया करें और दूसरा इसको वक्त दिया करें, मोक़ा दिया करें कि वह अपने मियाँ के साथ बैठकर बात करे, आपस में मोहब्बत प्यार की बातों को तबादला हो तो और ज़यादा दिल एक दूसरे के क़रीब हो जाएँ

औरतों की दो बड़ी ग़लतियाँ

पहली ग़लती ये कि इनकी तबीअत के अन्दर खोद कुरेद करने की आदत इतनी होती है कि सुब्हान अल्लाह। कभी शौहर के जेब की तलाशी हो रही होती है और उसके कमरे की तलाशी हो रही होती है। ये खोद कुरेद हमने देखा कि ठीक भी हो तो नुक्सान का बाअ़स होती है,

इसका कोई फ़ायदा नहीं होता है, ऐण्ड रेज़ल्ट (End result) नतीजा यही होता है कि ख़ाविन्द अगर कोई ग़ल्ती कर रहा है तो फिर वह उसको अलल एलान करना शुरु कर देता है, औरत इसका किया बिगाड़ लेती है, तो ऐसी चीज़ें जो आप गुमान कर रहीं हैं मुमकिन है कि वह कर रहा हो लेकिन इसको अल्लाह पर छोड़ें, अल्लाह से दुआ मांगे कि अल्लाह इसका दिल बदल दे, खोद कुरेद करके, पीठ पीछे पड़के टोह लगा के आप अपने से ख़ाविन्द को दूर ही करेंगी क़रीब नहीं कर सकतीं। गो ग़लती ख़ाविन्द की होगी मगर खोद कुरेद करके उस ग़लती का नतीजा ये होगा कि वह उल्टा आप से और ज़्यादा दूर होगा तो अल्लाह की ज़ात पर इतिमाद रखें और तजस्सुस वाली आदत न बनाएँ वरना तो ख़ाविन्द बात किया कर रहा है? बच्चों से भी रिपोर्ट (Report) ले रही हैं कि मर्दों में किया बात हो रही हुई? फ़लाँ से भी रिपोर्ट ले रही हैं, दीवार के पास खड़ी होकर सुन रही हैं, इस क़िस्म की टोह लगाने वाली, तजस्सुस वाली बीवी की तबीअत मर्द के लिए बहुत (Poisoning) ज़हरीली होती है और ये बहुत बड़ी कोताही होती है।

दूसरी ग़लती ये कि अगर घर के मामलात में ख़ाविन्द कोई फ़ैसला करदे तो औरत को कोशिश करनी चाहिए कि जितना भी मुश्किल हो फ़ैसले को क़बूल करे हत्तुलवसअ इसको ना न करे, हर फ़ैसले पर ना करदेना, हर बात पर ना कर देना ये औरतों की दूसरी बड़ी ग़लती होती है चुनांचि अगर औरतें अपनी इन दो बड़ी ग़लतियों को ठीक करलें, मर्द अपनी उन दो बड़ी ग़लतियों को ठीक करलें तो हमने ये देखा कि फिर ज़िन्दगी बहुत मोहब्बत व प्यार के साथ गुज़रती है।

असलाफ़ की प्यार व मोहब्बत भरी ज़िन्दगी

अब आइये हम अहादीस की इन तालीमात की रौशनी में सलफ़ सालिहीन की ज़िन्दगियों को देखते हैं कि मियाँ-बीवी बनकर रहते थे और इतनी प्यार मोहब्ब्त की ज़िन्दगी गुज़ारते थे तो वह कैसे एक दूसरे को ये सब चीज़ें दे देते थे, हालाँकि वह उन टर्मिनालौजी से वाक़िफ़ नहीं थे, वह इन इस्तिलाहात को नहीं जानते थे मगर क़ुरआन और अहादीस मुबारका

की तालीम ऐसी हैं कि अगर शौहर बीवी के हुक़ूक़ पूरे करे और बीवी शौहर के हुक़ूक़ पूरे करे तो ख़ाविन्द को वह मिलता है जो उसे चाहिए और बीवी को वह मिलता है जो उसे चाहिए।

बीवी की ख़बरगिरी की बेहतरीन मिसालें

चुनांचि हम पहले बीवी की ज़रुरियात की तरफ़ आते हैं। बीवी को केयर (Care) ख़बरगिरी चाहिए तो ज़रा देखिए! कि हज़रत मूसा (अलैहि॰) की अहलिया हामिला हैं, सर्दी का मौसम है, ठुठर रहीं हैं तो ख़ाविन्द ने महसूस किया कि मेरी बीवी को गर्मी की ज़रुरत है, अब वह निकले आग को तलाश करने के लिए तो मूसा (अलैहि॰) का आग ढूंडने के लिए निकलना इस बात की दलील है कि अपनी बीवी की केयर (Care) ख़बरगिरी का ज़ज्बा इनके दिल में था, उसी पर अल्लाह ने इनको नबूवत फ़रमाई।

हज्जतुल-विदा के मोक़ा पर ऊँट पर औरतें सवार थीं, इसकी लगाम एक सहाबी (रज़ि॰) के हाथ में थी जिनका नाम था अन्जिशा (रज़ि॰) एक मोक़ा पर वह ऊँट को ज़रा तेज़ चला रहे थे तो जब उनको ऊँट तेज़ चलाते देखा तो नबी पाक (अलैहि॰) ने फ़ौरन कहा अन्जिशा! तुम्हारे इस ऊँट के उपर शीशा की बनी हुई चीज़ें सवार हैं, ज़रा इन का ख़्याल रखो "क़वारीर" का लफ़ज़ इस्तिमाल किया "क़वारीर" का तर्जुमा शीशे की बनी हुई चीज़ें भी कह सकते हैं और अगर मुझसे तर्जुमा करवाएँ तो इसको डाइमन्ड (Diamond) भी कर सकते हैं कि नाज़ुक चीज़ें इस ऊँट के उपर सवार हैं, इनको तेज़ चलाओगे तो उनको मशक़्क़त होगी अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) की ज़िन्दगी पर क़ुरबान जाएँ कि औरतों की इतनी सी तकलीफ़ का भी फ़ौरन ख़्याल किया इसको केयर (Care) ख़बरगिरी कहते हैं।

अब देखिए! हज्जतुल-विदा ही की बात है कि नबी (सल्ल॰) जब हज करके वापस तशरीफ़ लाए तो आप (सल्ल॰) आना चाहते थे, ख़ेमें में आए तो आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) रो रही हैं, पूछाः आइशा! क्यूँ रो रही हो? ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰)! आप तशरीफ़ लाए थे तो आप ने उमरा किया था, मैं अज़्र की वजह से हरम में दाख़िल नहीं हो सकती

थी। अब हज तो मैंने कर लिया लेकिन उमरा न कर सकी, अगरचे इस मोक़ा पर आप (सल्ल०) को वापस आना था लेकिन नबी (सल्ल०) ने फ़रमायाः अच्छा हम यहाँ इन्तिज़ार करते हैं, तुम अपने भाई अब्दुर्रहमान के साथ चली जाओ और उमरा करके आजाओ, तो देखिए इनकी एक जायज़ तमन्ना थी, एक ख़्वाहिश थी जिस पर वह उदास होके रो रही थीं तो अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल०) ने उनकी ख़बरगिरी का इज़हार किया तो औरतों की इस तरह की चीज़ों का ख़्याल रखना ये मर्द की चार्ट ऑफ़ डयूटी (Chart of Duty) ज़िम्मेदारी के फ़ेहरिस्त में शामिल है।

ज़ेहनी हम-आहंगी हो तो ऐसी

दूसरी चीज़ होती है ज़ेहनी हम-आहंगी (Understanding), चुनांचि नबी (सल्ल०) की मुबारक ज़िन्दगी में ये चीज़ भी नज़र आती है, सुब्हान अल्लाह चुनांचे हज़रत सफ़िया (रज़ि०) जो पहले यहूदया थीं, फिर इस्लाम लाईं, नबी (सल्ल०) के निकाह में आ गई तो जिस दिन निकाह हुवा और वह नबी (सल्ल०) के पास आईं तो अल्लाह के हबीब (सल्ल०) चाहते थे कि आज उनसे मेरी मुलाक़ात हो जाए, मगर उसी दिन तो ख़ैबर फ़तह हुवा था, उसी दिन तो उसका ख़ाविन्द क़तल हुवा था या बाप क़तल हुवा था क़ौम के लोग मारे गए थे, तो सफ़िया (रज़ि०) की तबीयत पर कुछ ग़म था, नबी (सल्ल०) चाहते थे कि आज ही रुख़सती हो जाए, चुनांचि जब आप इनके ख़ेमें में तशरीफ़ ले गए तो आप ने इज़हार फ़रमाया कि मैं मिलना चाहता हुँ, उन्होंने आगे से अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल०) हम मुलाक़ात को कल की रात के लिए मोअख़्ख़िर कर लेते हैं। तो नबी (सल्ल०) ने इनकी बात को क़बूल फ़रमाया। अब ज़रा सोचिए कि आम मर्द की जब तबीअत होती है मेल-मिलाप की तो उसके लिए तो फिर मिन्नट गुज़ारने मुशिकल होते हैं मगर अल्लाह के हबीब (सल्ल०) ने इनकी तबीअत को समझा, इनकी सोंच को समझा कि ये ग़ज़वा है और ये चाहती है कि आज नही कल मुलाक़ात हो जाए तो अल्लाह के हबीब (सल्ल०) ने इनकी बात को मान लिया, फिर जब दूसरे दिन मुलाक़ात हुई उस वक़्त उन्होंने ये कहा कि मैंने कल इस लिए ना की थी

कि मुझे डर ये था कि कहीं आप तो मेरे साथ मेल-मिलाप में मसरूफ़ हों और आप के दुश्मन इतना क़रीब थे कि वह आपके ख़ेमें पर हमला ना करदें तो मुझे आप की जान ज़्यादा अज़ीज़ थी इसलिए कल मैंने इस काम से ना की थी। तो देखिए नबी (सल्ल॰) ने उनकी कैफ़ियत को समझा, इसी तरह हर मर्द को भी चाहिए कि औरत की कैफ़ियत को समझे। इसलिए कभी इसका मिज़ाज कुछ होता है और कभी तबीयत कुछ होती है इसको समझने की कोशिश करें।

मर्द और औरत की सोंच तो बिल्कुल एक होनी चाहिए। चुनांचि एक मियाँ-बीवी की बात सुनिए कि बच्चे बैठे हुए थे और वह माँ से कोई बात कर रहे थे और वह एक बात कह रही थी कि नहीं, ऐसे करना चाहिए, ऐसे करना चाहिए, काफ़ी देर बात-चीत होती रही कि अचानक मियाँ साहब आ गए तो अब बेटे ने अपने अब्बू से बात शुरु करदी कि अब्बू अगर ऐसा हो तो, ऐसा हो तो कैसा होगा? अल्लाह की शान कि उन्होंने वही बात की जो बीवी ने की थी, तो वही बात सूनकर बच्चे कहने लगेः क्या करें एक तो इन दोनो में इतनी Understanding है कि हमारी कुछ बात चलती ही नहीं, तो ये ज़िंदगी का मज़ा होता है कि मियाँ-बीवी की सोंच बिल्कुल एक हो फिर औलाद के उपर भी इसके बहुत (Positive) मुस्बित असरात होते हैं।

औरत की इज़्ज़त व अहतिराम की बेहतरीन मिसाल

तीसरी चीज़ होती है औरत को (Respect) इज़्ज़त व अहतिराम मिलना, चुनांचि नबी (सल्ल॰) ने अपनी बीवियों को इज़्ज़त दी जिसकी मिसालें अहादीस में मौजूद हैं। ज़रा ग़ौर कीजिए! हज़रत सफ़िया (रज़ि॰) की जब रुख़सती हुई तो अगले दिन सफ़र था और उन्हें ऊँट पर सवार होना था, अब औरत के लिए उँट पर छलांग लगा कर सवार होना तो मुम्किन नहीं ये काम तो मर्द कर जाते हैं तो इनकी मुशकिल थी तो अब वह कैसे ऊँट पर चड़ें, अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) पास मौजूद थें, हदीस पाक में है नबी (सल्ल॰) ने अपनी रान मुबारक आगे की और फ़रमायाः

सफ़िया! तुम मेरी रान के ऊपर पॉव रखो, फिर सीढ़ी बनाकर उससे ऊपर तुम चढ़ जाओ, अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल०) का ये अमल मर्दों के लिए आई ओपनर (Eye Opener) आँख खोलने वाला है कि महबूबे ख़ुदा (सल्ल०) एक ज़रुरत को महसूस फ़रमा कर अपनी रान को पेश फ़रमा रहे हैं कि तुम इसपर पॉव रखो और अपने ऊँट के ऊपर चढ़ जाओ।

चुनांचि एक सहाबी (रज़ि०) ने नबी (सल्ल०) को दावत दी। ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल०)! आप मेरी तरफ़ से खाना क़बूल फ़रमाइये। आप ने फ़रमायाः आइशा भी शरीक होगी? उसने कहा कि मेरे पास तो बस इतना ही है आप को खिला सकूँ। फ़रमायाः मैं अकेले नहीं आऊँगा। फिर दोबारा उन्होंने कहाः आप ने कहाः नहीं आऊँगा। जब तीसरी मर्तबा उन्होंने कहा जी मैं आप की बीवी की भी दावत करूँगा। तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमायाः अच्छा मैं तुम्हारी दावत क़बूल करता हुँ, तो बीवी की इज़्ज़त बनाना मियाँ के इख़्तियार में होता है। अब अगर ख़ाविन्द बीवी को ऐसी इज़्ज़त दे तो वह क्यूँ नहीं ख़ाविन्द पर क़ुरबान होगी।

अपनाइयत और वफ़ादारी का मिसाली नमूना

चौथी चीज़ है अपनाइयत (Devotion), चुनांचि औरत को ये अहसास दिलाना कि मैं आपका हुँ, मैं (Splite Personality) बटी हुई शख़्सियत नहीं हुँ। मैं ऐसा नहीं हैं कि घर में किसी और को बसा रहा हुँ और 'दिल में किसी और को बसा रहा हुँ। ये मर्द की ज़िम्मेदारी होती है।

चुनांचि नबी (सल्ल०) ने पचीस साल की उम्र में जब ख़दीजतुल-कुबरा (रज़ि०) के साथ निकाह फ़रमाया तो आप ग़ौर कीजिए कि ख़दीजतुल-कुबरा (रज़ि०) इससे पहले दो ख़ाविन्दों के साथ रह चुकी थीं और ये तीसरा निकाह था और पनद्रह साल का फ़र्क़ था। वह चालीस साल की थी। अल्लाह के हबीब (सल्ल०) पचीस साल के थे और औरतें महसूस कर सकती है कि चालीस साल की उम्र में औरत की जवानी कितनी पीछे रह जाती है। इस उम्र में नबी (सल्ल०) ने इनसे निकाह फ़रमाया और उनकी पूरी ज़िन्दगी में नबी (सल्ल०) ने कोई दूसरा निकाह

नहीं किया। फिर नबी (सल्ल.) ने इनके साथ ऐसी मोहब्बत भरी ज़िन्दगी गुज़ारी और उन्होंने नबी (सल्ल.) के साथ ऐसी वफ़ादारी की ज़िन्दगी गुज़ारी कि जब इनकी वफ़ात हो गई तो अल्लाह के हबीब (सल्ल.) उनको बाद में भी याद करते थे तो आँखों में से आँसू आ जाते थें।

चुनांचि एक मर्तबा ख़दीजतुल-कुबरा (रज़ि.) की बहन मिलने के लिए आईं। नबी (सल्ल.) ने आवाज़ सूनी तो फ़रमाया कि मुझे ख़दीजा की सी आवाज़ आ रही है। आइशा (रज़ि.) ने बताया कि उनकी बहन मिलने के लिए आईं थीं, तो नबी (सल्ल.) के मुबारक आँखों में आंसू आ गए। आइशा (रज़ि.) ने कहा आप उस बूढ़ी औरत को क्यूँ इतना याद करते हैं? तो नबी (सल्ल.) ने फ़रमाया आइशा! जब लोग मेरे दुश्मन थे उस वक्त वह मेरी अपनी थीं, वह मुझसे मोहब्बत करती थीं, इतिमाद करती थीं, मुझे तसल्ली देती थीं, मुझे दुआएँ देती थीं, आइशा! जब लोगों के दिलो में ज़ुल्मत थी उसके दिल में ईमान का नूर था "इन्नी रुज़िक़्तु हुब्बिहा" आइशा! अल्लाह ने मेरे दिल में इनकी मोहब्बत डाल दी है इस मामले में मजबूर हुँ। सुब्हान अल्लाह! तो अगर ख़ाविन्द ऐसी मोहब्बत औरत को दे तो फिर औरत तो घर को ज़रुर आबाद करेगी।

ग़लती को नज़रअन्दाज़ करें

पाँचवीं चीज़ है हुक़ूक तस्लीम करना, (Validation), चुनांचि कई मर्द औरत से कोई काम ग़लती से भी हो सकता है, इन्सान है मगर इसकी कैफ़ियत को मर्द समझने की कोशिश करे। नबी (सल्ल.) की एक ख़ास आदते मोबारका ये थी कि जो बात मामूली होती थी उसको (Ignore) नज़र अन्दाज़ कर देते थे, इसका बतंगड़ नहीं बनने देते थे।

अब ज़रा ग़ौर कीजिए कि नबी (सल्ल.) आइशा (रज़ि.) की हुज्रे में हैं और उस वक्त दूसरी उम्मुल-मूस्लिमीन एक खाने की चीज़ भेज देती हें तो आइशा (रज़ि.) ने वह चीज़ लेने के लिए हाथ जो आगे बड़ाया बे दिली के साथ तो गिर कर वह बर्तन ही टूट गया तो नबी (अलैहि.) ने फ़रमाया : "ग़ारत उम्मोकुम" तुम्हारी माँ को ग़ैरत आ गई और बर्तन को वहीं समेट दिया, हम होते तो बात का बतंगड़ ही बना देते।

वफ़ादारी की यक़ीन दहानी का अनोखा अन्दाज़

छट्ठी चीज़ है यक़ीन दहानी (Assurance) चुनांचि नबी (सल्ल॰) ने आइशा (रज़ि॰) को एक लम्बा वाक़्या सुनाया इस महफ़िल में तो नहीं लेकिन कल की महफ़िल में इंशा अल्लाह वह वाक़िआ भी सुनादेंगें उसको कहते हैं "हदीसे उम्मे जरारह" गयारह औरतों की बातें, नबी (सल्ल॰) ने सुनाएँ कि इन्होंने अपने-अपने ख़ाविन्दों के बारे में ये कहा, आख़िर में ये कहा उनमें से सबसे अच्छा अबू जर्रा था जो उम्में ज़र्रा के साथ बहुत मोहब्बत करता था और ये पूरा वाक़िआ सुनाने के बाद अल्लाह के नबी (सल्ल॰) ने नतीजा निकाला कि आइशा! जितना अबू ज़रारह उम्मे ज़रारह के साथ अच्छा था, मैं तुम्हारे साथ उससे भी ज़्यादा अच्छा हुँ और ये भी फ़रमाया कि इसने तो बीवी को तलाक़ दे दी थी आइशा। मैं तुम्हें तलाक़ नहीं दूँगा, इसको (Re-Assurance) यक़ीन दहानी कहते हैं तो जिस औरत को यक़ीन मिल जाए कि मेरा ख़ाविन्द मुझे नहीं छोड़ेगा, मुझे तन्हा नहीं होने देगा तो औरत का दिल तो फूल की तरह खिल जाता है तो देखिए क़ुरआन व हदीस की तालीमात ऐसी हैं कि टर्मिनालोजी (Terminology) न भी आती हो मगर औरत को वह सब कुछ मिलता हैं जो उसको चाहिए होता है।

शौहर पर इतिमाद की दरख़्शंदा मिसालें

इसी तरह मर्द का मामला देख लीजिए कि मर्द का ट्रस्ट चाहिए। इतिमाद चाहिए तो इब्राहिम (अलैहि॰) बीवी बच्चों को बैतुल्लाह शरीफ़ के पास छोड़ के वापस जा रहे हैं। कोई आज की औरत होती तो उधम मचा देती। आप हमें छोड़के कैसे जा सकते हैं? किस के हवाले कर रहे हैं? हमारा कौने ख़्याल करने वाला होगा? रोना धोना शुरु कर देती मगर सैयदा हाजिरा (रज़ि॰) ने सिर्फ़ इतना पूछा कि अल्लाह के हुक्म से छोड़कर जा रहे हैं? उन्होंने ने सर हिला दिया, फ़रमायाः अच्छा फ़िर अल्लाह तआला हमें ज़ाए नहीं फ़रमाएंगे। देखें! ख़ाविन्द के अमल पर ट्रस्ट (Trust) इतिमाद करना ये उनकी शान थी।

नबी (सल्ल॰) ने आकर कहाः अल्लाह का नबी हुँ तो ख़दीज़तुल-कुबरा (रज़ि॰) ने फ़ौरन कहा अच्छा, मैं आप पर इमान लाती हुँ। इसको कहते हैं ट्रस्ट (Trust) इतिमाद करना तो उस वक्त की बीवियाँ अपने ख़ाविन्दों पर इतिमाद करती थीं।

सिद्दीक़ अक्बर (रज़ि॰) के घर नबी (सल्ल॰) तशरीफ़ लाए कि हिजरत पर जाना है। सिद्दीक़ अक्बर (रज़ि॰) ने घर का सारा माल सामान जो था वह सब ले लिया और उनकी बीवी को पता था कि पीठ पीछे कुछ नहीं लेकिन कोई इतिराज़ नही किया। उन्होंने अपने ख़ाविन्द को ये फ़ैसला करके जाने दिया हत्ताकि बाद में ससुर जब आए तो बच्चियों ने थैले में पत्थर रख दिए और कहा कि हमारे पास बहुत कुछ है, घबराने की कोई बात नहीं। तो ट्रस्ट (Trust) इतिमाद भी तो कोई चीज़ होती है, तो वह अपने ख़ाविन्दों के फ़ैसले पर इतना ट्रस्ट (Trust) इतिमाद करती थीं।

बीवी की क़बूलियत ने अबूलआस का दिल जीत लिया

दूसरी चीज़ होती है क़बूलियत (Acceptance), चुनांचि नबी (सल्ल॰) की बड़ी साहिबज़ादी सैयदा ज़ैनब (रज़ि॰) का निकाह उस वक्त हुवा जब कि नबी (सल्ल॰) मक्का मुकर्रमा में थें और उनकी निकाह अपने ख़ालाज़ाद भाइ से हुवा था। ख़दीज़तुल-कुबरा (रज़ि॰) की बहन थीं उसका बेटा था अबूल आस नाम था। अब ये इस्लाम से पहले की बात है चुनांचि ये मामला चलता रहा हत्ताकि जब नबी (सल्ल॰) हिज्रत करके आ गए तो सैयदा ज़ैनब (रज़ि॰) अपने ख़ाविन्द के पास थीं। अब बद्र के मैदान में अबूल आस मुश्रिकीन के साथ मिल कर लड़ने के लिए आए और अल्लाह की शान वह क़ैदी हो गए। जब बद्र के क़ैदियों को छुड़वाने के लिए मुश्रिकीन ने फ़िदया का माल भेजा तो ज़ैनब (रज़ि॰) के पास एक हार था, क़लादह था उन्होंने अपना वह हार भेजा, नबी (सल्ल॰) के सामने आया तो आप ने पहचान लिया कि ये तो वह हार है जो ख़दीज़तुल-कुबरा (रज़ि॰) ने शादी के वक्त अपनी बेटी को दिया था, जब वह हार अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) के सामने आया तो आँखों में आंसू

आ गए। फ़ौत हुई बीवी याद आ गई। आप ने सहाबा को कहा कि अगर आप लोग मश्विरा दें तो मैं इस बन्दे अबूल आस को भी आज़ाद कर देता हुँ और ये हार भी वापस कर देता हुँ। सहाबा ने कहा बहुत अच्छा। अब अबूल आस आज़ाद भी हो गए और उनको हार भी मिल गया तो इनके दिल में नबी (सल्ल॰) की एक मोहब्बत आ गई। चुनांचि वह वापस लौटे, अब उस दौरान नबी (सल्ल॰) ने उनसे कहा वापस जाओ तो मेरी बेटी को मेरे पास भेज देना। उन्होंने वादा कर लिया चुनांचि सैयदा ज़ैनब (रज़ि॰) नबी (सल्ल॰) की ख़िदमत में आ गईं। अब एक मोक़ा पर अबूल आस तिजारत के सफ़र केलिए शाम गए। इसमें लोगों के भी बहुत सारे माल शामिल थे, तिजारत का क़ाफ़िला लेकर वापस आ रहे थे कि सहाबा की एक जमाअत के साथ उनका मुक़ाबला हो गया अब उस मोक़ा पर सहाबा ने उनसे माल छीन लिया। अब जब माल छीन लिया तो उनको इहसास हुवा कि भाई मेरी ज़िम्मेदारी है लोग मुझसे मांगेगे और माल मुझसे छिन गया तो वह मदीना आ गए जब मदीना आ गए तो ज़ैनब (रज़ि॰) से उन्होंने (Contact) राबिता किया। अब ज़रा ग़ौर कीजिए कि नबी (सल्ल॰) को पता चला कि अबूल आस आए हैं तो नबी (सल्ल॰) ने (हदीस मुबारका के अलफ़ाज़ हैं) फ़रमायाः "अकरिमी मस्वाह" कि ज़ैनब अपने ख़ाविन्द का ख़्याल रखना! वह मुश्रिक है। अभी वह काफ़िर और मुश्रिक थे और मुसलमान औरत के काफ़िर मर्द से निकाह का जो मसला है उसकी आयतें अभी तक नहीं उतरी थीं। ये उससे पहले की बात है, तो नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि उसका ख़्याल रखना। उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के हबीब! वह तो माल के लिए यहाँ आए हैं, फ़रमायाः माल केलिए आए हैं मगर आने वाले के साथ अच्छा बरताव तो किया जाता है, चुनांचि इनके खाने-पीने का पूरा इन्तिज़ाम किया गया और नबी (सल्ल॰) ने फिर सहाबा को बुलाया और फ़रमाया कि अगर आप लोग इनका माल वापस करदें तो बहुत अच्छी बात होगी। तो नबी (सल्ल॰) ने पहले अबूल आस का शुक्रिया अदा किया कि अबूल आस! मैंने आप को कहा था कि मेरी बेटी को भेज देना। आप ने उसको मेरे पास भेज दिया। मैं आप का शुक्रिया अदा

करता हुँ और फिर फ़रमाया कि तुम्हारा माल मैं तुमहें वापस कर रहा हुँ। अबूल आस के दिल पर इसका इतना असर हुवा कि उस माल को लेकर वह मक्का मोकर्रमा गए और लोगों को कहा कि तुम अपने अपने माल सब मुझसे ले लो। जब सब के माल वापस कर दिए तो कहने लगे सूनों! मैं कलिमा पढ़कर मुसलमान हो रहा हुँ। तो देखिए कि सैयदा ज़ैनब (रज़ि॰) ने अपने ख़ाविन्द के साथ कितना (Acceptance) क़बूलियत का मामला किया।

माँ आइशा के मोहब्बत भरे अश्आर

नबी (सल्ल॰) फ़रमाते हैं कि आइशा! आप मुझे मक्खन और खजूर को मिला कर खाना से भी ज़्यादा पसन्दीदा हो, तो फ़ौरन आगे से बोलीं ऐ अल्लाह के हबीब! आप मुझे मक्खन और शहद मिलाकर खाने से ज़्यादा पसन्दीदा हैं तो नबी (सल्ल॰) फ़ौरन मुसकुराए। आइशा! तुम्हारा जवाब बहुत अच्छा था तो अपने ख़ाविन्द को (Appreciate) मोतास्सिर करना, मोहब्बत का इज़हार करना ये तो औरत के ज़िम्मे है।

(Admiration) तारीफ़ करना तो आइशा (रज़ि॰) नबी (सल्ल॰) की बहुत तारीफ़ करती थीं। मशहूर अश्आर हैं —"لَنَا شَمْسٌ وَلِلْآفَاقِ شَمْسٌ"

ऐ आस्मान एक तेरा सूरज है एक मेरा सूरज है,

मगर फ़र्क़ ये है कि तेरा सूरज दिन में तुलूअ होता है,

मेरे यहाँ सूरज इशा के बाद तुलूअ होता है,

मगर ऐ आसमान! तेरा सूरज एक दिन आएगा कि उसकी रौशनी ख़्तम हो जाएगी जो मेरा सूरज है उसकी रौशनी वक्त के साथ बड़ती जाएगी।

और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहाँ "व लिल्ल आख़िरतु ख़ैरु-ल-क मिनल उला" की उनको खुश्ख़्बरी मिल चुकी है।

शौहर की बात मानने की अन्मोल मिसाल

पाचवीं चीज़ है (Approval) मन्ज़ूरी देना। चुनांचि ज़रा ग़ौर कीजिए कि हज़रत अली (रज़ि॰) और फ़ातिमातुल-ज़ोहरा (रज़ि॰ अनहुमा) रोज़ा रखते हैं। तीन दिन खाना बनता है और तीनों दिन अली (रज़ि॰) वह

खाना उठाकर मांगने वाले को दे रहे हैं। अब आज की बीवी होती तौबा तौबा एक जंग शुरु होजाती। तीन दिन रोज़े से और तीन दिन अली (रज़ि॰) ने रोटी जो अफ़तार के वक्त थी साएल को दे दी। पानी पीकर सैयदा फ़ातिमा (रज़ि॰) रोज़ा रखती रहीं। उन्होंने ख़ाविन्द के अमल पर एतिराज़ नहीं किया। उसको (Approval) क़बूलियत न कहेंगे तो और किया कहेंगे।

उम्मे सलमा (रज़ि॰) की हौसला अफ़ज़ाई

फिर इनकरेजमेंट होसला अफ़ज़ाई करना, सुलह हुदैबिया के मोक़ा पर नबी (सल्ल॰) ग़मज़दा थे कि भाई मैंने लोगों को कहा कि जानवर ज़बह करें मगर उनको बात समझ नहीं आ रही है। उम्मे सलमा (रज़ि॰) कहाः ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰)! फ़िक्र मत कीजिए ये आप के ग़ुलाम हैं, ये परेशान है कि हम उमरा किए बग़ैर वापस कैसे जाए? आप अपने जानवर को ज़बह करें जो आप करेंगे ये ख़ुद्दाम, ये अुश्शाक़ वही कुछ करेंगे। आप (सल्ल॰) ने ऐसा ही किया और सहाबा (रज़ि॰) ने भी अपने जानवर ज़बह किए और वापस आ गए। तो देखो बीवी कैसी हौसला अफ़ज़ाइ की।

बीवी की हौसला अफ़ज़ाई ने ग़म हलका कर दिया

चुनांचि एक साहब बंगलादेश से उस वक्त करॉची उतरे कि जब मुल्क तक़सीम हुवा और वहाँ उनके शायद साठ (60) के क़रीब पिट्रौल पम्प थे। अब बताएँ जिस बन्दे के साठ पिट्रौल पम्प थे और वह (Billionaire) करोड़पति था और वह सिर्फ़ इस हाल में करॉची उतरा कि उसकी बीवी के सर पर दोपट्टा था कुछ और नहीं था। इसके ज़िहन पर कितना बड़ा सदमा था, वह अपना वाक़िया सूनाने लगा कि मैं अपने भाई के घर आया मगर मेरे उपर ये सदमा ब्रदाश्त करना मुशिकल था कि इतना कुछ मेरा एक दिन में चला गया मगर मेरी बीवी समझदार थी, दस्तरख़्वान पर खाना खाने बैठते तो वह बात शुरु कर देती, मीरज़ादों! मैं परेशान हो जाती हुँ मेरे ख़ाविन्द को अल्लाह ने सोने का दिल दिया है,

इतना बड़ा उनका नुक़सान हो गया लेकिन उन्होंने तो हाथ की मैंल बना कर उसको उतार दिया। वह कहते हैं कि मैं हैरान होता कि मेरी बीवी ऐसी बातें कर रही है। मैं अपना दिल बड़ा करता, बीवी तन्हाई में मुझे कहती, देखो! रिज़्क़ तो अल्लाह ने देना है जो अल्लाह वहाँ रिज़्क़ दे रहा था वही हमें यहाँ देगा। आप बिल्कुल परेशान न होना। ग़ुरबत के अय्याम हैं मैं गुज़ारा करलूँगी। आप के साथ हुँ उन्होंने अपने भाई से क़र्ज़ लेकर एक ट्रक किराए का चलाना शुरु किया। अल्लाह ने चन्द सालों में इतनी बरकत दी कि दो सौ (200) ट्रकों की कम्पनी का उनको मालिक बना दिया। वह अपनी बीवी का वाक़िआ सुनाते थे और कहते थें मैं बीवी का अहसान कभी नहीं उतार सकता तो बीवी को चाहिए कि अपने ख़ाविन्द की (Encragement) इंकरेजमेंन्ट हौसला अफ़ज़ाई करे ऐसे मोक़ा पर जबकि ख़ाविन्द को उसकी ज़रुरत होती है।

सब बातों का ख़ुलासा

इन सबका ख़ुलासा ये है कि मियाँ-बीवी दोनों शरीअत वाली ज़िन्दगी को अपनालें। किसी ट्रमनालोजी को याद करने की ज़रुरत नहीं। ख़ुदबख़ुद ख़ाविन्द बीवी को वह देगा जो उसकी ज़रुरत है और बीवी ख़ाविन्द को वह देगी जो उसको ज़रुरत है। आज शादियाँ करते है ख़ुबसूरती के पीछे, तो ख़ुबसूरती तो किसी को कुछ नहीं देसकती। याद रखें शादी के पहले दिल औरत की शकल देखी जाती है फिर पूरी ज़िन्दगी उसके बाद औरत की अक़ल देखी जाती है और नबी (सल्ल.) की एक हदीस मुबारका से भी यही साबित होता है जिससे पता चलता है कि माल की ख़ातिर शादी करना, ख़ानदान की ख़ातिर शादी करना, हुस्न की ख़ातिर शादी करना ये सब बाद की बातें हैं असल चीज़ तो नेकी और दीनदारी है इसकी बुन्याद पर शादी करनी चाहिए। आज हम नबी (सल्ल.) की सुन्नतों को छोड़ते हैं और मोसीबतों में पड़ जाते हैं। अगर कोई अल्लाह का बन्दा होगा और उसमें ख़ौफ़े-ख़ुदा होगा तो बीवी को कयूँ रुलाएगा? वह बीवी को कयूँ परेशान करेगा? और जो उतनी माहब्बत करने वाला ख़ाविन्द हो उसका रंग गोरा है ये काला है उस से

किया फ़र्क़ पड़ता है। वह ग़रीब है या अमीर है वह छोटे ख़ानदान का है या बड़े ख़ानदान का, इससे किया फ़र्क़ पड़ता है। इसलिए कि इसके पास हमदर्दी और मोहब्बत करने वाला दिल है।

फ़रमान नब्वी की इत्तिबाअ का बेमिसाल वाक़िआ

चुनांचि नबी (सल्ल॰) के एक सहाबी थे उनका नाम था सअद (रज़ि॰)। उनकी शादी नहीं हुई थी, तो एक मर्तबा नबी (सल्ल॰) ने उनसे पूछ लिया। उन्होंने कहा कि मेरी शादी इस लिए नहीं हो रही है कि मेरा रंग काला है और मैं गरीब हुँ। नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कोई रिश्ता? कहा मेरी कज़न चची है बहुत खुबसूरत है, अमीर घराने की है मगर वह लोग मुझे रिश्ता नहीं देते। तो नबी (सल्ल॰) ने कहा जाओ उसके वालिद को बताओं कि मैं उसके साथ तुम्हारा निकाह करना चाहता हुँ। किसी शायर ने उसको अश्आर में कहा, तो आप ज़रा अश्आर भी सुन लीजिए कि इस वक्त की औरतें किस तरह दीन की ख़ातिर अपना सब कुछ क़ुरबान करने के लिए आमादा हो जाती थीं–

एक बंदा सअद नामी आप का अस्हाब था
रंग काला उसका था और नक़्द में नायाब था

एक दिन दरियाए रहमत आ गया यूँ जोश में
सअद को बैठे बिठाए ले लिया आग़ोश में

सअद तुने अपनी शादी आज तक की या नहीं
सअद बूला रिश्ता कोई काले को देता नहीं

एक लड़की खुद मेरे चचा के यहाँ मौजूद है
मैं तो कोशिश कर चुका लेकिन वहाँ बेसूद है

जब भी जाता हुँ वहाँ लेकर मैं खुद अपना प्याम
धक्के मिलते हैं मुझे सुनता हुँ बातें बे लगाम

बद-श्क्ल बद-रंग होना उसमें मेरा चारह किया?
मैंने ही वह रंग पाया जो मुझे रब ने दिया

काले गोरे को ख़्याल आते ही जज़बा आ गया
जोश में आकर उसी दम आपने फ़रमाया दिया

सअ़द! मैंने आज तेरा अक़्द उससे कर दिया
अपने चचा जी को जाकर ये ख़बर जल्दी सुना

सअ़द ने सुनकर नबी की गुफ़तगु परवाज़ की
अपने चचा जान के दरवाज़े पर आवाज़ दी

सुनके ये आवाज़ वह जल्दी से बाहर आगए
सअ़द की इस बात से दिल में बहुत घबरा गए

बोले तु है रंग का काना और मुफ़िलस ग़रीब
मैं तुझे लड़की दूँ अपनी ये कहाँ तेरा नसीब

सअ़द के चचा उमरु बिन वहब बोले बेहिजाब
भाग जा दर से मेरे वरना करुँगा मैं ख़राब

सअ़द बोले अपनी मर्ज़ी से तो मैं आया नहीं
मुस्तफ़ा ने भेजा था और अब भी जाता हुँ वही

सअ़द तो यूँ दर से वापस आगए सोए जनाब
और गए अन्दर चचा खाते हुए कुछ पेंच व ताब

लड़की उनकी सुन चुकी थी सअ़द की सारे जवाब
बोली अब्बा ख़ैर तो है कयूँ था ग़ुस्से का ख़िताब

बाप बोला सअ़द हब्शी मेरे दर पर आया था
और तुझसे शादी का पैग़ाम मुझ तक लाया था

रंग है काला वह और मुफ़िलस व मोहताज भी
मेरी इज़्ज़त और दौलत की न रखी लाज भी

चाँद सी बेटी उसे देदूँ ये तो मुम्किन नहीं
वह दो कौड़ी का बने दामाद हो सकता नहीं

लड़की बोली ख़ुद प्यामे अक़्द लेके आया था
या किसी ने भेजा था और बनके क़ासिद आया था

बाप बोला ख़ुद से मैं आया नहीं कहता था वह
सरवरे कौनैन ने भेजा है मुझको बेटी दो

सुनके बस इस बात को लड़की तो वह चिल्ला उठी
किया ग़ज़ब की बात अब्बा तुमने आज इससे कही

कब मैं कहती हुँ कि इसके रंग काले को तो देख
मैं तो कहती हुँ कि इसके भेजने वाले को देख

मैंने माना काला है वह हुस्न में भी मान्द है
भेजने वाला तो लेकिन चौध्वीं का चाँद है

तेरी बेटी उसके काले रंग पर मस्रूर है
काली कमली वाले की मर्ज़ी मुझे मन्ज़ूर है

अगर ऐसी बीवियाँ हों जो काली कमली वाले की मर्ज़ी को देख कर ज़िन्दगी गुज़ारने वाली हों तो सोचिए घर जन्नत का नमूना बन जाएंगे। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें नेकोकारी प्रहेज़गारी की ज़िन्दगी नसीब फ़रमाए।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

व आख़िरु दअ़वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

□□□

मुनाजात

किससे मांगे कहाँ जाएँ किससे कहें	और दुनिया में हाजत रवाँ कौन है
सबका दाता है तू सबको देता है तू	तेरे बंदों का तेरे सिवा कौन है
कौन मक़बूल है कौन मरदूद है	बेख़बर किया ख़बर तुझको किया कौन है
जब तुलेंगे अमल सबके मिज़ान पर	तब खुलेगा कि खोटा खरा कौन है
कौन सुनता है फ़रयाद मज़लूम की	किस के हाथों में कुंजी है मक़सूम की
रिज़क़ पे जिसके पलते हैं शाह व गदा	जलवा आरा बज़म अता कौन है
औलिया तेरे मोहताज ऐ रब कुल	तेरे बंदे हैं सब अंबिया व रुसुल
इनकी इज़्ज़त का बाइस है निस्बत तेरी	इनकी पहचान तेरे सिवा कौन है
मेरा मालिक मेरी सुन रहा है फ़ग़ा	जानता है वह ख़ामोशियों की ज़बाँ
अब मेरी राह में कोई हायल न हो	नामा बर किया बला है सबा कौन है
है ख़बर भी वही मुब्तदा भी वही	ना ख़ुदा भी वही है ख़ुदा भी वही
जो है सारे जहाँनों में जलवा नुमा	इस अहद के सिवा दूसरा कौन है
औलिया अंबिया अहले बैत नबी	ताबईन व सहाबा पे जब आ बनी
गिरके सज्दे में सबने यही अर्ज़ की	तू नहीं है तो मुशिकल-कुशा कौन है
अहले फ़िक्र व नज़र जानते हैं तुझे	कुछ न होने पे भी मानते हैं तुझे
ऐ नसीर इसको तो फ़ज़्ल बारी समझ	वरना तेरी तरफ़ देखता कौन है

"هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ"

(हुन्ना लिबासुल्लकुम व अन्तुम लिबासुल्लहुन्ना)

एक दूसरे की बात को समझने की ज़रुरत

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

फ़ेहरिस्त अनावीन

इक्तिबास

शरीअत ने तो यहाँ तक कहा है कि जो इन्सान किसी दूसरे मुसलमान के दिल को अचानक ख़ुशी पहुँचा देता है, अल्लाह उसकी पिछली ज़िन्दगी के सब गुनाहों को माफ़ कर देता है, क़ुरबान जाएँ इस शरीअत पर, ये कितनी खुबसूरत है कि अगर आम मोमिन के दिल को ख़ुश करने पर ये अज्र मिलता है तो जो ज़िन्दगी की साथी है जो बच्चों की माँ है, जिसने अपनी जवानी ख़र्च करदी अपने ख़ाविन्द की ख़ातिर, अगर वह दुख की हालत में है, परेशान हालत में है उस वक़्त उसकी दो मिन्ट बैठकर अगर बात सुनले और उसका दिल ख़ुश हो जाए और उस पर अल्लाह राज़ी हो जाए तो सोचिए फिर अल्लाह को मनाने का और आसान तरीक़ा कौन-सा है।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुल्फ़िक़ार अहमद साहब

नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ.

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ)

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ. وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ.

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

हर एक की बोली में फ़र्क़

दुनिया की हर चीज़ में फ़ितरत का क़ानून लागू है। चुनांचि माली जब किसी पौधे को लगाता है तो वह पौधा उस माली को अपनी कैफ़ियत बता रहा होता है, मगर इसके लैंगुएज (Language) ज़बान को समझने की ज़रुरत होती है (Symptoms) अलामतें होते हैं जो बताती हैं कि इस पौधे को कौन-सी बीमारी है, इसको नाइट्रोजन (Nitrogen) की कमी है, फ़ास्फ़ोरस (Phosphorus) की कमी है, पोटाशियम (Potassium) की कमी है, माइक्रो न्यूट्रिन्ट (Micro Nutrient) की कमी है। इसकी जड़ों को बीमारी लग गई है। पत्तों पर अटैक (Attack) हमला हुवा। तो वह पौधा अपने माली के साथ पूरी गुफ्तगु कर रहा होता है। इसलिए जो समझदार होते हैं वह पौधे को देख कर बता देते हैं कि ये पौधे (Stress) मान्दगी में है और इसको फ़लाँ चीज़ की ज़रुरत है और अगर वह दवाई इस्तेमाल करें तो वह पौधा बिल्कुल सिहतमन्द हेल्थी पलांट (Healthy Plant) बन जाता है।

इसी तरह जानवर भी इन्सान को अपने पैग़ाम (Message) देते हैं मगर इनको समझने की ज़रुरत होती है, जो लोग दरिन्दों को पालते हैं वह इनके ऐटिच्युट (Attitude) रवैय्ये को समझते हैं कि इस वक़्त ये क्या चाहता है।

शेर और शेरनी के मिज़ाज का फ़र्क़

हमें इसका तजुर्बा इस तरह हुवा कि एक मर्तबा साउथ अफ़्रीक़ा में सफ़र कर रहे थे तो जो गाड़ी चलाने वाले साथी थे वह कहने लगे हज़रत! हमारे पास दो घंटे फ़ारिग हैं और बिल्कुल हम ऐसी जगह से गुज़र रहे हैं जहाँ व्हाट लॉयन (White Lion) यानी सफ़ेद शेर को प्रेज़र्व (Preserve) यानी महफ़ूज़ किया जा रहा है और ब्रेड (Breed) किया जा रहा है यानी नस्ल बड़ाई जा रही है, तो अगर आप टाईम दें तो आपको मैं शेर (Lion) दिखाऊँ। हमनें कहा बहुत अच्छा। चुनांचि उसने गाड़ी मोड़ी और हम दो मिन्ट में इस लॉयन पार्क (Lion Park) के अन्दर पहुँच गए। वहाँ पर उन्होंने सफ़ेद शेर पाल रखे थे। कोई एट्टी फ़ाइव कपल (85 Couple) पचासी जोड़े थे और बड़े पैमाने पर नस्ल अफ़ज़ाई का काम कर रहे थे। उनके यहाँ मुलाक़ातियों के लिए एक टूर (Tour) होता है जिसमें वह अपने शेर (Lions) दिखाते हैं। वह क़ुदरतन इस वक़्त तैयार था तो हम भी गाड़ी में बैठ गए, कुछ गोरे लोग भी बैठे हुए थे, ख़ैर जो डराइवर था वह एक अंग्रेज़ था जिसने अपनी ज़िन्दगी शेरों के ब्रेड (Breed) नस्ल अफ़ज़ाई में लगादी थी।

टू कट द स्टोरी शार्ट (To cut the story short) क़िस्सा मुख़्तसर कि वह हमें एक ऐसी जगह पर ले गया जहाँ फ़ूल ग्रोन (Full Grown) भरपूर जवान एक शेर था और एक शेरनी थी दोनों के दर्मियान कोई सौ (100) फ़िट का फ़ास्ला था। उसने गाड़ी जाकर इस तरह खड़ी की कि शेरनी एक तरफ़ रह गयी और गाड़ी के दूसरे तरफ़ शेर था, कोई चालीस फ़िट दूर होगा वहाँ जाकर उसने गाड़ी बन्द करदी तो हम हैरान हो गए कि इतना क़रीब आकर इसने लगी गाड़ी को बन्द कर दिया। उसके उपर उसने अगला शीशा जो था विन्डो गलास (Window Glass) वह भी नेचे

कर दिया हालाँकि दस्तूर है कि ऐसे जंगली जानवरों के क़रीब हों तो (Window Glass) खिड़की का शीशा कभी ओपन (Open) नहीं करना चाहिए, उसने इसको भी खोल दिया, इसपर और ज़्यादा हैरत हुई फिर तीसरा काम उसने ये किया कि डराइवर साइड का जो दरवाज़ा था वह भी खोल दिया। जब खोला तो मैं ने "मोहम्मद मियाँ" से कहा कि लगता है ये आज अपनी बीवी से लड़कर आया है, ख़ैर हमतो हैरान ही थे कि चालीस फ़िट के फ़ास्ले पर शेर बैठा है और उसने अपने पूरे दरवाज़ें खोल दिए, मगर अजीब बात कि शेर जैसे था वह वैसा ही बैठा था। अब इसके बाद ये बाहर निकल कर खड़ा हो गया। जब बाहर निकल कर खड़ा हुवा तो सच्ची बात है हम भी घबरा गये कि आज कोई मिसहैप (Mishap) हादसा न हो जाए। फिर इसके बाद उसने अपनी गाड़ी की चाबियों का गुच्छा निकाल लिया और अपने हाथों से उनको खटखटाने लगा, जब उसने खटखटाया तो आवाज़ आई, तब शेर ने ज़रा आँख उठा कर इस तरफ़ देखा जिधर से आवाज़ आई थी, फिर उसने जब दूसरी दफ़ा खटखटाया तो शेर ने हल्की सी आवाज़ निकाली, इस पर ये आदमी गाड़ी में बैठ गया और शीशा भी बन्द कर लिया, गाड़ी भी स्टार्ट करली। कहने लगा मैं आप को ये बताना चाहता था कि शेर का एक ऐटिच्युट (Attitude) तरीक़ाकार है, उसका एक रद्देअमल होता है, मैंने आकर गाड़ी खड़ी की तो शेर को कोई ख़तरा महसूस नहीं हुवा, वह बैठा रहा, मैंने शीशा उतारा तब भी वह बैठा रहा, मैंने दरवाज़ा खोला तब भी वह बैठा रहा, हत्ताकि मैंने बाहर निकल कर चाबी खटखटाई तो हल्की सी आवाज़ आई तो महसूस किया, समथिंग इज़ बोदरिंग मी (Something is bothering me) कोई मुझे छेड़ रहा है तो उसने उस वक्त रुख़ करके देखा और हल्की सी आवाज़ दी, आवाज़ का मतलब ये था कि डॉन्ट डिस्टर्ब (Don't Disturb) कि मुझे परेशान न करो, अब अगर इसके बाद दोबारा मैं करता तो शेर मेरी तरफ़ मोतवज्जह होता और हमला ही कर देता, तो मैं चुंकि इसकी आदत को समझत हुँ, इसलिए मैंने इस रेड ज़ोन (Red Zone) लाल बत्ती से पहले पहले गाड़ी मैं बैठ कर दरवाज़ा बन्द कर लिया, यहाँ तक तो एक अच्छी इन्फ़ारमेशन (Information) थी जो इसने

दे दी, फिर वह कहने लगा कि देखें ये मैं जो कुछ किया ये शेर के साथ किया चूंकि इसको अपना एक प्रोटोकौल (Protocol) उसूल होता है, मैंने शेरनी के साथ ऐसा नहीं किया, मैंने पूछा कयूँ? कहने लगा इसका (Behaviour) बरताव (Unpredictable) ग़ैर मोतैयन होता है, आप नहीं जानते कि वह कैसे बर्ताव करेगी। जब उसने ये कहा तो जो व्हाइट कपल (White couple) बैठा हुवा था तो ख़ाविन्द ने कह दिया (Women are unpredictable) कि औरतों का मिज़ाज ऐसा ही ग़ैर मोतैयन होता है, बस ये कहना था कि बीवी तो फिर शुरु हो गई, तो सारी बात का लबे लुबाब ये था कि जानवर भी इन्सान को मैसेज (Message) देते हैं, मगर समझने वाला बन्दा होना चाहिए, आम आदमी तो इसको नहीं समझ सकता तो जिस तरह पौधा मैसेज (Message) देता है, जानवर मैसेज देते हैं उसी तरह छोटा बच्चा भी मैसेज देता है, मगर इसके पैग़ाम इस की माँ समझती है, वह इसके अधूरे अधूरे अल्फ़ाज़ से, हरकतों से, बॉडी लैंगुएज (Body Language) जिस्मानी हरकात व सकनात से पहचान जाती है कि ये चाहता किया है तो बच्चे की (Language) ज़बान इसकी माँ समझती है इसी तरह मियाँ-बीवी भी एक दूसरे को मैसेज (Message) पैग़ाम पहुँचाते हैं, मगर इनको समझने की ज़रुरत होती है।

मामूल की ज़िन्दगी में मियाँ-बीवी का अन्दाज़े-गुफ़तगू

मियाँ-बीवी के मामिलात में गुफ़तगू के दो हिस्से हैं :

एक हिस्सा होता है (Routine Life) मामूल की ज़िन्दगी का, इसमें आम तौर पर ये मशहूर है कि औरत की ज़बान चलती है और मर्द का हाथ चलता है, चुनांचि घर के आम काम काज और गुफ़तगू में औरत (Clear) साफ़ लफ्ज़ों में बात करेगी, बार-बार बात करेगी और बोलती रहेगी, मर्द का (Attitude) रवैय्या इस मामले में आम तौर पर यही होता है कि वह आधी सुनता है आधी नहीं सूनता और हूँ हाँ कर देता है और कभी (Stress Condition) तनाव वाली हालत हो, जिसमें मर्द की ग़लती हो फिर तो मर्द चुप करके बैठ जाता है, भूत बनके बैठ जाता है, सुनता ही

रहता है और उसके पास एक हल होता है कि जब बीवी ख़ूब बात करके दिल की भड़ास निकाल लेती है तो वह प्यार भरा हाथ बड़ाता है, मोहब्बत से बीवी को देखता है, ऐसा जादू अल्लाह ने दे दिया है ख़ाविन्द को कि बीवी के सारे ही शिक्वे दूर हो जाते हैं।

इसी को तो परवीन शाकिर ने कहा था –

मैं सच कहूँगी फिर भी हार जाउँगी
वह झूठ बोलेगा और ला जवाब कर देगा

अना परस्त है इतना कि बात से पहले
वह उठके बन्द मेरी हर किताब कर देगा

वह मेरे हाथ को पकड़ेगा इतनी चाहत से
कि लम्स मेरे बदन को गुलाब कर देगा

तो ये फ़ितरत है मर्द की कि बोलता कम है लेकिन प्यार भरी एक नज़र डाल दी और मोहब्बत से कन्धे पर हाथ रख दिया तो औरत के शिक्वे ही ख़त्म हो जाते हैं।

औरत की हया और नाज़ की रिआयत ज़रुरी

दूसरा हिस्सा गुफ्तगू का वह है जो मियाँ-बीवी के आपस के मामलात होते हैं वह ज़रा (Sensitive) हस्सास होता है। इसमें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने औरत को हया दी है, शरीअत ने कहाः "अल-हयाओ शोअब-तुन मिनल-इमान" और ये एक अच्छी सिफ़त है और ये औरत के हुस्न में इज़ाफ़ा का सबब बनती है।

चुनांचि औरत की तबीअत में हया की वजह से औरत अपना मुद्दा किल्यर (Clear) साफ़ लफ्ज़ों में नहीं कह पाती, फिर तबीअत के अन्दर झिझक भी होती है और हमारे हिसाब से इसमें तीसरी चीज़ कुछ "नाज़" भी होती है कि औरत ये सोचती है कि ख़ाविन्द की ज़िम्मेदारी है कि वह प्यार से देखे, प्यार करे, हमें ज़बान से कहना कयूँ पड़े, कह कर अगर प्यार लिया तो किया लिया, तो कुछ मसला होता है, लिहाज़ा औरत अगर मर्द को मैसेज पास (Message Pass) भी करती है तो इशारा-किनाया में करती है।

अल्फ़ाज़ों में लिप्टा हुवा होता है मैसेज (Message), अब मर्द ये ग़लती करता है कि वह उसको ट्रान्सफ़र नहीं करता वह ये समझने की कोशिश नहीं करता कि ये चाहती किया है, चुनांचि बीवी चाहेगी कि मर्द मुझे अपने क़रीब करे तो आप देखेंगे कि वह ख़ूशी का इज़हार करेगी, अच्छी डिशेज़ (Dishes) बनाइ होगी, बेहतरीन कपड़े पहने हुए होगी, मूस्करा कर ख़ाविन्द को इस्तिक़बाल करेगी। अब ये सब अलामात कन्फ़र्म (Conform) कर रहे है कि ये ख़ाविन्द से ख़सूसी वक्त चाहती है मर्द उस चीज़ को इगनॉर (Ignore) नज़र अन्दाज़ कर देता है और ये चीज़ फिर हार्ट बर्निंग (Heart burning) जज़्बात के ख़ून करने का सबब होती हैं।

चुनांचि मर्द हमेशा दो लफ्ज़ों में बात समेटेगा औरत लम्बी बातें करेगी। हदीस पाक सेभी यही साबित होता है कि सैयदा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) इनकी तबीअत में किसी वक्त थोड़ा नाराज़गी के आसार होते थें तो नबी (सल्ल॰) फ़रमाते थें ऐ मुन्नी-सी आइशा! तू अब स्पेशल एक लफ्ज़ था, कोड वर्ड था, जो बता देता था कि इस वक्त ख़ाविन्द मोहब्बत भरी कैफ़ियत से कलाम कर रहे हैं, चुनांचि मून्नी आइशा के अल्फ़ाज़ (रज़ि॰) के दिल पर ऐसा असर करते थे कि सारी तबीअत में इन्शिराह आ जाता था, चुनांचि हदीस पाक से भी ये साबित होता है कि औरतों की गुफ़तगू हमेशा अलफ़ाज़ के जामे में छुपी हुई होती है, इस को ट्रान्स्लेट (Translate) करना पड़ता है।

चुनांचि बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत है जिसको हदीस उम्मे ज़र्रअ कहते हैं और ये "बाबे हुस्ने अल मुआशिरा मअ अहल" के अन्दर रिवायत की गई है। सैयदा आइशा (रज़ि॰) को नबी (सल्ल॰) ने एक मर्तबा गयारह औरतों का क़िस्सा सुनाया मशहूर हदीस मुबारका है इस पर मुस्तक़िल किताबें भी लिखी गईं और मोहद्दिसीन ने इस में ख़ूब तफ़सील से कलाम किया है मगर आज की इस मजिलस के मोतअलिक़ चुंकि इसमें सबक़ हैं इसलिए ये आजिज़ मोख़्तसर अलफ़ाज़ में इस हदीस पाक से कुछ बातें कहेगा ज़रा ग़ौर कीजिए कि अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) अपनी बीवी को समझाने के लिए गयारह औरतों को जो क़िस्सा सुना रहे हैं कि तो इसमें कोई हिकमत होगी।

गयारह औरतों का क़िस्सा

चुनांचि आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने फ़रमाया एक जगह पानी भरने के लिए गयारह औरतें जमा हुईं और उन्होंने आपस में ये बात तै करली कि आज हर औरत अपने ख़ाविन्द के बारे में साफ़-साफ़ लफ्ज़ों में सब कुछ बताएगी। .

1. चुनांचि इसमें पहली औरत कहने लगी कि मेरा ख़ाविद लाग़र ऊंट का गोशत है जो पहाड़ की चोटी पर रखा हुवा, न ही चड़ने का रास्ता आसान, न ही गोशत उमदा और मोटा कि लाने की ज़हमत कोई गवारह करे। अब इन अलफ़ाज़ से ख़ाक समझ नहीं आती कि किया इसने कहा लेकिन वह अपना (Message) यानी पैग़ाम दे गई। लाग़र ऊंट की मिसाल, फिर गोशत पहाड़ की चोटी पर रखा हुवा, चड़ना भी आसान नहीं, गोशत लाना भी आसान नहीं, तो असल में इसका ख़ाविन्द था वह इम्पॉरटेंट था तो उसने इसको लाग़र गोशत की मिसाल दी ऊंट की मिसाल दी और फिर बीवी के क़रीब भी नही आता था तो पहाड़ पे रखा हुवा गोशत था कि उसके पास पहुँचना ही मुशिकल था। अब हक़ीक़ते हाल देखिए किया है और अन्दाज़े ब्यान किया है तो साफ़ पता चलता है कि अल्फ़ाज़ के अन्दर उसने अपना पैग़ाम दे दिया।

2. दूसरी औरत ने कहा मैं शौहर की बातें ना फैलाउँगी मुझे डर है कि छोड़ ना दे और अगर मैं तज्किरा करुँगी तो छुपे हुए ऐबों से परदा ही उठाउँगी, इस को कहते हैं –

कुछ भी ना कहा कुछ कह भी गए
कुछ कहते कहते रह भी गए

तो एक तरफ़ तो कह रही कि मैं शौहर की बातें नहीं फैलाउँगा कि डर है कि छोड़ न दे मगर ये भी कह रही है कि करुँगी बात तो छुपे हुए ऐबों से परदा ही उठाउँगी तो मतलब ये कि वह अन-मैनर (Un-manner) बे-अदब बन्दा था और वह चाहती थी कि इसकी बात में क्या औरतों में करुँ।

3. तीसरी औरत ने कहा मेरा शौहर तो बहुत लम्बा-चौड़ा तड़ंगा है बात करुँगी तो तलाक़ मिलेगी और चुप रहूँगी तो मोल्लिक़ रहती हूँ इस का मतलब कि वह गुस्सा वाला शार्ट टेम्परड (Short Tempered) बन्दा था

और औरत के लिए इससे कम्यूनिकेट (Communicate) बात करना ही एक मोसीबत थी।

4. चौथी औरत ने कहा कि मेरा शौहर तहामा की रात की तरह मोअतदिल, न ज़्यादा गरम ना ज़्यादा ठंडा, ना मुझे इससे ख़ौफ़ है, ना मुझे इससे उक्ताहट है, इसका मतलब कि वह मोअतदिल मिज़ाज इन्सान था, वेल मैनर (Well mannered) बा-अदब था बैलिंस्ड प्रस्नालिटी (Ballanced Personality) सलीक़ामन्द था तो बीवी इसके साथ बहुत (Comfortable Feel) आराम व सकुन महसूस करती थी मगर देखें इसने साफ़ लफ़्ज़ों में नहीं कहा, तहामा की रात की मिसाल देकर बात की।

5. पाँचवी औरत ने कहा कि मेरा शौहर घर के अन्दर चीते की मानिन्द होता है और बाहर शेर के मानिन्द घर में जो कुछ है उसके बारे में बाज़प्रुस नहीं करता, औरत के उपर इतनी रोक टोक नहीं करता था, घर के मामिलात में औरत को (Independence) ख़ूदमोख़्तारी देता था, अलबत्ता जब बाहर निकलता था तो फिर शेर की तरह होता था इसका मतलब येहै कि इस औरत का ख़ाविन्द करीम था। अच्छे (Behaviour) बरतॉव वाला था और बाहर सूसाइटी में इसकी एक इज़्ज़त थी और लोग इसको अपना बड़ा समझते थे इसलिए लॉन (Lion) शेर की मिसाल दी।

6. छट्ठी औरत ने कहा कि मेरा शौहर तो खाना चट कर जाता है पानी ख़त्म कर देता है, लेटता है तो मुँह लपेट कर और साथ वालों का हाल ही नहीं पूछता वह मशहूर मक़ूला है कि खाओ टूट कर, जो डट कर खाएगा वह जमके सोएगा। ज़ाहिर है कि वह बहुत ज़्यादा (Overeate) खाता था और जो शख़्स इतना ज़्यादा खाए तो वह नींद इतनी ग़ालिब होती है कि इसे पास वाले का अहसास ही नहीं होता।

7. सातवीं औरत ने कहा कि मेरा शौहर गुमराह या आजिज़, सीना से दबाने वाला तमाम दुनिया के ऐब मौजूद सर फोड़ने या ज़ख़्मी करे दोनों काम इसके लिए आसान। इसका मतलब ये कि इसका जो ख़ाविन्द था वह झगड़ालू तबीअत वाला था (Fighter) लड़ाकू क़िस्म का बन्दा था ज़रा-ज़रा सी बात पर लड़ने मरने पर तैयार हो जाता था।

8. आठवीं औरत ने कहा कि मेरा शौहर ख़रगोश को छूने की तरह नरम है और "ज़रनब" घास की तरह ख़ूश्बूदार है। अब देखों इसने

ख़ाविन्द को किस तरह मुतअरिफ़ किया कि ख़रगोश को छूने की तरह नर्म है और "ज़रनब" घास की तरह ख़ूश्बूदार है इसका मतलब ये कि इसका ख़ाविन्द गुड लूकिंग (Good looking) जाज़ब नज़र भी होगा, साफ्ट हार्टेड (Soft Hearted) नर्म तबीअत भी होगा और (Attractive) पुरकशिश भी होगा।

जादू है सनम तेरी आँखों में
ख़ूश्बू हे पिया तेरी सांसों में

अब इसने पूरी सूरतहाल को एक नर्म प्यारे ख़रगोश के साथ मिसाल देकर समझाया।

9. नवीं औरत ने कहा कि मेरा शौहर तो उँचे सतूनों वाला लम्बी नियाम वाला, बहुत सख़्ती इसका घर दारुल-मश्विरा यूँ लगता है कि इसका ख़ाविन्द कोई सोशली एक्टिव (Socially active) समाजी सरगरम इन्सान था जिसके घर पर लोग आते थे और आपस के मामलात तै होते थे, सुलह होती थी, (Discussions) मज़ाकिरात होते है। इसने अपने ख़ाविन्द को इस तरह से मुतअरुफ़ किया।

10. दसवीं औरत ने कहा कि मेरे शौहर का नाम मालिक, तमाम ज़ेहनी तारीफ़ों से बुलन्द व बाला यानी मैं उसकी तारीफ़ ही नहीं कर सकती वह इतना अच्छा इन्सान, उँट थान पर ज़्यादा चरागह में कम, इसका मतलब ये कि फ़ील्ड (Field) मैदान में जानवर थोड़े होते हैं और घर में जो क़ुरबानी के बन्धे होते हैं वह ज़्यादा होते हैं और क़ुरबानी के लिए जो बन्धे होते हैं वह इसलिए कि महमानों की आमद व रफ्त ज़्यादा होती है तो बाजे की आवाज़ सुनकर उँट ज़बह होने के लिए तैयार हो जाते हैं। यानी इनके यहाँ दस्तूर था कि जब महमान आता था तो एक बाजे की आवाज़ बजा देते थें तो जो लोग थे उनको पता हो जाता था कि अब जानवर ज़बह किया जाएगा तो वह क़रीब आते थे। ये ख़ाविन्द (Well Behaviour) अच्छे बर्ताव वाला था और (Good host) अच्छा मेज़बान था, महमान नवाज़ इन्सान था अल्लाह ने दस्तरख़्वान बड़ा दिया था तो औरत ने इसकी इन अलफ़ाज़ में तफ़सील बताई।

11. फिर गयारहवीं औरत ने कहा कि मेरे शौहर का नाम अबू ज़र्रअ है इसने मेरे कान ज़ेवर से बोझल कर दिए यानी सोने से मुझे लाद दिया और मेरे पाँव चरबी से मोटे होगए, यानी खाने पीने की फ़रावानी थी इतना प्यार दिया कि मैं निहाल, ग़रीब घराने से लाया और अमीर घराने में बसाया काम करने वाले नौकर चाकर सब के सब घर में मौजूद, मैं बोलती तो रोक-टोक नहीं थी मैं सोती थी तो सुबह कर देती थी यानी इसने मुझे पूरी मोहब्बत के साथ सहूलत की ज़िन्दगी में रखा हुवा था मैं अपनी नींद पूरी करती थी, न मुझे घर के कामों की कोई ऐसी मूसीबत थी इसने मुझे इतने प्यार से रखा था पानी पीती थी तो सहूलत व इतमीनान से फिर जो इसके दूसरे घर वाले थे वह भी अच्छे थे। चुनांचि अबू ज़र्रअ की माँ बहुत ख़ूबियों वाली, घर कुशादा, तोशादान भरा रहता था यानी घर में खाने पीने को रॉ मिटेरियत (Raw material) राशन ख़ूब होता था फिर अबू ज़र्रअ के बेटे की किया तारीफ़ करूँ यानी जो बेटा था मेरा वह भी बहुत प्यारा, सोने की जगह खजूर का शाख़ा यानी छरेरा बदन, बकरी की चार माह की बच्चे के दूध से पेट भर जाता यानी कम ख़ूराक था, अबू ज़र्रअ की बीटी की ख़ूबियाँ किया गिनवाऊँ बाप की फ़रमांबरदार, सेहतमन्द कि चादर इसके जिस्म से भर जाए, अपनी सौकन के लिए हसद और ग़ुस्सा का बाअ़स यानी वह ख़ूबसूरत भी थी और ख़ूबसीरत भी थी, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इनको इतनी अच्छी बेटी दी थी अबू ज़र्रअ की कनेज़ भी बहुत अच्छी, न बातों को फैलाने वाली न रखी हुई चीज़ों से कुछ निकालने वाली यानी न चोरी करती थी न बातों को लोगों तक पहुँचाती थी न ही घर को घास-फूस से भरने वाली यानी घर गन्दा भी नहीं रखती थी साफ़ रखती थी।

अबू ज़ुर्रअ एक दिन घर से निकला, दूध लेने का वक्त था जानवर के पास जाने के लिए उसने एक औरत को देखा जिसने दो बच्चों को उठा के सीने से लगाया हुवा था उसको वह औरत पसन्द आ गई, चुनांचि उसने मुझे तलाक़ दे दी और उस औरत से निकाह कर लिया, मैंने इसके बाद एक शरीफ़ आदमी से निकाह किया जो तेज़ घोड़ों पर

सवार होता था हाथ में नेज़ा रखता था वह मेरे लिए बहुत से मवेशी लाया और हर एक में से एक एक जोड़ा लिया और कहा उम्मे ज़र्रअ ख़ूद भी इसमें से खाओ और अपने अज़ीज़ व क़ारिब को भी खिलाओ, जो कुछ इसने मुझे दिया अगर मैं सब जमा करुँ तो अबू ज़र्रअ के सब से छोटे बर्तन के बराबर भी नहीं हो सकता।

नबी (अलैहि॰) ने ये वाक़िआ सुनाकर फ़रमाया कि आइशा मैं तुम्हारे लिए ऐसा हूँ जैसा उम्मे ज़र्रअ के लिए अबू ज़र्रअ था फ़र्क़ ये है कि अबू ज़र्रअ ने तलाक़ दे दी थी मैं तुम्हें तलाक़ नहीं दूँगा।

अब ज़रा ग़ौर कीजिए कि इसमें दो बातें सामने आती हैं एक तो ये कि औरत जब भी बात करेगी वह हमेशा इशारों किनायों में करेगी, ये मर्द की (Responsibility) ज़िम्मेदारी होती है कि वह इसके (Surface) ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ के मानी न ले बल्कि इनका (Translate) मतलब निकालने की कोशिश करे, मुदआ समझने की कोशिश करे इसमें छुपे हुए मैसेज को जानने की कोशिश करे, अक्सर मर्द यहाँ कोताही करते हैं और हमने देखा कि यही चीज़ बिलाआख़िर जैहनी इन्तिशार का सबब होती है और घरों में अन्दर फिर आपस में झगड़े और (Misunderstandings) ग़लत-फ़हमियाँ हो जाती हैं।

बीवी को वफ़ादारी का यक़ीन दिलाएँ

दूसरी बात ये है कि औरत को इंस्योरेंस हिफ़ाज़त चाहिए कि मेरा ख़ाविन्द मुझसे ख़ूश है मुझे छोड़ेगा नहीं, मुझे तन्हा नहीं करेगा, मेरा घर नहीं उजड़ेगा तो देखें अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) ने सैयदा आइशा (रज़ि॰) से कहा कि देखो, इसने तलाक़ दी थी मैं तुम्हें तलाक़ नहीं दूँगा, जितना वह अपनी बीवी के लिए अच्छा था कि बीवी तारीफ़ करते नहीं थक रही थी, मैं इससे भी ज़्यादा तुम्हारे लिए अच्छा हूँ, सुब्हान अल्लाह अल्लाह की शान कि अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) ने ज़िन्दगी की इन बारीकयों में भी हमें रहनुमाइ दी, रास्ता दिखाया कि लोगो, अगर तुम झगड़ों से बचना चाहते हो, परेशानियों से बच्ना चाहते हो, मोहब्बत प्यार से मियाँ बीवी बन कर रहना चाहते हो तो तुम्हें अपनी बीवी की गुफ़तगू को तवज्जह से सुन्ना पड़ेगा इसके सही मफ़हूम को समझना पड़ेगा।

अब ज़रा मियाँ-बीवी क़रीब हैं और बीवी कह देती है कि मुझे डर लग रहा है तो ये ख़ाविन्द को समझना चाहिए कि डर लगने से वह चाहती किया है, या वह कह रही है जी, मुझे सर्दी लग रही है या मैसेज पास (Message Pass) कर रही है, ये बहुत बड़ी कोताही है मर्दों की कि औरत की बात को आदमी तवज्जोह से नहीं सुनते और यही चीज़ फिर औरत के लिए हार्ट ब्रेकिंग (Heart Breaking) दिल जलाने का सबब बन्ती है, नबी (अलैहि॰) की मुबारक ज़िन्दगी को देखिए आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया आइशा मुझे तुम्हारी नाराज़गी को और ख़ूशी को पता चल जाता है, ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰), कैसे चलता है? नबी (अलैहि॰) ने फ़रमायाः जब तुम मुझसे ख़ूश होती हो तो बात करते हुए क़सम उठाती हो तो रब्बि मोहम्मद की क़सम, और जब तुम्हारे दिल में गिरानी होती है तो रब्बे इब्राहीम की क़सम खाती हो, तो आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) मुसकरा कर कहने लगींः ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰), आप का नाम छोड़ती हूँ, आप को तो नहीं छोड़ती, तो मालूम हुवा कि अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) की इतनी गहरी नज़र थी कि बीवी के एक-एक लफ़्ज़ के उपर भी नज़र थी और इस लफ़्ज़ की बदलने का मैसेज आप (सल्ल॰) ने रिसीव (Receive) क़बूल फ़रमा लिया। सुब्हान अल्लाह। अगर ख़ाविन्द बीवी को ऐसी तवज्जह दे तो घर में कयूँ झगड़े होंगे। आज तो बातें एक दूसरे से करते हैं अधूरे मन के साथ, अधूरी तवज्जह के साथ। एक दूसरे की बातों को मिस अन्डर स्टैन्ड (Misunderstanding) करते है यानी अच्छी तरह समझते नहीं, न बीवी बूरी होती है न ख़ाविन्द बूरा होता है। बीवी भी दीनदार, ख़ाविन्द भी दीनदार, मगर (Miscomunication) बाहिमी राबिता के सही न होने की वजह से, मिस अन्डर स्टैनडिंग (Misunderstanding) ग़लत फ़हमी की वजह से झगड़े पैदा हो जाते हैं, चुनांचि इस प्वाइन्ट (Point) को बहुत अच्छी तरह समझने की ज़रुरत है, (Misunderstanding) ग़लत फ़हमी की वजह से तो फिर तमाशे होते हैं।

ग़लत-फ़हमी से किया-किया हो जाता है

चुनांचि एक अग्रेज़ था हमारे मुल्क में, इसने नौकर रखा हुवा था, उसको अग्रेज़ी आती नहीं थी तो एक दिन मालिक को गाड़ी निकालनी

थी, उसने अपने नौकर से कहा कि मुझे गाड़ी ज़रा बैक (Back) करवादें ताकि मैं चला जाऊँ। इसने कहा बहुत अच्छा अब वह नौकर इशारा करके कह रहा हैः खम्बा है, खम्बा है तो वह उसको पीछे करता रहा, करता रहा हत्ताकि कि पीछे इलैकट्रिक का एक खम्बा था, गाड़ी जाकर ज़ोरे से उस में लगी, नई गाड़ी थी, डेन्ट (Dent) निशान भी पड़ गया तो मालिक को बड़ा ग़ुस्सा आया उसने निकल कर कहाः मैंने तुम्हें कहा था कि गाड़ी बैक करवाना तुम मुझे कहते रहे कम बैक (Come back), कम बैक (Come back) पीछे आओ, पीछे आओ और मैं पीछे करता रहा। वह कहने लगा जी मैंने तो कहा था खम्बा है। अब बताएँ एक कह रहा है खम्बा है और दूसरा इसको कम बैक (Come back) समझ रहा है। फिर ऐक्सिडेन्ट तो होना ही है। तो मियाँ बीवी का मामला भी बिल्कुल इसी तरह का होता है।

चुनांचि एक सरदार जी ने मोटर साईकल ख़रीदी और उसकी मूख़्तलिफ़ जगहों पर उसने कुछ रुप्यों के नोट (Note) टेप (Tape) से लगा दिए, लोग बड़े हैरान कि उसने अपनी मोटर साईकल को बड़ा ब्यूटीफ़ूल (Beutiful) ख़ूबसूरत किया है। तो एक जगह मोटर साईकल बन्द होगई स्टार्ट नहीं होरही थी किसी ने उससे पूछा कि सरदार जी आप ने मोटर साईकल पर तो बड़े-बड़े रुप्ये टेप (Tape) से लगाए हुए हैं, इतने बड़े-बड़े नोट? क्या वजह है? कहने लगा असल में मैंने पूरानी मोटर साईकल ख़रीदी थी, अपने बड़े भाई को दिखाई थी, उसने मुझसे कहा कि इसपर पैसे लगाओगे तो चल पड़ेगी। अब भाई के कहने का मक़सद किया था? और इसने पैसे उसकी बॉडी के उपर लगा दिए तो मिस अन्डर् स्टैनडिंग (Misunderstanding) ग़लत फ़हमी होगई।

चुनांचि एक साहब के एक बेटा हुवा तो माशा अल्लाह उसने कराची रिश्तेदारों के पास भेज दिया कि जी, आप इसकी (Caretaking) देख-भाल करें। दूसरा हुवा तो उसको फ़ैसलाआबाद भेज दिया। फिर तीसरा हुवा तो उसको रावलपिंडी भेज दिया। तो उससे किसी दोस्त ने पूछा कि यार मस्ला किया है, अल्लाह ने तुम्हें तीन बेटे दिये और तीनों को तुमने तने दूर दूर भेज दिया, अपने पास क्यूँ नहीं रखा? कहने लगा अस्ल में डॉक्टर

के पास मियाँ-बीवी हम गए थे तो डॉक्टर ने कहा था बच्चों में फ़ासला रखना।

तो ये मिस अन्डर स्टैनडिंग (Misunderstanding) ग़लत फ़हमी इन्सान के लिए झगड़े का सबब बनती है, मोसीबत बन जाती है, इसलिए मियाँ-बीवी को चाहिए कि गुड कम्यूनीकेशन (Good Communication) अच्छा तर्ज़े-रवाबित अपने अन्दर पैदा करें, किल्यर (Clear) साफ़ लफ़्ज़ों में एक दूसरे को बात समझाने की कोशिश करें और बात चीत के अन्दर जो ग़ुस्सा गर्मी के अन्दर होते हैं वह बहुत ज़्यादा नुक़सानदह होते हैं। मियाँ-बीवी जब भी बात करें हमेशा मोहब्बत प्यार के लहजे में बात करें, ग़ुस्सा में बात करना, बैज़ारी से बात करना ये चीज़ कराईम (Crime) जूर्म है। जब अल्लाह तआला चाहते है कि मियाँ-बीवी मोहब्बत से रहें फिर अगर हम (Unloving attitude) नफ़रत के रवैये से बातें करें तो अल्लाह की नज़र में मुजरिम बनेंगे। इसलिए शरीअत के मुद्दा को समझने की ज़रुरत है।

आपसी झगड़ों की बुन्यादी वजह

अब ज़रा सून लीजिए कि झगड़ा शुरु कैसे होता है? ये (Sensative point) हस्सास मसला है, उमीद है कि औरतें मुद्दा को समझने की कोशिश करेंगी। औरत जब बात करती है तो वह (Indirect) बिल्वास्ता होती है। मर्द इसको (Translate) ट्रांसलेट नहीं करता यानी सही मानी समझ नहीं पाता और सरसरी मानी ले लेता है और आग से फ़िल्फ़ोर जवाब दे देता है और मियाँ-बीवी के अन्दर बहस शुरु हो जाता है।

मियाँ-बीवी में ग़ल्त फ़हमी की चन्द मिसालें

औरत कहती है हम तो कभी बाहर नहीं गए। मर्द सुनकर इसके जवाब में कहता है पिछले हफ़ता तो गए थे, झूठ कयूँ बोलती हो। अब औरत कुछ कहना चाहती है और मर्द ने इसको सिर्फ़ इसके ज़ाहिरी मानी समझ कर कह दिया कि तुम झूठ बोल रही हो, तो पहली मिसाल हम कभी बाहर नहीं गए तो मर्द का जवाब पिछले हफ़ते गए थे और झूठ बोलने की किया ज़रुरत है।

दूसरी मिसाल औरत कहती है मुझे हर कोई नज़र अन्दाज़ नहीं करता, अब औरत कहना किया चाहती है, मर्द जवाब किया दे रहा।

तीसरी मिसाल, औरत कहती है ये घर हर वक़्त गन्दा होता है। जब मैं देखती हूँ घर गन्दा होता है, मर्द आगे से जवाब देता है हर वक़्त तो नहीं होता।

चौथी मिसाल, औरत कहती है मेरी बात कोई नहीं सुनता, मर्द आगे से कहता है मैं तो अभी भी सुन रहा हूँ।

औरत कहती है मेरी गुफ़तगू को कोई फ़ायदा नहीं, तो मर्द आगे से जवाब देता है, इसमें मेरा किया क़सूर है।

औरत कहती है मूझे रोमांस (Romance) प्यार चाहिए, तो मर्द कहता है आप किया कहती हो? किया मैं बिल्कुल ग़ैर रोमांस क़िस्म का आदमी हूँ।

अब ये मिसाल ज़ाहिर में मियाँ-बीवी के दर्मियान में पेश आती हैं और झगड़े की बाअ़स होती हैं, मियाँ-बीवी की गुफ़तगू की ये सूरतेहाल जो आप ने सूनी ये ग़लत थी, न औरत ये कहना चाहती थी और न मर्द को ऐसा जवाब देना चाहिए था, होना किया चाहिए था?

इशारों को समझें

अब ये भी सून लीजिए: हम कभी बाहर नहीं गए इसका मक़सद ये था कि मुझे आप के साथ वक़्त गुज़ारना अच्छा लगता है, अब अगर मर्द ट्रांसलेट (Translate) तर्जुमा कर लेता कि बीवी मुझे कह रही है कि मुझे आप के साथ वक़्त गुज़ारना अच्छा लगता है तो इसका रिस्पॉन्स (Response) जवाब (Different) अलग होता मगर इसको मानी पता है किया समझा? हम कभी बाहर नहीं गए, तुम बहुत सूस्त हो, बहुत बोरिंग (Boring) उक्तानेवाले इन्सान हो और जब मर्द ये लफ़्ज़ सुनता है तो कहता है मैं ऐसा तो नहीं हूँ, चुनांचि वह आग से ग़स्सा से जवाब देता है अब बात औरत ने कितने प्यार से की थी मगर (Misunderstanding) ग़लत समझने की वजह से मर्द ने कितना रुखा जवाब किया। अब आपस में लड़ाई नहीं होगी तो फिर किया होगा।

औरत जब कहती है मुझे हर कोई नज़रअन्दाज़ करता है तो वह असल में ये कहना चाहती है कि आपने अब दफ़तरी कामों को मुझपर तर्जीह देनी शुरु करदी। आप देर से आते हैं, मैं इन्तिज़ार में बैठी रहती हूँ, भूख लगी होती है मैं आपकी वजह से खाना नहीं खाती, तो असल में वह ये मैसेज देना चाहती है कि आप दफ़तरी काम में इतनी देर क्यूँ लगाते हैं, मगर किया कह रही है कि मूझे हर कोई नज़र अन्दाज़ करता है, और ख़ाविन्द इसको ये समझता है कि मुझे कह रही है तुम्हें शर्म आनी चाहिए लेट आने पर, तो वह कहता है मैं काम की वजह से लेट हुवा, तुम्हें किया मोसीबत है, झगड़ा बन गया।

औरत ने जब ये कहा कि जब मैं देखती हूँ ये घर मुझे गन्दा नज़र आता है, तो असल में ये औरत ये कहना चाहती है कि मुझे घर की सफ़ाई का काम बहुत ज़्यादा लग रहा है, किया आप सफ़ाई में मेरी मदद कर सकते हैं? कि हम मिल कर घर को साफ़ करलें, तो आसान तरीक़ा था कि मर्द कहे हाँ, हाँ मैं भी आपके साथ मिल जाता हूँ, मिल के काम करलेंगे। मगर मर्द उसका (Surface) ज़ाहिर में जो मानी लेता है कि ये घर हर वक़्त गन्दा रहता है यानी बीवी कह रही है कि तुम गन्दे हो, मुझे तुम्हारे साथ रहना अच्छा ही नहीं लगता, तो साफ़ ज़ाहिर है कि मर्द रुखा जवाब देगा और फिर इसकी वजह से लड़ाई होगी।

औरत की बात पूरी तवज्जह से सुनें

जब औरत कहती है कि मेरी बात कोईनहीं सुनता तो असल में वह कहना चाहती है कि मुझे आपकी ख़सूसी तवज्जोह चाहिए। मर्दों का मसला ये है कि वह (5%) पाँच फ़ीसद भी तवज्जोह से बात सुन रहे हो तो वह समझते है कि हम बात सुन रहे हैं और औरत का मसला ये है कि वह मर्द की (100%) सौ फ़ीसद (Attention) तवज्जोह चाह रही होती है।

दस हज़ार सौकनें

हमें ख़ूद इब्तिदाई दिनों में इसका तजुर्बा हुवा। किताबें पढ़ने की आदत तो शुरु ही से थी, रात को सोने से पहले भी किताबें पढ़कर सोते

थें, उठते थे तो किताबें पढ़ते थे, हमें शूरू-शुरु में इस बात का इतना अन्दाज़ा नहीं था, बीवी बात करती थी तो हम भी अधूरी तवज्जोह से सुन लेते थे मगर ण्क दिन बीवी ने आराम से बैठ कर बात की। कहने लगें देखें, बाज़ बुज़ूर्गों की चार-चार शादियाँ भी हुइ हैं, मगर इनकी बीवी की तीन सौकनें होती थीं। मैंने कहा फिर तो किताबों को देखकर कहने लगे कि मेरी तौबा दस हज़ार सौकनें हैं। मैंने पूछा किया मतलब? कहने लगें, आप ने कोइ ऐसी बीवी देखी है जिसकी दस हज़ार सौकने हों। मैंने कहा नहीं। कहने लगे जब आप हदीस पाक की या बुज़ूर्गों की किताब पढ़ रहे होते है तो इतना डूब कर पढ़ रहे होते है कि मैं आती भी हूँ, बैठती भी हुँ तो आप अधूरी बात सुनते हैं, किताब में मगन रहते हैं, मुझे महसूस होता है कि आप प्यार मोहब्बत से मुझको टाइम नहीं देते। अब मैंने जब इनकी बात सुनी तो मैंने अहसास किसा कि उनकी बात तो सौ फ़ीसद ठीक है कि किताब पढ़ने वाला बन्दा ग़ौर से कई मर्ताबा पढ़ रहा होता है कि इसको इर्द-गिर्दे की ख़बर नहीं होती कि कमरा में कौन आया और कौन गया। अब बीवी किसी वक़्त ख़ाविन्द के पास बैठना चाहती है, बात करना चाहती है, उसकी अपनी इस वक़्त ज़रुरत होती है तो उस वक़्त हमें इनको वक़्त देना चाहिए, चुनांचि हमने इस गुनाह से तौबा की और फिर इसके बाद हमने ये दस्तूर बनाया कि जब बीवी पास आई नामी सौकन को लपेट कर एक तरफ़ कर दिया और फिर बैठकर बीवी को मुसकुराके देखा तवज्जोह से बात सुनी पाँच मिन्ट में वह निहाल होके अपने काम में वापस चली जाती है और हम दोबारा बीवी वाली सौकन के साथ वक़्त गुज़ारते हैं तो ये तो ख़ाविन्द को समझना चाहिए कि मुझे अधूरी (Atention) तवज्जोह से बात नहीं करनी, बीवी है, ज़िन्दगी की साथी है, वह मेरी (Full Atention) पूरी तवज्जोह चाहती है, चुनांचि अगर इस बात को बन्दा समझ ले तो आपस के झगड़े ही ख़त्म हो जाएँगे।

औरत जब कहती है कि मेरी गुफ़तगू को कोई फ़ायदा नहीं, वह असल में कहना चाहती है कि मुझे असल में बातें नहीं चाहिए, मुझे आप का प्यार चाहिए, अब मर्द इसका मतलब ये समझता है कि तुम्हारा कोई काम सीधा है ही नहीं तो वह उल्टा (React) रद्देअमल का इज़हार करता है, सख़्त गुफ़तगू करता है और यही चीज़ गुस्से का बाअस बनती है।

औरत जब कहती है कि मुझे आपके साथ मोहब्बत का वक़्त चाहिए तो वह असल में कह रही होती है कि आप मसरुफ़ रहते हैं, मैं आप को याद करती हूँ, तो साफ़ ज़ाहिर है कि वह प्यार चाहती है तो इसको प्यार दें मगर मर्द इसका मानी ये समझता है कि तुम तो बे परवाह हो और तुम्हें ज़रा मेरा ख़्याल नहीं है। अब मर्द इसपर समझता है कयूँ मैं ख़्याल नहीं करता, मैं तो घर में इतनी तन्ख़्वाह लाकर देता हुँ और सारे काम करता हुँ तो मर्द (Misunderstanding) नासमझी कर रहा होता है, नतीजा ये होता है कि आपस में झगड़े होते हैं तो इस मामले में मर्दों को सोचने की ज़रुरत है कि वह औरत की बात को पहले तो पूरी तवज्जह के साथ सुनें और फिर असको मुद्दा समझने की कोशिश करें कि वह चाहती किया है?

जो कुफ़्फ़ार मर्द औरत होते हैं उनमें न हया, न शर्म, अगर ख़ाविन्द उन्नीस होता है तो बीवी बीस होती है। एक से बड़कर एक बेहया, मगर मुसलमान घरानों में तो शर्म व हया और झिझक होती है और ये चीज़ पसन्दीदा चीज़ है तो औरत जब बात करती है तो इशारों किनायों में करती है तो ये तो एक (Point) नुक्ता आज की गुफ़तगू में समझने का है कि मर्द और औरत (Different Languages) मुख़्तलिफ़ ज़बान बोलते हैं: मर्द (Surface) ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ में बातें कर रहा होता है, और औरत अलफ़ाज़ के जामे में लपेट कर अपने जज़बात पहूँचा रही होती है। अब इसका किनाया की ज़बान (Language) को (Translate) तर्जुमा करके बीवी का मुद्दा समझना ये मर्द की ज़िम्मेदारी होती है, अगर हम अपने इस (Skill) हुनर को (Improve) बेहतर करलें तो मुझे नहीं लगता कि नेक मियाँ-बीवी इसके बाद फिर एक दूसरे के साथ झगड़ा करेंगे।

ग़म की हालत में मर्द की कैफ़ियत

हाँ एक चीज़ और भी है कि मर्द और औरत की शख़्सियतें मुख़्तलिफ़ हैं इसलिए इनका (Stress Respons) तनाऊ के मोक़ा का रद्देअमल भी (Different) अलग होता है, चुनांचि मर्द पर जब कोई ग़म आता है, परेशानी आती है तो मर्द उस वक़्त तन्हाई पसन्द बन जाता है, तो ये मर्द की फ़ितरत है और औरते इस चीज़ को अच्छी तरह समझें,

कारोबारमें नुक्सान हो जाए, किसी बन्दा के साथ झगड़ा हो जाए या कोई कन्टेनर (Container) फंस गया या कोई और परेशानी आ गई तो मर्द की परेशानी की अलामत ये कि वह तन्हाई पसन्द हो जाता है, मर्द इस वक्त ख़ामोश हो जाता है, मर्द उस वक्त अलग रहना चाहता है।

और हदीस पाक से भी ये चीज़ साबित होती है। नबी (सल्ल॰) की जब उम्र मोबारक चालीस (40) साल की हो गई तोआप देखते कि लोग बूतों को सज्दे कर रहे हैं। एक दूसरे के हक़ पामाल कर रहे हैं। आप (सल्ल॰) का दिल बहुत दुखता है। फिर किया हुवा "ثُمَّ حُبِّبَ إِلَيْهِ الْخَلَاءُ" अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) को तन्हाई अच्छी लगती थी। आप तन्हाई में जाते थे, अल्लाह से तौबा करते थे। अल्लाह की तरफ़ ध्यान करते थे। फ़िक्र करते थे। सोच करते थे और इस सेआप (सल्ल॰) को सूकून मिलता था।

चुनांचि हदीस शरीफ़ में तज़्किरा है कि एक मर्तबा कुछ जहन्नमी औरतों का हाल आप (सल्ल॰) को दिखाया गया तो नबी (सल्ल॰) तीन दिन अलग रहे, न किसी से गुफ़तगू फ़रमाते थे, न कोई बात का ज़्यादा जवाब देते थे, बस ख़ामोश रहते और आँखों से आंसू जारी रहते, ग़म्ज़दह कैफ़ियत थी। जब तीन दिन गुज़र गए तो हज़रत अली (रज़ि॰) और सैयदना उमर (रज़ि॰) हाज़िरे ख़िदमत हुए कि ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) आप के ग़म की ये हालत देखी नही जाती। आप बताएँ तो सही कि क्या हुवा? तब नबी (अलैहि॰) ने फ़रमायाः मुझे उम्मत की छः (6) औरतें दिखाइ गईं जिनको जहन्नम में अज़ाब हो रहा है, इस में बे परदा औरत को इस तरह अज़ाब हो रहा था, ज़ानिया औरत को इस तरह अज़ाब हो रहा था, फ़लाँ औरत को इस तरह अज़ाब हो रहा था, तो देखें कि उम्मत की औरतों के बारे में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने प्यारे हबीब (सल्ल॰) को बताया और दिल पर इतना ग़म सवार हुवा कि अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) ने अलग कमरे में तीन दिन गुज़ारे।

तो मर्द की ये फ़ितरत है कि जब भी (Stress) यानी तनाव आएगा तो बात करने को जी नहीं चाहेगा। तन्हाई पसन्द हो जाएगा, ख़ामोश हो जाएगा। वह दुनिया से बेख़बर हो जाता है। रिश्ते नातों से दूर हो जाता है। बीवी बच्चों से उस वक्त बेगाना हो जाता है। वह ग़म भुलाने के

लिए या ग़म का हल निकालने के लिए अज़-ख़ूद कोशिश कर रहा होता है। इस वक़्त इसका दिमाग़ बहुत सोच में डूबा हुवा होता है और जब वह अपने मसले का हल निकाल लेता है तो फिर वह इस ख़ामोशी की हालत से बाहर आता है, तो इसलिए मर्द की ये जो (Response) तनाउ के वक्त का रवैया है, और इसको जो चुप का ताला लग जाता है ये चीज़ औरत के लिए बहुत ज़्यादा मिस गाइडिंग ग़लत रहनुमाई होती है। औरत समझती है अब इसको कोई और लड़की पसन्द हो गई है। अब ये छुप के बैठा हुवा है मैसेज कर रहा होगा। अब ये टेलीफ़ून कर रहा होगा। अब ये सोच रहा होगा इसके बारे में, ये तो मुझे छोड़ देगा, मुझे तो बस तलाक़ के लफ़्ज़ ही इसने सुना देने हैं। अब मर्द पर किया बीत रही है वह मर्द जानता है। मगर औरत इसको ग़लत फ़हमी की वजह से उलटा मर्द का पीछा करना शुरु कर देती है। इसकी टोह लगाती रहती है। उसको कहती है तुम मुझसे बात कयूँ नहं करते? मैं आप की बीवी हुँ। आप मेरी तरफ़ तवज्जह नहीं करते, तो ग़लतफ़हमी की वजह से झगड़ा बन गया। जब मर्द कशीदगी की हालत में हो उस वक्त औरत का आकर उस से बात करने की दरख़्वास्त करना मुसीबत को बुलाने वाली बात है। इस वक्त मर्द एक दरिन्दा की तरह होता है, वह फिर बरस पड़ता हैऔर औरत फिर इसका बुरा मान जाती है कि देखो मेरी तज़लील हो गई, मेरा दिल तोड़ दिया, भाई आप को ज़रुरत ही किया थी इस मोक़ा पर अपने ख़ाविन्द से बात करने की। आप इस चीज़ को समझने की कोशिश करेंकि इन्सान है, नफ़ा भी है नुक्सान भी है, सेहत भी है, बीमारी भी है। इसमें इन्सान के उपर हालात कैफ़ियात अदलते बदलते हैं, तो कभी ज़ेहनी तनाउ की हालत भी आ जाती है। इस में मर्द का ये रद्देअमल होता है। जब मर्द इस तरह बरताव कर रहा हो तो आप इस के साथ प्यार से गुफ़तगू करें, इतना पूछें आप को ज़रुरत है किसी चीज़ की? या मेरी ज़रुरत है? अगर वह कहे नहीं, आई ऐम ओ के (I'm Ok), आई ऐम फ़ाइन (I'm fine) मैं ठीक हूँ तो इसके दो-दो लफ़्ज़ बता देंगे कि इस वक़्त वह ये कहना चाहता है कि (Don't Disturb) कि बराए मेहरबानी इस वक्त मुझे तन्हाँ छोड़ दीजिए, तो आप एक तरफ़ हो जाएँ,

हाँ दो रकअत नफ़्ल पढ़लें। कुरआन पाक पढ़लें, अल्लाह से दूआ मांगलें, फिर मेरे ज़िन्दगी के साथी को कोई परेशानी लाहिक़ हो गई मेरे मौला मैं दामन फैलाके बैठी हूँ इसकी परेशानी को दूर करदे। इसकी परेशानी मुझसे नही देखी जाती, अल्लाह आप तो बन्दों पर बहुत मेहरबान हैं। अल्लाह कोई आसानी निकाल दीजिए। आपकी दुआ इस ख़ाविन्द के लिए एक अजीब रहमतों का सबब बनेगी और आप देखेंगी कि इसका तनाव बहुत जल्दी ख़त्म हो जाएगा। इसके दिल को सकून मिल जाएगा।

ग़म की हालत में औरत की कैफ़ियत

औरत के उपर भी तनाव आता है, परेशानी आती है, मगर औरत की तबीअत ऐसी है कि जब ये परेशान होगी तो ख़ामोश नहीं रहेगी बल्कि ये उल्टा ज़्यादा बोलना शुरु करदेगी। ये अपनी परेशानी का तज़किरा ख़ाविन्द से करेगी। बच्चों से करेगी, माँ से करेगी, बहन से करेगी, पड़ोसन से करेगी, सहेली से करेगी। तो ऐसा लगता है कि उस वक़्त औरत का तक़रीर करने को दिल चाहता है, जब औरत बोलती बोलती थकने का नाम न ले तो आप समझलें कि ये (Stress Condition) तनाव की हालत में है तो (Stress Response) तनाव के वक़्त का रद्दे अमल इसका मुख़्तलिफ़ होता है, औरत कयूँ बातें करती है? इसकी वजह ये है कि औरत को तबादला-ए-ख़्यालात करने से दिल को तसल्ली होती है और इसकी दलील हदीस पाक से भी मिलती है। सैयदा आइशा (रज़ि॰) का जब पता चला कि मेरे उपर मुनाफ़िक़ीन ने बोहतान लगा दिया तो उन्होंने फ़ौरन नबी (सल्ल॰) से इजाज़त मांगी कि मुझे इजाज़त दें कि मैं अपनी अम्मी के घर चली जाऊँ, और जब अम्मी के घर गईं तो जाते ही अपनी वालिदा से बात की कि यहाँ तो ये मसला होगया, वालिदा ने तसल्ली दी कि बीटी, तुम ख़ूबसूरत हो और ख़ूबसूरत औरतें होती हैं इनको अपने सौकनों की तरफ़ से, लागों की तरफ़ से ग़म बरदाशत करने पड़ते हैं, तो माँ की बात से उनको तसल्ली होगई कयोंकि वह अपने दिल की बात अपनी माँ से कर चुकी थीं, तो औरत पर जब भी तनाव की हालत आएगी इसको बातें करने का दिल करेगा। चुनांचि

बात करने से इसका मक़सद ये नहीं होता कि उसने कोई हल निकालना होता है बल्कि बात करने से इसका मक़सद ये होता है कि मुझे सुनलो, मैं किया कहना चाहती हूँ, मर्द को सिर्फ़ इतना करना पड़ता है कि दस मिन्ट दे कर इउसकी गुफ़तगू को तसल्ली से सुनले, औरत अपने मियाँ से बड़ी ख़ूश हो जाएगी, मेरा मिया, मेरी बात को सुनता है, अब इस काम के करने में किया रुकावट है भई, तो मर्दों के लिए कोई दस्तूर नहीं कि दो लफ़्ज़ बीवी के सुने और तीसरी बात पर उसको झड़क दें, वह भी इनसान है जैसे इसको खाने पीने की ज़रुरत है, ऐसे प्यार मोहब्बत के बोल की भी ज़रुरत है। चुनांचि जब किसी वक्त ऐसी बात कर रही है या करना चाहती है तो उस वक़्त ख़ाविन्द अपनी बीवी को टाइम दे, ये बीवी का शरई हक़ होता है।

मर्दों की एक बड़ी संगीन ग़लती

ये बात ज़ेहन में रखें कि अगर ख़ाविन्द बीवी को उस वक्त टाइम नहीं देगा तो फिर इसका हल किया निकलेगो कि व अपनी किसी सहेली को फ़ोन करेगी और सहेली अगर इतनी दीनदार न हुई तो वह इसको उलटा मशविरा दे देगी। या हो सकता है कि वह उस वक्त किसी ऐसे बन्दे से बात करे कि जो रिश्तेदार हो मगर मर्द हो, तो शैतान को और मोक़ा मिल जाएगा। मर्द ये बात नोट करें कि दीनी शादी शुदा औरतें बदकार बनती हैं वह अमूमन ज़ेहनी परेशानी के हालत में मर्द की ग़लत बरताव करने की वजह सेबनती हैं, वह परेशान होती हैं और मर्द वक्त नहीं देता, बात नहीं सुनता वह अपना दिल खोलना चाहती हैं, जब भी किसी ग़ैर मर्द के सामने ज़रा सी बात खोलेगी और अगला बन्दा मोहब्बत के दो बोल बोल देगा शैतान इनको वहीं पर नत्थी करंदेगा, तो सोचने की ज़रुरत है कि मर्द की ज़रा सी कोताही से कबीरा गुनाह होते हैं। घर उजड़ जाते हैं। इसलिए मियाँ-बीवी दोनों एक दूसरे की (Stress Condition) ग़म की कैफ़ियत को समझने की कोशिश करें; इसलिए कि इस तनाव और ग़म में से निकालना, ये एक दूसरे का शरई हक़ होता है।

किसी का दिल ख़ुश करने की फ़ज़ीलत

शरीअत ने तो यहाँ तक कहा कि जो इन्सान किसी दूसरे मुसलमान के दिल को अचानक ख़ूशी पहुँचा देता है, अल्लाह उसकी पिछली ज़िन्दगी के सब गुनाहों को माफ़ कर देता है। क़ुरबान जाएँ इस शरीअत पर, ये कितनी ख़ूबसूरत है कि अगर आम मोमिन के दिल को ख़ूश करने पर ये अज्र मिलता है तो जो ज़िन्दगी की साथी है जो बच्चों की माँ है, जिसने अपनी जवानी ख़र्च करदी अपने ख़ाविन्द की ख़ातिर, अगर वह दूख की हालत में है, परेशान हालत में है उस वक़्त बन्दा उसकी दो मिन्ट बैठकर अगर बात सुनले और उसका दिल ख़ूश हो जाए और उस पर अल्लाह राज़ी हो जाए तो सोचिए फिर अल्लाह को मनाने का और आसान तरीक़ा कौन-सा है।

हम जहाँ शरीअत को नज़र अन्दाज़ करते हैं वहीं अपने लिए गड़हा खोद लेते हैं। फिर इसका उलटा होता है, हमारी ज़िन्दगयों में झगड़े होते हैं, घर टूटते हैं, तलाक़े होती हैं, बद-मज़्गियाँ होती हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें समझ अता फ़रमाए।

ब्यान का ख़ुलासाः तीन बातें

चुनांचि आज की महफ़िल में तीन बातें समझाने की कोशिश की गईः

1. पहली बात तो यह कि औरत बात करती है तो हमेशा दो अल्फ़ाज़ के अन्दर छूपा हुवा मानी समझना पड़ता है, ये मर्द की ज़िम्मेदारी होती है कि इसको समझे, औरत को भी चाहिए कि अगर मर्द पूरी तवज्जा से बात नहीं सुन रहा है तो (Clear) साफ़ लफ़ज़ों में बता दे कि जी, मैं ये चाहती हूँ ताकि आपको आपका मक़सद मिल जाए। दोनों तरफ़ से कोशिश होनी चाहिए।
2. दूसरी बात ये कि अगर (Stress Condition) तनाव की हालत में मर्द किसी वक़्त ख़ामोशी इख़्तियार कर जाए तो औरत को क़तअन घबराने की ज़रुरत नहीं, इसलिए कि जैसे ही उसने अपनी परेशानी का हल ढूंडा या उसके ज़ेहन सेग़म की कैफ़ियत ख़त्म हुई वह

फ़ौरन वापस आएगा और उसी मोहब्बत से आएगा जिस मोहब्बत से पहले वह बीवी के साथ मिलता था, मर्द की मोहब्बत में फ़र्क़ नहीं पड़ता, सिर्फ़ ग़म की कन्डीशन (Condition) हालत में वह कहता है कि मुझे तन्हाई चाहिए, तो आप परेशान न हुवा करें (Tension) न लिया करें। मर्द को थोड़ा-सा टाइम देदिया करें, जो आज दो लफ़ज़ों में बात कर रहा है वह एक दिन केबाद मुसकुराता हुवा फूल का तोहफ़ा ले कर आएगा और आप को कहेगा (How are you) आप कैसी हैं? (I miss you) मैं आप को याद करता हुँ। (I love you) मैं आप से प्यार करता हुँ। इतनी सी बात होती है तो आप थोड़ा वक़्त इसको तनाव की हालत से निकालने के लिए दिया करें और फिर अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह उसके लिए उनको ग़मों से निकलना आसान करदे।

3. तीसरी बात ये कि मर्द को चाहिए कि औरत अगर किसी वक़्त इससे टाइम मांगे कि मुझे आप से बात करनी है, मुझे आपसे एक बात शेयर (Share) करनी है तो उसको मामूली न समझें, जब औरत से कह रही होती है तो इसका मतलब कि उसका दिल परेशान होता है, वह कुछ कहना चाहती है, उसको सकून नहीं, इतमीनान नहीं, इसको चैन नहीं आ रहा। अब अगर वह मियाँ को नहीं बताएगी तो किस को बताएगी, और अगर मर्द मिस हैन्डल (Mis Handle) ग़लत इस्तेमाल करेगा, तो अपना घर ख़ूद बरबाद करेगा। तो बीवी की बात को सुनना चाहिए। फ़क़्त सुन लेने से ही इसको ग़म हलके हो जाते हैं, ज़रुरी नहीं होता कि आप बात सुनें तो कोई हल भी निकाल करदें, सिर्फ़ बात का सुन लेना काफ़ी है, इस लिए ख़ाविन्द को एक अच्छा सुन्ने वाला भी बन्ना चाहिए कि वह बात सुनले, सारी ज़िन्दगी तो वह बेचारी सुनती है अगर परेशानी में हम ने उसकी सूनली तो किया मसला हुवा। तो मर्द बात को सुने, तसल्ली के दो बोल बोल दे, मिठास की दो बोल बोलदे, औरत का दिल ख़ूश हो जाता है, इस पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ख़ूश हो जाते हैं।

चुनांचि ये तीन बातें अगर हम समझलें तो हम अपने घर की सूरते-हाल में झगड़े की कन्डीशन पैदा होने नहीं देंगे। अल्लाह तआला इन झगड़ों से हमें निजात अता फ़रमाए। मोहब्बत व सकून की ज़िन्दगी नसीब फ़रमाए और हमें अपनी ज़िन्दगी अपनी रिज़ा के मोताबिक़ गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

व आख़िरु दअ़वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

❏❏❏

बाप की नसीहत बेटी को

ऐ लख़्ते जिगर ऐ मेरे माह पारे	ऐ बेटी मेरे दिल के रौशन सितारे
क़रारे दिल व जान मादर पद्र तू	सकूने जिगर और नूरे बस्र तू
उजाला तेरे दम से है मेरे घर में	तेरी भोली सूरत है सबकी नज़र में
तुझे देख कर होती है शादमानी	तेरा रुए ज़ेबा मेरी ज़िन्दगानी
तेरे ग़म में हालत तबाह हो रही है	कि तू आज हम से जुदा हो रही है
तेरे छोटे भाई भी लड़ते थे तुझसे	ज़रा बात पर ये झगड़ते थे तुझसे
मगर आज ये सब के सब रो रहे हैं	जुदाई के अश्कों से मुँह धो रहे हैं
तेरी वालिदा की ये हालत है बेटी	कि रोती है छुप-छुपके घर में अकेली
नहीं दिल बहलता है बहलाएँ कयूँ	रखें किस तरह हम कलेजे पे पत्थर
यहाँ तुने पहले फटे और पूराने	कि गुज़रे हैं अक्सर भी ऐसे ज़माने
कभी भूखा प्यासा भी रहना पड़ा है	कभी सख़्त और सूस्त सून्ना पड़ा है
उठाया है रातों की नींदों से तूझको	कि बेटी हमारा ज़रा काम कर दो
हर एक बार ख़िदमत का तूने उठाया	मगर तेरे चेहरे पे बल तक न आया
ख़ुदा के लिए अपना दिल साफ़ रखना	जो गुज़री हो तकलीफ़ वह माफ़ करना
मगर अब शरीअत से मजबूर हैं हम	ये हुक्म ख़ुदा है तो मअज़ूर हैं हम
तुझे आज क़ुदरत ने ये दिन दिखाया	तुझे तेरी बहनों ने दुलहन बनाया
मुबारक हो तुझको नया घर बसाना	मुबारक हो शौहर की गलियाँ बसाना
ना घबराना तूफ़ान बातिल से डर कर	क़दम हक़ की जानिब तू रखना संभल कर

कभी हुक्म शौहर से ग़फलत न करना	सदाक़त से जीना सदाक़त पे मरना
मोहम्मद(स.) के पैग़ाम पे दिल से चलना	ग़रीबों की हालत पे नफ़रत न करना
नमाज़ और रोज़ा जो फ़रमाने हक़ है	न छूटे कभी जान कर बेटी तुझसे
शिकायत का मोक़ा किसी को न देना	कभी भूलकर भी तू ग़ीबत न करना
रहेगा तेरे दर पे दामाने रहमत	तेरी गोद बच्चों से भरदेगी क़ुदरत
तेरे साया में जब ये बच्चे पलेंगे	तो मज़हब की रौ में सितारे बनेंगे
ये दीन व वतन में उजाला करेंगे	ये तो ग़ैर मिल्लत दो बाला करेंगे
मुबारक हो सूसराल जाना मोबारक	शरीअत से शौहर का पाना मोबारक
जुदा करना तुझको गवारा नहीं है	मगर हुक्मे क़ुदरत में चारा नहीं है
हबीब अब कहूँ किया ये है हुक्मे क़ुदरत	कि पाले कोई और ले कोई ख़िदमत

ऐ लख़्ते जिगर ऐ मेरे माह पारे
ऐ बेटी मेरे दिल के रौशन सितारे

□□□

وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ

(व आशिरु हुन्ना बिल-मारुफ़ि)

मर्द और औरत की जिसमानी ज़रुरियात

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

फ़ेहरिस्त उनावीन

अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह!

इक्तिबास

चन्द बातें ये भी सूनलें कि जब भी बीवी ख़ाविन्द की तारीफ़ करती है तो ख़ाविन्द के दिल में बीवी की मोहब्बत बड़ती है, हमने देखा कि इसमें बीवियाँ बहुत कोताही करती हैं। ख़ाविन्द जितने अच्छे काम करलें, जितना इनका ख़्याल रखले, तारीफ़ का लफ़्ज़ तो उन की ज़बान पर आता ही नहीं, मालूम नहीं क्यूँ ज़बान को ताले जग जाते हैं? एक तो किसी बात पर शुक्रिया अदा नहीं करतीं और उसका तो नबी (सल्ल॰) ने भी इज़हार फ़रमाया कि ख़ाविन्द का शुक्रिया अदा न करने की वजह से मैंने मेराज की रात देखा कि बहुत सारी औरतें जहन्नम के अन्दर थीं। तो ख़ाविन्द का शुक्रिया अदा करने पर जन्नत मिलती है।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलिफ़क़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلَامٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ۔

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ)

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ۔ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ۔

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

बिस्मिल्लाह

अल्हम्दुलिल्लाहि व कफ़ा व सलामुन अला इबादिहिल्लिज़ी-नस्तफ़ा अम्माबअ़द

अऊज़ो बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रहीम

(व आशिरु हुन्ना बिल-मारुफ़ि)

सुब्हानि रब्बि-क रब्बिल-इज़्ज़ते अम्मा यसिफ़ुन। व सलामुन अललमुर्रिसलीन

वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलिमीन

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मोहम्मदिंव-व अला आलि सय्यदिना मोहम्मदिंव-व बारिक व सल्लिम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मोहम्मदिंव-व अला आलि सय्यदिना मोहम्मदिंव-व बारिक व सल्लिम

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मोहम्मदिंव-व अला आलि सय्यदिना मोहम्मदिंव-व बारिक व सल्लिम

मर्द व औरत की ज़िम्मेदारियाँ

ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बन्दगी, लिहाज़ा शादी-शुदा ज़िन्दगी में मर्द के ज़िम्मे ज़िन्दगी के कई काम होते हैं। मसलन रिज़्क़े हलाल कमाना, हक़ूकूल-अबाद को पूरा करना, हक़ूक़े

अल्लाह को पूरा करना, इशाअते दीन के लिए मेहनत करना, दीन का इल्म हासिल करना।

उसी तरह घर मेंऔरत की भी ज़रुरियात होती हैं, ज़िम्मेदारियाँ होती हैं, मसलन बच्चों की परवरिश करना, उनकी तर्बीयत के लिए फ़िक्रमन्द रहना, उनके काम काज समेटना, अल्लाह की इबादत करना। तो मर्द की अपनी ज़िम्मेदारियाँ हैं और औरत की अपनी ज़िम्मेदारियाँ हैं।

जिस्मानी ज़रुरतों का निज़ाम

इन ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए इन्सान की कुछ जिस्मानी ज़रुरियात होती हैं, अल्लाह रबबुल इज़्ज़त ने इन ज़रुरतों का एक सिलसिला बना दिया है, चुनांचि आप देखेंगे कि हर इन्सान को आठ घंटे के बाद भूक महसूस होती है। कहते हैं कि दुनिया में सबसे सही टाइम देने वाली घड़ी होती है, तो एक इन्सान खाना खाए, छः घंटे के बाद फिर उसको दोबारा भूक महसूस होती है।

तो भूख प्यास का एक सिलसिला है जो तक़रीबन आठ घंटे का है, इसी तरह नींद का एक साइकल सिलसिला है जो चौबीस घंटे के बाद होता है। आज आप रात को इशा पढ़कर दस बजे सोएँ, तो अगले दिन फिर दस बजे आपको नींद महसूस होगी। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने नींद का एक सिलसिला मोतय्यन फ़रमाया है।

जिन्सी ज़रुरत में शरीअत की रहनूमाई

इसी तरह शादी शुदा ज़िन्दगी में इन्सान की जिस्मानी ज़रुरत का, जिन्सी ज़रुरत का भी एक सिलसिला होता है, नौ बयाह जोड़े आपस में ज़्यादा जल्दी-जल्दी मिलते हैं, बुड़ापा आ जाता है तो ज़्यादा वक़्फ़ा हो जाता है लेकिन शरीअत की तालीमात को देखें तो यूँ महसूस होता है कि एक हफ़ता का वक़्फ़ा एक मोनासिब वक़्फ़ा ख़्याल किया गया है, जिस पर ज़िन्दगी का लम्बा अरसा इन्सान अमल कर सकता है।

हम ख़रमा व हम सवाब

इसलिए हदीस मोबारिका में है कि जूमा का दिन चूंकि शरीअत के मोताबिक़ ठीक एण्ड अख़्तिताम हफ़ता का दिन होता है, छुट्टी का दिन

होता है तो नबी (सल्ल॰) ने फ़रमायाः “मन ग़स्स-ल यौमल-जुमआ” जो ख़ाविन्द जुमा के दिन ख़ूद भी नहाए और बीवी को भी नहलाए, तो इशारा है कि मियाँ-बीवी आपस में मिलें, एक दोसरी जगह पर है कि जो नहाए और बीवी की ख़ूश्बी लगाए और इसमें भी इशारा मिलता है कि उस दिन का नहाना शरीअत की नज़र में सिर्फ़ मैल कूचैल दूर करना नहीं बल्कि दिल के ख़्यालात को भी पाकीज़ा करना मक़सूद है, इसके बाद फिर वह बन्दा जल्दी अगर जूमा की नमाज़ के लिए चले तो हदीस पाक में इसके फ़ज़ाइल आए हैं।

पहली फ़ज़ीलत : कि हर क़दम पर एक साल के रोज़े और एक साल की नमाज़ों का सवाब मिलता है।

दूसरी फ़ज़ीलत : कि ऐसा करने पर अल्लाह तआला ख़ाविन्द को दो सवाब देते हैं, एक अपने ग़ुस्ल का सवाब और एक बीवी के ग़ुस्ल का सवाब। दूसरी हदीस में है कि इन्सान जब जनाबत का ग़ुस्ल करता है तो जितने पानी के क़तरे जिस्म से गिरते हैं हर एक के बदले अल्लाह गुनाहों को माफ़ फ़रमा देते हैं।

तीसरी फ़ज़ीलत : और तीसरा इनाम अल्लाह तआला ये देते हैं कि एक जूमा से लेकर दूसरे जूमा तक गुनाह अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देते हैं।

ये कितना ख़ूबसूरत दीन है कि जिसने इन्सान के खाने पीने सोने और जिन्सी ज़रुरियात तक का ख़्याल रखा और मियाँ-बीवी को तर्ग़ीब दी कि देखो इबादत की नीयत से मिलोगे तो ज़रुरत भी पूरी होगी और तुम्हें अल्लाह के यहाँ अज्र मिलेगा। इसको कहते हैं “हम ख़ुर्मा वहम सवाब” खजूर भी खाओ और सवाब भी पाओ।

जिनसी मामले में उतार चढ़ाव की रिआयत

ये इन्सान की जो जिन्सी ज़रुरत है इसका भी एक सिलसिला है। जब एक दफ़ा ये पूरी हो जाती है तो दर्मियान में कुछ वक़्त होता है जिसमें ख़ाविन्द अपने कामों में मसरुफ़ हो जाता है और बीवी अपने कामों में मसरुफ़ हो जाती है। जैसे समन्दर के किनारे रहने वाले लोग जानते हैं कि एक मन्थली साइकिल (Monthly Cycle) माहाना निज़ाम

होता है, हाई टाईड (High Tide) और लो टाईड (Low Tide) यानी जवारभाटा, तेरह, चौदा, पन्द्रह जब चाँद की तारीख़ होती है तो लहरें दस दस फ़िट उपर उछल-उछल कर आती हैं और जब पहली तारीख़ होती है तो समन्दर बिलकुल पूरसकून और ख़ामोश होता है। यही इन्सान की जिन्सी ज़रुरत का मामला है कि आम तौर पर जब इन्सान की ज़रुरत पूरी होती है तो फिर लो टाईड (Low Tide) सकून का वक्त रहता है मगर कुछ वक्फ़ा गुज़रने के बाद दो बारा ये जोश में आ जाता है, इसमें भी अल्लाह की एक हिक्मत है कि अगर हर वक्त मियाँ-बीवी पर जोश की हालत रहती तो मर्द फिर घर में ही पड़े रहते, औरतों के तवाफ़ में ही मशगूल रहते, न कोई कारोबार कर सकता, न कोई फ़ैक्ट्री चला सकता। औरतों का भी मामला इसी तरह कि वह भी बच्चों से ला परवाह होतीं, हर वक्त ख़ाविन्द की बग़ल में घुसी रहती तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने कितनी ख़ूबसूरत ज़िन्दगी दी है कि जिस में हर चीज़ का ख़्याल रखा गया, तो वक्फ़ा से सेहत भी बर क़रार और फिर वक्फ़ा से मिलने से मोहब्बत का अहसास भी ज़्यादा होता है, इसके इलावा भी इन्सान को ज़रुरत पेश आ सकती है, सिर्फ़ एक हफ़ता ही का तो मसला नहीं लिखा, शरीअत ने इजाज़त तो हर वक्त दी है, चुनांचि शरीअत ने कहा कि मर्द अगर बाहर फिर रहा हो और उसकी नज़र किसी ग़ैर महरम पर पड़े और उसके दिल में इसका ख़्याल आ जाए तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इसको चाहिए कि घर आए और अपनी बीवी से मिल ले, जो कुछ उस औरत के पास था वही कुछ घर में बीवी के पास होगा, कितनी ख़ूबसूरत तालीमात हैं कि जो कुछ तुम बाहर ढूंडते हो जब तुम्हें घर में मिलता है तो फिर गुनाह करने की किया ज़रुरत है।

इसी तरह नबी (सल्ल०) की सुन्नते मोबारका है जब आप (सल्ल०) सफ़र में तशरीफ़ ले जाने लगते थे तो अपने अहले ख़ाना से मिलाप करते थे। हदीस पाक में है कि हज्जतुल-विदा के मोक़ा पर नबी (सल्ल०) को एहराम बांधना था तो जितनी अज़वाजे मुतहरात साथ थीं अल्लाह के हबीब (सल्ल०) ने सबके साथ वक्त गुज़ारा, इसी तरह सफ़र से वापस आएँ तोभी मिलना सुन्नत है। इसी तरह कई मर्तबा इन्सान को कोई ख़ूशी मिलती है तो वह अपनी बीवी से क़रीब होता है, बीवी को कोई परेशानी

होती है तो वह ख़ाविन्द का क़ुर्ब चाहती हे तो इन्सानी तबाए हैं, शरीअत ने समझा दिया कि देखो एक आम साइकिल (Cycle) नज़ाम की जो मिक़दार है वह एक हफ़ता है, अब अपनी ज़िन्दगी की ज़रुरतों को देखते हुए इसे कम अरसा में भी मिल सकते हो और इस से ज़्यादा अरसा में भी मिल सकते हो।

लेकिन कई मर्तबा जब मियाँ के उपर या बीवी के उपर उतार की कन्डीशन होती है तो ग़लत फ़हमियाँ हो जाती हैं, शैतान इससे फ़ायदा उठाता है इस वक़्त में ख़ाविन्द अपने काम की तरफ़ तवज्जोह ज़्यादा देता है। दफ़तर पर तवज्जोह ज़्यादा देता है। दोस्तों मैं वक़्त ज़्यादा देता है तो बीवी समझती है कि शायद बाहर निकल कर ये कहें और (Involve) चक्कर में पड़ गया, हालाँकि हर वक़्त तो ऐसा नहीं होता है ख़ाविन्द के बाहर निकलने का एक ही मक़सद हो, ख़ूद औरत के उपर जब उतार की कन्डीशन (Condition) हालत होती है तो इसकी तबीअत में सूस्ती होती है, बे इतमीनानी सी होती है, थकी हुई होती है, तबीअत में बेज़ारी होती है।

सकून किसी और में भी है

शरीअत ने कहा कि एक ही काम के लिए ज़िन्दगी नहीं दी, ऐसे हालात में तुम अल्लाह की इबादत करो, क़ुरआन पाक की तिलावत करो, ज़िक्र से अपने दिल को इतमीनान पहुँचाउ, चुनांचि रब करीम इरशाद फ़रमाते हैं: "कज़ालिका लिनूसब्बि-त बिहि फ़ूआ-द-क" ऐ मेरे हबीब, जब आप का दिल मग़मूम होता था तो हम आप के दिल को तसल्ली देने के लिए क़ुरआन पाक की आयतें उतारते थें, काश कि हम ये तजूर्बा करते कि ग़मज़दा इन्सान को क़ुरआन से किया सकून मिलता है, ग़मज़दा दिल को नमाज़ पढ़ने से किया लुत्फ़ मिलता है, लेकिन हम इन तजूर्बात से अभी वाक़िफ़ नहीं, हमें सिर्फ़ माद्दी चीज़ों का पता है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जो दिलों का सकून नेकी में रखा है वह आप को ढूंडने से भी दुनिया में कहीं नही मिल सकता।

ताहम मियाँ-बीवी ऐसे वक़्त में बहुत एक दूसरे का ख़्याल रखें, कयूंकि झगड़ों की बुनियाद यही होती है। ओरत कई मर्तबा क़रीब होना

चाहती है और मर्द जान छुड़ाता है। औरत बातें करना चाहती है और मर्द चुप लगा जाता है, तो औरत की ग़लती ये कि मर्द की उतार की कन्डीशन (Condition) में ख़ामोशी को जुदाई न समझे, मर्द की ग़लती ये कि औरत अगर परेशान है और बातें करना चाहती हैं तो वह हालात सुना रही है तो उसको सुन लेना चाहिए। बहरहाल शादी शुदा ज़िन्दगी में मियाँ-बीवी को समझदारी से काम लेना चाहिए। इसी लिए तो ये पोख़्तगी और संजीदगी का काम है।

बाज़ मूल्कों का क़ानून है कि वोट देने की उम्र अठारह (18) साल और शादी की उम्र इक्कीस (21) साल, वजह किया? कि किसी एक के लिए मुल्क चलाना आसान काम है लेकिन बीवी का घर चलाना एक मूशिकल काम है। शरीअत ने कहा कि दोनों एक दूसरे का दिल जीतने की कोशिश करें।

चुनांचि आज की इस महफ़िल में चन्द छोटी छोटी बातें जिनके करने से बीवी का दिल ख़ूश होता है और बीवी करे तो ख़ाविन्द का दिल ख़ूश होता है, ये चन्द बातें ज़िहन में आएँ बस एक रवानी में लिख दी गई हैं। ये सारी बातें नहीं है, आप सोंचेगी तो हो सकता है इससे पाँच गुना और ज़्यादा अच्छी बातें आप एकट्ठी करलें (But its food for thought) बस ये सोचने के लिए कुछ मवाद है, इन बातों सेआप को एक अन्दाज़ा हो जाएगा कि मियाँ-बीवी को आपस में मोहब्बत प्यार से किस तरह रहना चाहिए, अगर प्यार मोहब्बत की ज़िन्दगी चाहिए तो शरीअत के मोताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ेगी, और अगर शरीअत की परवाह नहीं होती तो दोनों ग़लतियाँ करते हैं और शादी फूलों की सेज के बजाए काँटों की सेज बन जाती है।

लतीफ़े मशहूर है कि एक नौजवान डॉक्टर के पास गया, डॉक्टर साहब कोई लम्बी उम्र का नुस्ख़ा बताइये। उसने कहा शादी करली, तो वह हैरान हो कर पूछने लगा कि मैंने कहा है कि लम्बी उम्र का नूस्ख़ा बताएँ और आप कहते हैं कि शादी करली। डॉक्टर ने कहा इसलिए कि शादी करने के बाद आप को यह ख़्याल न आएगा।

तो जब शरीअत की ख़िलाफ़वर्ज़ी की ज़िन्दगी होतो बेवियों पर

परेशानियाँ ही परेशानियाँ होती हैं और अगर मोहब्बत प्यार की ज़िन्दगी निभानी है तो शरीअत को सामने रख कर ज़िन्दगियाँ निभाएं, फिर देखें अल्लाह तआला दिलों को किस तरह जोड़ते हैं और दिलों को किस तरह एक दूसरे के साथ नत्थी कर देते हैं।

चुनांचि शादी के शुरु में मर्द ने मोहब्बत का इज़हार किया था उसकी पूरी ज़िन्दगी के लिए मअयार बना लिया जाए और वक्तन फ़वक्तन इन बातों का तज़किरा करते रहना चाहिए, तज़किरा करने से यादें ताज़ा रहती हैं।

बीवी की मोहब्बत हासिल करने के आसान नुस्ख़े

शरीअत ने कहा कि मर्द जब घर आए तो मुसकूराता हुवा कुशादा दिली से दाख़िल हो, दूआ पढ़े ताकि घर में बर्कत हो और बीवी को मोहब्बत भरा सलाम कहे और बीवी अगरचे कामों में मसरुफ़ हो मगर अपने आप को फ़ारिग करके ख़ाविन्द का सलाम क़बूल करे। ख़ाविन्द अपनी बीवी को दस पंद्रह मिन्ट (Focus Attention) पूरी तवज्जाह के साथ दे, इससे पूछे कि आप का वक्त कैसे गुज़रा। आप ने इस दौरान किया कया? अल्लाह ने औरत की तबीअत में फ़र्माबरदारी रखी है, तो एक मा तहत होने की वजह से इसकी फ़ितरत है कि उससे कार गुज़ारी पूछी जाए। अब अपना मियाँ ही नहीं पूछेगा तो ये किस को बताएगी, किसके सामने दिल खोलेगी, तो औरत का जी ख़ूश होता है और इसे महसूस होता है कि मेरे ख़ाविन्द को मेरी ज़िन्दगी में दिलचस्पी है, तभी तो पूछ रहे है कि आप का वक़्त कैसे गुज़रा? अगर आप की बीवी बताए कि मैंने ये किया, ये किया, तो एक आध सवाल भी पूछलें; ताकि इसको ये अहसास हो कि फ़क्त ये बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल नहीं रहा, बल्कि इसे सोच भी रहा है और मेरे साथ शेयर (Share) भी कर रहा है। मेरी ज़िन्दगी में इसको वाक़ई दिलचस्पी है। वक्त थोड़ा लगता है मगर करने से बीवी के दिल को सकून मिल जाता है।

कभी-कभी फूलों का तोहफ़ा भी लाएँ, वैसे तो शरीअत में ख़ूद बीवी को ही फूल से तश्बीह दी गई है। एक रिवायत में है कि सैयदना अली (रज़ि॰) घर में थे तो उन्हें कुछ दिल लगी सूझी तो फ़ातिमातुल-ज़ोहरा

(रज़ि॰) को देख कर कहने लगे "इन्ननिसाअ शशतीनो ख़ूलिक़-न लना" कि औरतें शैतान होती हैं, अल्लाह ने हमारे लिए इनको पैदा किया है। तो फ़ातिमा (रज़ि॰) बुरा नहीं मानी बल्कि फौरन कहा कि "इन्निसाअ रयाही-न ख़ुलिक़-न लकूम व कुल्लूकूम यश-तहि शम्मार्रियाहीन" कि औरतें फूल होती हैं अल्लाह ने आप लोगों के लिए पैदा की हैं और तुम में से हर बन्दा का दिल चाहता है कि मैं फूल को सूंघू। अली (रज़ि॰) मुसकूराने लगे हाँ तुम्हारा जवाब मेरी बात से बहुत बेहतर था। तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने औरत को फूल ही की तरह बनाया है अगर इसके लिए फूल का तोहफ़ा लाए तो ये भी एक मोहब्बत का इज़्हार होता है।

तोहफ़ा पेश करना

एक बात ज़ेहन में रखना कि औरत की फ़ितरत है कि मर्द जब भी तोहफ़ा लाएगा वह उसकी मारकिटिंग में इस को एक ही नम्बर देगी। चाहे वह तोहफ़ा छोटा हो, चाहे वह तोहफ़ा कितना बड़ा क़ीमती हो, लिहाज़ा अक़ल की बात ये है कि बीवी के लिए छोटे-छोटे तोहफ़े लाए, इसकी वजह किया है कि नम्बर तो एक ही मिलना है फिर मंहगे तोहफ़े ये ख़ूद ख़रीदेंगी तो इसे क़द्र भी आएगी।

एक और गूर

बीवी को देखकर मोहब्बत की नज़र डालें और ये ज़रुर बताएँ कि वह कैसी लग रही है; इसलिए कि वह नहा धो कर कपड़े पहन कर ख़ाविन्द के इन्तिज़ार में होती है, तो वह कहती हैं कि ख़ाविन्द मेरे बारे में कोई तारीफ़ी फ़िक्रे कहदे, ये तारीफ़ का फ़िक्रा कहना ये सुन्नते-अमल है, चुनांचि नबी (अलैहि॰) की मोबारक ज़िन्दगी से इसकी मिसाले मिलती हैं, प्यार की बात करना मोहब्बत की बात करना, इससे मियाँ-बीवी के दिलों में एक बांध बन जाता है, मोहब्बत गहरी हो जाती है।

जब बीवी बात करे तो ख़ाविन्द को चाहिए कि पूरी तवज्जो से सुने, मर्दों के अन्दर एक ये कोताही होती है कि अगर 5 प्रसेन्ट तवज्जह के साथ भी कोई बात सुन रहे होते हैं तो वह समझते हैं कि सून तो रहा हूँ,

हाँलाकि बीवी की पूरी तवज्जोह चाहती है, लिहाज़ा बात करते हुए अगर मोक़ा होतो बीवी के हाथ पर हाथ रखें, ये एक राब्ता जो हाथ का है इससे बीवी को अपनाइयत का अहसास होता है।

अगर आप दफ़तर में या बिज़नेस (Buisness) पर हैं तो दर्मियान में से वक्त निकाल कर एक छोटी सी कॉल (Call) कर के बीवी क़ी ख़ैरियत ज़रुर दरयाफ़त करलें, कि अगर आप को किसी चीज़ की ज़रुरत हो तो आते हुए लेते आउँ, या कोई और चीज़ है, इन्सान है सेहत है बीमारी है, घर की ज़रुरत हैं, इस तरह अपने काम की वक्फ़े के दौरान एक छोटी सी कॉल बीवी के लिए नेमत साबित होती है।

बीवी को हर रोज़ बताएँ कि आप इससे मोहब्बत करते हैं, ये सोच लेना कि अब बीवी है मोहब्बत आप से ही तो करता हुँ, नहीं, इसकी ज़रुरत होती है, इसीलिए हदीस पाक में आता है कि नबी (अलैहि॰) ने फ़रमाया : "हुमैरा!" तुम मुझे मक्खन और खजूर को मिलाकर खाने से ज़्यादा पसन्द हो, तो आइशा (रज़ि॰) ने फ़ौरन जवाब दिया, ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰)! आप मुझे मक्खन और शहद को मिलांकर खाने से ज़्यादा महबूब हैं। अब ये जो मोहब्बतों का इज़्हार हो रहा है, ये उम्मत की तालीम के लिए हो रहा है कि देखो तुम बड़े साफ़ी हो, नेक हो, इबादत गुज़ार हो, दीन का काम करने वाली हो, तुमहारी इबादतें अपनी जगह, घर में तुम आओ बीवी से मोहब्बत का इज़्हार करो, चुप रहना, मुहँ बनाए रखना और कहना कि हाँ आप ही से तो मोहब्बत करता हुँ और किस से करता हुँ मोहब्बत इज़्हार चाहती है, न मुश्क छुप सकता है, न इश्क़ छुप सकता है, जिस ख़ाविन्द के दिल में मोहब्बत होगी इसकी बातों से इसका इज़्हार होकर रहेगा, बीवी के दिल में मोहब्ब होगी तो इसकी बातों से इज़्हार होकर रहेगा।

इसी तरह ख़ाविन्द बाहर के शहर का सफ़र करे तो इसको चाहिए बाहर के शहर में भी अपने फ़ून को चालू (On) रखें, बन्द न करदें और इतना ही नहीं इसको उठा भी लिया करें, कयूंकि कई मर्द जब दूसरे शहर में जाते हैं तो समझते हैं कि जान छूट गई, सुन्नत ये है कि इन्सान को सफ़र पर जाना हो तो जाने से पहले भी बीवी से मिलाप करे और अगर सफ़र से वापस आना हो तो वापस आने के बाद भी मिलाप करे।

शेख़ूल हदीस हज़रत मोलाना मोहम्मद ज़करिया कान्धलवी साहब (रह॰) ने इसकी बहुत अहमियत ज़िक्र की है मर्द को चाहिए वह भी बीवी के लिए अच्छे कपड़े पहने, ख़ूश्बू लगाए। उस्वाए सहाबा पर अमल करे, चुनांचि एक सहाबी के बारे में आता है कि वह बहुत अच्छी ख़ूश्बू लगा कर रखते थे, पूछने पर फ़रमाया कि मेरी दो बीवियाँ हैं और जी चाहता है कि मैं इनके लिए ऐसा बन कर रहूँ कि इनका दिल मेरे पास आकर मुतमइन हो जाएँ।

शरीअत ने कहा कि ख़ाविन्द अगर बीवी से ख़सूसी वक्त लेना चाहता है, तो इसके लिए पैग़ाम भेजे। सहाबा (रज़ि॰) ने पूछा कि ऐ अल्लाह के हबीब! "क़ासिद भेजे" से किया मुराद? तो फ़रमाया कि बोसा, एक क़ासिद होता है, यानी बीवी को मोहब्बत की नज़र से देखना, कोई ऐसा लफ़ज़ बोलना कि बीवी को पता हो कि ख़ाविन्द मिलाप चाहता है।

अब देखिए! कि शरीअत की किया ख़ूबसूरती है कि पहले से अगर एक अगर एक बात करदी जाएगी तो दूसरे बन्दे का एक ज़ेहन होता है अगर वह पहले किसी काम में मसरुफ़ भी था तो अब ज़ेहन बन जाने की वजह से इसको मेल मिलाप की भी दिल्चस्पी ज़्यादा होजाती है। ये कोई काम ऐसा तो नहीं कि इन्सान जानवर की तरह आए और एक दूसरे के साथ मिलले, इन्सान है बातों से उन्स हासिल करता है, चुनांचि शरीअत ने बताया कि जब मियाँ-बीवी आपस में वक़्त गुज़ारना चाहते है तो वह आपस में एक दूसरे के साथ मोहब्बत प्यार की कुछ बातें करें ताकि इनके दिलों को इससे सकून मिल सके।

कभी-कभी घर के अन्दर बग़ैर जिन्सी बातों के वैसे मज़ाक़ की कैफ़ियत कर देना ये भी मर्द की ज़िम्मेदारी है, रुखा-फीका रहना, (Rough Tough) ख़ूश्क मिज़ाज बने रहना, सीरियस रहना ये शरीअत ने अच्छा नहीं समझा, कोई ऐसी बात करदी, कोई लतीफ़ा सुना दिया जिससे कि तबीयतों के अन्दर इन्शिराह आ जाए, ख़ूशी आजाए।

एक लतीफ़ा

मिसाल के तौर पर एक शख़्स की बीवी को ज़िचगी का दर्द था

उसने इसको मोटर साइकल पर पीछे बिठाया और तेज़-तेज़ भगाके ले जा रहा था, उसके दोस्त ने देखा तो पूछाः कहाँ जा रहे हो? कहने लगा (Pizza Hut) पीज़ा की दूकान की तरफ़ जा रहा हुँ। इसने कहा (Pizza Hut) जा रहे हो? कहने लगा हाँ बीवी को दर्द-ज़दा (बच्चा की विलादत का दर्द) हो रहा है, और वहाँ साइन बोर्ड पर मैंने पड़ा था कि डिलेवरी (Delivery) फ़्री है।

अन्दाज़े ख़िताब क्या हो?

लोगों के सामने बीवी को मोहब्बत भरे अल्फ़ाज़ के साथ ख़िताब करें, मिसाल के तौर पर ज़ीनत जी! मरयम जी! आइशा जी! ये "जी" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करना मर्द को महसूस तो होता है कि मेरी "अना" के ख़िलाफ़ है, मगर शरीअत ने इसको पसन्द किया है। आप मोहब्बत का लफ़्ज़ बीवी के लिए बोलेंगे तो आप नहीं समझते कि ये मल्टीपलाइ (Multiply) दोगुना, चौगुना होकर मोहब्बत के दिल में आप के लिए पैदा कर देगा।

कई मर्दों को देखा है कि दूसरों के सामने रोब से ख़िताब करते हैं, वह ख़िताब करके अपनी चौधराहट तो दिखा देते हैं मगर बीवी के दिलों में कितना बड़ा सूराख़ कर देते हैं इसका इनको पता नहीं होता, बीवी भी इन्सान है पॉव की जूती तो नहीं है, गुफ़तगू के अन्दर मोहब्बत भरे अल्फ़ाज़ से इसको बोलना, कहना, यह भी शरीअत की तालीमात में से है।

मजमअ के अन्दर लोगों के बजाए बीवी को अहमियत ज़्यादा दें, हमने देखा है कि रिश्तेदारों में आपस में कोई ऐसी महफ़िल हो तो फिर दूसरे लोगों के सामने बीवी को भूल जाते हैं, दूसरे लोगों की ख़बरगीरी ज़्यादा करते हैं, बीवी को नज़र अन्दाज़ करते हैं तो बीवी की (Heart Burning) दिल जली होती है, ऐसा करना मुनासिब नहीं ये बीवी का हक़ शरई है कि इसको दूसरों की बनिस्बत ज़्यादा अहमियत मिले।

बच्चों के सामने कैसे रहें?

बच्चों के सामने बीवी को अहमियत बहुत ज़्यादा दिया करें; इसलिए

कि बीवी को बच्चों ही की तर्बियत करनी होती है। कई मर्द बच्चों के सामने बीबी को डांट कर समझते हैं कि हमने घर फ़तह कर लिया, ये बहुत ही अनपढ़ और जाहिल होने की दलील है। आप अगर बच्चों के सामने अपनी बीवी को ख़ूद ज़लील करेंगे तो कैसे तवक्क़अ कर सकते हैं कि वह बच्चे कल अपनी माँ की बात मानेंगे। वह कहेंगे कि माँ की तो कोई हैसियत ही नहीं, तो माँ की हैसियत को बच्चों की नज़र में बनाना ये ख़ाविन्द की ज़िम्मेदारी होती है।

बीवी को बताया करें कि जब आप दूर थे आफ़िस में थे बिज़नेस पर थे, आप ने इसे याद किया और आप इसे (Miss) याद कर रहे थे। इतनी सी बात कर देने से बीवी के दिल को सकून होता है।

जब बीवी से बात करें तो आँख मिलाने को न भूलें, इसलिए कि बीवी चाहती है कि ख़ाविन्द की मोहब्बत भरी नज़र मेरे उपर पड़े, लिहाज़ा बीवी से बात करते हुए आँखों मेंआँखें मिला कर बात करने से एक दूसरे के साथ मोहब्बत ज़्यादा बड़ती है।

शरीअत ने कहा है कि अगर किसी काम के लिए घर से बाहर जाना है और अगर घर में कोई और शख़्स नहीं है तो एक दूसरे से मिल कर बोसा लेकर फिर जाएँ। हदीस पाक में है कि नबी (अलैहि॰) ने एक मर्तबा नमाज़ के लिए जाना था, आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती हैं कि नमाज़ के लिए निकलते हुए आप (सल्ल॰) ने मेरा बोसा लिया और नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गए।

एक मशविरा

तो इससे मालूम होता है कि अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) की मुबारक ज़िन्दगी हमारे लिए रौशनी का एक मीनार थी। अगर आप समझें कि ख़ाविन्द भी बहुत अर्सा मसरुफ़ रहा, बीवी भी बहुत अर्सा मसरुफ़ रही और फ़ैमिली भी ऐसी ज्वाइंट (Jont) थी कि आपस में वक्त ही नहीं मिल रहा तो फिर कभी-कभी कुँवारा उमरा करने की कोशिश किया करें, "कुँवारा उमरा" से मुराद ये है कि अगर बच्चे इतने बड़े है कि उनको किसी के सपूर्द करके जा साकते हैं तो मियाँ-बीवी अकेले उमरा पर

जाएँ। हमने देखा कि उमरा के दस पन्द्रह दिन जो मियाँ-बीवी अकेले गुज़ारते हैं उसमें अल्लाह का भी क़ुर्ब बड़ता है और मियाँ-बीवी के आपस का भी क़ुर्ब बड़ता है।

नबी (अलैहि॰) की सुन्नते मोबारका है कि आप (सल्ल॰) रात को अपनी बीवी के साथ एक ही बिस्तर पर आराम फ़रमाते थे। ये एक सुन्नत अमल है, बग़ैर किसी ख़ास मजबूरी के मियाँ-बीवी को चाहिए कि इस सुन्नत को न छोड़ें। हाँ बच्चे जब बहुत बड़े हो जाते हैं और ख़ूद शादी शुदा होजाते हैं उस वक़्त मियाँ बीवी अलग-अलग जगहों पर सोजाएँ तो ठीक है मगर फिर भी एक दूसरे के क़रीब आने का इनको वक्त निकालना चाहिए।

अगर बीवी किसी बच्चे से (Upset) परेशान है तो आप हमेशा अपनी बीवी की साइड (Side) लेकर इसकी तरफ़दारी करें। अगर आप ने बच्चे की साइड (Side) ली तो बीवी की आपने हार्ट बर्निंग (Heart Burning) करदी यानी दिल जला दिया।

हाथ का सहारा देना

अगर कभी ज़रुरत हो तो बीवी का आप हाथ पकड़ कर सहारा भी दें। मिसाल के तौर पर बीवी बीमार है, (Pregnant) हामिला है तो इसको कहीं आने-जाने में कई मर्तबा सहारे की ज़रुरत पड़ती है, तो मर्दानगी के ख़िलाफ़ नहीं है कि ऐसे वक्त में ख़ाविन्द उसको सहारा देदे। नबी (अलैहि॰) की मुबारक सुन्नत है कि जब हज़रत सफ़िया (रज़ि॰) शादी के बाद ऊँट पर सवार होने लगी थीं तोउनकोकिसी जगह पॉव रखने की ज़रुरत थी तो किताबों में लिखा है कि नबी (अलैहि॰) आगे बड़े और आप (सल्ल॰) ने अपनी रान पेश की कि सफ़िया इस पर पॉव रखो और ऊँट पर चड़ जाओ। अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) जो कायनात के सरदार हैं, फ़रिश्तों के सरदार हैं, इमाम उल अव्वलीन वल आख़िरीन हैं, इनका इस तरह अपनी रान पेश करना कि बीवी इस पर पॉव रख कर उपर चड़ जाए हमारे लिए इसमें बहुत बड़ा सबक़ है, तो सहारा देना बीमारी की हालत में ज़रुरत के वक्त में ये गोया नबी (अलैहि॰) की मुबारक सुन्नत है।

बीवी को अगर किसी वक़्त सर दर्द वग़ैरा हो या काम करके थकी हुई हो तो आप इसकी मदद करें। नबी (अलैहि॰) घर के कामों में दिलचस्पी लिया करते थे। ऑटा भी आप (सल्ल॰) ने गुंधा, कपड़े भी आप (सल्ल॰) ने ठीक किए, बकरी का दूध भी आप (सल्ल॰) ने निकाला, जूते भी ठीक किए तो घर के कामों में हिस्सा लेना ये भी आबाद घर की निशानी होती है।

कपड़े कैसे रखें?

जब आप अपने कपड़े उतारा करें तो मर्द को चाहिए कि कपड़ों को फैलाएँ नहीं, ये एक अजीब आदत होतीहै कि कपड़े उतारते है तो बनयान कहाँ पड़ी होती है और तहबन्द कहाँ होता है, कुर्ता कहाँ होता है। इस तरह बेड़ंगे पन से कपड़ो को फैला देना ये दूसरे बन्दे के दिल को बुरा लगता है बल्कि अच्छी आदत तो येहै कि कपड़े उतारें तो इनकी साइडें भी ठीक करदें। अगर उतारने की वजह से अन्दर की साइड बाहर है तो इसके रुख़ को ठीक करदें, और एक जगह पर कपड़े रखें ताकि दूसरे बन्दे ने कपड़े उठाकर दूसरी जगह पहुँचाने होते हैं तो इसकी तबीअत के अन्दर कराहियत न हो।

गाड़ी कौन साफ़ करे?

कहीं जाना हो तो अपनी गाड़ी को साफ़ रखें, अब गाड़ी को साफ़ रखना ये औरत की ज़िम्मेदारी नहीं होती, ये मर्द की ज़िम्मेदारी है। औरत जब गाड़ी में आकर बैठती है और चीज़ें बिखरी पड़ी हुई हों, गन्दगी होतो इसकी तबीअत के अन्दर बेज़ारी होती है।

और जब भी बीवी के साथ अपनी गाड़ी में सफ़र करें तो ए॰सी॰ (A.C.) चलाने का इख़्तियार बीवी के हवाले करदें। इसकी वजह ये कि औरतें आम तौर पर परदें में होती हैं, जो गर्मी इनको महसूस होती है वह मर्द को महसूस नहीं हो रही होती, तो मर्द ज़रुरत ही नहीं महसूस करता, फिर औरत के लिए परदे के अन्दर गाड़ी की बन्द कैफ़ियत में बैठना एक मोसीबत बन जाता है, कोशिश ये करें कि जब गाड़ी में बैठें तो ए॰सी॰ (A.C.) चलाने का इख़्तियार बीवी के हाथों में हो।

इसी तरह घर के अन्दर कूड़ा-करकट जमा हो गया है तो इसको बाहर पहुँचाना ये मर्द की ज़िम्मेदारी है। घर के अन्दर बिजली का काम करवाना है, पलम्बिंग (Plumbing) का काम करवाना है तो ये औरत की ज़िम्मेदारी नहीं होती, ये मर्द की ज़िम्मेदारी है। अगर कोई लाइट (Light) फ़यूज़ (Fuse) हो गई तो बल्ब कोबदलना, टयूब को बदलना ये बीवी की ज़िम्मेदारी नहीं होती, ये ख़ाविन्द की ज़िम्मेदारी होती है। अगर आप ने कुछ सामान ख़रीदा है और (Grovery) घरेलू सामान के बैग गाड़ी में आप लेकर आए हैं तो बैग (Bag) को गाड़ी में लाना और गाड़ी से घर पहुँचाना ये मर्द की ज़िम्मेदारी है।

कुछ और आदाब

चुनांचि कई सहाबा किराम अपने घर का सामान अपने सरों पर उठाकर अपने घरों को लाया करते थे, तो घरेलू सामान को उठा कर लाना इसको मर्द अपनी शान के ख़िलाफ़ न समझा करें, अगर सफ़र पर जाना है और वज़नी बक्से हैं तो इनको उठाना ये मर्द की ज़िम्मेदारी है। घर से चीज़ें गाड़ी की डिग्गी में रखना ये मर्द की ज़िम्मेदारी है।

गाड़ी चलाते वक्त इसका ज़रुर ख़्याल रखें कि झटके न लगें, कई मर्तबा ला परवाही की वजह से ऐसी ब्रेक लग रही होती हैं कि बेजा झटके होते हैं, तो वह सवारियों के लिए बेज़ारी का ज़रिया होते हैं। हमने तो देखा है कि छोटे-छोटे बच्चे बैठे होते हैं तो वह कहते हैं, छोटे बच्चों को भी पता चल जाता है कि भई, झटका जो लगा ये अच्छा नहीं था।

अगर आप को कहीं सफ़र पर जाना है तो रास्ता का नक्शा ज़रुर अच्छी तरह समझलें ताकि रास्ता में रुकना न पड़े। पूछना न पड़े, कोई तंगी पेश न आए, बार-बार रास्ता भूलना ख़ाविन्द के लिए मुनासिब नहीं होता।

सफ़र में निकलते वक्त बीवी के लिए पन्द्रह बीस मिन्ट का मार्जिन (Margin) वक्फ़ा अपनी पलान में ख़ूद रखा करें, मसलन आप ने आठ बजे निकलना है तो बीवी को बताएँ कि हमें पौनें आठ बजे निकलना है, अब पन्द्रह मिन्ट को जो आप ने टाईम दे दिया वह इसलिए है कि बीवी ने ख़ूद भी तैयार होना होता है, सामान भी तैयार करना होता है और

कई मर्तबा बच्चों को भी तैयार करना होता है, हमने देखा कि सब तैयार खड़े हैं बच्चा कहता है मुझे वाशरुम (Washroom) जाना है या बीवी समझती है अब इसको अगर वाशरुम (Washroom) ले गई तो सफ़र में तंग नहीं करेगा, वरना गाड़ी में बैठते ही बच्चे कहते हैं हमें ज़रुरत है वाशरुम (Washroom) की, तो चुंकि औरत के साथ बच्चों के मामलात भी हैं इसलिए जब सफ़र पर निकलना हो तो पन्द्रह बीस मिन्ट का फ़ासला (Margin) अपने ज़ेहन में रखा करें, और अगर निकलने में देर हो जाए तो गुस्सा न किया करे, हम ने लोगों को देखा है कि (Mathemetical Life) हिसाबी ज़िन्दगी बनाने की कोशिश करते हैं, मैंने आठ बजे कहा था आठ बजकर पाँच मिन्ट कयूँ होगए? भाई इन्सान है, इस चीज़ का हिफ़ाज़ती वक्त पहले से आप हिसाब में शुमार कर लिया करें, अगर पहले तैयार हो जाए तो इसको शुक्रिया अदा करें कि वक्त से पहले निकल आएँ और अगर पन्द्रह बीस मिन्ट ताख़ीर से निकल आएँ तो भी समझें कि ये भी एक मामूली चीज़ है, ज़िन्दगी की ये रोटीन है।

अगर कभी-कभी टाईम फ़ारिग है तो आप भी बीवी के लिए पलान बनाएँ, ये कहीं नहीं लिखा कि सारी ज़िन्दगी वह आप के लिए खाने बनाती रहे और आप को कुछ करना आप की शान के ख़िलाफ़ है, घर के अन्दर इसी तरह मोहब्बतें बड़ती हैं कि इन्सान दूसरे का अहसास करे और अपना तालूक़ ज़ाहिर करे। हाँ, अल्लाह करे कि बीवी को चाय पसन्द आ जाए।

अगर बीवी जायज़ वजह से ख़ामूश हो तो इसकी कैफ़ियात की (Validate) तौसीक़ करें (Sorry) करें यानी माफ़ी मांगलें, इस सॉरी (Sorry) करने में अज़मत है ज़िल्लत नहीं है।

अगर कभी आप अपने काम में लेट (Late) हो गए तो कॉल (Call) करके बीवी को ज़रुर बतादें कि मुझे ये वजह पेश आ गई मैं इतने बजे के बजाए इतनी देर से आऊँगा ताकि वह घर में इन्तिज़ार की शिद्दत में अज़ाब में मुब्तिला न रहे। कहते हैं कि "اَلْانتظارُ اَشَدُّ مِنَ الْمَوْتِ" मर्द को अन्दाज़ा नहीं होता मगर हमने देखा है कि नेक बीवियाँ खाना बनाकर भूख होने के बावजूद, दो दो घंटे इन्तिज़ार में रहती हैं कि मियाँ आएँगे

तो इनके साथ मिल कर खाना खाउँगी, तो इसकी इस कैफ़ियत का लिहाज़ किया करें।

आप परेशान हों तो बीवी को बता दें कि मैं इस वक्त ज़रा ख़ामोश ख़ामोश हूँ तो मेरी ख़ामोशी से आप परेशान न हों।

घर में आने जाने से पहले इसे बता दें कि मैं घर से बाहर जा रहा हूँ या घर के क़रीब हुँ, मैं आ रहा हुँ।

चुनांचि नबी (अलैहि॰) ने सहाबा को ये तालीम दी कि तुम जब घर जाना चाहो तो पहले घर वालों को इत्तिलाअ दे दिया करो।

हुस्न का ताना न दें

बीवी को कभी भी बद-सूरत होने का ताना न दें, इसलिए कि जब इनको पसन्द किया था ख़ूबसूरत थी, स्मार्ट (Smart) थी, अच्छी लगती थी, इसीलिए तो शादी हुई थी। अब शादी के बाद बीवी की सेहत ख़राब हो गई तो इसका कन्ट्रौल तो किसी बन्दे के पास नहीं होता, (Pregnancies) हमल की वजह से, बचों की वजह से सेहत पर इसका असर होता है, कई औरतें मोटापे की शिकार हो जाती हैं, कई औरतों के चेहरे के उपर वह चमक दमक नहीं रहती तो ये एक ज़िन्दगी का हिस्सा है, इसका ये मतलब नहीं कि अब चार बच्चों की माँ बनने के बाद आप यही तवक्क़ा करें कि जिस दिन शादी हो के आई थी और वह जो मैकअप उस वक्त थी वह आज भी होनी चाहिए। आप अपना चेहरा भी तो देखलें, जब आप की शादी हुई थी जो मैकअप उस वक्त थी आज भी वही चमक आप के चेहरे पर है? अपने चेहरे पर झूरियाँ पड़ी होती हैं और वह अपनी बीवी को वह बस (Miss Universe) आलमी हसीना देखना चाहता है।

अगर कोई बात आपको बूरी लगती हो तो हंसी-हंसी में अपनी बीवी को बता ज़रुर दिया करे कि आपकी फ़ला बात मुझे बूरी लगती है। प्यार से हंस के बताएँगे तो बीवी इस काम को फ़ौरन ठीक करलेगी, संजीदा होकर बताने की ज़रुरत नहीं होती।

कभी भी तक़ाबूल न करें

बीवी का कभी दूसरी औरत के साथ (Compare) मुवाज़ना भी न किया करें। हमने देखा है कि घरों में इस वजह से भी झगड़े होते हैं कि बीवी को कहते हैं कि आप अच्छी नहीं हो और फ़लाँ औरत तोबहुत अच्छी है। इससे बीवी का (Heart Burning) दिल जलता है, क्यूंकि किसी का दिल दुखाते हैं और दिल आज़ारी करते हैं, तो बीवी का किसी दूसरे से (Comparison) मुक़ाबला करना ये भी जिहालत की दलील होती है।

गुस्ल कैसे करें?

इन्सान अगर टवाइलेट (Toilet) बैतूलख़ला को इस्तेमाल करे तो चाहिए कि फ़लश (Flush) करना यानी पानी बहाना न भूले, इस हाल में छोड़े कि अगर किसी दूसरे को इस्तेमाल करना है तो इसे कराहियत न हो। मर्दों में एक आम बात देखी है कि गुस्लख़ाना में जब नहाते हैं तो पानी ख़ूब फैलाते हैं, चारो तरफ़ रहमत की बारिश होती है।

बीवी के साथ कभी-कभी घर में अगर कोई गेम (Game) खेलें जैसे बैडमिंटन (Badminton) है और हल्की-फूल्की कोई चीज़ है, या दौड़ना है एक जगह से दूसरी जगह तक, तो ये भी एक सुन्नत अमल है। मगर इसमें आप कभी-कभी हारा भी करें, हमेशा जीतना ये अच्छा नहीं होता।

बीवी के वालिदैन, बहन, भाईयों की ख़ैरियत का हाल पूछना और इनको कॉल (Call) करना ये भी मर्द की ज़िम्मेदारी होती है, इससे बीवी के दिल में मोहब्बत बड़ती है। हमारे हज़रत (रह०) फ़रमाया करते थें कि शादी के बाद बीवी के अहले-ख़ाना से अछा तालूक़ रखना ये मर्द की ज़िम्मेदारी होती है और मर्द के अहले-ख़ाना से अच्छा प्यार रखना ये बीवी की ज़िम्मेदारी होती है।

सोई हुई बीवी को कैसे जगाएँ?

अगर बीवी सोई हुई हो तो बिला वजह इसको जगा देना ये सुन्नत के ख़िलाफ़ है। हदीसे मोबारका में है आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि मैं सोई हुई थी तो अल्लाह के हबीब (सल्ल०) इस तरह बिस्तर से नीचे

उतरते "रवैदन" बहुत नरम तरीक़े से और फिर जूता पहने बग़ैर नंगे पॉव नरम चले, ताकि आवाज़ न हो। जब मैंने पूछा ऐ अल्लाह के नबी (सल्ल॰)! आपने ऐसा क्यूँ किया? फ़रमायाः आइशा! तुम सो रही थी, मेरा जी चाहा कि तुम्हारी नींद में ख़लल न हो। अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) अगर अपनी बीवी की नींद का इतना लिहाज़ रखते हैं तो हमें भी इस सुन्नत पर अमल करना चाहिए। हाँ अगर कोई काम है जगाना ज़रुरी है तो मोहब्बत प्यार से जगाएँ, गुस्सा में आकर नहीं कि मैंने तुम्हें कहा नहीं था कि इतने बजे ये काम कर देना, भई! इन्सान है इस तरह आप सख़्त लफ़्ज़ों में क्यूँ इसको जगा रहे हैं? प्यार से इसको आप कोई लफ़्ज़ बोलें, आप इसको हाथ लगा कर कहें कि अल्लाह की बन्दी! उठो ये काम करना है, नमाज़ का वक़्त हो गया तो प्यार से जगाना ये भी एक अच्छा ख़लक़ है।

बीवी को कभी भी ज़लील न करें

बीवी को कभी भी (Humiliate) ज़लील न करें और नीची नज़र से न देखें कि इसकी तो कोई हैसियत ही नही। शरीअत ने कहा है कि इनकी माँ ने इनको आज़ाद जना है वह तुम्हारे लिए कोई ख़रीदी हुई बान्दयाँ नहीं हैं, वह तुम्हारे लिए ज़िन्दगी का साथी हैं।

ख़रीद व फ़रोख़्त के मामलों में ख़ाविन्द को चाहिए के पसन्दीदगी का इख़्तियार बीवी को दे दिया करें, इनको जो कलर (रंग) अच्छा लगता है, जो कवालीटी अच्छी लगती है, उनकी मर्ज़ी की ख़रीद व फ़रोख़्त हो जाएगी तो उनके दिल को इससे बहुत ख़ूशी मिलेगी।

घर के अख़राजात ख़ाविन्द की ज़िम्मेदारी होती है, मगर बीवी को जेब ख़र्च देना, ये भी बीवी को हक़ होता है, शरीअत ने इसको लाज़िम कहा है ताकि उस जेब ख़र्च से वह अपनी ज़ाती ज़रुरत की चीज़े ले सके। और फिर इस जेब ख़र्च के बारे में पूछा भी न करें कि इसको ख़र्च उसने किस तरह से किया।

अगर बीवी कभी कोई काम करे जिससे बहुत दिल ख़ुश हो तो ख़ाविन्द को चाहिए कि इनाम भी दे दिया करे। जानवरों को इनाम दिया

जाता है तो वह फ़र्माबरदार बन जाते हैं, तर्गीब का इन्सान की तबीअत पर असर पड़ता है, तो अगर बीवी ने कोई अच्छा काम किया, कोई अच्छा मामला किया जिस से आप का दिल वाक़िए ख़ुश हुवा तो आप अपनी बीवी को ऐसे मोक़े पर इनाम दिया करें, कोई चीज़ ख़रीद के दे दी। कपड़े दिए, जूते दिए, पर्फ़्यूम दिया, तो इससे दिल ख़ुश होता है।

बीवी का नाम अगर कोई ऐसा हो कि जिस से बीवी को एक मोहब्बत का मैसेज पहुँचे तो ये भी एक अच्छी आदत है। नबी (अलैहि॰) सैयदा आइशा (रज़ि॰) को "हुमैरा" के नाम से मोख़ातिब फ़रमाया करते थें, "हुमैरा" कहते हैं ऐसी औरत को जिसका रंग सुर्ख़ हो, सफ़ेद हो, इंगिलिश ज़बान में इसको पिंकी (Pinky) कहते हैं। आप पिंकी नही तो रोज़ी कह दिया करें। अब ये तो बातें थीं जो मर्द करें।

शौहर की मोहब्बत हासिल करने के मुजर्रिब नुस्ख़े

चंद बातें ये भी सूनलें कि जब भी बीवी ख़ाविन्द की तारीफ़ करती है तो ख़ाविन्द के दिल में बीवी की मोहब्बत बड़ती है, हमने देखा कि इसमें बीवियाँ बहुत कोताही करती हैं। ख़ाविन्द जितने अच्छे काम करले, जितना इनका ख़्याल रखले, तारीफ़ का लफ़ज़ तो इनकी ज़बान पर आता ही नहीं, मालूम नहीं कयूँ ज़बान को ताले लग जाते हैं? एक तो किसी बात पर शुक्रिया अदा नहीं करतीं और इसका तो नबी (अलैहि॰) ने भी इज़हार फ़रमाया कि ख़ाविन्द का शुक्रिया अदा न करने की वजह से मैंने मेराज की रात देखा कि बहुत सारी औरतें जहन्नम के अन्दर थीं, तो ख़ाविन्द का शुक्रिया अदा करने पर जन्नत मिलती है तो शुक्रिया अदा किया करें।

तनक़ीद से बचें तारीफ़ करें

बाज़ औरतों की आदत ही बन जाती है कि हर बात में (Criticise) तनक़ीद करना। आप ने ये ठीक नहीं किया। आपने वह ठीक नहीं किया। ये बेज़ारी की तबीयत अल्लाह की तरफ़ से एक अज़ाब होता है, तो इसलिए तारीफ़ किया करें। सैयदा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) आप (सल्ल॰) की तारीफ़ में फ़रमाया करती थीं :

لَنَا شَمْسٌ وَلِلْآفَاقِ شَمْسٌ — وَ شَمْسِيْ خَيْرٌ مِّنْ شَمْسِ السَّمَاءِ
فَإِنَّ الشَّمْسَ يَطْلُعُ بَعْدَالْفَجْرِ — وَ شَمْسِيْ طَالِعٌ بَعْدَ الْعِشَاءِ

आसमान एक तेरा भी सूरज है और एक मेरा भी सूरज है, फ़र्क़ ये है कि तेरा सूरज सुबह में तलूअ होता है और मेरा सूरज इशा के बाद तलूअ होता है और ऐ आसमान! तेरे सूरज की रौशनी तो एक दिन ख़तम हो जाएगी मेरे सूरज को अल्लाह ने जो इज़्ज़तें बख़्शी वह कभी ख़तम न होगी। आप ने कभी ख़ाविन्द को कोई ऐसा मोहब्बत भरा शेर बनाके सुनाया है? हाँलाकि उसने आपके साथ कितने अहसान किये होते हैं, तो औरतों के अन्दर ये कोताही बहुत ज़्यादा है, हाँलाकि जब ख़ाविन्द को ये (Feel) महसूस होता है कि बीवी मोहब्बत का इज़्हार कर रही है तो ख़ाविन्द के दिल में बीवी की मोहब्बत ज़्यादा हो जाती है। इसी तरह कोई छोटी सी ग़लती या मिस्टेक (Mistake) हो जाए तो फ़ौरन कहना कि मैंने आपको पहले नहीं कहा था, भई छोटी मोटी चीज़ में ख़ाविन्द को इख़्तियार दे दें, वह घर का सरबराह है, वह घर का सरदार है, वह घर का मैनेजर है, अल्लाह ने उसको बड़ा बनाया, इसकी हर बात पर तनक़ीद को आदत बना लेना परले दर्जे की हिमाक़त होती है।

औरत को फ़र्माबरदार बनके रहना चाहिए, ये तो नहीं कि हर बात पर बस अपनी ही मर्ज़ी चलानी है और कुछ औरतों को तो देखा कि बस वह अमलयात, विर्द, वज़ीफ़ों के पीछे लगी रहती हैं कि जी किसी तरह ख़ाविन्द मेरे इशारों के उपर काम करे। भाई आप तावीज़ों से ख़ाविन्द को उंगलियों पर तो नचालेंगी, ख़ाविन्द का दिल तो नहीं जीत सकेंगी, तो ख़ाविन्द का दिल तो फ़र्माबरदारी से, वफ़ादारी से, नेकोकारी से जीतोगी, ये वह सिफ़तें हैं जो ख़ाविन्द के दिल में घर कर जाती हैं। चुनांचि अगर गाड़ी चलाते हुए ख़ाविन्द रास्ता भूल जाए तो बात का बतंगड़ बना देती हैं, हाँलाकि ये कितनी मामूली सी बात होती है।

इसी तरह अगर आप कभी मर्द का दिल दुखाएँ तो आप महसूस करें कि मैंने ऐसी बात जल्दबाज़ी में कर दी जो ख़विन्द ने महसूस की तो माफ़ी मांगने में इज़्ज़त है और अज़मत है।

मर्द जब परेशान हो तो उस वक्त उसको बात करने पर मजबूर न किया करें, ये औरतों की एक (Big mistake) बड़ी ग़लती होती है कि मर्द उस वक़्त ज़ेहनी तनाव में होता है इसकी कोई भी वजह हो सकती है, परेशान होता है और उस वक्त में ये बजाए इसके कि इसको थोड़ा टाईम दें उसको मजबूर करती हैं कि मेरे साथ बात क्यूँ नहीं कर रहे, भई अगर वह उस वक्त बात करेगा तो उसकी ज़बान से फूल नहीं झड़ेंगे, वह पहले ही से परेशान है, परेशान बन्दे को क्यूँ आप मजबूर करती हैं।

ये भी सून

एक ख़ाविन्द परेशान था तो बीवी आकर प्यार से बैठी और कहने लगी कि मुझे ऐसी बात बताएँ मैं ख़ूश भी हो जाउँ और मैं ग़ुस्सा भी हो जाऊँ। इसने कहा कि अच्छा, सूनों पहली बात तो ये कि तुम मेरी ज़िन्दगी हो, औरत मूसकूरा पड़ी कि ये तो बड़ी अच्छी बात कही, दूसरी बात कहने लगा: लानत है ऐसी ज़िन्दगी पर।

तो जब मर्द परेशान हो तो उस वक़्त में आप अपनी मोसीबत न डाला करें, समझ लिया करें कि इस वक्त एक तरफ़ हो जाना बेहतर है और मर्द को पहली हालत पर आने के लिए टाईम देना बेहतर है, अक़्लमन्द बीवियाँ अपने ख़ाविन्द को उस वक्त परेशान नहीं करतीं।

ख़ाविन्द जब घर आए तो बीवी को चाहिए कि ख़ूशी का इज़हार करे कि ख़ाविन्द महसूस करे कि उसके घर आने पर बीवी को बहुत ख़ूशी हुई है, ये मोहब्बत का इज़हार मोहब्बतों को बढ़ाता है। ख़ाविन्द कोई चीज़ भूल जाए, मसलन: चाबियाँ रख कर भूल जाए या कहीं फ़ेंक दे के ये मर्दों की एक आम आदत हुवा करती है इसको मामूली समझा करें, इसकी वजह से आपस में झगड़ा न बनाया करें।

अगर आपने ख़ाविन्द की किसी बात से तकलीफ़ महसूस की तो प्यार में हंसते हुए ख़ाविन्द को इन्डीकेट (Indicate) निशानदेही ज़रुर कर दिया करें कि फ़लाँ मोक़े पर जो आप ने बात की थी तो मेरा दिल दुखा था, ताकि आइन्दा ख़ाविन्द वह ग़लती न करे।

ख़ाविन्द को बच्चा समझ कर नसीहतें करने बैठ जाना ये मुनासिब

नहीं होता। हाँ अगर ख़ाविन्द की बड़ी ग़लती भी हो और बीवी माफ़ कर देती है तो ख़ाविन्द के दिलों में औरत का क़द बड़ जाता है, औरत की इज़्ज़त बड़ जाती है।

औरत को चाहिए कि घर को साफ़ रखे, बच्चों को साफ़ रखे, बच्चों की अच्छी तर्बियत करे हत्तुल-वसअ अच्छा और मज़ेदार खाना बनाए, महमान आए तो इनकी ख़िदमत को बोझ न समझें, लोगों में ख़ाविन्द की तारीफ़ों के पूल बान्धती रहे, जितना तारीफ़ कर सकती है उतना करे, ये तारीफ़ ख़ाविन्द के दिल में मोहब्बत को बढ़ावा देती है, जब ख़ाविन्द ग़ुस्सा में हो तो बहस-मोबाहिसा न करे, इन्सान महसूस करले कि भई इस वक़त ये किसी बात पर ग़ुस्सा में है तो उस वक्त बहस- मोबाहिसा करना कि अभी फ़ैसला करो, अभी मुझे बताओ, आप ने ऐसा कयूँ किया? ये बात का बतंगड़ बनाने वाली बात है, ग़ुस्सा में आप मर्द से अगर बहस करेंगी तो उल्टा ही जवाब होगा।

और सूनो

चुनांचि एक मर्द ग़ुस्सा में था, औरत उसके पास आके बैठी, अच्छा बताएँ कि अगर मैं पेड़ पर चड़के दिखाउँ तो मुझे किया मिलेगा, उसने कहाः हल्का सा धक्का, यही जवाब हो सकता है और किया होना है।

किरदार की ग़लती से बचें

एक बात याद रखना ख़ाविन्द सब ग़लतियों को माफ़ कर सकता है मगर उसकी ग़ैरत ऐसी होती है कि वह किरदार की ग़ल्ती को माफ़ नहीं करता। इसलिए अगर आप ख़ाविन्द की मोहब्बत चाहती हैं तो पाकदामिनी की ज़िन्दगी गुज़ारें। नेकोकारी की ज़िन्दगी गुज़ारें, नेकी से चेहरे के उपर जाज़्बियत बड़ती है, अगर ख़ाविन्द को महसूस हो गया कि आप किसी मर्द से राब्ता रखती हैं, फ़ून पे बात करती हैं तो ख़ाविन्द के दिल से आपका मक़ाम उतर जाएगा, फिर आप रोती बैठी रहेंगी, ख़ाविन्द की मोहब्बत की नज़र को तरस्ती रहेंगी।

ख़ाविन्द की बातें ग़ैर के साथ न किया करें, शरीअत ने उसको बूरा कहा है ख़ास तौर पर मियाँ-बीवी की आपस की बातें जो औरत दूसरों

को बताती है, फ़रमाया वह सुव्वरनी के मानिन्द है, जो मर्द बताता है वह मर्द सुवर है।

अज़दवाजी जिन्दगी अच्छी गुज़ारने का इलाज मोहब्बत ही है। हज़रत मुर्शिद आलम (रह॰) फ़रमाया करते थे "जहाँ मोहब्बत मोटी होती है ऐ़ब पत्ले होते हैं और जहाँ मोहब्बत पत्ली होती है वहाँ ऐ़ब मोटे होते हैं" तो आपस में उल्फ़त व मोहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारें और ये ज़ेहन में रखना कि मोहब्बतें इन्सान पैदा नहीं करता, ये मोहब्बतें अल्लाह दिल में डालते हैं।

नुक्ता की बात

अक्सर औरतों की शिकायत होती है कि ख़ाविन्द का कारोबार अच्छा, दोस्तों में अख़्लाक़ बड़े अच्छे, रिश्तादारों में रख रखाव बड़ा अच्छा लेकिन मुझै टाईम नहीं देता। ये एक आम शिकायत है जो सुन्ने में आती है। ये ठीक भी होती है मगर इसका तअलुक़ तो दिल के साथ है और दिल तो अल्लाह के दो उंगलियो के दर्मियान है।

मोहब्बत का राज़

चुनांचि एक मर्तबा जदीद फ़ैशनेबल औरत कहीं से आई, न सर पर दोपट्टा, न जिस्म पूरी तरह छिपा हुवा, ख़ूब सजी सजाई दुल्हन बनी हुई, तो मुझे घर वालों नेबताया कि इस तरह की एक औरत आई है और वह कहती है कि मैं बहुत परेशान हुँ। मेरा ख़ाविन्द ज्वेलर (Jeweller) सुनार है और मुझे हज़रत साहब से दुआ करवानी है, तो हमने परदा के पीछे इसको बुलाया, जब उससे पूछा तो वह कहने लगी जी देखो! मैं इतनी ख़ूबसूरत हुँ, इतनी लिखी पढ़ी हुँ और मेरा ख़ाविन्द ज्वेलर है मगर वह मेरी तरफ़ ध्यान ही नहीं देता। मैं इसके लिए अच्छे कपड़े पहनती हुँ, सज सजा के बैठी होती हुँ, मुझे पहले से अन्दाज़ा हो गया था कि न ये परदा करती है, न नमाज़ पढती है, न ये दीन के क़रीब है, शाम कोबाहर जाकर खाना, मख़्लूत दोस्तों की महफ़िल में मर्दों के साथ गपें लगाना, दूसरे मर्दों के साथ बातें करना, इस किस्म की इसकी ज़िन्दगी थी। तो उसको मैंने पहले बात समझाई कि आप कोशिश करके अल्लाह

को मनाएँ और दुआ करें लेकिन उसके ख़ाने में कोई बात बैठ नहीं रही थी। मैं जितना उसको समझाता कि मैं भी दुआ करूँगा आप भी दुआ करें कि अल्लाह ख़ाविन्द के दिल में मोहब्बत पैदा करदे। वह आगे से जवाब देती थी मैं अच्छे कपड़े पहनती हुँ मैं तो लाखों में एक हुँ, तो फिर मैंने जब देखा कि सीधी उंगली से घी नहीं निकल रहा, टेड़ही उंगली से निकालना पड़ेगा तो फिर मैंने उससे सीधे लफ़्ज़ों में बात की, मैंने कहा देखो तुम्हें अपने मेकअप (Makeup) पर बहुत नाज़ है।

ठीक है ख़ाविन्द के लिए मेकअप भी करो, ख़ूश्बूएँ भी लगाओ, मगर तुम एक बात को मत भूलो कि इन चीज़ों से मोहब्बत ख़ाविन्द के दिल में नहीं बड़ती। कहने लगीः कैसे बड़ती है? मैंने कहा मोहब्बत बड़ती है अल्लाह को मनाने से। अब उसके दिल में बात बैठ नहीं रही थी तो फिर मैंने उसे समझाया कि तुम ख़ूश्बू तोबेशक व्हाईट डायमंड की लगा लिया करो लेकिन जो "एलाज़ाबेथ टेलर" वाली हरकतें करती हो ये मत करो, जब उसकी सोच के मुताबिक़ बात की तो कहने लगी किया करती हुँ? मैंने कहा मर्दों से बातें करती हो, बेपरदा फिरती हो, नमाज़ें पढ़ती नहीं, ये आप की ज़िन्दगी है, फिर मैंने उसे ज़रा प्यार से बात समझाई कि अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल॰) की अहलिया ख़दीजा तुल कुबरा (रज़ि॰) थी, उम्र चालीस (40) साल थी नबी (अलैहि॰) की उम्र पचीस (25) साल थी, उम्र में बीवी इतनी बड़ी थीं और उनके दो निकाह पहले भी हो चुके थे मगर अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) के दिल में ऐसी मोहब्बतें थी कि एक मर्तबा मदीना तैयबो में उनकी बहन मिलने को आई हज़रत आइशा (रज़ि॰) को तो नबी (अलैहि॰) ने बहन की आवाज़ सुनी तो आप (सल्ल॰) को ख़दीजा तुल कुबरा (रज़ि॰) याद आ गई। फ़रमाया किस की आवाज़ है? ये ख़दीजा से बहुत मिलती जुलती है, उम्मूल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि॰) फ़रमाती है कि मेरे दिल में बहुत अजीब कैफ़ियत हुई कि इतना अर्सा उनकी फ़ौत हुए होगया, अल्लाह के नबी (सल्ल॰) अब याद कर रहे हैं। तो मैंने ये कह दिया कि अल्लाह के हबीब! आप अभी भी उस बूढ़ी औरत को याद करते हैं, जबकि आप के पास जवान ख़ूबसूरत बीवियाँ मौजूद हैं? महबूब (सल्ल॰) की आँखों में

आंसू आ गए फ़रमायाः आइशा! जब लोग गुमराही के अन्धेरे में थे उस वक्त ख़दीजा के दिल में इमान की रौशनी आई। उसने उस वक्त मेरा साथ दिया जब मेरा साथ देने वाला दुनिया में कोई नहीं था। आइशा! "इन्नी क़दरो ज़िक्तो हुब्बहा" आइशा! अल्लाह रब्बुज इज़्ज़त ने उसकी मोहब्बत मेरे दिल में डाली है आज मरने के बाद भी मैं उसे याद कर रहा हुँ।

तो हदीसे पाक से बात समझ में आती है कि मोहब्बतें तो दिल में अल्लाह डालता है। आप अल्लाह को नाराज़ करोगी तो कैसे मोहब्बत अल्लाह दिल में डालेंगे। अल्लाह तुम्हें मज़ा चखाते है कि तुम सारा दिल ख़ाविन्द की नज़र को तरस्ती हो, इन्तिज़ार में रहती हो, अल्लाह को नाराज़ करके तुम कहाँ जाओगी।

दरया में रहना "मगरमछ" से बैर करना

पूर-सकून ज़िन्दगी का वाहिद नुस्ख़ा

पूर-सकून ज़िन्दगी हासिल करने का एक ही रास्ता है कि अल्लाह को मनालो, जिस को चाहे सुहागन वही है, अल्लाह तुम्हारी मोहब्बत डाल देंगे तो तुम आबाद हो जाओगी। घर आबाद हो जाऐगा। अल्लाह ने उसके दिल में बात डाली, कहने लगी वादा करती हुँ कि बे परदगी से तौबा करुँगी, पाँच नमाज़ें पढ़ूगी, अल्हमदू लिल्लाह एक साल भी नहीं गुज़रा था उस औरत ने दोबारा राब्ता करके कहा मैं दुनिया में जन्नत की ज़िन्दगी गुज़ार रही हुँ। अल्लाह ने मेरे ख़ाविन्द के दिलों में मेरी इतनी मोहब्बत डाल दी है, तो सच्ची बात तो ये है कि ये छोटी-छोटी बातें सब मामूली बातें हैं असल लब्बे लबाब ये है कि मोहब्बतें तो अल्लाह दिलों में पैदा करते हैं, हम अल्लाह के फ़र्माबरदार बंदे बन कर रहेंगे तो ख़ाविन्द की मोहब्बत बीवी के दिलों में और बीवी की मोहब्बत ख़ाविन्द की दिल में अल्लाह तआला डाल देंगे। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें पूर-सकून, कामियाब अज़दवाजी ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

व आख़िरु दअवाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

□□□

(زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَآءِ)

ज़ुय्ये-न लिन्नासे हुब्बुश-श-ह-वाति मिनन्निसाए

मोहब्बत के अन्दाज़

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

फ़ेहरिस्त अनावीन

इक्तिबास

लिहाज़ा शरीअत ने कहा कि ख़ाविन्द को हलीम और सबूर बनकर रहना चाहिए। कोशिश ये करनी चाहिए कि बीवियों के साथ तहम्मूल मिज़ाजी के साथ मामला हो। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मियाँ-बीवी को मोहब्बत प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारने का हुक्म फ़रमाया। शरीअत ने कहाः "خَيْرُكُمْ اَلْطَفُكُمْ لِاَهْلِهٖ" तुम में से सबसे बेहतर इन्सान वह है जोअपनी बीवी के साथ ज़्यादा अच्छे तरीक़े से रहता है। हदीस मोबारक का मफ़हूम है कि बीवी ख़ाविन्द को देख कर मूसकूराती है। ख़ाविन्द बीवी को देख कर मूसकूराता है तो अल्लाह तआला उन दोनों को देख कर मूसकूराते हैं। चुनांचि शरीअत मोहब्बतों का पैग़ाम देती है :

मेरा पैग़ाम मोहब्बत है जहाँ तक पहुँचे

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलिफ़क़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ کَفٰی وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی اَمَّا بَعْدُ۔

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

(زُیِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَآءِ)

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ۔ وَسَلَامٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ۔

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

बिस्मिल्लाह

अल्हम्दुलिल्लाहि व कफ़ा व सलामुन अला इबादिहल्लज़ी-नस्तफ़ा अम्माबअद
अऊज़ो बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
(ज़ूय्ये-न लिन्नासे हुब्बूश-श-ह-वाति मिनन्निसाए)
सुब्हानि रब्बि-क रब्बिल-इज़्ज़त अम्मा यसिफ़ुन। व सलामुन अललमुर्रिसलीन
वल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलिमीन
अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मोहम्मदिंव-व अला आलि सय्यदिना
मोहम्मदिंव-व बारिक व सल्लिम
अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मोहम्मदिंव-व अला आलि सय्यदिना
मोहम्मदिंव-व बारिक व सल्लिम
अल्लाहुम्मा सल्लि अला सय्यदिना मोहम्मदिंव-व अला आलि सय्यदिना
मोहम्मदिंव-व बारिक व सल्लिम

मोहब्बत की तारीफ़

क़ुरआन मजीद फ़ूर्क़ान हमीद की जो आयत तिलावत की गई उसमें ये मज़मून है कि अल्लाह रबबुल इज़्ज़त ने मर्दों के दिल में औरतों की शहवत व मोहब्बत सबसे ज़्यादा रख दी है। कहते हैं

اَلْوِدَادُ وَالْمَحَبَّةُ: مُوَافَقَةُ الْحَبِيْبِ فِي الْمَشْهَدِ وَالْمَغِيْبِ

कि इन्सान हाजरी में और पीठ पीछे भी अपने महबूब के साथ मवाफ़िक़त करे, सहल (रह०) कहते हैं कि

اَلْمَحَبَّةُ مُعَانَقَةُ الطَّاعَةِ وَمُبَايَنَةُ الْمُخَالَفَةِ

मोहब्बत कहते हैं कि इन्सान फ़रमाबरदारी को अपनाले और मोख़ालिफ़त को छोड़ दे। महासिबी (रह०) फ़रमाते हैं:

مَيْلُكَ إِلَى شَيْءٍ بِكُلِّيَّتِكَ ثُمَّ إِيْثَارُكَ عَلَى نَفْسِكَ

कि तुम्हारा किसी चीज़ की तरफ़ सौ फ़ीसद मीलान हो जाना और उसकी अपने आप पर तर्जीह देना इसकी मोहब्बत कहते हैं। जब इन्सान को किसी से मोहब्बत होती है तो अपने महबूब को और उसकी पसन्दीदा चीज़ों को फ़ौक़ियत देता है।

अल्लाह और रसूल की मोहब्बत सब पर मोक़द्दम

फ़रमाया : إِعْلَمْ اَنَّ مَنْ اَحَبَّ شَيْئًا اٰثَرَهٗ وَ اٰثَرَ مُوَافَقَتَهٗ इन्सान के दिल में सबसे कामिल मोहब्बत अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की होती है। नबी (अलैहि०) ने फ़रमाया : اَحِبُّوا اللّٰهَ لِمَا يَغْذُوْكُمْ مِّنْ نِعَمِهٖ "आहिब्बुल्ला-ह लिमा यग़ज़ोकूम-मिन नि-अ-मिही" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मोहब्बत करो, इसलिए कि इसने तुम्हें तमाम नेमतों से नवाज़ा। इसने तुम्हें खाने-पीने की नेमतें अता फ़रमाई हैं। तो फ़ितरी तौर पर इन्सान के दिल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मोहब्बत को रख दिया गया है। इसीलिए इन्सान रब को पूजता है। ये अलग बात है कि परवरदिगार को पूजे या पत्थर के बूतों को पूजे। मगर पूजता ज़रुर है। इज़हारे मोहब्बत व नियाज़ मन्दी ज़रुर करता है।

इसके बाद दूसरी मोहब्बत इन्सान के दिलों में नबी (अलैहि०) की है। महबूब (सल्ल०) ने फ़रमाया:

"لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ"

तुम में से कोई ईमाने वाला नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे वालिदैन से औलाद से और तमाम इन्सानों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ, तो नबी (अलैहि०) की मोहब्बत तमाम इन्सानों की मोहब्बत से बड़कर है।

सहाबा-ए-किराम का इश्क़े रसूल

सहाबा (रज़ि॰) नबी (अलैहि॰) के इश्क़ की एक जमाअत का नाम है। जिसको देखों नबी (अलैहि॰) की मोहब्बत से उसको दिल लब्रेज़ नज़र आता है। इस मोहब्बत की इन्तिहा यहाँ तक थी कि जब नबी (अलैहि॰) की वफ़ात हुई तो बाज़ सहाबा (रज़ि॰) ने ये दुआ मांगी अल्लाह! हमारी बीनाई को छीन लीजिए हम आज के बाद किसी का चेहरा देखना ही नहीं चाहते। चुनांचि किताबों में है :

"إِنَّهُ لَمَّا مَاتَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: اَللّٰهُمَّ اَعْمِنِيْ حَتّٰى لَا اَرٰى شَيْئًا بَعْدَهُ فَعَمِيَ"

इन्नहु लम्मा मा तन्नबियो (सल्ल॰) क़ालाः अल्लाहुम्मा अअ़मिनी हत्ता ला अरा शैअन बअ़दहु फ़-आमि-य

"एक सहाबी फ़रमाने लगे ऐ अललाह! मुझे अंधा कर दीजिए कि मैं किसी चीज़ को भी न देख सकूँ, चुनांचि वह अंधे होगए।"

एक और हिकायत इमाम क़ुशैरी (रह॰) ने लिखी है कि उन्होंने ये दुआ की "اَللّٰهُمَّ اَعْمِنِيْ حَتّٰى لَا شَيْئًا بَعْدًا حَبِيْبِيْ حَتّٰى اَلْقٰى حَبِيْبِيْ ﷺ فَعَمِيَ مَكَانَهُ" ऐ अल्लाह! मुझे अंधा कर दीजिए, इस लिए कि मैं अपने महबूब (सल्ल॰) के बाद किसी चीज़ को देखना नहीं चाहता हत्ताकि मेरी मौत आए और मैं अपने महबूब ही के चेहरे को दोबारा देखूँ तो अल्लाह ने उनको अंधा कर दिया।

हैरत की बात है कि नबी (अलैहि॰) की इतनी मोहब्बत इनके दिलों में थी, सिर्फ़ मर्दों की बात नहीं, औरतें इस से भी बढ़ही हुई थीं। चुनांचि एक रिवायत में है "إِنَّ امْرَأَةً قَالَتْ لِعَائِشَةَ ؓ فَكَشَفَتْهُ لَهَا فَبَكَتْ حَتّٰى مَاتَتْ" एक औरत ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा से कहा कि मेरे लिए वह दरे रौज़ा खोल दीजिए जाहँ महबूब (सल्ल॰) आराम फ़रमा रहे हैं। आइशा (रज़ि॰) ने क़ब्र का दरवाज़ा खोल दिया, वह औरत रोती रही हत्ताकि वह फ़ौत हो गई। तो मोहब्बत का ये हाल था कि महबूब (सल्ल॰) की क़ब्र मोबारक को देखकर इतना रोई कि जान ही दे दी। ये मोहब्बतों की इन्तिहा है। जो अल्लाह ने इमान वालो को अता की हैं।

इसके अलावा भी इनसान के दिल में मोहब्बतें होती हैं। दायरा शरीअत के अन्दर रहते हुए मसलन मा-बाप, औलाद की मोहब्बत एक अनमोल मिसाल है। इसी तरह एक मोहब्बत किया-बीवी की दर्मियान होती है। ये मोहब्बत के जज़्बात ऐसे होत हैं जो बच्चों से भी छूपे नही रह सकते वह भी इस को महसूस करते हैं कि इस मर्द और उस औरत के दर्मियान कोई ख़ास तअलुक़ है।

बच्चों के नज़दीक मोहब्बत की तारीफ़

चुनांचि एक मर्तबा पाँच साल के बच्चों से एक सवाल पूछा गया कि ये बताओ मोहब्बत (Love) किया होती है? अब इतने छोटे मासूम बच्चे तो इसकी हक़ीक़त से वाक़िफ़ नहीं लेकिन तजुर्बात और मोशहिदात के मोताबिक़ जो उन्होंने जवाब दिए वह ज़रा सून लीजिए :

एक बच्चे ने कहा कि मेरे अब्बू मेरी दादी के पाँव के नाख़ून काटते हैं, शायद ये मोहब्बत है। दूसरे ने कहा कि मेरे अब्बू मेरी अम्मी का नाम मज़े ले ले कर लेते हैं शायद यही मोहब्बत होती होगी। एक बच्चे ने कहा कि जब अम्मी अब्बू के लिए कॉफ़ी बनाती है तो एक घोंट भरती हैं फिर दोनों एक दूसरे को मूस्करा कर देखते हैं। एक बच्चे ने कहा कि जब अम्मी कहती हैं कि ये शर्ट अछी है तो अब्बू अक्सर उसी को पहनते हैं। एक ने कहा कि खाने के मेज़ पर मैंने देखा कि अम्मी अब्बू को गोशत का बेहतरीन हिस्सा निकाल कर देती हैं जिस बच्चे का जवाब सब से बेहतर था उसने कहा कि हमारे पड़ोस में एक बूढ़े मियाँ रहते थे उनकी बीवी भी बूढ़ी थी, फ़ौत हो गई कुछ दिनोंके बाद वह बड़े मियाँ दरवाज़े पर कुर्सी डाल कर बैठे हुए थे, मैं उनके क़रीब से गुज़रा और मैंने उनको कहा कि आप की बीवी कहाँ चली गई, तो मेरी बात सुनकर उस बूढ़े की आँखों में आँसू टपक पड़े, शायद इसी को मोहब्बत कहते हैं। तो ये वह ताल्लुक़ है कि जो छोटे-छोटे बच्चों से भी नहीं छिपा रहता है।

औरतों और बच्चों की मोहब्बत

ये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की हिक्मत है। अगर औरत की ये मोहब्बत मर्द के दिल में न होती तो न घर आबाद होते, न फ़ैमिली

बनती, न रिश्तेदारियाँ होतीं, न मोआशरा क़ायम होता। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दीन को कम्पिलीट (Complete) करने के लिए अपनी क़ुदरत कामिला से मर्दों के दिलों में औरतों की चाहत और मोहब्बत ख़ुद पैदा फ़रमादी।

चुनांचि बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि नबी (अलैहि.) ने औरतों और बच्चों को देख कर फ़रमायाः "अन्तुम मिन अ-हब्बिन-नासे इलैय्या" कि तुम लोग मुझे इन्सानों में सबसे ज़्यादा महबूब हो। गोया घर की औरतें और बच्चे बन्दे को सारी दुनिया के इन्सानों से ज़्यादा प्यारे होते हैं। एक हदीस पाक में नबी (अलैहि.) ने फ़रमाया : "हुब्बे-ब इलैय्या मिन दुनियाकुम अत्तीबो वन्निसाओ व जूएलत क़ुर्रतो ऐनी फ़िस्सलाते" तुम्हारी दुनिया से मुझे ख़ूशबू और औरतें बहुत महबूब हैं और मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में रखदी गई है। अल्लाह के हबीब (सल्ल.) ने कोज़े के अन्दर समुन्दर को बन्द कर दिया। ग़ौर कीजिए कि इन्सान ग़ुस्ल करके नहा धोके फिर ख़ुशबू लगाता है तो जिस्म मोअत्तर हो जाता है, फिर जब मिया-बीवी आपस मेंमिलते हैं तो उससे इन्सान की सोच पाक हो जाती है। ग़लत क़िस्म के ख़्यालात ख़त्म हो जाते हैं और जब इन्सान नमाज़ पढ़ता है तो इन्सान का दिल पाक हो जाता है। सुब्हान अल्लाह! इन तीनों चीज़ों से एक पाकीज़ा इन्सान बन जाता है। इन्हीं के बारे में फ़रमायाः वल्लाहु युहिब्बूल-मो-त-तह-हिरीन, अल्लाह तआला पाक रहने वाले लोगों से मोहब्बत फ़रमाते हैं जिन के जिस्म पाक, दिमाग़ भी पाक और दिल भी पाक होते हैं। चुनांचि इमाम अहमद ने अपनी किताब "अल-ज़हद" में एक हदीस पाक के अल्फ़ाज़ नक़ल किए हैं इसको "अल दाए वल दवाए" में नक़ल किया है कि फ़रमाया "अस-बिरु अनित्ताआमि वश'शराबे वला अस-बिरु अन्हुन-ना" में खाने और पीने से सब्र कर लेता हुँ लेकिन बीवी सेमेरा सब्र नहीं होता। अब ज़ेहन में एक बात आती हैं कि एक दीनदार इन्सान के दिल में इतनी मोहब्बत बीवी से कैसे हो सकती है कि वह खाने से भी सब्र करले, पीने से भी सब्र करले लेकिन बीवी के मामले में उस से सब्र ही न हो।

इमाम रब्बानी के अहम मकतूब

तो इमाम रब्बानी मोजद्दिद अलफ़ेसानी (रह०) का एक मकतूब सुन लीजिए वह फ़रमाते हैं :

ये कायनात अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के इस्म अल-ज़ाहिर का मज़हर है, जितनी चीज़ों का ज़हूर है ये इस इस्म की जलवा गरी है। चुनांचि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने जमाल को दिखाने के लिए ऐसी चीज़ों को पैदा किया जो बन्दा को बहुत अच्छी लगती हैं। पानी पीने की चीज़ें फल हैं मेवे हैं, फूल हैं, इन्सान की रग़बत होती है कि मैं इन्हीं चीज़ों को इन्जवाइ (Enjoy) करूँ तो फ़रमाते है कि जिस तरह बाक़ी चीज़ों में अल्लाह ने रग़बत दी। सबसे कामिल रग़बत अल्लाह ने मर्द के लिए औरत में रखी। चुनांचि औरत के उपर अल्लाह के मोबारक नाम अल-ज़ाहिर की तजल्ली पड़ती है और मर्द बे-इख़्तियार होकर इससे मोहब्बत करता है।

दूसरे एक मकतूब में इमाम रब्बानी मोजद्दिद अलफ़ेसानी (रह०) लिखते हैं :

राहे सलूक तै करने के दौरान हक़ सुब्हान व तआला इस ख़ादिम पर इस्म अल-ज़ाहिर की तजल्ली के साथ जलवागर हुवा। यहाँ तक कि तमाम एशिया में ख़ास तजल्ली के साथ अलैहिदा अलैहिदा ज़ाहिर हुवा ख़ास तौर पर औरतों के लिबास में बल्कि इनके अज़ा में जुदा-जुदा ज़ाहिर हुवा और मैं इस गिरोह यानी औरतों का इस क़द्र मुतीअ और फ़रमाबरदार हुवा कि किया अर्ज़ करूँ और मैं इस अताअत और फ़रमांबरदारी में बे इख़्तियार था। इस्म अल-ज़ाहिर का जो ज़हूर इस तबक़ा मसतूरात के लिबास में हुवा ऐसा और जगह कहीं नहीं हुवा। जिस क़द्र पाकीज़ा और उमदा ख़सूसियात और अजीब व ग़रीब ख़ूबियाँ उस लिबास में ज़ाहिर हुईं। इतनी किसी और मज़हर में ज़ाहिर नहीं हुईं। मैं इन के सामने पिघल कर पानी पानी हुवा जाता था।

इसका मतलब ये हुवा कि येअल्लाह तआला की हिकमत बालिग़ा है क़ुदरते कामिला है कि अल्लाह ने मोआशिरा कोक़ायम करने के लिए

मर्दों के दिल में औरतों की फ़ितरी मोहब्बत पैदा करदी मगर साथ ये भी कह दिया कि देखो! अगर तुम पूर-सकून ज़िन्दगी गुंज़ारना चाहते हो तो निकाह के ज़रिए एक दूसरे के साथ मोहब्बतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारो तो दुनिया में भी अज्र पाओगे और आख़िरत में भी तुमहें जन्नतें मिलेगी। अब ये तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की एक मेहरबानी है कि उसने इस मोहब्बत को इतना शदीद कर दिया; इसी लिए नबी (अलैहि॰) ने इरशाद फ़रमाया : مَاتَرَكْتُ بَعْدِيْ فِتْنَةً اَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ مِنَ النِّسَاءِ मैंने अपने बाद मर्दों के लिए औरतों से बड़कर बड़ी आज़माइश किसी चीज़ को नहीं छोड़ा।

इन्सानी कमज़ोरी

क़ुरआन मजीद की आयत है "خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا" अल्लाह ने इन्सान को कमज़ोर बनाया, चुनांचि मोफ़स्सिरीन ने लिखा है कि इस कमज़ोरी से मूराद ये है "كَانَ اِذَا نَظَرَ اِلَى النِّسَاءِ لَمْ يَصْبِرْ" कि ख़ाविन्द जब अपनी बीवी को देखता है तो ख़ाविन्द से सब्र ही नहीं हो सकता। इस से मुराद कि हमने उसको कमज़ोर बनाया, चुनांचि यहूदियों ने नबी (अलैहि॰) के बारेमें ये कहा हक "मा हम्मूहु इल्लन्निकाहु" इनको तो निकाह के सिवा कोई और काम है ही नही। इसके जवाब में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में ख़ूद फ़रमाया :

"اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا."

ये लोग हसद करते हैं जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इन्हें अपने फ़ज़ल से अता फ़रमाया, तहक़ीक हमने आलि इब्राहीम को किताब और हिकमत अता फ़रमाइ और हमने इन्हें बड़ा मुल्क और उसकी शाही अता फ़रमाई।

चुनांचि हज़रत इब्राहीम (अलैहि॰) की बीवी का नाम "सारा" था इतनी ख़ूबसूरत थीं कि लिखा है: अजमिलो निसाएल-आलमीन कि सारे जहाँ की औरतों से ज़्यादा ख़ूबसूरत थीं। अपने वक़्त की मिस यूनीवर्स (Miss Universe) आलमी हसीना थीं। मगर निकाह जब हज़रत "हाजिरा" से हुवा तो उनकी मोहब्बत ने भी इनके दिल में घर कर लिया, तो मालूम

हुवा कि ये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का इख़्तियार होता है कि जिसके दिल में चाहे जिसकी मोहब्बत को पैदा करदे।

दाऊद (अलैहि॰) की निनानवे (99) बीवियाँ थीं फिर उन्होंने एक और से निकाह किया तो सौ (100) हो गई। सुलेमान (अलैहि॰) की नव्वे (90) बीवियाँ थीं और एक ऐसी भी रात थी कि उन्होंने नव्वे बीवियों से मिलाप किया।

आप (सल्ल॰) की माँ आइशा से मोहब्बत

चुनांचि हदीस पाक में आता है कि नबी (अलैहि॰) से पूछा गया "سُئِلَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ عَنْ اَحَبِّ النَّاسِ اِلَیْہِ" ऐ अल्लाह के हबीब (अलैहि॰)! आप को इन्सानों में सबसे ज़्यादा मोहब्बत किसके साथ है? फ़क़ालाः आइशा! नबी (अलैहि॰) ने फ़रमायाः कि मुझे सब से ज़्यादा मोहब्बत आइशा के साथ है। इतनी मोहब्बत थी कि किसी ने उम्मे सलमा (रज़ि॰) से पूछा कि नबी (अलैहि॰) रोज़ा की हालत में बीवी को हाथ लगाते थे? उन्होंने कहा नहीं लगाते थे। उसने कहा कि आइशा (रज़ि॰) ने ये कहा है कि नबी (अलैहि॰) ने रोज़ा की हालत में भी मेरा बोसा लिया। चुनांचि इस मोहब्बत के बारे में वाक़िया है कि बाक़ी अज़वाज मुतहरात ये महसूस करती थीं कि महबूब (सल्ल॰) की जो मोहब्बत की नज़र आइशा (रज़ि॰) पर पड़ती है वह किसी और पे नहीं। और इन्हें इस बारे में सकून रहता है।

एक मर्तबा नबी (अलैहि॰) आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) के साथ एक ही बिस्तर पर, एक ही कपड़े में लिपट कर बैठे हुए थे तो उम्मे सलमा (रज़ि॰) को भेजा कि आप जाएँ और नबी (अलैहि॰) से अर्ज़ करें कि ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) हम भी आप की बीवियाँ हैं लेकिन जो मोहब्बत की नज़र आइशा पर है वह औरों पर नज़र नहीं आती तो फ़ातिमा ज़ोहरा आई और उन्होंने नबी (अलैहि॰) से ये बात अर्ज़ की, नबी (अलैहि॰) जैसे बिस्तर पर बैठे हुए थे, आइशा (रज़ि॰) के साथ इसी तरह बिस्तर मैं बैठे रहे और बात सुनकर सिर्फ़ इतना कहा कि "आकूनते तूहिब्बी-न मा आहिब्बाहू" ऐ बेटी किया तुम इस चीज़ को महबूब नहीं

रखतीं जिस को तुम्हारे वालिद महबूब रखते हैं? तो वह तो साहिबज़ादी थी। कहने लगीं: सौ फ़ीसद मैं उसी चीज़ से मोहब्बत करुगीं। चुनांचि फ़ातिमा ज़ोहरा (रज़ि॰) वापस चली गईं और उन्होंने कहा कि भई अल्लाह के महबूब (सल्ल॰) को जो पसन्द मुझे वही पसन्द। अब उम्मे सलमा (रज़ि॰) ने ज़ैनब (रज़ि॰) को भेजा। ये नबी (अलैहि॰) की रिश्तेदार भी थीं और अहलिया भी थीं दो रिश्ते थे। चुनांचि वह ख़िदमत में हाज़िर हुईं, आइशा सिद्दीक़ा (रिज़॰) फ़रमाती हैं ये उम्मूल मोमिनीन की सदाक़त है, उनका तक़्वा है इनकी दीनदारी है, आम तौर पर देखा कि सौकन के बारे में बहुत मन्फ़ी तबसिरे किए जाते हैं मगर आइशा (रज़ि॰) की सदाक़त देखिए वह फ़रमाती है कि फिर ज़ैनब आईं "وَلَمْ أَرَ امْرَأَةً قَطُّ خَيْرًا فِي الدِّينِ مِنْ زَيْنَبَ" और दीन में बेहतरी के मामले में हमने ज़ैनब जैसी कोई औरत नहीं देखी, "व अतक़ा लिल्लाहि" वह अल्लाह से बड़ी डरने वाली थीं "व अस-द-क़ हदीसन" औरं बहुत सच बात करने वाली थीं "व औ-स-ल लिर्राहिमि" और सिला रहमी करने वाली थीं, "व अअज़-म स-द-क़तन" सब से ज़यादा सदक़ा करने वाली थीं "وَأَشَدَّ ابْتِذَالًا لِنَفْسِهَا إِلَى اللهِ تَعَالَى" और अपने नफ़स को मजबूर करने वाली थीं मोजाहिदा के उपर, अल्लाह के रास्ता में सदक़ा करने के लिए। तक़र्रुब के लिए, इतनी तारीफ़े इनकी करके कहा कि वह आएँ तो उन्होंने आकर कहना शुरु कर दिया कि ऐ अल्लाह के हबीब (अलैहि॰)! हम भी आपकी बीवियाँ हैं, वह मोहब्बत की नज़र हमें भी तलब है। हमें भी चाहिए, फिर उन्होंने आइशा (रज़ि॰) से कहना शुरु कर दिया कि आप बहुत ज़्यादा लाडली हैं और इस तरह कुछ बातें कीं। फ़रमाती हैं मैंने नबी (अलैहि॰) के चेहरे अनवर को देखा कि आप मुझे इजाज़त दें बात करने की। आप (सल्ल॰) ने मुझे देखकर फ़रमाया: आइशा! दू-न-कि फ़न-तासिरी, अब अपनी मदद आप करो, अपना दिफ़ाअ करो। फ़रमाती हैं मैंने इसके जवाब में फिर ये बताया कि ये तो मेरे उपर अल्लाह का फ़ज़्ल है, इस तरह की जब मैंने बात की तो मैंने देखा "य-त-हल-लालू वजहु" नबी (अलैहि॰) का चेहरा ए अनवर तमतमा रहा था। फिर ज़ैनब (रज़ि॰) वापस चली गईं। नबी (अलैहि॰) फ़रमाने लगे आख़िर तुम जो अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) की बेटी

हो, तो मालूम कि अल्लाह के प्यारे हबीब (सल्ल०) को सैयदा आइशा (रज़ि०) से ऐसी मोहब्बत थी कि जो दिलों कों बे-क़ाबू करदेने वाली थी; इसलिए नबी (अलैहि०) ने दुआ माँगी: "اَللّٰهُمَّ هٰذَا قَسْمِیْ فِیْمَا اَمْلِكُ" ऐ अल्लाह! ये मेरी तक़सीम है जिसके उपर मैं इख़्तियार रखता हुँ। मैं नक़शा एक जैसा देता हुँ। मैं वक़्त एक जैसा देता हुँ। मैं बाक़ी चीज़ों का ख़्याल सब का एक ही जैसा रखता हुँ, "فَلَا تَلُمْنِیْ فِیْمَا لَا اَمْلِكُ" ऐ अल्लाह! जो चीज़ मेरे क़ाबू में नहीं इस के बारे में मुझसे मवाख़्ज़ह करना यानी "फ़िल-हुब्बे" मोहब्बत के बारे में, तो नबी (अलैहि०) की ये दुआ बता रही है कि मोहब्बत का मामला बंदे के इख़्तियार से बाहर होता है, ये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से होती है।

बीवी की मोहब्बत इन्सानी कमाल

चुनांचि इब्न अल-क़ैयूम ने लिखा है "फ़-मह-ब-तिन्निसाए कमाले इन्सान" कि बीवी के साथ मोहब्बत का गहरा होना ये इन्सान के कमाल की दलील है जो जितना नेक परहेज़गार इन्सान होगा इसके दिल में बीवी की मोहब्बत इतनी ज़्यादा होगी। इस मोहब्बत की मिसालें सहाबा (रज़ि०) की ज़िन्दगियों से मिलते हैं, चुनांचि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) को एक इलाक़ा की बान्दी मिली, वहाँ की औरतें बहुत अच्छे अख़्लाक़ वाली, ख़ूबसूरत होती थीं, खुद फ़रमाते हैं कि जब मुझे बान्दी मिली "فَمَا صَبَرْتُ عَنْ قُبْلَتِهَا وَالنَّاسُ يَنْظُرُوْنَ" कि मुझसे सब्र न हो सका लोग देख रहे थे मगर मैंने बढ़कर इसका बोसा ले लिया। नबी (अलैहि०) के बारे में आता है "मद्दा य-दहु" वीवियाँ मौजूद थी मगर आप (सल्ल०) ने मोहब्बत से अपना हाथ किसी एक बीवी के जिस्म पर रखा। इससे मालूम होता है कि मोहब्बत का होना न होना ये बन्दों के इख़्तियार में है।

सब्र व तहम्मूल का अजीब वाक़िया

ये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क़ुदरत पर मुनहसर है। चाहते है तो मोहब्बत दे देते हैं। ऐसी मोहब्बत कि जो उम्मे सलीम कोमिली अपने ख़ाविन्द के साथ। चुनांचि अबू तलहा (रज़ि०) एक सहाबी हैं, तिजारत के सफ़र के लिए अपनी बीवी से जुदा हुए। बीवी हामिला थी। आख़िरी

अय्याम थे। जब महीना दो महीना के बाद वापस आए तो इनके यहाँ बेटे की वलादत हुई थी, मगर अल्लाह की शान कि जिस दिन उनको घर पहुँचना था उसी दिन चंद घंटे पहले मासूम, छोटे, प्यारे बेटे की वफ़ात हो गई। अब बीवी सोच रही है कि मेरा ख़ाविन्द इतने अर्से के बाद घर वापस आएगा अगर उसने बेटे को मुर्दा देखा तो उसके दिल पे सदमा होगा। इसको ख़ुशी के बजाए ग़म मिलेगा।

लिहाज़ा उन्होंने अपने दिल पर पत्थर रख कर अपना ग़म छुपाया। आँखों के आँसू ग़ायब कर दिए। चेहरा से ग़मी के आसार छुपा दिए और बेटे का कफ़न पहना कर चारपाई के उपर लिटा दिया, फिर उसके बाद ख़ुद बन संवर कर आरास्ता हुई और शौहर का इस्तिक़बाल किया हत्ताकि जब अबू तलहा (रज़ि॰) आए और उनहोंने पूछा के मेरे बाबत किया हुवा? कहने लगीं: अल्लाह ने बेटे की नेमत अता फ़रमाई, पूछा वह कहाँ है? कहने लगीं: वह सकून में है। ऐसा लफ़्ज़ इस्तेमाल किया जो ज़ू-मोअंय्यन था। असल में तो वह फ़ौत हो चूका था मगर उन्होंने कहा: वह सकून में है, ख़ाविन्द समझे कि सो रहा होगा। रात का वक्त है बच्चा को किया जगाना, सुबह उठूँगा तो देख लूँगा। फिर इसके बाद वह अपनी बीवी के साथ बैठकर बातें करने लगें। मिया-बीवी एकट्ठे भी हुए। ज़रा ग़ौर तो कीजिए कायनात में ये एक अनोखी मिसाल है। माँ के सामने बेटे की लाश पड़ी है और माँ अपने ख़ाविन्द की मोहब्बत की वजह से इसके साथ वक्त गुज़ार रही हैं, इसका दिल ख़ुश कर रही है, ये वह मोहब्बत थी जो अल्लाह ने मियाँ-बीवी के दिलों में पैदा करदी थी, कायनात में ऐसी मोहब्बत की मिसाल नज़र नहीं आती, चुनांचि जब सुबह हुई तो उन्होंने अपने ख़ाविन्द को कहा कि अल्लाह अगर किसी की अमानत दे तो फिर उसको ख़ुशी से वापस करना चाहिए या ग़मज़दा होकर नहीं, ख़ुशी से करना चाहिए। फिर बताया अल्लाह ने बेटे की अमानत दी थी उसने वापस ले ली अब इसको आप जाकर क़ब्रिस्तान मे दफ़न कर दीजिए। अबू तलहा (रज़ि॰) हैरान हुए। नबी (अलैहि॰) को आकर बात बताई। महबूब (सल्ल॰) ने दुआ दी उस रात की मिलाप में अल्लाह ने फिर उनको और औलाद अता फ़रमाई। फ़रमाते हैं कि हम

उनके नौ बेटे क़ुरआन और हदीस के हाफ़िज़ देखे, अल्लाह ने ऐसी बरकत नस्ल में अता फ़रमा दी, तो अल्लाह तआला चाहते हैं तो मोहब्बत ऐसी दे देते हैं कि बीवी (बच्चे की लाश पड़ी है फिर भी) ख़ाविन्द के दिल को ख़ुश करने में लगी है।

जब अल्लाह मोहब्बत खींचले तो?

और अल्लाह चाहते हैं तो ख़ाविन्द के दिल से बीवी की मोहब्बत को निकाल भी देते हैं:

चुनांचि नबी (अलैहि॰) के मूंह बोले बेटे हज़रत ज़ैद (रज़ि॰), इनका निकाह नबी (अलैहि॰) ने अपने कज़न (Cousin) (यानी) फूफीज़ाद बहन ज़ैनब (रज़ि॰) के साथ कर दिया था। बहुत ख़ुबसूरत थीं, अच्छे अख़्लाक़ वाली थीं, उनकी तारीफ़ तोआप ने अभी सुन ही लीं जो आइशा (रज़ि॰) उनके बारे में अच्छे कॉमेंटस (Comments) तब्सिरा कर रही हैं। इतनी ख़ुबसूरत बीवी, अच्छे अख़्लाक़ वाली बीवी मगर अल्लाह ने ख़ाविन्द के दिल से मोहब्बत को हटा लिया। नबी (अलैहि॰) ने बुलाकर फ़रमायाः तुम अपनी बीवी को आबाद करो, "अमसिक अलै-क ज़ौजक" तुम अपनी बीवी को अपने पास बसाओ, घर आबाद करो, मगर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं "فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا" जब ज़ैद का दिल ही बीवी से भर गया, चुनांचि इनमे जुदाई हो गई फिर अल्लाह ने ज़ैनब (रज़ि॰) का निकाह अपने महबूब (सल्ल॰) के साथ कर दिया। सोचने की बात है कि नबी (अलैहि॰) वालिद भी हैं, नबी (अलैहि॰) मोहसिने अन्सानियत पैग़म्बर (अलैहि॰) हैं। आप ख़ाविन्द को समझाते हैं कि बीवी से मोहब्बत करो। घर बसाओ, मगर ख़ाविन्द के दिल से मोहब्बत निकाल ली गई। वह अपनी बीवी को जुदा कर देते हैं।

अल्लाह चाहते हैं तो ऐसी मोहब्बत कि बच्चे की मौत के बावजूद बीवी ख़ाविन्द के साथ वक़्त गुज़ारती है और जब मोहब्बत निकाल लेते हैं तो फिर बीवी अपने ख़ाविन्द के पास रह ही नहीं सकती। जुदाइयाँ हो जाती हैं। मालूम होता है ये इख़्तियार अल्लाह ने अपने पास रखा है। इसलिए के इन्सानों के दिल "बै-न असाबिइर्रहमान" अल्लाह के दो उंगलियों के दर्मियान है।

चुनांचि नबी (अलैहि.) ने जब ज़ैनब (रज़ि.) को देखा तो उनके हुस्न व जमाल को देख कर फ़रमाने लगे "सुब्हान मोक़ल्लिबिल-क़लूब" ऐ दिलों के पलटने वाले तू पाक है, इतनी खुबसूरत बीवी मगर आप ने ज़ैद के दिल को इनसे फेर दिया, इसको उनकी तरफ़ रगबत ही नहीं होती थी तो मालूम हुवा कि दिलों का मामला दिलों के परवरदिगार के हाथ में है।

मोहब्बत भी अल्लाह ही की तरफ़ से

एक साहब अमीरुल-मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास हाज़िर हुए "يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِيْنَ رَأَيْتُ امْرَأَةً فَعَشِقْتُهَا" मैंने एक औरत को देखा तो उसकी मोहब्बत मेरे दिल में बैठ गई, فَقَالَ عُمَرُ उमर (रज़ि.) जवाब दिया يَا ذٰلِكَ مَا لَا تَمْلِكُ ये वह चीज़ है कि जिस का तुमहें इख़्तियार नहीं है।

चुनांचि अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) के बारे में आता है "اِشْتَرٰى جَارِيَةً رُوْمِيَّةً" उन्होंने रोम की एक बांदी ख़रीदी "فَكَانَ يُحِبُّهَا حُبًّا شَدِيْدًا" उस से मोहब्बत करते थे "فَوَقَعَتْ ذَاتَ يَوْمٍ عَنْ بَغْلَةٍ لَّهُ" एक दिन वह औरत सवारी पर से नीचे गिर गई "فَجَعَلَ يَمْسَحُ التُّرَابَ عَنْ وَجْهِهَا" अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) उस औरत के चेहरे से मिट्टी को साफ़ करने लगे, अन्दाज़ा तो लगाएँ, कितनी मोहब्बत दिल में है कि मालिक आगे बड़ता है और बांदी के चेहरे से मिट्टी को साफ़ करता है, ये कया है?.... अल्लाह ने दिल में मोहब्बते रख दी हैं।

हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़रमाया: "كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ يُقَبِّلُ اِحْدٰى نِسَائِهٖ وَهُوَ صَائِمٌ ثُمَّ تَضْحَكُ" के नबी (अलैहि.) रोज़ा से होते थे फिर भी अपनी किसी एक बीवी को मोहब्बत से बोसा देते थें फिर वह हंसने लग गएँ। इससे मालूम होता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त दिलों में जब मोहब्बत डालते हैं तो मियाँ अपनी बीवी से अपने आप को पीछे हटा नहीं सकता, रुक ही नहीं सकता।

औरतों की फ़ितरत में इनकार

यही कैफ़ियत औरतों के दिल में होती है कि ख़ाविन्दों की ऐसी मोहब्बत होती है कि बेटे की वफ़ात का सदमा बरदाश्त कर लेती हैं,

मगर ख़ाविन्द के दिल को ख़ूश कर दिखाती हैं। ये अलग बात है कि औरतों सेअगर पूछा जाए तो वह अपनी तबीयत की वजह से हमेशा ना ना ही करती हैं मगर इनकी ना में असल हाँ हो रही होती है, बल्कि उसका हदीस पाक में तज़किरा भी है कि जब रब्बुल इज़्ज़त ने आदम (अलैहि॰) के लिए अम्मा हव्वा (अलैहि॰) को बनाया तो फ़रिश्तों ने अम्मा हव्वा से पूछाः किया आपके दिल में आदम की मोहब्बत है? "क़ालत ला" कहने लगे नहीं "व फ़ी क़लबिहा अज़आफ़ो मा फ़ी क़लबिही मिन हुब्बेहि" जितनी मोहब्बत आदम (अलैहि॰) के दिल में हव्वा (अलैहि॰) की थी, हव्वा (अलैहि॰) के दिल में इससे कई गुना ज़्यादा मोहब्बत थी, मगर हया और शर्म की वजह से कह दियाः नहीं, तो यही एक सिफ़त अम्मा हव्वा की बीटियों में आगई, दिल में मोहब्बत उछल रही होती है, बे क़ाबू हो रही होती हैं, ख़ाविन्द पूछता है तो कह दकती हैं कि नहीं, ये ना-ना इनके शर्म का एक हिस्सा है, हक़ीक़त में तो हाँ-हाँ कह रही होती हैं, इसलिए तो क़रीब होती हैं।

चुनांचि "ख़ैजरान" एक बांदी है मेहदी ने उसको आज़ाद करके अपनी मलिका बना लिया। एक मर्तबा "ख़ैजरान" कहने लगी कि मैंने तुमहारे अन्दर कभी कुछ ख़ैर नहीं देखी, सोचिए तो सहीह कहाँ नौकरानी है और कहाँ मलिका बनती है और फिर कह देती है कि मैंने तुमहारे अन्दर कोई ख़ैर नहीं देखी।

इसी तरह अल-मोतमिद बिन इबाद एक वक्त का हाकिम है, "बरमिक्या" इसकी बांदी है, घर की नौकरानी है, उसको पसंद आई आज़ाद करके उससे निकाह कर लिया और ख़ूब मोहब्बत दी। हालत ये थी कि ये मुल्क की मलिका बन गई, उसे मिट्टी से खेलने की आदत थी, कहने लगी कि मुझे मिट्टी लाकर दो, बादशाह को अजब लगा कि मेरी बीवी मिट्टी से कैसे खेलेगी, उसने हुक्म दिया कि ख़ूशबू की मिट्टी तैयार की जाए। चुनांचि स्पेशल (Special) ख़ास ख़ूशबू से मिट्टी तैयार की गई और उसने अपनी बीवी को कहा कि तुम खेल लो। फिर भी एक दिन "बरमिक्या" अपने ख़ाविन्द को कहने लगी कि मैंने तुमहारे अन्दर कभी ख़ैर नहीं देखी, उसने कहाः वह ख़ूशबू वाली मिट्टी का दिन तो ज़रा याद करलो।

तो ये औरत की फ़ितरत है, शायद इसी वजह से नबी (अलैहि.) ने फ़रमाया कि औरतें ख़ाविन्द की ना शुक्री करने की वजह से जहन्नम में ज़्यादा जाएँगी कि फ़ितरत होती है ना-ना करना, ये कह देना कि मेरे लिए कुछ नहीं किया। हाँलाकि दिल के अन्दर इनके यही होता है कि इस जैसा ख़ाविन्द तो मुझे दुनिया में मिल नहीं सकता।

ख़ाविन्द कैसा हो?

लिहाज़ा शरीअत ने कहा कि, ख़ाविन्द को हलीम और सबूर बन कर रहना चाहिए, कोशिश ये करनी चाहिए कि बीवियों के साथ तहम्मुल मिज़ाजी के साथ मामला हो, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मियाँ-बीवी को मोहब्बत प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारने का हुक्म फ़रमाया, शरीअत ने कहाः "ख़ैरुकुम अल-त-फ़ूकूम ले-अहलिहि" तुम में से सब से बेहतर इन्सान वह है जो अपनी बीवी के साथ ज़्यादा अच्छे तरीक़े से रहता है। हदीसे मोबारक का मफ़हूम है किबीवी ख़ाविन्द को देख कर मुसकूराती है, ख़ाविन्द बीवी को देख कर मुसकूराता है तो अल्लाह तआला इन दोनों को देखकर मुसकूराते हैं। चुनांचि शरीअत मोहब्बतों का पैग़ाम देती है—

मेरा पैग़ाम मोहब्बत है जहाँ ता पहुँचे

शरीअत कहती है तुम नफ़रतों के बजाए, एक दूसरे के साथ आर्गोमेंटस (Arguments) बहस मोबाहिसा के बजाए एक दूसरे से झगड़े करने के बजाए एक दूसरे से अफ़ूव दर्गुज़र का मामला करो, मोहब्बतों की ज़िन्दगी गुज़ारो—

फ़ूरसते ज़िन्दगी कम है मोहब्बतों के लिए
लाते हैं कहाँ से वक्त लोग नफ़रतों के लिए

शौहर को राज़ी कैसे करें?

चुनांचि अगर किसी वजह से बीवी में नाराज़गी हो जाए तो अच्छा वही होता है जो दूसरे को मनाले। नबी (अलैहि.) ने फ़रमायाः वह ख़ातून जन्नत में जाएगी जिसका ख़ाविन्द नाराज़ हो तो वह उसका हाथ पकड़ कर कहे कि मैं उस वक्त तक नहीं सोऊँगी जब तक कि तुम मुझसे

राज़ी नहीं हो जाते, तो देखिए दीन की तालीम कितनी ख़ूबसूरत हैं। शरीअत किया चाहती है कि मियाँ-बीवी अल्लाह के बन्दे और बन्दियाँ बन कर रहें, अपस में उलफ़त व मोहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारें, कोई रुठे तो दूसरा उसको राज़ी करले, इसको जाकर कहे –

इतने अच्छे मौसम में रुठना अच्छा नहीं
हार जीत की बातें कल पे हम उठा रखें

आज दोस्ती करलें

तो मिया-बीवी एक दूसरे के साथ मोहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारें, मियाँ बीवी की मोहब्बतों की इन्तिहा होती है कि नबी (अलैहि॰) की ख़िदमत में जब आप (सल्ल॰) की बीवियाँ थीं तो उनके दिल की मोहब्बतो की कोई इन्तिहा नहीं थीं। यहाँ तक कि उम्मे हबीबा (रज़ि॰) एक उम्मूल मोमिनीन हैं उनके सगे वालिद अबू सूफ़ियान इनको मिलने के लिए आए और वह उस वक्त तक मुसलमान नहीं हुए थे जब घर में दाख़िल हुए तो चारपाई पर बैठने लगे, उम्मे हबीबा (रज़ि॰) ने आगे बड़कर बिस्तर को लपेट दिया, वालिद हैरान हैं कि बाप के आने पर तो बेटियाँ बिस्तर बिछाया करती हैं, तुम इस बिस्तर को लपेट रही हो? बेटी ने जवाब दिया अब्बू! ये कायनात के सरदार का बिस्तर है, आप शिर्क की निजास्त से लथेड़े हुए हैं, आप इस बिस्तर के उपर नहीं बैठ सकते, साबित कर दिया कि ख़ाविन्द की मोहब्बत किया हूआ करती है। चुनांचि नबी (अलैहि॰) जब आख़िरी बीमारी में बहुत ज़्यादा बुख़ार की हालत में थे तो सैयदा सफ़िया (रज़ि॰) ने देखा और कहने लगीं कि काश कि ये बीमारी मुझे लग जाती, ये बीवी के दिल में ख़ाविन्द की मोहब्बतें होती हैं और ख़ाविन्द के दिल में बीवी की।

आप (सल्ल॰) की ख़दीजा से मोहब्बत

चुनांचि नबी (अलैहि॰) को ख़दीजतूल-किब्रया (रज़ि॰) से कितनी मोहब्बत थी एक मर्तबा मदीना तैयबा में नबी (अलैहि॰) तशरीफ़ लाते हैं। आप को ख़दीजतूल-कुबरा जैसी आवाज़ सुनाई दी। फ़रमायाः आइशा! ये ख़दीजा जैसी आवाज़ कहाँ से आरही है। अर्ज़ कया ऐ अल्लाह के हबीब

(सल्ल॰)! ख़दीजा की बहन "हाला" मुझे मिलने के लिए आई है, ये इसकी आवाज़ है। नबी (अलैहि॰) की मोबारक आँखों में आँसू आ गए। आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के हबीब (सल्ल॰)! आप इस बूढ़या को कयूँ याद करते हैं? जबकि आप के पास इतनी जवान और ख़ूबसूरत बीवियाँ मौजूद हैं। नबी (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया! आइशा! जब लोग अन्धेरे में थे ख़दीजा के दिल में उस वक्त इमान का नूर था। जब लोग मुझे ग़ैर समझते थे उस वक्त ख़दीजा ने मुझे अपना समझा। मुझे अपने साथ उसने रखा, मुझे अपनी मोहब्बत दी। चुनांचि "इन्नी क़दरो ज़िक़तो हिब्हा" अल्लाह ने उस की मोहब्बत मेरे दिल में डाल दी। नबी (अलैहि॰) के ये अल्फ़ाज ग़ौर के क़ाबिल हैं कि आप (सल्ल॰) ये नहीं फ़रमाया कि मैं उससे मोहब्बत करता हुँ। फ़रमा रहें हैं "अल्लाह ने उसकी मोहब्बत मेरे दिल में डाल दी" इतना अर्सा उनकी वफ़ात को हो गया आज उनकी आवाज़ जैसी आवाज़ सूनकर मुझे वह याद आगएँ, मेरी आँखों में आँसू आगए। चुनांचि इससे महसूस होता है कि मोक़ल्लबूल-क़लूब दिलों में मोहब्बत डाल भी देता है और जब चाहता है तो दिलों से हटा भी लेता है।

शौहर पर फ़रेफ़तगी की रौशन मिसालें

इसी लिए सहाबा (रज़ि॰) और सहाबियात (रज़ि॰) इतनी मोहब्बतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारते थे कि जब ख़ाविन्द की मौत हो जाती थी तो बीवियाँ उसके बाद दूसरा निकाह ही नहीं करती थीं अगरचे उनके पास निकाह के पैग़ाम आते थें। चूनांचि सैयदना उस्मान ग़नी (रज़ि॰) की जब शहादत हुई तो उनकी बीवी "नाईला (रज़ि॰)" ने कहाः "إِنِّي رَأَيْتُ الْحُزْنَ يَبْلَى كَمَا يَبْلَى الثَّوْبُ" कि मुझे ऐसा ग़म मिला जिस ने मुझे यूँ अधेड़ बना दिया जिस तरह कोई कपड़ा पूराना होता है। फिर कहने लगें وَاللهِ لَا يَقْعُدُ رَجُلٌ مِنِّي مَقْعَدَ عُثْمَانَ أَبَدًا" अल्लाह की क़िस्म जिस तरह उस्मान (रज़ि॰) का मेरे साथ तअलूक़ था अब कोई मर्द मेरे साथ वह तअलुक नहीं कर सकेगा। उतनी तो मोहब्बत थी ख़ाविन्द की, ख़ाविन्द ने इतने तो प्यार से रखा था कि उसकी यादें दिल में समाई हुई थीं। क़सम उठाकर कहती हैं किमै। किसी

से फिर निकाह नहीं करुँगी। चुनांचि मोआविया (रज़ि॰) को जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ख़िलाफ़त अता फ़रमाई वह स्टेट के चीफ़ एग्ज़ीकयूटिव (Chief Executive) सूबा के सदर आला बने उन्होंने पैग़ाम निकाह भेजा, एक तो नाइला (रज़ि॰) ख़ूबसूरत बहुत थीं। दूसरे उनकी जो (Smile) मूसकूराहट थी वह सब औरतों की (Smile) से ज़्यादा ख़ूबसूरत थीं तो उनका हुस्न बड़ जाता था। मोआविया (रज़ि॰) ने पैग़ामे निकाह भेजा तो उन्होंने कहा कि मैं उस्मान के बाद अब किसी मर्द का चेहरा नहीं देखना चाहती। इन्कार कर देती हैं। कोई जाकर तो पूछे उस बीवी से कि तेरे लिए इतना अच्छा मोक़अ है, वक्त का सरदार, वक्त का बादशाह,, वक्त का बड़ा वह निकाह के लिए पैग़ाम भेजता है मगर वह अपने मियाँ की यादों में इतनी गुम थीं, चाहती थी कि हमने इतनी मोहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारी, अब मैं जन्नत में जाकर उन्हीं के साथ बक़िया ज़िन्दगी गुज़ारुँगी।

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) की बीवी के बारे में आता है "هِيَ اَحْسَنُ النَّاسِ ثَغْرًا وَاَتَمُّهُمْ جَمَالًا" उनके दाँत इतने ख़ूबसूरत थे कि इतने इन्सानों में शायद किसी के भी इतने ज़्यादा ख़ूबसूरत दाँत न हों, इतनी ख़ूबसूरत थीं कि उनके उपर हुस्न की हद हो गई थी। जब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) की शहादत हो गई तो अब्दुल मलिक बिन मरवान जो वक्त का हाकिम था उसने रिश्ता भेजा तो उसने आगे से मना कर दिया कि मुझे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के बाद किसी से निकाह नहीं करना।

उम्मे दरदा (रज़ि॰) एक मर्तबा अबू दरदा (रज़ि॰) से कहने लगे कि मैं दिल की एक चाहत बयान करना चाहती हूँ। फ़रमायाः करो, कहने लगें के मेरा पहला निकाह मेरे माँ बाप ने आप से कर दिया था और मैं आप के निकाह मेंआगई लेकिन अब मैं आप के अख़्लाक़ से, आप की मोआशिरत से, आप की मोहब्बत से इतनी दीवानी बन गई हुँ कि मैं चाहती हुँ कि मैं जन्नत में आप की बीवी बनूँ। पलीज़ (Tension) बराहि-करम मैं आप को निकाह की दावत देती हुँ। जन्नत में मुझे अपने साथ रखिएगा। इससे महसूस होता है कि सहाबा (रज़ि॰) अपनी बीवियों को इतनी मोहब्बत व प्यार से रखते थे, वह विश (Wish) तमन्ना करती

थीं कि हम उसी बन्दे के निकाह में बक़िया जिन्दगी गुज़ारेंगे और जन्नत मे इसी की बीवी बन कर रहेंगी।

चुनांचि फिर मोआविया (रज़ि॰) ने उनकी तरफ़ निकाह का पैग़ाम भेजा हालाँकि जवान उल-उमर थीं। उन्होंने इनकार कर दिया और कहा कि मैं ने रसूल अल्लाह (सल्ल॰) की ये बात सूनी "अल-मर आतू लि-आख़िरि ज़ौजि-ह" कि औरत अपने आख़िरी शौहर के पास जन्नत में रहेगी। मैं जन्नत में अबू दरदा (रज़ि॰) के सिवा किसी के साथ रहना पसन्द नहीं करती। इन बातों से महसूस होता है कि ऐसी मोहब्बतों भरी ज़िन्दगियाँ होती थी क बीवियाँ अपने ख़ाविन्दों पे जान छिड़कती थीं।

असमा (रह॰) कहते हैं कि मैंने औरत को देखा कि उसका ख़ाविन्द फ़ौत होगया। आवाज़ उसकी बहुत ख़ूबसूरत थी लेकिन ख़ाविन्द के बाद कहने लगीं "اَلَّا اَتَكَلَّمَ بَعْدَهٗ اَبَدًا" मैं अपने ख़ाविन्द की वफ़ात के बाद किसी इनसान से कलाम नहीं करुँगी। फिर वह इशारों से बात करती थी, बोलती ही नही थीं, उसको "اَخْبَارُ النِّسَاء" में इब्न जोज़ी (रह॰) ने लिखा।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह॰) जब ख़लीफ़ा बने तो उनकी बीवी जो एक बादशाह की बेटी थी, एक बादशाह की बहन थी और अल्लाह ने माल व दौलत की रेल-पेल करदी थी। उमर (रह॰) ने उनसे कहा कि देखें ये जितना माल है ये सब उन्होंने बैतूल माल से दिया है। मेरी नज़र मैं ये ठीक नहीं। अब तुम्हारे पास चवाईस (Choice) इख़्तियार है तुम अपने डायमंड अपने पास रखो, सोने चाँदी के ज़ेवर अपने पास रखो, अपने माल व दौलत को अपने पास रखूँ या फिर तुम ख़ूद मेरे निकाह मे रहो जब उन्होंने ये चवाईस (Choice) इख़्तियार दिया तो उनकी बीवी फ़ातिमा कहने लगीं कि जितनी मोहब्बत मुझे आपसे है उस सोने चाँदी की किया क़ीमत है, जितना कुछ था वह सारा कुछ उसने बैतूल माल में जमा करवा दिया। बता दिया के देखो बीवी के दिल में ख़ाविन्द की मोहब्बत कैसी होती है, हालाँकि वह इतनी ख़ूबसूरत थीं कि किताबों में लिखा है "का-न म-स-लन फ़ी हुस-निहा व जमालिहा" वहअपने हुस्न व जमाल में वक्त में मिसाल दी जाती थीं कि उस जैसी ख़ूबसूरत औरत कोई नहीं मगर अल्लाह ने उस के दिल में ख़ाविन्द की मोहब्बत डाली थी।

इसी तरह सहाबा (रज़ि.) और सहाबियात (रज़ि.) इतनी मोहब्बतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारते थे, यही वह लोग होंगे जो पाकदामिनी की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले, आपस में मोहब्बत व उल्फ़त की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले थे, क़ुरआन मजीद में अल्लाह इनहीं को मोख़ातिब करके फ़रमाते हैं "اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ" तुम और तुम्हारी बीवियाँ चमकते मुसकूराते चेहरों के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ। "يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّ اَكْوَابٍ" तुम्हारे सामने सोने के प्याले और सोने की गलास लाए जाएँगे "وَفِيْهَا مَاتَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ" इसमें वह मशरुब होंगे जो तुम्हारा दिल उनको पसन्द करेगा "व अनतूम फ़ी-ह ख़ालिदून" तुम हमेशा-हमेशा जन्नत रहोगे, ऐ पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारने वाले मेरे बन्दों! "وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ" ये जन्नत, हमने तुमहें इसका वारिस इसलिए बनाया कि तुम दुनिया में पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारते थे।

तो शरीअत ये पैग़ाम देती है कि जब मियाँ-बीवी को निकाह हो गया अब वह जन्नती मोहब्बतों की ज़िन्दगी गुज़ारें उतना ज़्यादा बेहतर है। याद रखना जहाँ मियाँ-बीवी में मोहब्बत ज़्यादा होगी वहाँ ज़िना वाला गुनाह नहीं होगा। जहाँ मोहब्बत पतली होगी वहाँ ज़िना के गुनाह से मियाँ-बीवी बच नहीं सकते, इसलिए पाकदामिनी की ज़िन्दगी गुज़ारने वाला अल्लाह का प्यारा बन्दा होता है।

मियाँ-बीवी की परेशानियों का बुनियादी सबब

अब असल मक़सद जिसके बारे में आप से कुछ अर्ज़ करना था वह ये है कि आज कल जिस औरत से पूछो वह ख़ाविन्द के शिकवे, ख़ाविन्द की शिकायतें ब्यान करती हैं कि ख़ाविन्द वक्त नहीं देता, ख़ाविन्द ध्यान नहीं देता, ख़ाविन्द को घर में दिलचसपी कोई नहीं। मैं बन-संवर के बैठती हुँ ख़ाविन्द आँख उठाके नहीं देखता। चेहरे पर मूसकूराहट नहीं होती। ओ ख़ुदा की बन्दी! तुझे इतने जो शिकवे शिकायतें हैं, कभी सेचने की भी तकलीफ़ गवारा की आख़िर इसकी क्या वजह है? तुमहें अल्लाह ने हुस्न दिया, तुमहें अल्लाह ने माल दिया, तुम बन-संवर कर तैयार बैठी होती हो, फिर ख़ाविन्द की नज़र से कयूँ महरुम हो, असल

वजह ये होती है कि औरतें पर्दा नहीं करतीं, बाल कटवाती हैं, नमाज़ें छोड़ देती हैं, ग़ैर महरम मर्दों से हंस-हंस के बातें करती हैं जब ये अल्लाह के हुकमों को तोड़ेगी तो अल्लाह की रहमतें बरसने के बजाए अल्लाह की लानत बरस रही होती है। जिस चेहरे पर अल्लाह की लानत बरसे ख़ाविन्द इस चेहरे को मोहब्बत की नज़र से कैसे देखेगा। जो औरत बे-पर्दा है, जो औरत मैसेज (Message) करती है, दूसरे मर्दों के साथ वह मोहब्बतों के पैमान भरती है, ग़ैर महरम के साथ गन्दे तालूक़ात में लगी हई हैं, क्या ये इस क़ाबिल है कि अल्लाह के इस्म अल-ज़ाहिर की उसके उम्मत पर तजल्ली और उसका ख़ाविन्द उसको मूसकूराता देखे, ये अल्लाह की नाफ़रमानी करती है तो अल्लाह सज़ा के तौर पर उसके दिल से ख़ाविन्द की मोहब्बत निकाल देते हैं, रोती फिर रही होती है, कभी तावीज़ मांगती है, कभी उधर से दुआएँ करवाती है। कभी उधर बैठ कर शिकवे करती हैं, आँसू नहीं थमते, क्यूँ? इधर उधर भगती फिरती हो, हक़ीक़त को समझने की कोशिश करो, अल्लाह के दर को छोड़ के जाओगी, हर जगह ज़िल्लत उठाओगी। हर जगह धक्के मिलेंगे, हर जगह से नफ़रतें मिलेंगी, मोहब्बत चाहती हो तो आओ अपने रब से मोहब्बत करलो, अपने रब की फ़रमाँबरदार बन्दी बन जाओ, अपने रब के सामने पाँच वक्त मोसल्ले पे खड़े होकर सजदे किया करो, फिर दामन उठाकर जब तुम मांगोगी तो अल्लाह को तुम पे प्यार आएगा। अल्लाह इनाम के तौर पर तुमहारी मोहब्बत ख़ाविन्द के दिलों में डाल देंगे। ख़ाविन्द की नज़र पड़ेगी तो मूसकुरा के देखेगा। ख़ाविन्द तुम्हें देख कर सब्र नहीं कर सकेगा। गले लगाएगा। ये मोहब्बते तो अल्लाह के इख़्तियार में है, असल हक़ीक़त को भूलने की वजह से आज घर में देखो परेशानियाँ हैं, हमारी परेशानियों का बुनियादी सबब दीन से दूरी है फ़िस्क़ व फ़जूर के काम हैं, आज की औरत को सुन्नत का पता तक नहीं होता। आज की औरत रस्म व रिवाज जानती है, आज की औरत ग़ैर अंग्रेज़ों के बनाए हुए तौर तरीक़ों को अपनाती है, बच्चों को भी उसी रास्ता पर लगाती हैं। ऐ काश! ये अपनी हक़ीक़त को समझतीं कि मेरी ज़िन्दगी का सकून किस में है तो ये अल्लाह के दर को पकड़ लेतीं।

दिल गुदाज़ बातें

ज़रा ग़ौर तो करो कि अल्लाह के कितने अहसानात हैं, ये बेटी पैदा हुई अल्लाह के हबीब (सल्ल॰) के ज़रिए से अल्लाह ने कहलवा दिया "जिसकी दो बेटियाँ हों वह उनकी परवरिश करे हत्ताकि उनका निकाह करदे वह जन्नत में मेरे साथ उस तरह होगा जिस तरह हाथ की दो उंगलियाँ एक दूसरे के साथ होती हैं।"

ये बड़ी हुइ बेटी बनी, शरीयत ने कहा बाप अगर घर में कोई चीज़ लाए और बेटा भी हो, बेटी भी हो तो वह अपनी बेटी को पहले दे, इस इज़्ज़त की वजह से जो अल्लाह ने बेटी को अता की है, अल्लाह उसकी इतनी फ़ेवर (Favour) तरफ़दारी फ़रमा रहे हैं ये और बड़ी हुई बीवी बन गई, अल्लाह ने अपने महबूब के ज़रिए से कहलवा दिया "ख़ैरुकूम ख़ैरुकूम लिअहलेहि" तुम उस बीवी के साथ बहुत मोहब्बत से रहो, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में बराहे-रास्त ख़ूद सिफ़ारिश फ़रमाई : "व आशिरो हुन्ना बिल-मअरुफ़े" ख़ाविन्दो! बीवियों के साथ बहुत मोहब्बंत की ज़िन्दगी गुज़ारना। ये बड़ी हुई और माँ बन गई तोअल्लाह ने उसके क़दमों में जन्नत रखदी।

अल्लाह के अहसानात को तो देखिए क़दम-क़दम पे अल्लाह ने उसका कितना साथ दिया और ये इतनी नमक हराम बन गई, इतनी अहसान फ़रामोश बन गई कि आज जब अल्लाह ने उसकी नेमतें अता फ़रमा दी तो उसको नमाज़ की फ़ूरसत नहीं होती, उसको अल्लाह के हुक्मों की पराह नहीं होती, उसको टी॰वी (T.V.) से फ़ूरसत नहीं, इन्टरनेट (Internet) से फ़ूरसत नहीं, सेल फ़ोन (Cell hone) की मोसीबत से फ़ूरसत नहीं, ये आज़ाद फिर रही है, सर सीना को खोलेहुए, ये मालिक के हुक्मों को तोड़ती दन्दनाती फिरती है। क्या ये समझती हैं अल्लाह उसको सूख का सांस लेने देंगे, अललाह भी बड़े हकीम हैं वह ख़ाविन्द के दिल से मोहब्बत को निकाल देते हैं, देखने में ख़ूबसूरत भी होती है, दुनियाँ जहाँ के लेप अपने चेहरे पे लगा लेती है, मगर ख़ाविन्द की एक आँख मोहब्बत वाली नज़र इसको नहीं आती, रोते रह जाती है, सिस्कयाँ ले रही

होती, बिस्तर में पड़े रो रही हेती है, तकिये भींग जाते हैं, काश! तू ज़िन्दगी की हक़ीक़त को समझती जिस दर को तूने छोड़ा उसको छोड़ के तुझे मोहब्बतें कभी नहीं मिल सकतीं। एक ही तरीक़ा है दुनिया में पूरसकून ज़िन्दगी गुज़ारने का और इस तरीक़ा का नाम शरीयत है, सुन्नत की इत्तिबा है, आज दिल में ये अह्द कर लीजिए परवर दिगार! हम ने आप के दीन को खिलौना बनाए रखा, हमने शरीयत के अमलों से इस्तेहज़ा किया और बड़े मॉडर्न कट (Modern Cut) बनके ज़िन्दगी गुज़ारते रहे, अल्लाह! हम भूले रहे, हमने उस परवर दिगार के साथ बे वफ़ाई की जिसने हमें इतनी नेमतों से नवाज़ा, मेरे मालिक! मैं आज अपने इस गुनाह से तोबा करती हुँ, अहद करती हुँ कि आज के बाद आप की फ़रमा बरदार बन्दी बनूँगी, नमाज़ें भी पढूँगी, परदा भी करुँगी। सच भी बोलूँगी, ग़ीबत से भी बचूँगी, ग़ैर महरम मर्द से बच कर दिखाऊँगी में परहेज़गार बनूँगी, जब तुम तैयबा बनोगी रब्बे करीम का वादा है "وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ" और तुम ख़्यानत वाले काम करोगी तो रब करीम ने तो पहले ही बतला दिया।

"اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ"

"अल-ख़बीसातो लिल-ख़बीसीना वल ख़बीसूना लिल-ख़बीसाति"

अल्लाह तआला हमें गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़कर नेकोकारी, परहेज़गारी की ज़िन्दगी अपनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए घरों की जो परेशानियाँ हमारे फ़िस्क़ व फ़जूर और गुनाहों की वजह से हैं अल्लाह उन गुनाहों को माफ़ फ़रमा कर हमारे घरों में मोहब्बतें वापस लौटाएँ।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

व आख़िरु दअ़वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

□□□

(وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰىٓ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا)

(वला तक़्राबूज़-ज़िना इन्नहु काना फ़ाहिशात, व साआ सबीलन)

ज़िना से परहेज़

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

फ़ेहरिस्त अनावीन

अल्लाह! अल्लाह! अल्लाह!

इक़्तिबास

किताबों में लिखा है कि मोहम्मद बिन इस्माईल इमाम बुख़ारी (रह०) अपने लड़कपन में एक मर्तबा उसताज़ की मजिलस में दाख़िल हुए तो उनके चेहरे पर इतनी हया थी कि मोहम्मद बिन सलाम ने देख कर कहा कि हमने ऐसा बा-हया लड़का कभी नहीं देखा होगा, तो लड़कपन में जो इतना बा-हया था फिर जवानी में इतना बा-कमाल बना कि अल्लाह ने उनको इम्तियाज़ी शान अता फ़रमाई।

अबू मूसा (रह०) ग़ुस्ल ख़ाना में नहाने के लिए जाते थे तो अन्धेरा करके नहाते थे कि अपने अज़ा पर भी इनकी नज़र न पड़े।

मोहम्म्द बिन यहया कहते हैं कि मैं इमाम ज़ोहरी (रह०) की ख़िदमत में तीस साल रहा लेकिन मैंने उनकी पिन्डली को भी नंगा नहीं देखा, तो ऐसी बा-हया ज़िन्दगी हमारे अकाबिरीन ने गुज़ारी।

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद साहब
नक्शबन्दी मुजद्दिदी दामत बरकातहुम

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○
اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَ کَفٰی وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی اَمَّا بَعْدُ۔
اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ۔ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
(وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓی اِنَّہٗ کَانَ فَاحِشَۃً ط وَسَآءَ سَبِیْلًا)
سُبْحَانَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوْنَ۔ وَسَلَامٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ۔
وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

हया इमान का जुज़ लाज़िम है

वैवाहिक ज़िन्दगी की परेशानियों की सबसे बड़ी वजह आज के दौर में मियाँ-बीवी के दर्मियान ग़लत फ़हमियाँ हैं कि तबीयत एक दूसरे के बजाए किसी और तरफ़ मोतवज्जह रहती हैं। दीने इसलाम दीने फ़ित्रत है। हया पाकदामिनी की ज़िन्दगी सिखाता है, चुनांचि जो औरत पाकदामिनी की ज़िन्दगी गुज़ारने वाली होगी उसकी हर छोटी बड़ी बक़िया ग़लती माफ़ हो सकती है। शौहर हर ग़लती माफ़ करता है मगर किरदार की ग़लती को माफ़ नहीं करता। इसी तरह बीवी का मामला कि वह ख़ाविन्द के घर में तंगी बरदाश्त करती है मगर वह किसी ग़ैर औरत के साथ उसके तालूक़ात बरदाश्त नहीं करती। इसलिए शरीयत ने फ़रमायाः "वला तक़-रबूज़-ज़िना इन्नहु का-न फ़ाहिशातन" ज़िना के क़रीब भी ना जाओ, ये बहुत फ़हश काम है और बूरा रास्ता है, दीने इसलाम ने बा-हया ज़िन्दगी गुज़ारने की तालीम दी, चुनांचि फ़रमायाः अल-हयाओ शोअ-बतूम-मिनल-इमान" हया इमान का एक शोबा है, चुनांचि फ़रमायाः इन्नहु मल-ला यसतहये मिनन-नासे ला यस-तहये मिनल-लाहि" जो इनसानों से हया नही करता वह अल्लाह से भी हया नहीं करता।

उसमान ग़नी (रज़ि॰) की हया

नबी (अलैहि॰) तशरीफ़ फ़रमा हैं, पण्डली मोबारक से कपड़ा हटा है, सिद्दीक़े अकबर (रज़ि॰) आते हैं। आप (सल्ल॰) इसी तरह बैठे रहते हैं। उमर फ़ारुक़ (रज़ि॰) आते हैं आप (सल्ल॰) इसी तरह तशरीफ़ फ़रमा होते हैं। जब उस्मान ग़नी (रज़ि॰) आए तो आप (सल्ल॰) ने पण्डली ढाँपली। पूछने पर फ़रमायाः जिस शख़्स से अल्लाह के फ़रिश्ते भी हया करते हों मैं उससे हया क्यूँ न करूँ, तो ऐसी बा-हया ज़िन्दगी सहाबा (रज़ि॰) को हासिल थी। बा-हया लोग होते हैं जो अल्लाह के यहाँ क़बूलियत पाते हैं।

इमाम बुख़ारी (रह॰) की हया

किताबों में लिखा है कि मोहम्मद बिन इस्माईल इमाम बुख़ारी (रह॰) अपने लड़कपन में एक मर्तबा उसताज़ की मजिलस में दाख़िल हुए तो उनके चेहरे पर इतनी हया थी कि मोहम्मद बिन सलाम ने देख कर कहा कि तुमने ऐसो बा-हया लड़का कभी नहीं देखा होगा, तो लड़कपन में जो इतना बा-हया था फिर जवानी में इतना बा-कमाल बना कि अल्लाह ने उनको इम्तियाज़ी शान अता फ़रमाई।

अबू मूसा (रह॰) गुस्ल ख़ाना में नहाने के लिए जाते थे तो अन्धेरा करके नहाते थे कि अपने अज़ा पर भी इनकी नज़र न पड़े।

मोहम्म्द बिन यहया कहते हैं कि मैं इमाम ज़ोहरी (रह॰) की ख़िदमत में तीस साल रहा लेकिन मैंने उनकी पिण्डली को भी नंगा नहीं देखा, तो ऐसी बा-हया ज़िन्दगी हमारे अकाबिरीन ने गुज़ारी।

ज़िना की बुनियादी वजह

ज़िना की बुनियादी वजूहात में पहली वजह बे-परदगी होती है। जब औरत बे-परदा होती है, ग़ैर महरम के सामने आती है तो ये ज़िना की पहली सीढ़ी है। फिर शैतान उनको मुज़य्यन करके पेश करता है और ग़ैर मर्द के दिल में इसकी कशिश डालता है और गुनाह का रास्ता उसके लिए हमवार करता है। इसलिए शरीयत ने परदा का हुक्म दिया कि अगर घर से बाहर निकलना हो तो औरतें परदा इख़्तियार करें और मर्द अपनी निगाहों को नीचे रखें ताकि दोनों के दिल साफ़ रहें।

मोबाइल और इन्टरनेट की तबाही

एक और वजह आज कल सेल-फ़ोन (Cellphone) मोबाइल का ग़लत इस्तेमाल है। ये सेल-फ़ोन (Cellphone) आज कल तो हेल-फ़ोन (Hellphone) यानी जहन्नम फ़ोन बना हुवा है कि इसी की वजह से नौजवान बच्चे और बचियाँ एक दूसरे के साथ कमयूनिकेट (Communicate) गुफ़तगू करते हैं जिसका नतीजा बुरा निकलता है।

एक और वजह इन्टरनेट का ग़लत इस्तेमाल है। इन्टरनेट से ये जहाँ बहुत सारी मालूमात इनसान को मिलती हैं। वहाँ बहुत सारी जिन्सी मालूमत भी मिलती हैं, तो शैतान ने रास्ता खोल दिया, जो बन्दा ऐसी वेबसाइट (Website) पे जाना शरु कर देता है वह गुनाहों का मुर्तकब हो जाता है, फिर रिसाले और डाइजेस्ट इससे भी उपर फिर सी॰डी॰ (C.D.) ऐसी मिलती हैं, जिस में बहुत ही ग़लत क़िस्म के मनाज़िर होती हैं, फिर गाने और मयूज़िक जलते पे तेल का काम करते हैं, उन तमाम चीज़ों की वजह से नौजवान नस्ल भटकती है और ख़िलाफ़े शरीयत काम करती है, तो बचियाँ परदा का लिहाज़ रखती हैं वह अपनी इज़्ज़त व असमत की हिफ़ाज़त आसानी से कर लेती हैं।

बा-परदा ख़ातून की हकीमाना दावत

पिछले दिनों का वाक़िआ है। एक मूसलमान औरत फ्रांस एयरपोर्ट (Airport) पर पहुँची तो एमेग्रेशन (Immigrationion) वालों ने उसको रोक लिया कि हम आप का चेहरा देखे बग़ैर आप को नही जाने देंगे। उसने कहा मेरा चेहरा देखने के लिए आप किसी लेडी औफ़ीसर (Lady Officer) ख़ातून औफ़ीसर को बुलाएँ वह देखलें कि पासपोर्ट पर किया तस्वीर है और मेरी किया शकल है? काफ़ी देर के बाद उन्होंने एक लेडी औफ़ीसर (Lady Officer) ख़ातून अफ़सर को बुलाया तो वह उसको कमरा में लेकर गई, वह जो अग्रेज़ लेडी औफ़ीसर (Lady Officer) थी उसने मज़ाक़ करना शुरु कर दिया कि तुम मूसलमान औरतें कया लपेटी रहती हो। चेहरा छिपाए रखती हो, किया तुम बदसूरत होती हो? इसलिए चेहरा छिपाती हो। आख़िर कौन-सा ऐब है जिसे छिपाने की ज़रुरत है, इस तरह की

बातें उसने सुनानी शुरु कीं, समझाई तो उसने अपने पर्स में से एक स्वीट (Sweet) मिठाई निकाली जो रैपर (Wrapper) के अन्दर रैप (Wrap) ढकी हुई थी उसने रैपर (Wrapper) उतारा और वह स्वीट (Sweet) मिठाई नेचे फ़र्श के उपर फ़ेंक दिया फिर उस को एक आध दफ़ा पाँव भी लगा दिया और फिर उठाके औफ़ीसर को कहा कि जी आप ये खालें। औफ़ीसर ने कहा मैं तो इसे हाथ भी नहीं लगाँउगी, ये तो (Polluted) आलूदा हो गई है। उसने कहा बहुत अच्छा, फिर उसने बैग से एक दूसरी स्वीट निकाली जो रैपर में रैप थी और वह उस को खाने लगी कि मेरी बात का जवाब ख़ूद ब ख़ूद हो गया कि देखो एक चीज़ परदा के बग़ैर थी फ़र्श पर गिर कर आलूदा हुई आपने हाथ लगाना पसन्द न किया, वही चीज़ जब रैपर (Warpper) में थी तो आपने उसको मूँह में डाल लिया। औरत को भी अल्लाह ने मर्द के लिए एक (Sweet) मिठाई की तरह बनाया है, तो अगर वह अपने उपर से पर्दा हटा दे और वह नंगी बाज़ारों में फिरे तो दूसरों के हाथ लगते हैं उनकी नज़रें पड़ती हैं वह आलूदा हो जाती हैं, तो ख़ाविन्द का दिल ही नहीं चाहता उसके क़रीब होने को और अगर वह लिप्टी हुई होती है तो जैसे ही ख़ाविन्द के सामने पर्दा उठाती है ख़ाविन्द को एक मिक़नातीसी महसूस होती है। ये बात इतनी (Convincing) आमादह करने वाली थी कि वह गोरी औफ़ीसर भी कलिमा पढ़कर मूसलमान हो गई। तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने परदा के अन्दर एक बरकत रखी है तो औरत पर्दादार हो वह जन्नती औरत होती है।

फ़ातिमा ज़ोहरा (रज़ि॰) की शर्म व हया

सैयदा फ़ातिमा अज़-ज़ोहरा (रज़ि॰) के बारे में आता है कि उन्होंने उसमान बिन्त उमैस (रज़ि॰) से कहा कि असमा! मरने के बाद जो औरत को नहलाते हैं मुझे वह तरीक़ा अच्छा नहीं लगता कि जिस्म से कपड़े हटा देते हैं। उसने कहा कि मैंने अफ़्रीक़ा के लोगों में देखा है कि वह मैयत को ग़ुस्ल देते हुए उपर कपड़ा डालते हैं और फिर उसको ग़ुस्ल देते हैं। सैयदा फ़ातिमा अल-ज़ुहरा (रज़ि॰) ने फ़रमाया ये तरीक़ा बहुत अच्छा है, मैं तुमहें वसीयत करती हुँ कि जब मैं फ़ौत हो जाउँ तो मुझे तुम

नहलाना और तुमहें पानी भरने की मदद अली दें क्यूंकि वो मेरे शौहर रह हैं तुम दो के अलावा कोई तीसरा बन्दा उस जगह पर न हो। चुनांचि जब सैयदा फ़ातिमा अल-ज़ुहरा (रज़ि॰) की वफ़ात हुई तोउसी तरह अली (रज़ि॰) पानी भर कर लाए और अस्मा बिन्त उमैस (रज़ि॰) ने उनको गुस्ल दिया, इस मौक़ा पर से उम्मूल मोमिनीन सैयदा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) आएँ तो असमा (रज़ि॰) ने उनको वसीयत की बारे में बता दिया तो वह भी कहने लगे कि हाँ हम उनकी वसीयत का अहतिराम करेंगे, उम्मूल मोमिनीन आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि॰) भी वहाँ नहीं आए। ये ख़ातूने जन्नत की मैयत थी जिसको कफ़न दिया गया फिर उनकी वसीयत थी कि मेरा जनाज़ा देख कर भी पता न चले कि जिस्मानियत कैसी थी? ये वह ख़ातून हैं जो महबूब की नूरे नज़र है और जन्नती औरतों की सरदार बनने वाली हैं। उसको अल्लाह ने इतनी हया वाली ज़िन्दगी दी थी तो आज जो लड़की बे-हयाई ज़िन्दगी गुज़ारेगी वह तो जन्नत की ख़ूश्बू भी नहीं सूंध सकेगी। इसलिए चाहिए कि हम नेकी और पर्दा की ज़िन्दगी गुज़ारें।

औरत डायमंड से ज़्यादा क़ीमती

आपके पास जब भी कोई क़ीमती चीज़ होती है तो आप छुपा-छुपा के रखती हैं। डायमंड (Diamond) हीरे की अंगुठी हो तो पर्स के अन्दर रखती हैं। घर में भी रखना हो तो एक जवेलरी बॉकस (Jewellery Box) ज़ेवरात का डिब्बा होता है वहाँ रखती हैं, तो औरत ख़ूद भी तो एक क़ीमती चीज़ है। शरीयत कहती है कि ये भी पर्दा के अन्दर है जिस तरह डायमंड को चोरों से ख़तरा होता है, जो इज़्ज़त के लूटेरे होती हैं, कोई आदमी गोश्त घर लेके आए तो कभी वह अपने बर्तन मैं डाल के सर पर रख कर नहीं लाता, उसको पता होता है के कव्वे आएँगे और गोश्त को उचक कर ले जाएँगे। आप घर में गोश्त पकाती है तो किचन (Kichen) मत्बख़ में रख कर चली नहीं जातीं; आप समझती हैं कोई बिल्ला आएगा और ये गोश्त ले जाएगा। अगर एक किलो गोश्त की इतनी हिफ़ाज़त है तो ये आप को पूरी बॉडी (Body) जिस्म का जो साठ किलो का गोश्त है

उसको आप बे-पर्दा कैसे छोड़ कर जा सकती हैं उसको अकेले घर से कैसे भेज सकती हैं? इसके लिए भी बिल्ले भी फिर रहें हैं, इनसानों की शकल में लूटेरे फिर रहे हैं तो इसलिए शरीयत कितनी ख़ूबसूरत है जो बा-पर्दा ज़िनदगी की तालीम देती है, हमने देखा है कि मियाँ-बीवी जहाँ दोनों नेकोकार परहेज़गार हुँ और इस जिन्सी गुनाह से बचने वाले हों उनकी ज़िनदगी इतनी पूरसकून होती है कि इनको दुनिया में जन्नत का मज़ा आता है।

ज़िना के नुक़सानात

हर गुनाह के नुक़सानात होते हैं। मगर ज़िना वाले गुनाह के नुक़सानात दूसरों से बहुत ज़्यादा हैं, फ़रमाया "إِذَا فَاتَكَ الْحَيَاءُ اِعْمَلْ مَا شِئْتَ" जब हया तुझसे रुख़सत हो जाए तो जो चाहे कर।

चुनांचि ज़िना करने वाले इनसान के चेहरे सेहया और ग़ैरत ख़तम हो जाती है। चेहरा बे-नूर और बे-रौनक़ हो जाता है, चुनांचि बे-पर्दा फिरने वाली औरतों के चेहरे को आप ख़ूद देखें आप का दिल कहेगा कि चेहरा बे-रौनक़ है, तभी तो बे-चारियाँ बाहर निकलने से पहले किया किया लेप अपने चेहरे पर लगाती हैं और फिर बाहर निकलती हैं और अल्ला की शान कि डर के मारे वज़ू भी नहीं करतें कि लोगो की हक़ीक़ी चेहरा नज़र आ जाएगा। वह किया कहेंगे कि अभी थोड़ी देर पहले जो हूर बनी हुई थी, चेहरा धोने के बाद ये किसी डायन की बहन नज़र आती है।

ज़िना के गुनाह से रोनक़ की तंगी भी बड़ जाती है, चाहे (Multi Millionair) लखपति बन्दा कयूँ न हो, काम अटका ही रहता है।

फिर इनसान की हैबत कम हो जाती है, दिल सख़्त होजाता है, इबादत को दिल नहीं चाहता फिर दिल परेशान होता है, आप इस बात को ख़ूद मुशाहिदा करतें कि जितनी लड़कियाँ रोग पाल लेती हैं उनको रातों को नींद नहीं आती। कभी एक बजे मैसेज (Message) पैग़ाम आ रहे हैं कभी दो बजे मैसेज जा रहा है। सारी रात जाग के गुज़ार देती हैं, जिस गुनाह ने दुनिया में सकून छीन लिया। सारी रात जाग के गुज़ार

देती हैं, जिस गुनाह ने दुनिया में सकून छीन लिया सोचें! आख़िरत में सकून कैसे मिलेगा, फिर परेशान होकर खुद कहती हैं इस जीने से तो मर जाना अच्छा था –

अब तो घबरा के ये कहते हैं कि मर जाएँगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे

ज़ानी इमान से महरुम

ज़िना के बारे में दो-तीन बातें बहुत अहम हैं :

पहली बात ये कि हदीसे-मोबारक से पता चलता है कि जब कोई शख़्स ज़िना कर रहा होता है उस वक़्त वह मूसलमान नहीं रहता, इमान उसके जिस्म से निकल के अलग हो जाता है। गोया ज़िना करने में जितना वक्त गुज़ारा वह उतना वक्त कुफ़्र की हालत में गुज़र गया। इमान से ख़ाली गुज़र गया। अब ज़रा औरतें सोंचे कि जब इनके जिस्म को किसी ग़ैर महरम ने हाथ लगाया ये इतनी देर कुफ़्र की हालत में रहीं। कहने को तो मूसलमान बनी फिरती हैं लेकिन नामए-अमाल में लिखा जाएगा कि इतना वक्त इसने कुफ़्र की हालत में गुज़ारा। अल्लाह अक्बर! ऐसा गुनाह कि इमान ही बन्दे से अलग हो जाए।

आसमान व ज़मीन की लअनत

फिर ये इतना बड़ा गुनाह है कि जो इनसान ज़िना करे हत्ताकि बुढ़ापे की उम्र को पहुँच जाए उस पर सातो आसमान और सातो ज़मीनें लानत बरसाती हैं। ऐसे बन्दे को क़ियामत के दिन अल्लाह तआला आँख उठाकर भी नहीं देखेंगे। तूने ग़ैर को मोहब्बत की नज़रों से देखा था। आज मैं तेरे चेहरे को मोहब्बत की नज़र से नहीं देखूँगा। ये कितनी बड़ी महरुमी है कि अल्लाह तआला उस शख़्स के चेहरे को ही देखना पसन्द न करे।

अललामा मनावी (रह॰) के दादा कहते थे कि जो शख़्स ज़िना का मुर्तकिब होता है उसके चेहरे की ज़ुलमत अहले बातिल भी देखते हैं। जब वह क़रीब आता है तो उसके जिस्म से बदबू आती है। जब वह नहाता है तो पानी के अन्दर ज़िना का गुनाह धुल रहा होता है, पानी देख कर वह बता सकते हैं।

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा (रह॰) का वाक़िआ है कि एक नौजवान को नहाते देख कर उन्होंने जान लिया कि ये ज़िना का मुर्तकब हूआ है।

ज़ानी गोया बूत परस्त है

इब्न असाकर ने एक हदीस नक़ल की है "وَالْمُقِيْمُ عَلَى الزِّنَا كَعَابِدِ وَثَنٍ" कि जो ज़िना के उपर क़ायम होता है वह बुत परस्त होता है। इसका मतलब ये है कि अगर किसी लड़की ने लड़के के साथ दो साल (Affair) तालूक़ात रखे तो अल्लाह के यहाँ ये दो साल बुत परस्त रही। इस का नाम मोमिनों की फ़ेहरिस्त में नहीं होगा। इसका नाम बुत परस्तों की फ़ेहरिस्त में होगा आज सोचिए! हम बुत परस्तों की बातें पढ़ते हैं तो कहते हैं ये इमान से महरुम थे। ऐसा नहीं कहें हमारा नाम ही बूत परस्तों में लिख दिया गया हो, इसलिए औरतें इस पवाइंट (Point) नुक़्ता को ख़ूब अच्छी तरह समझें कि यें ज़िना का गुनाह इमान से महरुम करता है। ज़िना का गुनाह इनसान को अल्लाह के दफ़तर में बुत परस्तों के फ़ेहरिस्त में शामिल करता है। ये होता है किसी को मोहब्बत से चाहना, हर वक़्त उसका ध्यान रहना—

तो मेरा दीन इमान सजना

अल्लाह तआला फिर बन्दे का नाम इमानदारों की फ़ेहरिस्त से निकाल देते हैं, तो कितनी अजीब बात है जिस औरत का अफ़ेयर (Affair) तालूक़ात पाँच साल किसी के साथ रहा वह पाँच साल अल्लाह के काग़ज़ो में बुत परस्त बन कर रही। वह शिर्क बन कर रही, वह शिर्क करती रही, वह मोमिना नहीं थी। वह मूश्रिका थी, सोचिए ये कितना बड़ा गुनाह है।

जहन्नम में ज़ानी की सज़ा

इसकी सज़ा आख़िरत में इतनी ज़्यादा है कि पढ़कर बन्दा कांपता है, इनमें से एक सज़ा ये है कि जो ज़ानिया औरत होगी और बग़ैर तोबा के मर जाएगी तो जहन्नम में इसको फ़रिश्ते एक ग़ार की तरफ़ ले जाएँगी। इस ग़ार के अन्दर धक्का देकर उसके मुहँ के उपर चटान रख

देंगें। वह औरत नहीं निकल सकेगी। इस ग़ार के अन्दर बिच्छू होंगे वह बिच्छू उसके जिस्म पर इस तरह लपेटेंगे जैसे छत्ता के उपर शहद की मक्खियाँ होती हैं और इतने बिच्छू एक वक़्त में उसको काटेगें उसको तकलीफ़ होगी मगर अल्लाह तआला कहेंगे कि तूने वह गुनाह किया कि जिस गुनाह की वजह सेतेरे अंग अंग ने मज़े लिए थे आज तेरे अंग अंग में ज़हर जाएगा और उसको जाकर तकलीफ़ पहुँचाएगा। सोचिए अकेला होगा बिच्छू काट रहे होंगे। आज कोई शहद की मक्खी काट ले तो दर्द ब्रदाशत नहीं होता। बिच्छू काटेगें और इतने ज़्यादा बिच्छू एक वक़्त में काटेंगे। जिस्म की किया हालत होगी। चन्द लमहों की लज़्ज़त की ख़ातिर बन्दा अल्लाह के दरबार से धुतकारा जाए। बन्दा अल्लाह की नज़र के अन्दर मुश्रिक बन जाए। बुत परस्त बन जाए।अल्लाह तआला मोहब्बत की नज़र से देखना ही पसन्द न करें, तो ऐसा गुनाह कितना बड़ा गुनाह है और फिर उनकी दुनिया के अन्दर जो नहुस्त होती है। कि उस गुनाह की वजह से मियाँ-बीवी के दिलों में फ़ासले आ जाते हैं अल्लाह तआला इस गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

साठ साल की इबादत एक ज़िना से बरबाद

हदीसे मोबारक है वक़्त कम है मगर ज़रा सून लीजिए कि एक आबिद था जिसने साठ (60) साल अल्लाह तआला की इबादत की

كَانَ رَجُلٌ يَتَعَبَّدُ فِيْ صَوْمَعَتِهٖ نَحْوَ مِنْ سِتِّيْنَ سَنَةً

फिर एक दिन क्या हुवा कि बाहर बारिश हुई तो उसने खिड़की से देखा तो उसको बाहर सब्ज़ा नज़र आया, अच्छा मौसम नज़र आया "فَقَالَ" कहने लगा "لونزلتُ فمشيتُ ونظرت" अगर मैं नीचे उतरु और मैं ज़रा चलूँ फिरुँगा। देखूँगा "ففعلَ" उसने ऐसा ही किया "फ़बीनमा हौ यमशा" जब वह बाहर चल रहा था "اِذْ لَقِيَتْهُ امْرَأَةٌ فَكَلَّمَهَا" उसको एक औरत मिली बातें करने लग गई "فَلَمْ تَزَلْ تُكَلِّمُهُ حَتّٰى وَاقَعَهَا" वह बाते करते करते अपने आप पर क़ाबू न पा सका हत्ताकि उस मर्द ने उस औरत के साथ ज़िना का इर्तकाब किया, जब इर्तकाब कर लिया तो उसने कहा कि मैं ग़ुस्ल करूँ

"فَوَضَعَ ثِيَابًا كَانَ عَلَيْهِ" उसने अपने कपड़े उतारे जो उसके उपर थे "फ़ीहा रगीफून" उसमें एक थैली भी थी, थैली में कुछ रोटी के टुकड़े थे "وَنَزَلَ الْمَاءَ يَغْتَسِلُ" वह पानी के क़रीब आया तो ग़ुस्ल करे ऐन उस लमहें में "فَحَضَرَ اَجَلُهُ" इसकी मोत का वक़्त आ गया। इतने में एक साएल उसके क़रीब से गुज़रा "فمر سائل فاوئى الى الرَّغِيفِ فَاَخَذَهُ" अब उसके उपर तो मरने की कन्डीशन आ चुकी थी। उसने इशारा से साएल को कहा मेरी इस थैली में से कुछ लेलो, साएल ने थैली में से कुछ सदक़ा ले लिया और चला गया "वमातुल-रजल" उस बन्दे की वफ़ात होगई "فوزن عمله لستين سنة فرجحت خطيئته بعمله" उसके साठ साल की इबादत उसके ज़िना के गुनाह से हलकी निकली। ज़िना का गुनाह भारी हो गया। साठ साल की इबादत कम हो गई हुकम हुवा उसको जहन्नम में ले जाओ। फिर कहा एक अमल उसका बाक़ी है उसने मरते-मरते सदक़ा किया था "ثم وضع الرغيف فرجح" फिर जब उसका सदक़ा का वज़न किया तो फिर नेकी का पलड़ा ग़ालिब आया "फ़ग़-फ़र लहु" अल्लाह ने उसकी मग़फ़िरत फ़रमादी।

सोचने की बात है कि एक गुनाह साठ साल की इबादत को ख़त्म कर देता है जो कई मर्तबा ज़िना के मर्तकिब हों क़ियामत के दिन इनकी इबादतों का किया बनेगा। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहाँ किया पेशी होगी। इसीलिए इनसान को चाहिए कि वह पाकदामिनी की ज़िन्दगी गुज़ारे। शरीयत ने कहा कि औरत को अगर अपनी जान भी देनी पड़े तो वह जान दे दे, शहीद कहलाएगी लेकिन अपनी इज़्ज़त और आबरु को पामाल न करे। एक वाक़िया सुना के मैं बात को मोकम्मल कर देता हुँ उमीद है कि इस वाक़िया को तवज्जोह से सुनेंगी।

पाक-दामिनी के लिए जान की क़ुरबानी

एक आदमी क़साब था और सुबह के वक़्त जाता था जानवर ज़बह करता था और दिन में लाकर वह अपनी दुकान पर गोश्त को बेचा करता था। जब वह जानवर को ज़बह करता तो उसके कपड़ों पर ख़ून लग जाता और वापसी पर वह ख़ून आलूदा कपड़ो ही में आता। घर

आकर कपड़े बदल लिया करता था, रात वह जानवरों को ज़बह करके जब वापस आ रहा था तो रात का अन्धेरा था, वह एक जगह से गुज़र रहा था कि एक बन्दा शोर मचाता हुवा आया और आकर उसने इसको पकड़ लिया। जब पकड़ लिया तो उसने देखा कि उस बन्दे के जिसम से ख़ून बह रहा था। हैरान हुवा और इतने में उस बन्दे की जान निकल गई देखा तो उसके जिसम में छूरी थी जो किसी ने घोप दी थी। अब वह जो क़तल करने वाला था वह तो भाग गया और मक़तूल अन्धेरे में उसको समझा के शायद उसने क़तल किया। जब उसकी वफ़ात होगई तो इतने में लोग आ गए अब लोगों ने मक़तूल को भी देखा और उस क़साब को भी देखा और उस के जिसम पर ख़ून के आसार भी देखे। उन्होंने पकड़ लिया कि तुमने इसे क़तल किया है। चुनांचि क़ाज़ी के पास मोक़दमा किया, क़ाज़ी ने गवाह देखे मक़तुल को देखा तो उसने उसके उपर क़सास का हुक्म लगा दिया कि जान के बदले जान। इस बन्दे का सर क़लम किया जाएगा। चुनांचि जब सर क़लम करने के लिए उस बन्दे को मजमअ के सामने लाया गया तो उस वक़्त उसकी आँखों में आँसू आ ए। तो जो लाने वाला पूलिस अफ़सर था उसने पूछा कि तुम कियूँ रो रहे हो। तुम्हें अपने जुर्म के उपर नदामत हो रही है? उसने कहा नदामत तो हो रही है लेकिन मैं उस बन्दे का क़ातिल नहीं हुँ जिसकी वजह से मुझे सज़ा दी जा रही है, मैं किसी और का क़ातिल हुँ। उंसने कहा तुमहारी स्टोरी (Story) कहानी क्या है? अब उस लड़के ने अपनी स्टोरी (Story) सूनाई। मेरी जवानी की उम्र थी मैं उस ज़माने में कुशती चलाता था और एक बड़ा दरया था लोगों को एक किनारे से दूसरे किनारे की तरफ़ ले जाता था। एक दिन एक औरत और उसकी बेटी मेरे साथ कश्ती पर सवार हुई, मैंने लड़की को देखा तो वह बहुत ख़ूबसूरत चाँद का टूकड़ा थी। मेरा दिल उस पर फ़रीफ़ता होगया। मैंने उस लड़की सेइशारा मेंबाते शुरु करदीं। लड़की ने देखा कि ये नौजवान मेरे अन्दर (Interest) दिलचस्पी ले रहा है तो उसने भी मुझसे इशारों में बात की हत्ताकि हमारे दर्मियान एक तालूक़ एक दूसरे के साथ होगया, मगर लड़की ने कह दिया कि मैं निकाह की बग़ैर आपके क़रीब नहीं आउँगी। आप अगर मुझे

इतना चाहते हैं तो मेरे वालिद से बात करें। लगता था कि वह लड़की बहुत नेक तक़ैया नक़ैया पाक-दामन लड़की थी। कहने लगा कि एक साल मैं इसकी मोहब्बत में तड़पता रहा बिल-आख़िर मैंने उसके बाप से निकाह का पैगाम भेजा तो वालिद ने कहा कि नहीं, मेरी बेटी बहुत ख़ूबसूरत है और बहुत नेक है तुमहारे पास न इल्म है न तुमहारे पास कोई नेकी है। तुमहारा कोई जोड़ नहींबनता। इसने मेरे रिश्ते को रद्द (Reject) कर दिया, मैं बहुत मायूस हुवा और ख़ैर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता रहा।

दो साल इसी तरह मेरे गुज़र गए। मैं एक दिन फिर अपनी कश्ती ले के जा रहा था कि एक औरत और उसके पास एक साल का बेटा भी था और वह कश्ती में बैठ गई जब मैंने कशती चलानी शूरु की और मैंने ग़ौर से देखा तो मैंने देखा कि ये वही लड़की थी जिसको मैंने अपनी महबूबा बनाया था और एक साल जिसकी मोहब्बत में पागल हुवा था, मैंने उससे बात चीत शुरु करदी, वह कहने लगी के देखों मेरानिकाह हो चुका है मेरा ख़ाविन्द है और ये मेरा बेटा है। मैं अब आप से बात भी नहीं कर सकती। मैंने कहा कि तुम पहले मुझसे बात करती थी। उसनेकहा उस वक्त मैं कुंवारी थी, रिशते के लिए आप ने मेरी तरफ़ तवंज्जोह की तो मैंने आप को गायड (Guide) रहनुमाइ किया के मेरे वालिद से राबिता करें चुनांचि अब तो ये मामला और हो चुका। मैंने उसको कहा नहीं मैंने तुमहें बहुत (Miss) याद किया। मैं बहुत तड़पा तुमहारे लिए रातों को रोता था। उसनेकहा के मुझे इस वक्त आप से कोई बात नही करनी इसलिए के मैं किसी और की अमानत हुँ। मैंने उसको बहुत ही फ़हश क़िस्म की बातें सुनाकर जज़बात में लाना चाहा मगर वह बिल्कुल ख़ामोश बुत बनकर बैठी रही। मेरे दिल में गुनाह का ख़्याल आया। मैंने उससे कहा कि अच्छा ये बच्चा तो छोटा ही है, तुम इसी कश्ती के अन्दर इस वक्त मेरे क़रीब आओ और मुझे अपनी ख़्वाहिश पूरी करने दो। उसने कहा देखो! अल्लाह से डरो, मैं किसी की अमानत हुँ, तुम उसकी महर को मत तोड़ो, मगर मेरे उपर तो शहवत सवार थी में दरिंदा बना हुवा था। मैंने पहले उसको प्यार मोहब्बत से

बहलाना फूसलाना चाहा जब उसने साफ़ इनकार कर दिया तो उस वक्त मैंने उससे उसका बेटा छीन लिया। मैंने इसे धमकाया कि देखो मैं तुमहारे बच्चे को पानी के अन्दर डाल दूँगा। वह रोने लगी, आख़िर माँ थी कि मेरे बेटे को ऐसा न करो, मैंने उस बच्चे का सर पानी के अन्दर उलटा डाला तो बच्चा तड़पने लगा, मैं फिर उसे उठा लेता और मैं चाहता था कि ये मेरी बात मान जाए, वह रोती रही मगर उसने हाँ न की हत्ताकि जब बच्चा को पानी में बार-बार डाला तो वह बच्चा फ़ौत हो गया। मैंने उस बच्चा को पानी के अन्दर फेंक दिया। अब वह नौजवान लड़की अकेली थी। मैंने चाहा कि मैं उसके उपर ज़बरदस्ती वह गुनाह करुँ। मैंने इसकी तरफ़ हाथ बड़ाया, लड़की ने अपने ज़ोर के मोताबिक़ अपने आप को पीछे हटाया चुनांचि मैंने उसके बालों को पकड़ा, बे-पर्दा कर दिया और मैंने उसे कहा कि तुम्हें भी इसी तरह पानी के अन्दर डबू दूँगा तूम मेरी बात मानो, उसने कहा तुम जो मर्ज़ी करो लेकिन मैं अल्लाह का हुक्म नहीं तोड़ सकती। चुनांचि उसके कपड़ोंको मैंने फाड़ दिया, उसके सीने को नंगा कर दिया, अब जब उसने मेरी बात बिल्कुल ही न मानी तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि इस हालत में अगर मैं उसको छोड़ दूँगा तो ये बच्चे के क़तल को मोक़दमा भी मेरे उपर करेगी और दस्त दराज़ी का भी मेरे उपर मोक़दमा हो जाएगा, तो बेहतर हेकि इस लड़की को भी मार दिया जाए। फिर मेरे उपर ऐसी दरिन्दगी तारी हुई कि मैंने उस लड़की को पानी के अन्दर धक्का दिया तो वह गिर गई और डूब गई, मैंने बीस साल पहले उस माँ बेटे को क़तल किया था। फिर मैंने डरके मारे ये काम ही छोड़ दिया कि किसी को शक न पड़े और मैंने क़साब का पेशा इख़्तियार कर लिया मगर "अल्लाह की लाठी में आवाज़ नहीं" आज बीस साल गुज़रने के बाद ज़ाहिर में मैं बेक़सूर हुँ कि उस आदमी को क़तल नहीं किया मगर उस क़तल के बदले अल्लाह ने मुझे आज फ़ाँसी के तख़्ता पर ला खड़ा किया, सच है "अल्लाह की लाठी बे आवाज़ होती है"।

सोचिए उस लड़की को अल्लाह ने इतनी हिम्मत दी कि वह अपनी जान तो दे देती हैं अपने सामने बेटे को मरता देख लेती है मगर अपने

जिसम को हाथ नहीं लगाने देती। ये लड़की होगी क़ियामत के दिन उसको अल्लाह तआला ताज पहनाएँगे जन्नत में उसको इज़्ज़तों की जगह अता फ़रमाएँगे।

सौ बातों की एक बात

आज लड़कियाँ ज़रा अपने आप को देखें कि किस तरह वह ग़ैर मर्दों के सामने टेलीफ़ून पे बातें करती हैं, रब को नाराज़ कर लेती हैं। अगर हम चाहते हैं कि हमारे घरों के अन्दर सकून हो, इतमीनान हो तो सब बातों की एक बात, सौ (100) जवाबों का एक जवाबः पाकदामिनी की ज़िन्दगी को इख़्तियार करें। बे-बरकती ख़त्म हो जाएगी। दिलों के फ़ासले ख़त्म हो जाएँगे। अल्लाह की रहमत की नज़र पड़ेगी। अल्लाह आपको पाकीज़ा ज़िन्दगी के बदले पूरसकून ज़िन्दगी अता फ़रमाएँगे। लिहाज़ा जितने भी बयानात इस इतिकाफ़ के अन्दर किए गए हैं उन तमाम का लब व लुबाब ये है कि हमारी वैवाहिक ज़िन्दगी की परेशानियों का हल हमारी पाक-दामिनी की ज़िन्दगी के अन्दर मौजूद है आज नीयत कर लीजिए अल्लाह हमने गुनाह से तौबा की, हम अपना नाम बुत-परसतों में नही लिखवाना चाहते हैं, हम क़ियामत के दिन बुत परस्त बनके खड़े नहीं होना चाहते। अल्लाह! जो ग़लतियाँ हो चुकी उनको माफ़ कर दीजिए। रमज़ान के रोज़े की बरकत से और रमज़ान के उस मोबारक दिन की बरकत से अल्लाह पिछले गुनाहों को माफ़ कर दीजिए, आइन्दा हम पर्दा का भी ख़्याल करेंगे। आइन्दा सेल फ़ोन (Cellphone) भी ग़लत इस्तेमाल नहीं करेंगे। आइन्दा हम इन्टरनेट (Internet) के उपर भी बदकारी नहीं देखेंगे और हम नेकोकार, परहेज़गार बनकर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे इसके बदले अल्लाह हमें दुनिया में भी अपने ख़ाविन्दों, बच्चों की ख़ूशियाँ नसीब फ़रमा और क़ियामत के दिन भी अल्लाह हमें अपने ख़ाविन्दों बच्चों के साथ जन्नत में इकट्ठा जाना नसीब फ़रमा।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

व आख़िरु दअ्वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

□□□